आजाद रहना



LIVING LIBERATED

Are we bound forever to vices, bad habits, addictions, and other sins that shackle and put us in bondage?

Today we can learn HOW to free ourselves from that bondage by the power of Jesus Christ!

Steve Flatt

Living Liberated

You are encouraged to study your Bible to prove the truth presented in these lessons or any other lesson. The comments presented herein are those of the authors and the compiler. You should verify their comments and opinions and teachings by others; e.g., a pastor, preacher, priest, rabbi, commentator, or publisher as it is YOUR responsibility to seek, know and do God's will.

In verifying to read different Bible translations, refer to Bible dictionaries and lexicons for meaning of words or phrases you do not know. Be careful with dictionary definitions as dictionaries give meaning of words and phrases from original language through current usage.

The meaning of words and phrases change over time. Also, several Greek words may be translated into one word in English and may distort the original meaning. For instance, the Greek words *de* and *kai*" were translated as "and" in English. *De* is used to separate two nouns whereas *kai* connects two nouns.

Let God speak to you from His Holy Word as recorded in the Bible.



International Bible Knowledge Institute

IBKI grants permission to reproduce for noncommercial purposes lessons in their entirety without change or charge.

Randolph Dunn, President - Roberto Santiago, Dean Visit our website Thebibleway.net Contact us at info.India.IBKI@gmail.com

आजाद रहना

इन पाठों या किसी अन्य पाठ में प्रस्तुत सत्य को साबित करने के लिए आपको अपनी बाइबल का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यहाँ प्रस्तुत टिप्पणियाँ लेखकों और संकलनकर्ताओं की हैं। आपको दूसरों द्वारा उनकी टिप्पणियों और राय और शिक्षाओं को सत्यापित करना चाहिए; उदाहरण के लिए, एक पादरी, उपदेशक, पुजारी, रब्बी, टिप्पणीकार, या प्रकाशक क्योंकि यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप परमेश्वर की इच्छा को खोजें. जानें और करें।

विभिन्न बाइबल अनुवादों को पढ़ने के लिए सत्यापित करने में, उन शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ के लिए बाइबल शब्दकोश और शब्दकोष देखें जिन्हें आप नहीं जानते हैं। शब्दकोश परिभाषाओं से सावधान रहें क्योंकि शब्दकोश वर्तमान उपयोग के माध्यम से मूल भाषा से शब्दों और वाक्यांशों का अर्थ देते हैं।

समय के साथ शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ बदल जाते हैं। इसके अलावा, कई ग्रीक शब्दों का अंग्रेजी में एक शब्द में अनुवाद किया जा सकता है और मूल अर्थ को विकृत कर सकता है। उदाहरण के लिए, ग्रीक शब्द डे और काई का अंग्रेजी में "और" के रूप में अनुवाद किया गया था। डे दो संज्ञाओं को अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है जबिक काई दो संज्ञाओं को जोड़ता है।

परमेश्वर को अपने पवित्र वचन से आप से बात करने दें जैसा कि बाइबल में दर्ज है।



अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल ज्ञान संस्थान IBKI बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के पाठों को उनकी संपूर्णता में पुन: पेश करने की अनुमित देता है। रैंडोल्फ़ डन, राष्ट्रपति - रॉबर्टी सैंटियागो, डीन हमारी वेबसाइट Thebibleway.net पर जाएँ हमसे info.India.IBKI@gmail.com पर संपर्क करें

Living Liberated

Chapter 1

Freedom from Anger

Did you know that the average man loses his temper six times a week? The average woman only loses her temper three times a week. Women tend to get angrier at people. Men tend to get angrier at things such as flat tires and non-working vending machines. Single people express anger twice as often as married folks, and yet the home is the place where we're most likely to express our anger. Anger is most frequently and intensely expressed toward people that we love, rather than strangers.

We all get angry it is a normal response. God made us with that capacity. Jesus got angry, didn't he? Remember the cleansing of the temple? Three hundred and seventy-five times in the Old Testament, we read that God was angry. Ephesians 4:26 states, "Be angry, and do not sin." In other words, there's a right way and there's a wrong way to get angry. So, anger, in and of itself, isn't wrong.

The issue isn't how do you get rid of all your anger; you're not going to do that. You were made with the capacity to anger at times. The issue is, how can you control your anger so that your anger doesn't control you, so that it doesn't cause you to sin and hurt yourself and other people.

I. Anger Expressed

1. The Monster.

This is the person who just explodes. He or she is a walking time bomb. They have a hair trigger, and when they get angry, everything breaks loose, yelling, stomping, ranting, raving, throwing and cursing. Does that sound like someone you know?

A Biblical example of the monster-type of anger is Cain, Abel's brother. Genesis 4:5, "So Cain was very angry, and his face was downcast." Now listen to verse 8, "Now Cain said to his brother Abel, 'Let's go out to the field.' And while they were in the field, Cain attacked his brother Abel and killed him." You see that's the monster, it's somebody who loses control. Most of the time, those who express monster anger, are immediately sorry and beg for forgiveness, but the damage is done. Does it surprise you that men more than women express their anger in this way?

आजाद रहना

अध्याय 1

क्रोध से मुक्ति

क्या आप जानते हैं कि औसत आदमी सप्ताह में छह बार अपना आपा खो देता है? औसत महिला सप्ताह में केवल तीन बार अपना आपा खोती है। महिलाओं को लोगों पर गुस्सा आने लगता है। पुरुषों को फ्लैट टायर और गैर-काम करने वाली वेंडिंग मशीनों जैसी चीजों पर गुस्सा आता है। अविवाहित लोग विवाहित लोगों की तुलना में दुगनी बार क्रोध व्यक्त करते हैं, और फिर भी घर वह स्थान है जहाँ हम अपने क्रोध को व्यक्त करने की सबसे अधिक संभावना रखते हैं। अजनबियों के बजाय उन लोगों के प्रति गुस्सा सबसे अधिक बार और तीव्रता से व्यक्त किया जाता है जिनसे हम प्यार करते हैं।

हम सभी को गुस्सा आता है यह एक सामान्य प्रतिक्रिया है। भगवान ने हमें उस क्षमता के साथ बनाया है। यीशु क्रोधित हुआ, है न? मंदिर की सफाई याद है? पुराने नियम में तीन सौ पचहत्तर बार, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर क्रोधित था। इफिसियों 4:26 कहता है, "क्रोध करो, और पाप मत करो।" दूसरे शब्दों में, गुस्सा करने का एक सही तरीका है और एक गलत तरीका है। तो, क्रोध, अपने आप में गलत नहीं है।

मुद्दा यह नहीं है कि आप अपने सारे क्रोध से कैसे छुटकारा पाएं; आप ऐसा नहीं करने जा रहे हैं। आप कई बार क्रोध करने की क्षमता के साथ बनाए गए थे। मुद्दा यह है कि आप अपने क्रोध को कैसे नियंत्रित कर सकते हैं ताकि आपका क्रोध आप पर नियंत्रण न करे, जिससे आप पाप न करें और स्वयं को और अन्य लोगों को चोट न पहुँचाएँ।

ा. क्रोध व्यक्त

3. राक्षस।

यह वह व्यक्ति है जो सिर्फ विस्फोट करता है। वह या वह एक चलने वाला समय बम है। उनके पास एक बाल ट्रिगर है, और जब वे क्रोधित होते हैं, तो सब कुछ ढीला हो जाता है, चिल्लाता है, पेट भरता है, शेख़ी करता है, बड़बड़ाता है, फेंकता है और कोसता है। क्या वह आवाज किसी ऐसे व्यक्ति की तरह है जिसे आप जानते हैं?

राक्षस-प्रकार के क्रोध का बाइबिल उदाहरण कैन, हाबिल का भाई है। उत्पत्ति 4:5, "तब कैन बहुत क्रोधित हुआ, और उसका मुख नीचा हो गया।" अब पद 8 को सुनें, "कैन ने अपके भाई हाबिल से कहा, 'आओ, हम मैदान को चलें।' और जब वे मैदान में थे, तब कैन ने अपके भाई हाबिल पर चढ़ाई करके उसे मार डाला।" आप देखते हैं कि वह राक्षस है, यह कोई है जो नियंत्रण खो देता है।

2. The Mute.

The mute is the exact opposite of the monster. The mute is the silent type. They clam up and they hold it in. Sometimes they even pretend that they're not angry. Have you ever been with a mute, and said "You're angry, aren't you?" They reply, "No, I'm not." "Yes, you are." "No, I'm not." "Yes, you are." "No, I'm not!!" They're concealing their feeling, letting it simmer. I call it the crock pot version of anger. It smolders all day.

This type of anger is not as volatile as the monster, but it's no less destructive on the individual. Someone said, "When you swallow your anger, your stomach keeps score." Folks like this, are susceptible to ulcers, headaches and hypertension. In fact, Dr. F.I. McMillan has written a book called, None of These Diseases, in which he lists 51 different types of major illnesses that are caused by bottled-up anger.

A biblical example of this kind of anger is the prophet, Jeremiah. He said, "I never sat in the company of revelers, never made merry with them; I sat alone because your hand was on me and you had filled me with indignation. Why is my pain unending and my wound grievous and incurable?" (Jeremiah 15:17) Poor old Jeremiah is sitting there alone holding it in and it's killing him.

Have you ever heard anyone say, "This just burns me up."? They're speaking more truth than they know. It's not so much what you eat, it's "what's eating you?"

3. The Martyr.

This guy is the pro at pity parties. He's self-punishing and passive. One of the chief characteristics of the martyr is depression. Many people will go to psychologists and say, "Do you know, I'm depressed." Sometimes after talking with the psychologist, the psychologist will say, "Yes, you're depressed, but what you really are experiencing is angry."

A biblical example is the older brother in the parable of the Prodigal Son. Remember his reaction? The elder brother was so angry that he would not go into the party. So, his father went out and pleaded with him. (Luke 15:28) Now if that older brother had been a monster, he would have gone into the party and trashed the place. If he had been a mute, he would have gone into the party

अधिकांश समय, जो लोग राक्षस क्रोध व्यक्त करते हैं, वे तुरंत खेद व्यक्त करते हैं और क्षमा मांगते हैं, लेकिन नुकसान हो जाता है। क्या आपको हैरानी होती है कि महिलाओं से ज्यादा पुरुष इस तरह से अपना गुस्सा जाहिर करते हैं?

4. मूक।

मूक राक्षस के ठीक विपरीत है। मूक मूक प्रकार है। वे आपस में चिपक जाते हैं और उसे पकड़ कर रखते हैं। कभी-कभी वे यह दिखावा भी करते हैं कि वे क्रोधित नहीं हैं। क्या आप कभी गूंगे के साथ रहे हैं, और कहा, "तुम नाराज़ हो, है ना?" वे उत्तर देते हैं, "नहीं, मैं नहीं।" "हाँ तुम हो।" "नहीं, मैं नहीं हूँ।" "हाँ तुम हो।" "नहीं, मैं नहीं हूँ!!" वे अपनी भावना को छुपा रहे हैं, इसे उबलने दे रहे हैं। मैं इसे क्रोध का क्रॉक पॉट संस्करण कहता हूं। दिन भर सुलगती रहती है।

इस प्रकार का क्रोध राक्षस की तरह अस्थिर नहीं है, लेकिन यह व्यक्ति पर कम विनाशकारी नहीं है। किसी ने कहा, "जब आप अपना गुस्सा निगलते हैं, तो आपका पेट स्कोर रखता है।" इस तरह के लोग अल्सर, सिरदर्द और उच्च रक्तचाप के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। वास्तव में, डॉ एफआई मैकमिलन ने नो इन डिजीज नामक एक पुस्तक लिखी है, जिसमें उन्होंने 51 विभिन्न प्रकार की प्रमुख बीमारियों को सूचीबद्ध किया है जो बोतलबंद क्रोध के कारण होती हैं।

इस प्रकार के क्रोध का एक बाइबिल उदाहरण भविष्यवक्ता, यिर्मयाह है। उसने कहा, "मैं मौज-मस्ती करने वालों की संगति में कभी नहीं बैठा, कभी उनके साथ आनन्दित नहीं हुआ; मैं अकेला बैठा था क्योंकि तुम्हारा हाथ मुझ पर था और तुमने मुझे क्रोध से भर दिया था। मेरा दर्द अंतहीन क्यों है और मेरा घाव गंभीर और लाइलाज है?" (यिर्मयाह 15:17) बेचारा बूढ़ा यिर्मयाह वहाँ अकेला बैठा है और उसे पकड़े हुए है और वह उसे मार रहा है।

क्या आपने कभी किसी को यह कहते सुना है, "यह मुझे जला देता है।" वे जितना जानते हैं उससे ज्यादा सच बोल रहे हैं। यह इतना नहीं है कि आप क्या खाते हैं, यह "आपको क्या खा रहा है?"

3. शहीद।

यह आदमी दया पार्टियों में समर्थक है। वह आत्म-दंडित और निष्क्रिय है। शहीद की मुख्य विशेषताओं में से एक अवसाद है। बहुत से लोग मनोवैज्ञानिकों के पास जायेंगे और कहेंगे, "क्या आप जानते हैं, मैं उदास हूँ।" कभी-कभी मनोवैज्ञानिक से बात करने के बाद, मनोवैज्ञानिक कहेगा, "हाँ, तुम उदास हो, लेकिन जो तुम वास्तव में अनुभव कर रहे हो वह क्रोध है।" and very obviously stood in the corner and sulked. But he was a martyr. He stayed outside in his own pity party so that his father had to come out and plead with him. One of the characteristics of the martyr is to make everyone else around them miserable. They're good at that.

4. The Manipulator.

This is the, "I don't get mad, I get even." This kind of anger is the key to most TV and movie dramas. Someone is offended, they get mad, they decide to get even, you know the story.

On the domestic front, it may happen when the wife intentionally burns the toast, just a little bit. Or, when the husband teases hurtfully and then says sarcastically, "Can't you take a joke?" Now believe it or not, religious people are particularly susceptible to the manipulation form of anger expression. We don't think it's very spiritual to explode. We know it's not very spiritual to sit around and mope. But if you put a smile on your face, you can stab somebody in the back by manipulation.

A classic biblical example is the Pharisees. "But they were furious and began to plot with each other what they might do to Jesus." (Luke 6:11) See, they're not getting angry, they're going to get even.

If you fall into any one of those forms, I've got great news for you. You weren't born with it, you learned it. You learned that anger response. You learned it from your parents, television, friends, environment or somewhere else. The great news is, you can unlearn it. You don't have to be any of those four. You can release yourself and free yourself from those types of anger expressions.

II. Disseminating Anger

1. Understand why.

Proverbs 19:11 says, "A man's wisdom gives him patience" The better I understand myself, the more I'll be able to control my anger. The truth of the matter is, anger isn't the problem. Anger is a warning light that something else is wrong in my life, and that's why I'm getting angry.

Causes

a. Physical or emotional hurt.

एक बाइबिल उदाहरण उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में बड़ा भाई है। उसकी प्रतिक्रिया याद है? बड़ा भाई इतना नाराज था कि वह पार्टी में नहीं जाएगा। सो उसके पिता ने बाहर जाकर उस से बिनती की। (लूका 15:28) अब अगर वह बड़ा भाई एक राक्षस होता, तो वह पार्टी में जाता और उस जगह को कूड़ा-करकट कर देता। अगर वह मूक होता, तो वह पार्टी में चला जाता और स्पष्ट रूप से कोने में खड़ा हो जाता और नाराज हो जाता। लेकिन वह एक शहीद थे। वह अपनी दया पार्टी में बाहर रहा ताकि उसके पिता को बाहर आकर उससे विनती करनी पड़े। शहीद की एक विशेषता यह है कि वह अपने आस-पास के सभी लोगों को दुखी करता है। वे इसमें अच्छे हैं।

4. जोड़तोड़।

यह है, "मैं पागल नहीं होता, मैं भी हो जाता हूं।" इस प्रकार का क्रोध अधिकांश टीवी और फिल्म नाटकों की कुंजी है। किसी को बुरा लगता है, वो पागल हो जाते हैं, वो बराबर होने की ठान लेते हैं, आप जानते हैं कहानी।

घरेलू मोर्चे पर, ऐसा तब हो सकता है जब पत्नी जानबूझकर टोस्ट जलाती है, बस थोड़ा सा। या, जब पित चोट पहुँचाता है और फिर व्यंग्यात्मक रूप से कहता है, "क्या आप मजाक नहीं कर सकते?" अब विश्वास करें या न करें, धार्मिक लोग विशेष रूप से क्रोध की अभिव्यक्ति के हेरफेर के रूप में अतिसंवेदनशील होते हैं। हमें नहीं लगता कि विस्फोट करना बहुत आध्यात्मिक है। हम जानते हैं कि आसपास बैठना और पोछना बहुत आध्यात्मिक नहीं है। लेकिन अगर आप अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हैं, तो आप हेरफेर करके किसी की पीठ में छुरा घोंप सकते हैं।

एक क्लासिक बाइबिल उदाहरण फरीसी है। "परन्तु वे बहुत क्रोधित हुए और आपस में साज़िश करने लगे कि वे यीशु के साथ क्या करें।" (लूका 6:11) देखिए, वे क्रोधित नहीं हो रहे हैं, वे बराबर होने वाले हैं।

यदि आप इनमें से किसी एक रूप में आते हैं, तो मेरे पास आपके लिए बहुत अच्छी खबर है। आप इसके साथ पैदा नहीं हुए थे, आपने इसे सीखा। आपने गुस्से की प्रतिक्रिया सीखी। आपने इसे अपने माता-पिता, टेलीविजन, दोस्तों, पर्यावरण या कहीं और से सीखा है। अच्छी खबर यह है कि आप इसे अनलर्न कर सकते हैं। आपको उन चार में से कोई नहीं होना चाहिए। आप अपने आप को मुक्त कर सकते हैं। भावों से मुक्त कर सकते हैं।

द्वितीय. फैलाना गुस्सा

I read an interesting article lately about divorce, and those who have gone through the trauma of divorce. It said, "The divorce is far from over for the spouse who lives angrily ever after" and "one-third of those who have been divorced for over 10 years, still feel intense anger." Why? They've been hurt deeply and the deeper the hurt, the more intense the anger.

b. When nothing is going right, everything is going wrong and you have to wait.

Anger comes out of your frustration. The classic example is traffic, isn't it? People do things in traffic they wouldn't do any other time. I've been in heavy congested traffic and seen two people up there jockeying and blowing horns, and I knew them both, and they knew each other, and they're both Christian folks. They were making those faces and yelling and shaking a fist, and all of a sudden, they get up beside each other and recognize each other, and feel shame. They're embarrassed. Why? They lost their temper out of frustration.

c. Insecurity.

We're angry when we're threatened, afraid and insecure. When somebody takes away my security, I'm like a passive animal that's cornered. I come out with my claws ready.

Understanding yourself is step one. What is it that makes you angry most often? Is it a hurt that you can't get over? Is it an insecurity that happens commonly? Is it a frustrating experience you go through daily? Understand yourself, that's the key.

2. Look to God, not to others, for your self-worth. A sense of self-worth is essential for controlling your anger because insecure people are easily angered. Confident people are not easily angered. When you've got a good sense of self-worth, you can handle your hurts, your frustrations, your insecurities. "Don't pay attention to everything people say." (Ecclesiastes 7:21) The secret to overcoming a huge amount of anger in life is to develop a God based sense of self-worth, then it doesn't matter what everybody is saying about you.

I love the example of the apostles in Acts 4: 29, when Peter and John were brought before the Sanhedrin, and were threatened by them not to preach any more about Jesus, or else. Peter and John said, "Whether it is right in the sight of God to obey you rather than God, you'll have to choose, but we can't help but speak the things we've seen and heard." See they didn't get mad, they didn't get defensive, they just told the truth. Why? Their self-worth wasn't based upon what the Pharisees thought

4. समझे क्यों।

नीतिवचन 19:11 कहता है, "मनुष्य की बुद्धि से उसे सब्र मिलता है।" जितना अधिक मैं अपने आप को समझूंगा, उतना ही अधिक मैं अपने क्रोध को नियंत्रित कर पाऊंगा। इस मामले की सच्चाई यह है कि क्रोध समस्या नहीं है। क्रोध एक चेतावनी प्रकाश है कि मेरे जीवन में कुछ और गलत है, और इसलिए मुझे गुस्सा आ रहा है।

कारण. शारीरिक या भावनात्मक चोट।

मैंने हाल ही में तलाक के बारे में एक दिलचस्प लेख पढ़ा, और जो तलाक के आघात से गुजरे हैं। इसने कहा, "जो पित या पत्नी हमेशा के लिए गुस्से में रहते हैं, उनके लिए तलाक खत्म नहीं होता है" और "जिन लोगों का 10 साल से अधिक समय से तलाक हो चुका है, उनमें से एक तिहाई अभी भी तीव्र क्रोध महसूस करते हैं।" क्यों? उन्हें गहरी चोट लगी है और चोट जितनी गहरी होगी, गुस्सा उतना ही गहरा होगा।

बी। जब कुछ भी सही नहीं हो रहा है, सब कुछ गलत हो रहा है और आपको इंतजार करना होगा।

क्रोध आपकी कुंठा से निकलता है। क्लासिक उदाहरण यातायात है, है ना? ट्रैफिक में लोग ऐसे काम करते हैं जो वे किसी और समय नहीं करते। मैं भारी भीड़भाड़ वाले यातायात में रहा हूँ और वहाँ दो लोगों को जॉकी करते और हॉर्न बजाते देखा, और मैं उन दोनों को जानता था, और वे एक दूसरे को जानते थे, और वे दोनों ईसाई लोग हैं। वे उन चेहरों को बना रहे थे और चिल्ला रहे थे और एक मुट्ठी हिला रहे थे, और अचानक, वे एक-दूसरे के बगल में उठते हैं और एक-दूसरे को पहचानते हैं, और शर्म महसूस करते हैं। वे शर्मिंदा हैं। क्यों? हताशा के कारण वे अपना आपा खो बैठे।

सी। असुरक्षा।

जब हमें धमकाया जाता है, डराया जाता है और असुरक्षित किया जाता है तो हम क्रोधित होते हैं। जब कोई मेरी सुरक्षा छीन लेता है, तो मैं एक निष्क्रिय जानवर की तरह होता हूं जो कि घिरा हुआ है। मैं अपने पंजों को तैयार करके बाहर आता हूं।

खुद को समझना पहला कदम है। ऐसा क्या है जो आपको सबसे ज्यादा गुस्सा दिलाता है? क्या यह एक ऐसी चोट है जिससे आप उबर नहीं सकते? क्या यह एक असुरक्षा है जो आमतौर पर होती है? क्या यह एक निराशाजनक अनुभव है जिससे आप रोजाना गुजरते हैं? अपने आप को समझें, यही कुंजी है।

5. <u>ईश्वर को देखो, दूसरों को नहीं, अपने स्वाभिमान के लिए।</u> अपने क्रोध को नियंत्रित करने के लिए आत्म-मूल्य की भावना आवश्यक है क्योंकि असुरक्षित लोग आसानी से क्रोधित हो जाते हैं। आत्मविश्वास से भरे लोग आसानी से क्रोधित नहीं होते हैं। जब आपको आत्म-मूल्य की अच्छी समझ हो, तो आप अपने दुखों, about them. Their self-worth was based upon what God thought about them.

There's a statement that I really like, "If God likes me, and I like me, and you don't like me, then you're the one with the problem." Isn't that right? It is important that I look to God for my self-worth. That way, the frustrations, the insecurities and the hurts won't bother me as much.

3. Stop and think before reacting.

Our mouths usually run faster than our minds. Have you ever noticed that when you get angry, your sharp tongue is the quickest thing to cut your own throat?

Proverbs 13:16 says, "Sensible people always think before they act." The key word to anger management is the word, "T-H-I-N-K." Start thinking before you start responding. That's why James said in James 1:19, "Let every man be swift to hear, slow to speak, and slow to anger." Do you know why you need to be slow to anger? Just give yourself a little time so that you can think. Thomas Jefferson once said. "When you're angry, count to ten." He also added, "When very angry, count to a hundred." That's good advice it will give you ten good seconds to think. I'll guarantee you, very few times will you come to the conclusion, the best way for me to respond is to be a monster, a mute, a martyr or a manipulator. THINK!

I know what some of you are thinking. "Oh, yeah Steve, that sounds great, sounds nice, neat, clinical and logical, but you don't understand. When I get mad, I get mad. I can't control it. I lose it. I can't help myself." Yes, you can! Do you hear me? Yes, you can. Don't you dare believe the lie that you can't stop and think before you lose it? In fact, I'll prove it to you.

Have you ever had an argument at home? You're at home arguing with your spouse or maybe your children, (everybody is arguing loudly), all of a sudden, the phone rings. "Hello (softly)." "How are you doing?" "Good, so nice to hear from you!!" Oh, you've never done that, have you? Why the change? Why the drastic change? You changed because you wanted to. You changed because you choose to. Let's be honest. No one makes you mad, you choose to be mad. I choose my anger. Do you know why? Because the hurt, the frustration, and the insecurity gets up, and I want to do something, so I just get mad.

Let's be honest about it. Sometimes it feels good to be mad, doesn't it? Just kind of vent your spleen. It feels good to be mad. The problem is, in the long run, it hurts you terribly. Proverbs 29:11 says, "A fool gives full vent to his anger, but a wise man keeps himself under

अपनी कुंठाओं, अपनी असुरक्षाओं को संभाल सकते हैं। "लोग जो कहते हैं उस पर ध्यान न दें।" (सभोपदेशक 7:21) जीवन में भारी मात्रा में क्रोध पर काबू पाने का रहस्य है आत्म-मूल्य की ईश्वर आधारित भावना विकसित करना, फिर इससे कोई फर्क नहीं पडता कि हर कोई आपके बारे में क्या कह रहा है।

मुझे प्रेरितों के काम 4:29 में प्रेरितों का उदाहरण पसंद है, जब पतरस और यूहन्ना को महासभा के सामने लाया गया था, और उनके द्वारा यीशु के बारे में और प्रचार न करने की धमकी दी गई थी, अन्यथा। पतरस और यूहन्ना ने कहा, "क्या परमेश्वर की दृष्टि में परमेश्वर के स्थान पर तुम्हारी आज्ञा मानना उचित है, तुम्हें चुनना होगा, परन्तु हम केवल वही कह सकते हैं जो हम ने देखा और सुना है।" देखो वे पागल नहीं हुए, वे रक्षात्मक नहीं हुए, उन्होंने सिर्फ सच कहा। क्यों? फरीसियों ने उनके बारे में जो सोचा था, उस पर उनका आत्म-मूल्यांकन आधारित नहीं था। उनका आत्म-मूल्य इस बात पर आधारित था कि भगवान उनके बारे में क्या सोचते हैं।

एक कथन है जो मुझे वास्तव में पसंद है, "यदि भगवान मुझे पसंद करते हैं, और मैं मुझे पसंद करता हूं, और आप मुझे पसंद नहीं करते हैं, तो आप समस्या वाले हैं।" क्या यह सही नहीं है? यह महत्वपूर्ण है कि मैं अपने आत्म-मूल्य के लिए ईश्वर की ओर देखूं। इस तरह, कुंठाओं, असुरक्षाओं और दुखों ने मुझे उतना परेशान नहीं किया।

6. <u>प्रतिक्रिया करने से पहले रुकें और सोचें।</u> हमारा मुंह आमतौर पर हमारे दिमाग से तेज चलता है। क्या आपने कभी गौर किया है कि जब आपको गुस्सा आता है, तो आपकी

तीखी जीभ सबसे तेज आपका गला काट देती है?

नीतिवचन 13:16 कहता है, "समझदार लोग हमेशा कार्य करने से पहले सोचते हैं।" क्रोध प्रबंधन की कुंजी शब्द है, "सोचें।" जवाब देना शुरू करने से पहले सोचना शुरू करें। इसलिए याकूब ने याकूब 1:19 में कहा, "हर एक मनुष्य सुनने में फुर्ती से, बोलने में धीरा और कोप करने में धीरा हो।" क्या आप जानते हैं कि क्रोध को धीमा करने की आवश्यकता क्यों है? बस अपने आप को थोड़ा समय दें ताकि आप सोच सकें। थॉमस जेफरसन ने एक बार कहा था। "जब आप गुस्से में हों, तो दस तक गिनें।" उन्होंने यह भी कहा, "जब बहुत गुस्सा हो, तो सौ तक गिनें।" यह अच्छी सलाह है कि यह आपको सोचने के लिए दस अच्छे सेकंड देगा। मैं आपको गारंटी दूंगा, बहुत कम बार आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे, मेरे लिए प्रतिक्रिया देने का सबसे अच्छा तरीका एक राक्षस, एक मूक, एक शहीद या एक जोडतोड करना है। सोच!

मुझे पता है कि आप में से कुछ क्या सोच रहे हैं। "ओह, हाँ स्टीव, यह बहुत अच्छा लगता है, अच्छा, साफ-सुथरा, नैदानिक और तार्किक लगता है, लेकिन आप नहीं समझते हैं। जब मैं पागल हो जाता हूं, तो मैं पागल हो जाता हूं। मैं इसे नियंत्रित नहीं कर सकता। मैं इसे खो देता हूं। मैं नहीं कर सकता अपने आप की मदद करो।" हाँ आप कर सकते हैं! क्या आप मुझे सुन रहे हो? हाँ आप कर

control." That's so rich, it's worth repeating. "A fool gives full vent to his anger, but a wise man keeps himself under control." You can take two people, you can put them in the same environment, same conditions, same circumstances, same stimulus, one of them will blow the top, and the other will be cool. It's not the circumstance, it's the choice.

Galatians 5:22 lists the beautiful nine-fold fruit of the spirit. The last one is the capstone. It's self-control. When you walk with God's spirit, you've got the blessing of keeping it under control. THINK, before you react.

4. Learn to relax.

Proverbs 14:30 says, "A heart at peace gives life to the body." Have you ever noticed that when you're uptight, you're more inclined to be angry? Temper and tension always go together. Have you ever been late for a morning meeting, you're in a rush and you can't find something you must have? Oh, what will I do? The pressure and frustration elicit my anger. I must learn to relax. Some of you are a walking time bomb because of the tension you feel all the time. Some of you feel so much tension at work that as soon as you come home, you snap your spouse's head off. You blame them for the tension you're under. The following are things to do to control our tension:

- "Be aware that tension is building and seek to diffuse it. You may have to change jobs. You may need to do something totally different, but don't let tension ruin your life."
- Exercise. I know that Paul said bodily exercise profits a little, but this is one of the ways it does profit a little. We are designed to build up stress, but we are designed to relieve it physically. You will relieve it, if you exercise.
- Carry around a little pocket New Testament. Open it up and read a little something, and pray a oneminute prayer. That will put everything in a better perspective. There's not that much to get uptight over.
- Get a sense of humor. God made us to have a sense of humor. God has a sense of humor. He made you, didn't he? He made me. He's got to have a sense of humor. And now the last thing.
- Continually ask God for help. You cannot have your life filled with the things that God's spirit gives and still have room for wrongly displayed anger. "But the fruit of the Spirit is love, joy, peace, patience, kindness, goodness, faithfulness, gentleness and self-control." (Galatians 5:22-23)

सकते हैं। क्या आप उस झूठ पर विश्वास करने की हिम्मत नहीं करते जिसे आप रोक नहीं सकते और खोने से पहले सोच सकते हैं? वास्तव में, मैं इसे आपको साबित कर दूंगा।

क्या आपके घर में कभी किसी बात को लेकर विवाद हुआ है? आप घर पर अपने पित या पत्नी या शायद अपने बच्चों के साथ बहस कर रहे हैं, (हर कोई जोर से बहस कर रहा है), अचानक फोन बजता है। "नमस्कार (धीरे से)।" "आपके क्या हाल-चाल हैं?" "अच्छा, आपसे सुनकर बहुत अच्छा लगा !!" ओह, तुमने कभी ऐसा नहीं किया, है ना? बदलाव क्यों? कठोर परिवर्तन क्यों? आप बदल गए क्योंकि आप चाहते थे। आप बदल गए क्योंकि आपने चुना था। चलो ईमानदार बनें। कोई आपको पागल नहीं बनाता, आप पागल होना चुनते हैं। मैं अपना क्रोध चुनता हूं। तुम जानते हो क्यों? क्योंकि चोट, हताशा और असुरक्षा उठती है, और मैं कुछ करना चाहता हूं, इसलिए मैं पागल हो जाता हूं।

आइए इसके बारे में ईमानदार रहें। कभी-कभी पागल होना अच्छा लगता है, है न? बस अपनी तिल्ली को हवा दें। पागल होना अच्छा लगता है। समस्या यह है कि लंबे समय में, यह आपको बहुत दर्द देता है। नीतिवचन 29:11 कहता है, "मूर्ख अपने कोप पर भड़क उठता है, परन्तु बुद्धिमान अपने को वश में रखता है।" यह इतना समृद्ध है, यह दोहराने लायक है। "मूर्ख अपने क्रोध को पूरी तरह से प्रकट कर देता है, लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने आप को नियंत्रण में रखता है।" आप दो लोगों को ले सकते हैं, आप उन्हें एक ही वातावरण, समान परिस्थितियों, समान परिस्थितियों, समान उत्तेजनाओं में रख सकते हैं, उनमें से एक ऊपर से उड़ा देगा, और दूसरा शांत हो जाएगा। यह परिस्थिति नहीं, चुनाव है। गलातियों 5:22 में आत्मा के सुंदर नौ गुना फल की सूची दी गई है। आखिरी एक कैपस्टोन है। यह आत्म-नियंत्रण है। जब आप परमेश्वर की आत्मा के साथ चलते हैं, तो आपको इसे नियंत्रण में रखने की आशीष मिलती है। सोचिए, प्रतिक्रिया देने से पहले।

4. आराम करना सीखें।

नीतिवचन 14:30 कहता है, "शांत मन से शरीर को जीवन मिलता है।" क्या आपने कभी गौर किया है कि जब आप उग्र होते हैं, तो आप क्रोधित होने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं? गुस्सा और तनाव हमेशा साथ-साथ चलते हैं। क्या आपको कभी सुबह की बैठक के लिए देर हो गई है, आप जल्दी में हैं और आपको कुछ ऐसा नहीं मिल रहा है जो आपके पास होना चाहिए? ओह, मैं क्या करूँगा? दबाव और हताशा ने मेरे गुस्से को भड़का दिया। मुझे आराम करना सीखना चाहिए। आप में से कुछ लोग वॉकिंग टाइम बम हैं क्योंकि आप हर समय तनाव महसूस करते हैं। आप में से कुछ लोग काम पर इतना तनाव महसूस करते हैं। आप जिस तनाव में हैं, उसके लिए आप उन्हें दोष देते हैं। अपने तनाव को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित चीजें करनी चाहिए:

 "इस बात से अवगत रहें कि तनाव बढ़ रहा है और इसे फैलाने की कोशिश करें। आपको नौकरी बदलनी पड़ सकती

III. Summary

Here is a real deep metaphor. If you were to go into Wendy's, McDonalds, Burger King or some other fast-food restaurant and take that little mustard packet, tear the corner, set it on the table and smash it, what's going to come out? Whatever is inside. Right? Mustard! Now the world squeezes you with its deadlines and expectations, whatever is inside of you will come out. If you are full of the fruits of the spirit, love, joy, peace, patience, kindness, goodness, gentleness, faithfulness, self-control, they will come out!

Listen to this statement, "When you're filled with love, almost nothing will upset you. When you're filled with anger, almost anything will upset you." It's what's on the inside that counts.

That's why we want to be filled with God's spirit so that he'll bear his fruit. Replace the hurt, the insecurity and the frustration that is causing your anger with Jesus. He can heal.

Amazing Grace Lesson #1199

Questions:

| Ųι | Jestio | 113. |
|----|--------|--|
| 1. | G | od is? |
| | a. | Love |
| | b. | Righteous (just) |
| | c. | Truth |
| | d. | Mercy |
| | e. | Peace |
| | f. | All the above |
| | g. | a and c |
| | | a, c and e |
| | i. | a, b and c |
| 2. | | one gets angry as it is a normal reaction. |
| | | rue False |
| 3. | Ang | er can be expressed by? |
| | a | Exploding (verbal or physical assault |
| | b | o Pouting (the silent treatment) |
| | | Martyr (self-pity) |
| | c | l Getting even (manipulator) |
| | е | e All the above |
| 4. | Ang | er can be caused by? |
| | | a Physical or emotional hurt |
| | | b Frustration |
| | | c Afraid, threatened and insecurity |
| | | d All the above |
| 5. | What | t is the key word for anger management? |
| | а | Ten (count to ten) |
| | | o Cry |
| | | Laugh (or smile) |
| | C | l Walk (away) |
| | е | Think |
| 6. | One | can control anger by |
| | a | Biting tongue and saying nothing |
| | | (seething) |

- है। आपको कुछ अलग करने की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन तनाव को अपने जीवन को बर्बाद न करने दें।"
- व्यायाम। मुझे पता है कि पॉल ने कहा था कि शारीरिक व्यायाम से थोड़ा लाभ होता है, लेकिन यह उन तरीकों में से एक है जिससे थोड़ा लाभ होता है। हमें तनाव बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है, लेकिन हम इसे शारीरिक रूप से दूर करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। यदि आप व्यायाम करते हैं तो आपको इससे राहत मिलेगी।
- एक छोटी सी जेब के आसपास ले जाएं नया नियम. इसे खोलो और कुछ पढ़ो, और एक मिनट की प्रार्थना करो। यह सब कुछ बेहतर परिप्रेक्ष्य में रखेगा। ऊपर उठने के लिए इतना कुछ नहीं है।
- हास्य की भावना प्राप्त करें. भगवान ने हमें हास्य की भावना रखने के लिए बनाया है। भगवान में हास्य की भावना है। उसने तुम्हें बनाया, है ना? उसने मुझे बनाया है। उसके पास सेंस ऑफ ह्यूमर होना चाहिए। और अब आखिरी बात।
- भगवान से लगातार मदद मांगें। आप अपना जीवन उन चीजों से नहीं भर सकते जो परमेश्वर की आत्मा देती है और फिर भी आपके पास गलत तरीके से प्रदर्शित क्रोध के लिए जगह है।
 "परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा,
 भलाई, सच्चाई, नम्रता और संयम है।" (गलातियों 5:22-23)।

॥. सारांश

अन्ग्रह पाठ #1199

यहाँ एक वास्तविक गहरा रूपक है। यदि आप वेंडी, मैकडॉनल्ड्स, बर्गर किंग या किसी अन्य फास्ट-फूड रेस्तरां में जाते हैं और उस छोटे से सरसों के पैकेट को लेते हैं, कोने को फाइते हैं, इसे टेबल पर सेट करते हैं और इसे तोड़ देते हैं, तो क्या निकलेगा? अंदर जो कुछ भी है। सही? सरसों! अब दुनिया अपनी डेडलाइन और उम्मीदों से आपको निचोइती है, आपके अंदर जो कुछ भी है वह बाहर आ जाएगा। यदि तुम आत्मा, प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, नम्रता, सच्चाई, संयम के फलों से भरे हो, तो वे निकल आएंगे! इस कथन को सुनें, "जब आप प्यार से भर जाते हैं, तो लगभग कुछ भी आपको परेशान नहीं करेगा। जब आप क्रोध से भर जाते हैं, तो लगभग कुछ भी आपको परेशान करेगा।" यह अंदर है जो मायने रखता है। इसलिए हम चाहते हैं कि हम परमेश्वर की आत्मा से भरे रहें ताकि वह अपना फल लाए। चोट, अस्रक्षा और कुठा को हटा दें जो आपके

क्रोध का कारण यीश् के साथ है। वह ठीक कर सकता है। अद्भ्त

| b. | Understanding cause of anger |
|----|------------------------------|
| c. | Think before reacting |
| d. | Remove tension and stress |
| e. | a, b and c |
| f. | a, c and d |
| g. | b, c and d |

Chapter 2

Freedom From Harmful Attitudes

Picture the face or the name of the person that you admire most in life? Can you get that face? Get that name? Now, what is the single most reason that you admire that person so much? Boil it all down. Reduce it to one word if you can. Did you think of loving, honest, faithful, unselfish, loyal, caring, happy, kind or humble? I could go on. The interesting thing about all these words is they all describe attitudes. Isn't that fascinating? All of those are attitudes. Did you choose appearance, ability or intelligence? I doubt that many, if any, did. Doesn't that tell you something?

Jesus tells us about human attitudes in the "Good Samaritan" parable. "A man was going down from Jerusalem to Jericho, when he fell into the hands of robbers. They stripped him of his clothes, beat him and went away, leaving him half dead. A priest happened to be going down the same road, and when he saw the man, he passed by on the other side. So too, a Levite, when he came to the place and saw him, passed by on the other side. But a Samaritan, as he traveled, came where the man was; and when he saw him, he took pity on him. He went to him and bandaged his wounds, pouring on oil and wine. Then he put the man on his own donkey, took him to an inn and took care of him. The next day he took out two silver coins and gave them to the innkeeper. 'Look after him,' he said, 'and when I return, I will reimburse you for any extra expense you may have.' "Which of these three do you think was a neighbor to the man who fell into the hands of robbers?" (Luke 10:30-36)

Jesus shows us in this parable three very basic attitudes:

1. What is yours is mine and I'm going to take it. Somebody had that attitude in the parable can you figure out who? The thief or the thieves, the ones who found the man, beat him, took what he had and left him for dead. We know this about him. His attitude was "what's yours is mine and I'm going to take it." Frankly most of the people don't have that attitude. Oh, it's prevalent in this world. Folks with that kind of attitude are like the old dog that had the bone. He went to a lake looked over

| प्रशन: |
|---|
| 2. ईश्वर है? |
| j प्यार |
| k धमा (ासफ) |
| 1 सत्य |
| m दया |
| n शांति |
| o सब से ऊपर |
| p ए और सी |
| q ए, सी और ई |
| r ए, बी और सी |
| 2. सभी को गुस्सा आता है क्योंकि यह एक सामान्य प्रतिक्रिया है। |
| ्सही गलत |
| 5. क्रोध किसके द्वारा व्यक्त किया जा सकता है? |
| a विस्फोट (मौखिक या शारीरिक हमला) |
| बी। पोटिंग (मूक उपचार) |
| सी। शहीद (आत्म-दया) |
| डी। सम हो रही है (मैनिपुलेटर) |
| ई उपरोक्त सभी |
| 6. क्रोध का कारण हो सकता है? |
| aशारीरिक या भावनात्मक चोट |
| b निराशा |
| cडर, धमकी और असुरक्षा |
| d सब से ऊपर |
| 5. क्रोध प्रबंधन के लिए मुख्य शब्द क्या है? |
| एक। दस (गिनती दस तक) |
| बी। रोना |
| सी। हंसो (या मुस्कुराओ) |
| डी। दूर जाना) |
| इ। सोचना |
| 7. क्रोध पर काबू पाया जा सकता है |
| h जीभ काटना और कुछ न कहना (उखड़ना) |
| i क्रोध के कारण को समझना |
| j प्रतिक्रिया करने से पहले सोचें |
| k तनाव और तनाव को दूर करें |
| ए, बी और सी |
| m ए, सी और डी |
| n बी, सी और डी |
| अध्याय 2 |
| |

and saw his reflection. He saw what he thought to be another dog with a bone in his mouth and he wanted that one too. So, he let go to begin to bite at the other dog and what happened? He lost the bone he had. "What's yours is mine and I'm going to take it."

2. What's mine is mine and I'm going to keep it.

It's interesting to me that Jesus talks about a priest and a Levite, both religious men. They were probably going from Jericho to Jerusalem to do service in the temple. The priest and the Levites one week out of every year had to perform temple service. They had to do all the duties and prepare the sacrifices. To go along this route was not an unusual thing as Jericho is not very far from the Jerusalem, and many priests lived there. They saw this man beaten, bleeding, and robbed, but they chose to pass by on the other side.

Now there could have been one other thing at work here. You see if a priest or Levite were heading toward the temple to perform a service, the last thing that individual would want to do would be to become unclean. According to the Jewish law, if you were to touch a corpse, it would make you ceremonially unclean. They may have been in a hurry with important work to do. They could have even thought about the risk of becoming ceremonially unclean. This man may either be dead, or he may die in my hands. So, rather than risking becoming unclean they went on their way. "What's mine is mine and I'm going to keep it."

These are the kind of person folks who goes through life hurting no one, breaking no rules, and making no enemies. In fact, that's the kind of person who goes through life determined to leave things just like they are. They won't bother you and don't want you bothering them. They do not consider those who went before and prepared the way. Somebody invested yesterday in what they enjoy today. When you've got an attitude of "What's mine is mine and I'm going to keep it" you just want to be left alone. No, you are not a society drainer. But you're not giving anything to anybody either.

Years ago, when I was a young teenager, I would spend a week every summer with my grandfather on the farm. Some of the greatest lessons I've ever learned in life have been those weeks out on the farm because I lived in the city, a suburban kid. One time I was with my granddaddy Flatt, we called him "Pap" was planting fruit trees. They were just little tiny saplings, it was a hot day, it was a lot of work and my granddaddy was almost 80. I said, "Pap what on earth are you planting those fruit trees for? You're not going to live long enough to ever eat one apple off that tree." He looked at me and in his own humble way, he taught me one of the

हानिकारक से मुक्तिरवैयाएस

उस व्यक्ति के चेहरे या नाम की कल्पना करें जिसकी आप जीवन में सबसे अधिक प्रशंसा करते हैं? क्या आपको वह चेहरा मिल सकता है? वह नाम प्राप्त करें? अब, एक सबसे बड़ा कारण क्या है कि आप उस व्यक्ति की इतनी प्रशंसा करते हैं? इसे सब उबाल लें। यदि आप कर सकते हैं तो इसे एक शब्द तक कम करें। क्या आपने प्यार करने वाले, ईमानदार, वफादार, निःस्वार्थ, वफादार, देखभाल करने वाले, खुश, दयालु या विनम्र के बारे में सोचा? मैं आगे बढ़ सकता था। इन सभी शब्दों के बारे में दिलचस्प बात यह है कि ये सभी दृष्टिकोण का वर्णन करते हैं। क्या यह आकर्षक नहीं है? वह सब वृत्ति हैं। क्या आपने उपस्थिति, क्षमता या बुद्धिमत्ता को चुना? मुझे संदेह है कि बहुतों ने, यदि कोई हो, किया। क्या यह आपको कुछ नहीं बताता?

यीशु हमें "अच्छे सामरी" दृष्टांत में मानवीय दृष्टिकोणों के बारे में बताता है। "एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा या, कि वह लुटेरोंके हाथ पड़ गया। उन्होंने उसके वस्त्र उतारे, और पीटकर उसे अधमरा छोड़ कर चले गए। एक याजक उसी मार्ग पर जा रहा या, और जब उस ने उस पुरूष को देखा, तो उस पार चला गया: उसी रीति से एक लेवीय भी, जो उस स्थान पर आया, और उसे देखकर उस पार गया, परन्तु एक सामरी कूच करके वहां आया, जहां वह पुरूष था। और उस को देखकर उस पर तरस आया, और उस ने उसके पास जाकर उसके घाव पर तेल और दाखमधु पर पट्टी बांधी, तब उस ने उस को अपके ही गदहे पर बिठाकर सराय में ले जाकर उसकी सुधि ली। दूसरे दिन उस ने चांदी के दो सिक्के निकालकर सरायवाले को दे दिए, उस ने कहा, उसकी सुधि लेना, और जब मैं लौटूं, आपके किसी भी अतिरिक्त खर्च के लिए मैं आपको प्रतिपूर्ति करूंगा। "इन तीनों में से कौन उस आदमी का पड़ोसी था जो लुटेरों के हाथों में पड़ गया था?" (लूका 10:30-36)

यीशु हमें इस दृष्टांत में तीन बहुत ही बुनियादी दृष्टिकोण दिखाते हैं:

4. जो तुम्हारा है वह मेरा है और मैं इसे लेने जा रहा हूं। हष्टांत में किसी का ऐसा रवैया था, क्या आप समझ सकते हैं कि कौन है? चोर या चोर, जिसने उस आदमी को पाया, उसे पीटा, उसके पास जो कुछ था उसे ले लिया और उसे मरा हुआ छोड़ दिया। हम उसके बारे में यह जानते हैं। उनका रवैया था "जो तुम्हारा है वह मेरा है और मैं इसे लेने जा रहा हूं।" सच कहूं तो ज्यादातर लोगों का रवैया ऐसा नहीं होता है। ओह, यह इस दुनिया में प्रचलित है। इस तरह के रवैये वाले लोग उस बूढ़े कुत्ते की तरह होते हैं जिसकी हड्डी थी। वह एक झील के पास गया और ऊपर देखा और अपना प्रतिबिंब देखा। उसने देखा कि उसके मुंह में एक हड्डी वाला एक और कुत्ता क्या है और वह वह भी चाहता था। तो, उसने दूसरे कुत्ते को काटने के लिए जाने दिया और क्या हुआ?

greatest lessons about servant hood I've ever known. He said, "Now son, I'm not planting these for me. But much of what I've enjoyed on this farm is here because somebody else did some work before me. I'm not naive enough to think I'll pull an apple off this tree, but that's not the point, life didn't begin with me and life doesn't end with me." He said, "If my life is really going to be useful, I'll leave something here that somebody else can enjoy."

Therefore, it's not enough to say, "What's mine is mine and I'm going to keep it."

3. What's mine is yours, and I'm going to give it. The Bible says that the Good Samaritan saw the victim and had compassion on him. He carried him to an inn, he paid for his care and said I'll come back by to check on him to see if I need to do anything else.

All three of the main characters, the Levite, the Priest, and the Samaritan had something in common. Don't think that only certain people can have certain kinds of attitudes. They had a lot in common.

- a. They saw the same problem, a man in need lying there bleeding.
 - Many people say "I don't do much, I give much, because I don't have much opportunity." It's not the exposure to the need that makes a man or a woman a good servant. It is the attitude. It's not the person who has the most opportunities, who becomes the greatest servant.
- b. They all had something else to do.

 It's not how much time you have in your schedule that dictates whether or not you reach out and touch your fellow man. It's the person who has the best attitude. Some of the best stewards that I've ever known were also the busiest people. You see it has nothing to do with your agenda. It has nothing to do with your schedule. It has nothing to do with how much opportunity.
- They all had reasons not to help.

 They needed to do some work. They didn't want to risk touching a corpse. But listen to this. The Samaritan had the most significant reason of all for not helping. It was the enmity between the Jews and the Samaritans. The Jews hated the Samaritans. They called them to their faces, dogs. For that Samaritan to look over and to see that Jew bleeding there, it wouldn't have been at all unusual for a man who had gone through the kind of isolation and persecution Samaritans have gone through to say, "Look who the dog is now." Or, if he had a particularly bitter spirit to just go ahead and finish him off. But you see that's the beauty about attitude.

उसके पास जो हड्डी थी उसे खो दिया। "जो तुम्हारा है वह मेरा है और मैं इसे लेने जा रहा हूँ।"

5. जो मेरा है वह मेरा है और मैं इसे रखने जा रहा हूं। मेरे लिए यह दिलचस्प है कि यीशु एक पुजारी और एक लेवी के बारे में बात करते हैं, दोनों धार्मिक पुरुष। वे शायद मंदिर में सेवा करने के लिए यरीहों से यरूशलेम जा रहे थे। याजक और लेवियों को हर वर्ष में से एक सप्ताह मन्दिर की सेवा करनी पड़ती थी। उन्हें सभी कर्तव्यों का पालन करना था और बलिदान तैयार करना था। इस मार्ग पर जाना कोई असामान्य बात नहीं थी क्योंकि यरीहो यरूशलेम से बहुत दूर नहीं था, और वहाँ बहुत से याजक रहते थे। उन्होंने इस आदमी को पीटा, खुन बह रहा और लुटते देखा. लेकिन उन्होंने दूसरी तरफ से गुजरने का फैसला किया। अब यहाँ काम पर कुछ और हो सकता था। आप देखते हैं कि यदि कोई पुजारी या लेवी मंदिर की ओर सेवा करने के लिए जा रहा था. तो आखिरी चीज जो व्यक्ति करना चाहता है वह अशुद्ध हो जाना है। यहदी कानून के अनुसार, यदि आप किसी लाश को छते हैं, तो वह आपको औपचारिक रूप से अशुद्ध कर देगी। हो संकता है कि वे किसी महत्वपूर्ण काम को करने की जल्दी में हों। वे औपचारिक रूप से अशुद्ध होने के जोखिम के बारे में भी सोच सकते थे। यह आदमी या तो मर सकता है, या वह मेरे हाथों मर सकता है। इसलिए, अशुद्ध होने का जोखिम उठाने के बजाय वे अपने रास्ते चले गए। "जो मेरा है वह मेरा है और मैं इसे रखने जा रहा हूँ।"

ये उस तरह के लोग हैं जो जीवन भर किसी को चोट नहीं पहुँचाते, कोई नियम नहीं तोड़ते और कोई दुश्मन नहीं बनाते। वास्तव में, यह उस तरह का व्यक्ति है जो जीवन से गुजरता है और चीजों को वैसे ही छोड़ने के लिए दढ़ संकल्पित होता है जैसे वे हैं। वे आपको परेशान नहीं करेंगे और नहीं चाहते कि आप उन्हें परेशान करें। वे उन पर विचार नहीं करते जो पहले गए और मार्ग तैयार किया। किसी ने कल निवेश किया था जो आज वे आनंद लेते हैं। जब आपके पास "जो मेरा है वह मेरा है और मैं इसे रखने जा रहा हूं" का रवैया है, तो आप बस अकेले रहना चाहते हैं। नहीं, आप समाज को भगाने वाले नहीं हैं। लेकिन तुम भी किसी को कुछ नहीं दे रहे हो।

वर्षों पहले, जब मैं एक युवा किशोर था, मैं हर गर्मियों में एक सप्ताह अपने दादा के साथ खेत पर बिताता था। जीवन में मैंने जो कुछ सबसे बड़ा सबक सीखा है, उनमें से कुछ सप्ताह खेत पर रहे हैं क्योंकि मैं शहर में रहता था, एक उपनगरीय बच्चा। एक बार जब मैं अपने दादाजी फ्लैट के साथ था, हम उसे "पैप" कहते थे, फलों के पेड़ लगा रहे थे। वे सिर्फ छोटे छोटे पौधे थे, यह एक गर्म दिन था, यह बहुत काम था और मेरे दादाजी लगभग 80 वर्ष के थे। मैंने कहा, "पापा, आप उन फलों के पेड़ किस लिए लगा रहे हैं? आप लंबे समय तक जीवित नहीं रहने वाले हैं उस पेड़ का एक सेब खाने के लिए काफी है।" उसने मुझे देखा और अपने विनम्र तरीके से,

- His attitude helped him overcome his prejudice and it's the only thing that will. You and I have prejudices. We develop them as we go through life and the only way they'll be conquered is by attitude.
- It helped him conquer his convenience. See none of us want to have our convenience rattled. But, the attitude on the part of that Samaritan made him give his donkey, his money, his time and all because he had the right attitude, not because he had more availability or more time, but because he had the right attitude.

Four observations

- 1. Your attitude is more important than your abilities. That was proved in the person that we admired the most. We admire the person most who has the right attitude. Attitude is the way we influence this world not by looks or our brain. Every person has something to give to his fellow man and something to give to God. Don't think: "I have nothing to give God" because you might also be thinking "God has not given me anything." That's paramount to blasphemy.
- 2. Your position doesn't count anything next to your attitude. The classic example is right here in this parable. The first two men were religious men. There was a Levite and a Priest. If anybody was trained to help people, it was them. If anybody had gone to school to learn to devote their life to people, it was the Priest and the Levite. Isn't it fascinating that the people who were trained the most, qualified the most, and schooled the most, helped the least?
- 3. Your attitude is more important than timing. In this parable the Good Samaritan had the poorest timing of all. You see if that beaten up Jew was half dead when the Priest and the Levite passed by, he was probably three-fourths dead by the time the Good Samaritan got there. But it didn't stop him from serving. Don't look for a time to have the right attitude. Have the right attitude and let time work itself out. Remember the purpose of this parable was for Jesus to respond to the question, who is my neighbor? Jesus says your neighbor has nothing to do with proximity, neighborhood associations, or timing. It's whoever has the right attitude to help.
- 4. A right attitude is active. Which of these three men do you think was a neighbor to the man who fell into the hands of the robbers, the expert in the law replied, the one who had mercy on him? Jesus told him, go and do likewise.

उसने मुझे नौकरशाही के बारे में अब तक का सबसे बड़ा सबक सिखाया। उसने कहा, "अब बेटा, मैं ये अपने लिए नहीं लगा रहा हूँ। लेकिन जो कुछ मैं मैंने इस फार्म पर एन्जॉय किया है क्योंकि यहां मुझसे पहले किसी और ने कुछ काम किया है। मैं इतना भोला नहीं हूं कि यह सोचूं कि मैं इस पेड़ से एक सेब निकालूंगा, लेकिन यह बात नहीं है, जीवन मेरे साथ शुरू नहीं हुआ और जीवन मेरे साथ खत्म नहीं हुआ।" उन्होंने कहा, "अगर मेरा जीवन वास्तव में है उपयोगी होने के लिए, मैं यहाँ कुछ छोड़ दूँगा जिसका आनंद कोई और ले सके।"

इसलिए, यह कहना काफी नहीं है, "जो मेरा है वह मेरा है और मैं इसे रखने जा रहा हूं।"

6. जो मेरा है वह तुम्हारा है, और मैं इसे देने जा रहा हूँ. बाइबल कहती है कि अच्छे सामरी ने पीड़ित को देखा और उस पर दया की। वह उसे एक सराय में ले गया, उसने उसकी देखभाल के लिए भुगतान किया और कहा कि मैं यह देखने के लिए वापस आऊंगा कि मुझे कुछ और करने की ज़रूरत है या नहीं।

तीनों मुख्य पात्र, लेवीवंशी, याजक और सामरी में कुछ समानता थी। यह मत सोचिए कि केवल कुछ खास लोगों में ही कुछ खास तरह की मनोवृत्तियां हो सकती हैं। उनमें बहुत कुछ समान था।

- d. उन्होंने वहीं समस्या देखी, वहां एक जरूरतमंद व्यक्ति का खून बह रहा था। बहुत से लोग कहते हैं, "मैं ज्यादा नहीं करता, मैं ज्यादा देता हूं, क्योंकि मेरे पास ज्यादा मौके नहीं हैं।" यह उस आवश्यकता के संपर्क में नहीं है जो एक पुरुष या एक महिला को एक अच्छा नौकर बनाती है। यह रवैया है। वह व्यक्ति नहीं जिसके पास सबसे अधिक अवसर होते हैं, जो सबसे बड़ा सेवक बनता है।
- e. उन सभी को कुछ और करना था।
 यह नहीं है कि आपके पास अपने शेड्यूल में कितना समय है
 जो यह तय करता है कि आप अपने साथी को छूते हैं या नहीं।
 यह वह व्यक्ति है जिसके पास सबसे अच्छा रवैया है। कुछ
 सबसे अच्छे प्रबंधक जिन्हें मैंने कभी जाना है वे सबसे व्यस्त
 लोग भी थे। आप देखते हैं कि इसका आपके एजेंडे से कोई
 लेना-देना नहीं है। इसका आपके शेड्यूल से कोई लेना-देना
 नहीं है। इससे कोई लेना-देना नहीं है कि कितना अवसर है।
- f. उन सभी के पास मदद न करने के कारण थे। उन्हें कुछ काम करना था। वे एक लाश को छूने का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। लेकिन यह सुनिए। सामरी के पास मदद न करने का सबसे महत्वपूर्ण कारण था। यह यहूदियों और सामिरयों के बीच शत्रुता थी। यहूदी सामिरयों से घृणा करते थे। उन्होंने उन्हें अपने चेहरे, कुत्तों पर बुलाया। उस सामरी को देखने के लिए और यह देखने के लिए कि यहूदी वहां खून बह रहा है, यह उस व्यक्ति के लिए बिल्कुल भी असामान्य नहीं होता, जो उस तरह के अलगाव और उत्पीड़न

- a. Look around to see who needs help
- b. Eliminate your excuses
- c. Help them "Just do it."

Amazing Grace Lesson #1106

Questions:

- 1. Match the character(s) with the attitude by circling the appropriate letter.
 - a. What's yours is mine and I'm going to take it.
 - b. What's mine is mine and I'm going to keep it.
 - c. What's mine is yours and I'm going to give it.

| 1. Levite and Priest | a | b | С |
|----------------------|---|---|---|
| 2. Robbers | а | b | С |
| 3. Samaritan | а | b | С |

2. What attitudes did the Priest, Levite and Samaritan have in common?

| а. | They all saw the same problem |
|----|-----------------------------------|
| b. | They all had something else to do |
| с. | They all had reasons not to help |
| d. | All the above |

3. Your ability is more important than your attitude?

e. _____ They did not have anything in common

True _____ False _____

4. Your position in life is just as important or even more important than your attitude.

True _____ False ____

5. Scheduling your time to accomplish the most is very important and has a higher priority than attitude.

True _____ False _____

6. A right attitude is active

True_____ False _____

7. Which of the three men in this parable was "a neighbor" to the injured man?

a. _____ Priestb. _____ Levite

c. ____ Samaritan

Chapter 3

Believe It or Not Conquering Myths of Misery

We've all been taught certain myths as we grow up and most of them are frankly, harmless. But there are some myths that are extremely harmful.

There are just all kinds of things that we've heard and absorbed, that the world has taught us that just aren't true: Myths about yourself, myths about God, and myths about life and the future and money and sex and

- से गुजरा था, जो सामरी लोग कहते थे, "देखो अब कुत्ता कौन हैं।" या, अगर उसके पास आगे बढ़ने और उसे खत्म करने के लिए विशेष रूप से कड़वी भावना थी। लेकिन आप देखते हैं कि रवैया के बारे में सुंदरता है।
- उनके रवैये ने उन्हें अपने पूर्वाग्रह से उबरने में मदद की और यही एकमात्र चीज होगी। आपके और मेरे पूर्वाग्रह हैं। हम उन्हें विकसित करते हैं जैसे हम जीवन से गुजरते हैं और जिस तरह से उन पर विजय प्राप्त की जाएगी वह दृष्टिकोण से है।
- इससे उसे अपनी सुविधा पर विजय प्राप्त करने में मदद मिली। देखिए, हममें से कोई नहीं चाहता कि हमारी सुविधा खराब हो। लेकिन, उस सामरी के रवैये ने उसे अपना गधा, अपना पैसा, अपना समय और सब कुछ दे दिया क्योंकि उसके पास सही रवैया था, इसलिए नहीं कि उसके पास अधिक उपलब्धता या अधिक समय था, बल्कि इसलिए कि उसका रवैया सही था।

चार अवलोकन

- 2. आपका दृष्टिकोण आपकी क्षमताओं से अधिक महत्वपूर्ण है। यह उस व्यक्ति में साबित हुआ जिसकी हम सबसे अधिक प्रशंसा करते थे। हम उस व्यक्ति की सबसे अधिक प्रशंसा करते हैं जिसका दृष्टिकोण सही है। मनोवृत्ति वह तरीका है जिससे हम इस दुनिया को प्रभावित करते हैं न कि रूप या अपने मस्तिष्क से। प्रत्येक व्यक्ति के पास अपने साथी को देने के लिए कुछ है और भगवान को देने के लिए कुछ नहीं है" क्योंकि आप भी सोच रहे होंगे "भगवान ने मुझे कुछ नहीं दिया है।" यह निन्दा के लिए सर्वोपरि है।
- 2. आपकी स्थिति आपके रवैये के आगे कुछ भी मायने नहीं रखती है। इस दृष्टांत में क्लासिक उदाहरण यहीं है। पहले दो पुरुष धार्मिक पुरुष थे। एक लेवीवंशी और एक याजक था। अगर किसी को लोगों की मदद करने के लिए प्रशिक्षित किया गया था, तो वह वे थे। अगर कोई लोगों के लिए अपना जीवन समर्पित करने के लिए स्कूल गया था, तो वह पुजारी और लेवी थे। क्या यह आकर्षक नहीं है कि जिन लोगों को सबसे अधिक प्रशिक्षित किया गया, सबसे अधिक योग्यता प्राप्त की, और सबसे अधिक स्कूली शिक्षा प्राप्त की, उन्होंने सबसे कम मदद की?
- 3. आपका रवैया समय से ज्यादा महत्वपूर्ण है। इस दृष्टांत में गुड सेमेरिटन का समय सबसे खराब था। आप देख सकते हैं कि जब याजक और लेवी वहां से गुजरे तो पीटा गया यहूदी आधा मर चुका था, जब तक कि अच्छा सामरी वहां पहुंचा, तब तक वह शायद तीन-चौथाई मर चुका था। लेकिन इसने उन्हें सेवा करने से नहीं रोका। सही रवैया रखने के लिए समय की तलाश

relationships, myths about heaven and hell. Some of those bring with them some extremely negative consequences.

One myth that undergirds so many of the others is "it doesn't matter" what you believe as long as you're sincere." Have you ever heard that? Sure, you have. It doesn't matter what you believe as long as you're sincere. That sounds so mature, that sounds so accommodating, so politically correct. But the problem with this commonly accepted cliché is, it's absurd. It's absolutely ridiculous, it's naive and it's irrational.

As you go through life, you'll find that so many times there are beliefs that are antithesis of each other; they can't both be true, that's just an impossibility. A few weeks ago, my wife and I had arranged via phone to be at a certain place at a certain time. You know how busy we get, a two-car family kind of thing, and I misunderstood. I believed I was to meet her at a certain place at a certain time and that's not what she believed. Now is it all right to believe whatever you believe as long as you're sincere? We were both sincere, but we never rendezvoused. It cost us both about three hours out of our day. You see you can be sincere, but you can be sincerely wrong.

I was channel surfing the other night and came across the middle of a movie about some terrorists who had gotten in and rearranged the computer and the radar signals for major airports. In this fictitious movie an airplane was coming in to land. The pilot thought they were 300 feet above the ground when in fact as they came through the clouds, the runway was there and they crashed and burned. But you see the pilot thought he was 300 feet above...he was sincere. He was just sincerely wrong.

There are beliefs that we encounter that, if we don't correct them, will cause us to crash and burn. There are some very simple principles about belief. Some of these are going to seem elementary and fundamental, that's because they are. Some of these we aren't even conscious of, but let's go right to the root and build on it.

1. You choose what you believe.

It's true that there are numerous influences on our lives, but nobody forces you to believe anything. If I don't want to believe something, I don't have to. If I want to believe in something, I can. Nobody can stop me. If I want to believe the Bible is the word of God, I can believe that, and I do. If the Republicans and the Democrats are at an impasse, you can choose to believe the Democrats, or you can choose to believe the

न करें। सही दृष्टिकोण रखें और समय को अपने आप काम करने दें। याद रखें कि इस दृष्टांत का उद्देश्य यीशु के लिए इस प्रश्न का उत्तर देना था कि मेरा पड़ोसी कौन है? जीसस कहते हैं कि आपके पडोसी का निकटता, पडोस के जुडाव या समय से कोई लेना-देनां नहीं है। यह वहीं है जिसके पास मदद करने के लिए सही रवैया है।

- 4. एक सही रवैया सक्रिय है। इन तीनों में से कौन उस आदमी का पडोसी था जो लुटेरों के हाथों में पड गया था, कानून के विशेषज्ञ ने उत्तर दिया, जिसने उस पर दया की थी? यीशू ने उस से कहा, जा और ऐसा ही कर।
 - d. यह देखने के लिए चारों ओर देखें कि किसे सहायता की आवश्यकता है
 - e. अपने बहाने हटाओ
 - f. उनकी मदद करें "बस करो।"

ਮੁਟੁਮੁਰ ਮੁਜਗਫ਼ ਧਾਨ #1106

प्राथमिकता है।

6. एक सही रवैया सक्रिय है

Ţ

| ગવ્ | 3(13)3/8 410 #1100 | | | |
|------|--------------------------|----------------|-------------|--------------|
| प्रश | ान: | | | |
| 4. | उपयुक्त अक्षर पर गोला | बनाकर चरिः | त्र(नों) को | मनोवृत्ति से |
| | सुमेलित कीजिए। | | | |
| | एक। जो त्म्हारा है वह म | नेरा है और मैं | इसे लेने | जा रहा हूँ। |
| | b. जो मेरा है वह मेरा है | और मैं इसे | रखने जा | रहा हूं। 📜 |
| | सी। जो मेरा है वह तुम्हा | रा है और मैं इ | इसे देने र | जा रहा हूं। |
| | 1. लेवीवंशी और य | ाजक a | बी | सी |
| | 2. लुटेरे | एक | बी | सी |
| | 3. सामरी | एक | बी | सी |
| 5. | याजक, लेवी और सामरी | की कौन-सी | मनोवृत्ति | समान थी? |
| | एक। उन सभी व | | • | |
| | बी। उन सभी के | | | |
| | सी। उन सभी के | | _ | ' |
| | डी। सब से ऊपर | - | | |
| | इ। उनमें कुछ भ | | ां था | |
| | ` 3 | | | |
| 6. | आपकी क्षमता आपके रवै | ये से ज्यादा | महत्वपू | र्ण है? |
| | सत्य अर | सत्य | | |
| 4. 3 | जीवन में आपकी स्थिति अ | गपके दृष्टिक | ोण से उ | तनी ही |
| | महत्वपूर्ण या उससे भी आं | धिक महत्वपृ | र्ण है। | |
| | सत्य अर | सत्य | • | |
| 5. ₹ | सबसे अधिक पूरा करने के | लिए अपना र | प्तमय नि | र्धारित करना |
| | बह्त महत्वपूर्ण है और ह | हिष्टिकोण की | तुलनाः | में उच्च |

असत्य

Republicans. It doesn't make any difference; you can choose to believe whatever you want.

Nobody forces you to believe anything. The point is you can't blame anybody else for what you believe. My parents, my teachers, my peers, they influence my belief, but they don't control them. This is a key point as we analyze the beliefs that we have. You may find you've embraced a belief that's been wrong for years, but you can change that belief.

God said in Proverbs 8:10 "Choose my instructions, instead of silver." In Romans 1:25, Paul was talking about some depraved godless people and said, "They exchanged the truth of God for a lie." Do you see the two things these verses have in common? The idea is choice, choosing what you believe.

2. Your beliefs control your behavior.

In other words, they determine how I act. Proverbs 4:23 in the NIV says, "Above all else, guard your heart, for it is the well-spring of life." I like the way the Good News translation renders this particular proverb, "Be careful what you think, for your life is shaped by your thoughts." That's exactly right. The old King James Version says, "As a man thinketh in his heart, so is he."

There is a belief behind every single action that you take in life? When you sit down in a chair, you believe consciously or unconsciously that it's going to support your weight. Now for some of us that could take a great act of faith, but that's the belief. When you went out to your car this morning, put the key into the ignition and turned it, you believed the car was going to start. Every action we take has a belief behind it. The problem comes when my beliefs are wrong; because my beliefs will still determine my behavior.

Look at some practical applications. If you believe that you are an ornery person, how do you think you're going to act? Pretty ornery. If you believe you are a clumsy person, you'll find yourself stumbling over everything. If you believe you can't trust anybody else, you're going to go through life looking at everybody suspiciously. You'll act like they can't be trusted. If you believe that you cannot understand the Bible, you'll never read it. If you believe that God doesn't really care about you, you will not pray. If you believe God is out to get you, you will do everything you can to avoid God. See every

| सत्य | असत्य | |
|--------|--------|--|
| \'\\ ' | O. (.) | |

7. इस दृष्टान्त के तीन व्यक्तियों में से कौन घायल व्यक्ति का "पड़ोसी" था?

- j. ____ पुजारी
- k. ____ लेवी
- 1. ____ सामरी

अध्याय 3

मानिए या न मानिए दुख के मिथकों पर विजय प्राप्त करना

जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं हम सभी को कुछ मिथक सिखाए जाते हैं और उनमें से अधिकांश स्पष्ट रूप से, हानिरहित होते हैं। लेकिन कुछ मिथ ऐसे भी होते हैं जो बेहद हानिकारक होते हैं।

बस हर तरह की चीजें हैं जिन्हें हमने सुना और अवशोषित किया है, कि दुनिया ने हमें सिखाया है कि बस सच नहीं हैं: अपने बारे में मिथक, भगवान के बारे में मिथक, और जीवन और भविष्य के बारे में मिथक और पैसा और सेक्स और रिश्ते, स्वर्ग और नरक के बारे में मिथक। उनमें से कुछ अपने साथ कुछ बेहद नकारात्मक परिणाम लेकर आते हैं।

एक मिथक जो कई अन्य लोगों से जुड़ा है, वह है "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता" जब तक आप ईमानदार हैं, तब तक आप क्या मानते हैं। क्या आपने कभी ऐसा सुना है? ज़रूर, आपके पास है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या मानते हैं, जब तक आप ईमानदार हैं। यह इतना परिपक्क लगता है, यह इतना मिलनसार, इतना राजनीतिक रूप से सही लगता है। लेकिन इस आम तौर पर स्वीकृत क्लिच के साथ समस्या यह है कि यह बेतुका है। यह बिल्कुल हास्यास्पद है, यह भोला है और यह तर्कहीन है।

जैसे-जैसे आप जीवन से गुजरते हैं, आप पाएंगे कि कई बार ऐसी मान्यताएं होती हैं जो एक-दूसरे के विपरीत होती हैं; वे दोनों सच नहीं हो सकते, यह सिर्फ एक असंभवता है। कुछ हफ्ते पहले, मैंने और मेरी पत्नी ने एक निश्चित समय पर एक निश्चित स्थान पर रहने के लिए फोन के माध्यम से व्यवस्था की थी। आप जानते हैं कि हम कितने व्यस्त हो जाते हैं, एक दो-कार परिवार की तरह, और मुझे गलत समझा। मुझे विश्वास था कि मुझे उससे एक निश्चित समय पर एक निश्चित स्थान पर मिलना है और वह ऐसा नहीं मानती थी। अब जब तक आप ईमानदार हैं, तब तक जो कुछ भी आप मानते हैं, उस पर विश्वास करना ठीक है? हम दोनों ईमानदार थे, लेकिन हमने कभी मुलाकात नहीं की। यह हम दोनों को हमारे दिन के लगभग तीन घंटे खर्च करता है। आप देखते हैं कि आप ईमानदार हो सकते हैं।

action you have has behind it a corresponding belief. The point is, even if your beliefs are wrong, they affect your behavior, so all our beliefs must be examined.

3. The world bombards us with false beliefs.

I mean bombards us. One place to find these is the checkout line in the grocery store. Look over the Enquirer and Globe headlines. Every week there's a new cure for cancer, if you will just eat this the cancer will go away. I'd like to believe that, except right beside that article is one about the latest alien to visit earth. A preacher friend of mine clipped out one I really enjoyed. It said, "New Discovery – Fat Burning Prayers." The whole article said, "You just pray these prayers, and the pounds will melt away."

It's hard to know what to believe anymore, isn't it? We used to say, "I'll believe when I see it." But you can't even trust that anymore. Technology has come up with a thing called, "Virtual Reality." They blend fact and fiction so that you can't tell the difference such as the movies Forrest Gump and Jurassic Park. So, we really can't determine if what we see is real or not. The following are my own top ten myths that are fostered on these television talk shows. They are not funny. But these are some cultural myths that people are buying into without exception.

- a. My happiness comes over my responsibility.
- b. You'll be happy if you get what you want. (That's a lie.)
 - c. The world owes you a living and happiness.
- d. All beliefs are equally valid. (Discussed in this lesson.)
- e. You can have it all. (No, you must sacrifice something.)
 - f. There is never any reason to feel guilty.
- g. You shouldn't have to wait for anything.
- h. Man is basically good and unselfish.
- i. All your problems are somebody else's fault.
- j. The answer lies within you because we're all God.

(Propagated on talk shows) If the answer was within me, I would have figured it out a long time ago. Wouldn't you?

You see those are the kind of things that over and over again, we're hearing. Over 2,000 years ago when he was in his 90's the apostle John warned "Dear Friends, do not believe every spirit, but test the spirits to see

मैं दूसरी रात चैनल सिर्फंग कर रहा था और कुछ आतंकवादियों के बारे में एक फिल्म के बीच में आया था, जो प्रमुख हवाई अड्डों के लिए कंप्यूटर और रडार सिग्नल में घुस गए थे और उन्हें पुनर्व्यवस्थित कर चुके थे। इस काल्पनिक फिल्म में एक हवाई जहाज लैंड करने के लिए आ रहा था। पायलट ने सोचा कि वे जमीन से 300 फीट ऊपर हैं, जब वास्तव में वे बादलों के माध्यम से आए, रनवे वहां था और वे दुर्घटनाग्रस्त हो गए और जल गए। लेकिन आप देखिए पायलट को लगा कि वह 300 फीट ऊपर हैं...वह ईमानदार था। वह सिर्फ ईमानदारी से गलत था।

ऐसी मान्यताएँ हैं कि हमारा सामना होता है, यदि हम उन्हें ठीक नहीं करते हैं, तो हम दुर्घटनाग्रस्त हो जाएंगे और जल जाएंगे। विश्वास के बारे में कुछ बहुत ही सरल सिद्धांत हैं। इनमें से कुछ प्राथमिक और मौलिक प्रतीत होने वाले हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि वे हैं। इनमें से कुछ के बारे में हम जानते भी नहीं हैं, लेकिन आइए सही जड तक जाएं और उस पर निर्माण करें।

आप वही चुनते हैं जो आप मानते हैं।

यह सच है कि हमारे जीवन पर कई प्रभाव पड़ते हैं, लेकिन कोई भी आपको किसी भी बात पर विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करता है। अगर मैं किसी बात पर विश्वास नहीं करना चाहता, तो मुझे ऐसा करने की जरूरत नहीं है। अगर मैं किसी चीज पर विश्वास करना चाहता हूं, तो मैं कर सकता हूं। मुझे कोई नहीं रोक सकता। यदि मैं विश्वास करना चाहता हूँ कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, तो मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ, और मैं करता हूँ। यदि रिपब्लिकन और डेमोक्रेट एक गतिरोध में हैं, तो आप डेमोक्रेट पर विश्वास करना चुन सकते हैं, या आप रिपब्लिकन पर विश्वास करना चुन सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; आप जो चाहें उस पर विश्वास करना चुन सकते हैं।

कोई भी आपको कुछ भी विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करता है। मुद्दा यह है कि आप जो मानते हैं उसके लिए आप किसी और को दोष नहीं दे सकते। मेरे माता-पिता, मेरे शिक्षक, मेरे साथी, वे मेरे विश्वास को प्रभावित करते हैं, लेकिन वे उन्हें नियंत्रित नहीं करते हैं। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है क्योंकि हम उन मान्यताओं का विश्लेषण करते हैं जो हमारे पास हैं। आप पा सकते हैं कि आपने एक ऐसा विश्वास अपनाया है जो वर्षों से गलत है, लेकिन आप उस विश्वास को बदल सकते हैं।

परमेश्वर ने नीतिवचन 8:10 में कहा, "चान्दी के बदले मेरी आज्ञा को चुन ले।" रोमियों 1:25 में, पॉल कुछ भ्रष्ट भ्रष्ट लोगों के बारे में बात कर रहा था और कहा, "उन्होंने झूठ के लिए भगवान की सच्चाई का आदान-प्रदान किया।" क्या आप देखते हैं कि इन पदों में दो बातें समान हैं? विचार पसंद है, जो आप मानते हैं उसे चुनना।

whether they are from God" (1 John 4:1) and "For everything in the world - the cravings of sinful man, the lust of his eyes and the boasting of what he has and does, comes not from the Father but from the world." (1 John 2:16) The world is bombarding us with false beliefs.

4. False beliefs.

A belief doesn't have to be true to affect your happiness and your emotional stability. If somebody ran in through one of the doors right now and began yelling, "Fire! Fire!" but there's no fire. It wouldn't make a lot of difference for a lot of us, because as soon as you heard somebody that emphatically screaming that alarm, you'd believe it. Then a number of things would happen. Your pulse would become rapid, your blood pressure would elevate, your muscles would tighten, and your stomach would begin to secrete acid. You would become just a nervous wreck, great emotional turmoil, even though it's not true.

That happens all the time in everyday life, and you don't even realize it. You worry about things that are not true. You're afraid of things that aren't real. You rely on things to give your life meaning and purpose that never were designed to do that. The result is confusion and misery. So even if a belief is not true, it still causes emotional turmoil in your life. If you want to overcome stress, guilt, anger, worry and emotional problems, you've got to clarify and correct the misbeliefs in your life.

I found a statement by a psychologist, Dr. Chris Thurman. He said, "Truth is the road map for negotiating the difficult challenges of life. Without it we get lost and develop emotional problems that tell us we're lost. We often settle for half-truth or no truth at all because it's easier." That's a great line, he's right. There are some made by psychologists I don't agree with, but I think he is right on target. He also said, "But truth is the only road to emotional health, there is no other path." That's a great quote, but Jesus had a better one. It was more powerful and more concise and said essentially the same thing. "You shall know the truth, and the truth will make you free." (John 8:32)

The goal of this series of lessons is to expose the lies that we've been taught and that some of us have bought into. We're going to also unveil the truth, and the truth 4. आपकी मान्यताएं आपके व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। दूसरे शब्दों में, वे निर्धारित करते हैं कि मैं कैसे कार्य करता हूँ। नीतिवचन 4:23 एनआईवी में कहता है, "सबसे बढ़कर, अपने हृदय की रक्षा कर, क्योंकि यह जीवन का सोता है।" जिस तरह से गुड न्यूज अनुवाद इस विशेष कहावत को प्रस्तुत करता है, मुझे पसंद है, "आप जो सोचते हैं उससे सावधान रहें, क्योंकि आपका जीवन आपके विचारों से आकार लेता है।" यह बिल्कुल सही है। पुराना राजा जेम्स वर्शन कहता है, "जैसा मनुष्य अपने मन में सोचता है, वैसा ही वह भी है।"

जीवन में आपके द्वारा की जाने वाली हर एक क्रिया के पीछे एक विश्वास है? जब आप किसी कुर्सी पर बैठते हैं, तो आप जान-बूझकर या अनजाने में विश्वास करते हैं कि यह आपके वजन का समर्थन करने वाला है। अब हम में से कुछ के लिए जो विश्वास का एक बड़ा कार्य कर सकता है, लेकिन यह विश्वास है। जब आप आज सुबह अपनी कार के लिए निकले, तो चाबी को इग्निशन में डालकर घुमाया, आपको लगा कि कार स्टार्ट होने वाली है। हम जो भी कार्य करते हैं उसके पीछे एक विश्वास होता है। समस्या तब आती है जब मेरे विश्वास गलत होते हैं; क्योंकि मेरे विश्वास अभी भी मेरे व्यवहार को निर्धारित करेंगे।

कुछ व्यावहारिक अनुप्रयोगों को देखें। यदि आप मानते हैं कि आप एक अलंकृत व्यक्ति हैं, तो आपको क्या लगता है कि आप कैसे कार्य करने जा रहे हैं? सुंदर अलंकत। यदि आप मानते हैं कि आप एक अनाडी व्यक्ति हैं, तो आप स्वयं को हर चीज में ठोकर खाते हुए पाएंगे। अगर आपको लगता है कि आप किसी और पर भरोसा नहीं कर सकते हैं. तो आप हर किसी को शक की नजर से देखते हुए जीवन गुजारेंगे। आप ऐसे कार्य करेंगे जैसे उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यदि आप मानते हैं कि आप बाइबल को नहीं समझ सकते हैं, तो आप इसे कभी नहीं पढेंगे। यदि आप मानते हैं कि परमेश्वर वास्तव में आपकी परवाह नहीं करता है, तो आप प्रार्थना नहीं करेंगे। यदि आप मानते हैं कि परमेश्वर आपको पाने के लिए तैयार है, तो आप परमेश्वर से बचने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। देखें कि आपके प्रत्येक कार्य के पीछे एक संगत विश्वास है। बात यह है कि. भले ही आपके विश्वास गलत हों. वे आपके व्यवहार को प्रभावित करते हैं, इसलिए हमारे सभी विश्वासों की जांच होनी चाहिए।

3. दुनिया हम पर झूठे विश्वासों की बौछार करती है। मेरा मतलब है हम पर बमबारी। इन्हें खोजने का एक स्थान किराने की दुकान में चेकआउट लाइन है। इन्कायरर और ग्लोब की सुर्खियों को देखें। हर हफ्ते कैंसर का एक नया इलाज होता है, अगर आप इसे खा लेंगे तो कैंसर दूर हो जाएगा। मुझे विश्वास है कि, will set you free from those things that bring misery to your life.

5. The only source of absolute truth is God.

Mark that well. He is the only source of absolute truth.

"I, the Lord, speak the truth; I declare what is right."

(Isaiah 45:19) Jesus, who was the Son of God, was God come in the flesh. John said, "'I am the way, I am the truth, and I am the life. No one comes to the Father except by me." (John 14:6)

The fundamental question that you need to ask yourself and every human being has to ask whether you're a Christian or not is: What is going to be the authority of my life? What is going to be my standard? What is going to be my compass? What is going to be my guide? What am I going to base my life on?

You have got two options. You can base it on the world, or you can base it on the Word. You either have what man says, and man will say a million different contradictory things, or you can have what God says. You can build your life on what culture says, or upon what Christ says. Which of those two do you think is more reliable?

The problem is not just that man is often dishonest and will share outright lies; the problem with man is that we are so ignorant that even when we think we're telling the truth, we don't know all the truth. Newsweek magazine has a section called Conventional Wisdom. Have you seen that? Think about what that means. Conventional Wisdom means it's wise today. Real wisdom is never conventional; real wisdom is eternal. One of the problems with man is we're always learning more. So, we have a hard time discovering what's infinitely wise.

I noticed something a few years ago that some of you can really relate to. Seventy-three million of us are Baby Boomer children who were raised on the second best-selling book of all time, second only to the Bible. Do you know what that book is? Dr. Spock's Baby Book. He wrote it, "How to Rear Your Children." An entire generation of Americans was brought up on that book. The only problem is that just a few years ago, in his seventies, Dr. Spock publicly held a press conference and he said, "Whoops! I was wrong." You were what? It's too late, I'm dysfunctional. What do you mean you were wrong? An entire generation was reared on a man's

उस लेख के ठीक बगल में छोड़कर, पृथ्वी पर आने वाले नवीनतम एलियन के बारे में है। मेरे एक उपदेशक मित्र ने एक को काट दिया, जिसका मुझे बहुत आनंद आया। इसने कहा, "नई खोज -फैट बर्निंग प्रार्थना।" पूरे लेख में कहा गया है, "आप बस इन प्रार्थनाओं को प्रार्थना करें. और पाउंड पिघल जाएंगे।"

यह जानना कठिन है कि अब किस पर विश्वास किया जाए, है ना? हम कहा करते थे, "जब मैं इसे देखूंगा तो मुझे विश्वास हो जाएगा।" लेकिन आप अब उस पर भरोसा भी नहीं कर सकते। प्रौद्योगिकी "वर्चुअल रियलिटी" नामक एक चीज़ लेकर आई है। वे तथ्य और कल्पना का मिश्रण करते हैं ताकि आप अंतर न बता सकें जैसे कि फॉरेस्ट गंप और जुरासिक पार्क फिल्में। इसलिए, हम वास्तव में यह निर्धारित नहीं कर सकते कि जो हम देखते हैं वह वास्तविक है या नहीं। मेरे अपने शीर्ष दस मिथक निम्नलिखित हैं जिन्हें इन टेलीविज़न टॉक शो में बढ़ावा दिया गया है। वे मजािकया नहीं हैं। लेकिन ये कुछ सांस्कृतिक मिथक हैं जिन्हें लोग बिना किसी अपवाद के खरीद रहे हैं।

एक। मेरी खुशी मेरी जिम्मेदारी पर आती है। बी। आप जो चाहते हैं वह मिल जाएगा तो आपको खुशी होगी। (यह एक झूठ है।) सी। दुनिया आपको एक जीवित और खुशी देती है। डी। सभी मान्यताएं समान रूप से मान्य हैं। (इस पाठ में चर्चा की गई है।) ई। आप यह सब रख सकते है। (नहीं, आपको कुछ त्याग करना होगा।) च। दोषी महसूस करने का कोई कारण नहीं है। जी। आपको किसी चीज का इंतजार नहीं करना चाहिए। एच। मनुष्य मूल रूप से अच्छा और निःस्वार्थ है। मैं। आपकी सारी समस्याएं किसी और की गलती हैं। जे। इसका उत्तर आपके भीतर है क्योंकि हम सब भगवान हैं।

(टॉक शो में प्रचारित) अगर जवाब मेरे अंदर होता, तो मैं बहुत पहले ही इसका पता लगा लेता। आप नहीं करेंगे?

आप देखते हैं कि इस तरह की चीजें बार-बार सुनने को मिलती हैं। 2,000 से अधिक वर्ष पहले जब वह 90 के दशक में था, तो प्रेरित यूहन्ना ने चेतावनी दी थी "प्रिय मित्रो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं" (1 यूहन्ना 4:1) और "संसार की हर वस्तु के लिए" - पापी मनुष्य की लालसा, उसकी आंखों की लालसा, और जो कुछ उसके पास है और करता है उस पर घमण्ड पिता की ओर से नहीं, परन्तु जगत की ओर से होता है।" (1 यूहन्ना 2:16) संसार हम पर झूठे विश्वासों की बौछार कर रहा है।

४. झूठी मान्यताएं।

theories and he comes to find out those were never correct in the first place. That's Conventional Wisdom.

The average life span of a science text used at the college level today is 18 months. That's the life span of a science text. In that kind of environment, you don't put your faith on something that you can't depend upon tomorrow, otherwise you might think you're climbing the ladder of success and you find out it's leaning against the wrong wall.

What am I going to base my life on? Jesus said, ""Heaven and earth will pass away, but my words will never pass away." (Luke 21:33) David said "Your word, O Lord, is eternal; it stands firm in the heavens." (Psalm 119:89) People, God's word has stood the test of time like nothing else ever has or ever will. You can trust it as your standard and your compass and your guidebook because it's not based on conventional wisdom, it's based upon on the very character and ultimate knowledge of God. He is the only source of absolute truth.

6. Build your life on God's truth!

It's the key. Now God's truth is found on every page of the Bible. I encourage you to read every bit of it, if you will. It is ultimately and most clearly embodied in Jesus Christ. One of the reasons 1 Peter 2:21 says Jesus came, is that he came to give us an example. A lot of us hear and a lot of us read, but most of us learn better when we actually see a model. Jesus was God come in the flesh. He said, "I am the way, I am the truth, and I am the life." In everything he said, in everything he did, in everything he was, it was the truth.

While recovering from knee surgery I decided to reread the gospels. I read Matthew, Mark, Luke, and John, because if I'm going to teach you about truth, I want to know this man who said, "I am the truth." Eighty different times in Scripture, Jesus said, "I tell you the truth." Isn't that something? Eighty times, he says emphatically, I want you to hear this. Twenty different times, he said, "Now you've heard it said, but I want to say it to you." Do you know what he was doing? He was clearing up myths that bring misery. He said now here are things you've bought into, but now let me tell you the truth.

As you study things Jesus said and things that other

आपकी खुशी और आपकी भावनात्मक स्थिरता को प्रभावित करने के लिए एक विश्वास का सही होना जरूरी नहीं है। अगर कोई अभी दरवाजे में से एक के माध्यम से भाग गया और चिल्लाना शुरू कर दिया, "आग! आग!" लेकिन आग नहीं है। हममें से बहुतों के लिए इससे बहुत फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि जैसे ही आपने किसी ऐसे व्यक्ति को सुना जो उस अलार्म को जोर से चिल्ला रहा है, आप उस पर विश्वास कर लेंगे। फिर कई बातें होंगी। आपकी नाड़ी तेज हो जाएगी, आपका रक्तचाप बढ़ जाएगा, आपकी मांसपेशियां कस जाएंगी और आपका पेट एसिड का स्नाव करना शुरू कर देगा। आप सिर्फ एक नर्वस मलबे, महान भावनात्मक उथल-पुथल बन जाएंगे, भले ही यह सच न हो।

रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ऐसा हर समय होता है, और आपको इसका एहसास भी नहीं होता है। आप उन चीजों की चिंता करते हैं जो सच नहीं हैं। आप उन चीजों से डरते हैं जो वास्तविक नहीं हैं। आप अपने जीवन को अर्थ और उद्देश्य देने के लिए उन चीजों पर भरोसा करते हैं जिन्हें ऐसा करने के लिए कभी नहीं बनाया गया था। परिणाम भ्रम और दुख है। इसलिए भले ही कोई विश्वास सत्य न हो, फिर भी यह आपके जीवन में भावनात्मक उथल-पुथल का कारण बनता है। यदि आप तनाव, अपराधबोध, क्रोध, चिंता और भावनात्मक समस्याओं को दूर करना चाहते हैं, तो आपको अपने जीवन में गलतफहिमयों को स्पष्ट और सुधारना होगा।

मुझे एक मनोवैज्ञानिक डॉ. क्रिस थुरमन का बयान मिला। उन्होंने कहा, "सत्य जीवन की कठिन चुनौतियों पर बातचीत करने का रोड मैप है। इसके बिना हम खो जाते हैं और भावनात्मक समस्याएं विकसित होती हैं जो बताती हैं कि हम खो गए हैं। हम अक्सर आधे-अधूरे या बिल्कुल भी सच नहीं मानते हैं क्योंकि यह आसान है। " यह एक अच्छी लाइन है, वह सही है। कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा बनाए गए हैं जिनसे मैं सहमत नहीं हूं, लेकिन मुझे लगता है कि वह सही निशाने पर है। उन्होंने यह भी कहा, "लेकिन सच्चाई भावनात्मक स्वास्थ्य का एकमात्र रास्ता है, कोई दूसरा रास्ता नहीं है।" यह एक महान उद्धरण है, लेकिन यीशु के पास एक बेहतर उद्धरण था। यह अधिक शक्तिशाली और अधिक संक्षिप्त था और अनिवार्य रूप से वही बात कही। "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना 8:32)

पाठों की इस श्रृंखला का लक्ष्य उस झूठ को उजागर करना है जो हमें सिखाया गया है और जिसे हम में से कुछ ने खरीदा है। हम सत्य का भी अनावरण करने जा रहे हैं, और सत्य आपको उन चीजों से मुक्त कर देगा जो आपके जीवन में दुख लाती हैं।

5. पूर्ण सत्य का एकमात्र स्रोत ईश्वर है।

biblical writers have shared with us that are true, commit to three things.

a. Commit to seek the truth

Have that desire on your heart. "Have nothing to do with godless myths and old wives' tales; rather, train yourself to be godly." (1 Timothy 4:7) Later Paul warned Timothy, a young preacher, "For the time will come when men will not put up with sound doctrine. Instead, to suit their own desires, they will gather around them a great number of teachers to say what their itching ears want to hear. They will turn their ears away from the truth and turn aside to myths." (2 Timothy 4:3,4)

The point is test everything you hear, see or experience against God's truth. The world, or people around me, may say "It's hot, it's the in thing, everybody's doing it," The truth may declare it's not okay. I could take too long right here giving you a classic example. Let me tell you what pops into my mind. Astrology and the psychic hot lines, those things have to be making millions of dollars, there are too many on television not to be. I'm sure most people that dabble in those things, some of them are serious, some of them are for fun and some of them are just a joke. God's word says it's not funny. I can show you a dozen different passages that say it's wrong, it's evil, stay away from it. I test everything by God's word, even my own experience.

One of the things our generation believes in is personal experience. It's the ultimate truth. If I know it, feel it or sense it, it's got to be the way it is. Now you think about that. If technology can create a virtual reality experience so lifelike that I can't tell if it's false, don't you think the devil can do the same thing? In fact, don't you think he's had that power for years, and years, and years? I test even the experience that I'm convinced I've had against the truth of God's word, and if the two clashes, which do I accept? I accept the truth of God's word, Period. Just because you've experienced it doesn't mean it's right, true, or correct.

Most of us have seen the bumper sticker that says, "God says it, I believe it, that settles it." It's not a bad bumper sticker, but I've got a better one for you: "God said it, that settles it, whether I believe it or not." Whether I believe it or not, it doesn't make any difference; God said it, that's the way it is. Truth is truth whether I believe it or not.

इसे अच्छी तरह से चिह्नित करें। वह परम सत्य का एकमात्र स्रोत है। "मैं, यहोवा, सच बोलता हूं; मैं जो सही है उसकी घोषणा करता हूं।" (यशायाह 45:19) यीशु, जो परमेश्वर का पुत्र था, वह परमेश्वर था जो देह में आया था। यूहन्ना ने कहा, "मार्ग मैं ही हूं, सत्य मैं हूं, और जीवन मैं हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)

बुनियादी सवाल जो आपको खुद से और हर इंसान से पूछने की जरूरत है कि आप ईसाई हैं या नहीं, यह है: मेरे जीवन का अधिकार क्या होगा? मेरा मानक क्या होने जा रहा है? मेरा कंपास क्या होगा? मेरा मार्गदर्शक क्या होने जा रहा है? मैं अपना जीवन किस पर आधारित करने जा रहा हूँ?

आपके पास दो विकल्प हैं। आप इसे दुनिया पर आधारित कर सकते हैं, या आप इसे वचन पर आधारित कर सकते हैं। या तो आपके पास वह है जो मनुष्य कहता है, और मनुष्य एक लाख विभिन्न विरोधाभासी बातें कहेगा, या आपके पास वह हो सकता है जो परमेश्वर कहता है। आप अपने जीवन का निर्माण उस संस्कृति के अनुसार कर सकते हैं जो संस्कृति कहती है, या जो मसीह कहते हैं। इन दोनों में से आपको कौन अधिक विश्वसनीय लगता है?

समस्या सिर्फ यह नहीं है कि आदमी अक्सर बेईमान होता है और झूठ बोलेगा; मनुष्य के साथ समस्या यह है कि हम इतने अज्ञानी हैं कि जब हमें लगता है कि हम सच कह रहे हैं, तब भी हम सब सच नहीं जानते। न्यूज़वीक पत्रिका में पारंपरिक ज्ञान नामक एक खंड है। क्या आपको लगता है कि देखा है? सोचें कि इसका क्या मतलब है। परम्परागत ज्ञान का अर्थ है आज यह बुद्धिमान है। वास्तविक ज्ञान कभी भी पारंपरिक नहीं होता है; वास्तविक ज्ञान शाश्वत है। मनुष्य के साथ एक समस्या यह है कि हम हमेशा अधिक सीख रहे हैं। इसलिए, हमें यह पता लगाने में कठिनाई होती है कि असीम रूप से बुद्धिमान क्या है।

मैंने कुछ साल पहले कुछ देखा था जिससे आप में से कुछ वास्तव में संबंधित हो सकते हैं। हम में से 73 मिलियन बेबी बूमर बच्चे हैं, जिनका पालन-पोषण अब तक की दूसरी सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक में हुआ, जो बाइबल के बाद दूसरे स्थान पर है। क्या आप जानते हैं वह किताब क्या है? डॉ. स्पॉक की बेबी बुक। उन्होंने इसे लिखा, "हाउ टू रीयर योर चिल्ड्रन।" अमेरिकियों की एक पूरी पीढ़ी को उस किताब पर लाया गया था। एकमात्र समस्या यह है कि कुछ साल पहले, अपने सत्तर के दशक में, डॉ स्पॉक ने सार्वजिनक रूप से एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की और उन्होंने कहा, "अरे! मैं गलत था।" तुम क्या थे? बहुत देर हो चुकी है, मैं बेकार हूँ। आपका क्या मतलब है कि आप गलत थे? एक पूरी पीढी को एक आदमी The point is for me to seek it. But where do I seek it? Not from the grocery store checkout lines.

- (1)I seek it in Christ. Jesus said, "I came to this world to testify to the truth." (John 18:37)
- (2) I seek it in the word of God. The Bible says, "Thy word is truth." Proverbs 30:5 says, "The word is flawless."
- (3) I seek it through his church. Paul told Timothy, "You will know how people ought to conduct themselves in God's household which is the church of the living God, the pillar and foundation of the truth." (1 Timothy 3:15)
- b. Commit to believe and embrace the truth. It's not enough to seek it and it's not enough to know it, it has to be embraced. The word, "believe," is another word that popped out at me all the way through the gospel accounts. John 3:18, states, "'Whoever believes in him is not condemned, but whoever does not believe stands condemned already because he has not believed in the name of God's one and only Son." Even the devil has an intellectual ascent of God, a belief and not an embrace.

c. Commit to live the truth

I seek it, I believe and embrace it, and I live it. I obey it. I do it. I start by obeying the gospel putting my trust in the good news that Jesus is truth personified, God who came into the world. This guidebook, His Word [The Bible], shares with us the simple way that's done. It starts with the belief that Jesus is God's son, a belief that leads to us confessing him verbally, declaring to the world your allegiance to him. (Romans 10:9-10) It says once you have a commitment of your heart and your affection to him your whole obedience to the gospel is culminated by an experience called baptism, a physical immersion into water. Before Jesus' atoning death on the cross, He said to Nicodemus "except a man be born of water and of the Spirit, he cannot enter into the kingdom of God." (John 3:5) "All of us who were baptized into Christ Jesus were baptized into his death? We were therefore buried with him through baptism into death in order that, just as Christ was raised from the dead through the glory of the Father, we too may live a new life." (Romans 6:3-4)

Folks, that's the truth about your commitment to Jesus. That's the truth about how you start your life as a Christian, how you become a Christian. From that commitment, you live loving him and walking in the light of God's truth. But it's up to you. Remember you've got the freedom to believe anything you want to believe. But whatever you believe, the truth is still the truth.

के सिद्धांतों पर पाला गया था और वह यह पता लगाने के लिए आता है कि वे पहले कभी भी सही नहीं थे। वह पारंपरिक ज्ञान है।

आज कॉलेज स्तर पर इस्तेमाल किए जाने वाले विज्ञान पाठ का औसत जीवन काल 18 महीने है। यह एक विज्ञान पाठ का जीवन काल है। उस तरह के माहौल में, आप किसी ऐसी चीज़ पर अपना विश्वास नहीं रखते हैं जिस पर आप कल पर निर्भर नहीं रह सकते, अन्यथा आप सोच सकते हैं कि आप सफलता की सीढ़ी चढ़ रहे हैं और आपको पता चलता है कि यह गलत दीवार के खिलाफ झुक रहा है।

मैं अपना जीवन किस पर आधारित करने जा रहा हूँ? यीशु ने कहा, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरे वचन कभी न टलेंगे।" (लूका 21:33) दाऊद ने कहा, "हे प्रभु, तेरा वचन अनन्त है; वह स्वर्ग में स्थिर रहता है।" (भजन 119:89) लोग, परमेश्वर का वचन समय की कसौटी पर खरा उतरा है जैसे किसी और ने न कभी किया है और न कभी होगा। आप इसे अपने मानक और अपने कम्पास और अपनी गाइडबुक के रूप में भरोसा कर सकते हैं क्योंकि यह पारंपरिक ज्ञान पर आधारित नहीं है, यह भगवान के चरित्र और अंतिम ज्ञान पर आधारित है। वह परम सत्य का एकमात्र स्रोत है।

6. परमेश्वर की सच्चाई पर अपना जीवन बनाएँ!
यह कुंजी है। अब बाइबल के हर पन्ने पर परमेश्वर का सत्य पाया
जाता है। मैं आपको इसके हर अंश को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित
करता हूं, यदि आप करेंगे। यह अंततः और सबसे स्पष्ट रूप से
यीशु मसीह में सिन्निहित है। 1 पतरस 2:21 के यीशु के आने का एक
कारण यह है कि वह हमें एक उदाहरण देने आया था। हम में से
बहुत से लोग सुनते हैं और हम में से बहुत से लोग पढ़ते हैं, लेकिन
जब हम वास्तव में एक मॉडल देखते हैं तो हम में से अधिकांश
बेहतर सीखते हैं। यीशु देह में आने वाला परमेश्वर था। उसने कहा,
"मैं ही मार्ग हूं, मैं ही सत्य हूं, और मैं ही जीवन हूं।" उसने जो कुछ
कहा, जो कुछ उसने किया, जो कुछ भी वह था, उसमें सत्य था।

घुटने की सर्जरी से उबरने के दौरान मैंने सुसमाचार को फिर से पढ़ने का फैसला किया। मैंने मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना को पढ़ा, क्योंकि यदि मैं तुम्हें सत्य के बारे में सिखाने जा रहा हूँ, तो मैं इस व्यक्ति को जानना चाहता हूँ जिसने कहा, "मैं सत्य हूँ।" पवित्रशास्त्र में अस्सी अलग-अलग बार, यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं।" यह कुछ नहीं है? अस्सी बार, वह जोर देकर कहता है, मैं चाहता हूं कि आप इसे सुनें। बीस अलग-अलग बार, उन्होंने कहा, "अब आपने इसे कहा सुना है, लेकिन मैं इसे आपसे कहना चाहता हं।" क्या आप जानते हैं कि वह क्या कर रहा था?

But there is a great warning, "They perish because they refused to love the truth and so be saved." (2 Thessalonians 2:10) Somebody asked me the other day: "Will smoking send me to hell?" I said, "Well, I don't know about that, but it will smell like you've been there." But you know let's don't start picking out little sin. We all commit sin. Do you know what's going to send anybody to hell? 2 Thessalonians 2:10 tells us, it is to refuse to accept, love and follow the truth. God does not send anybody to hell; he lets everybody choose what they are going to believe and what they are going to do about those beliefs.

Grace lesson #1244

Amazing

Q

| uestion | | |
|---------|------------------------------|---------------------------|
| 1. | | hat one believes as long |
| | as he is sincere? | |
| | True | False |
| 2. | One is free to choos | e whatever he wishes to |
| | believe? | |
| | True | |
| 3. | What one believes of | does not affect their |
| | action? | |
| | True | False |
| 4. | | s over my responsibility? |
| | Fact | Fiction |
| 5. | You'll be happy if yo | ou get what you want. |
| | Fact Fiction | |
| 6. | The world owes you | a living and happiness. |
| | Fact | Fiction |
| 7. | All beliefs are equal | ly valid. |
| | Fact | Fiction |
| 8. | You can have it all w | vithout any sacrifice. |
| | Fact There is never any r | Fiction |
| 9. | There is never any r | eason to feel guilty. |
| | Fact | Fiction |
| 10. | You shouldn't have | to wait for anything. |
| | Fact | Fiction |
| 11. | Man is basically goo | d and unselfish. |
| | Fact | Fiction |
| 12. | All your problems a | re somebody else's fault. |
| | Fact Fiction | |
| 13. | The answer lies with | nin you because we're all |
| | God. | |
| | Fact Fiction | |
| 14. | The source of absolu | |
| | a Man's | |
| | b Science | ę |
| | c God | |
| 15. | To build a life on Go | d's truth one must |
| | a Commi | it to seek truth |

वह उन मिथकों को मिटा रहा था जो दुख लाते हैं। उन्होंने कहा कि अब यहां वे चीजें हैं जिन्हें आपने खरीदा है. लेकिन अब मैं आपको सच बताता हं।

जब आप उन बातों का अध्ययन करते हैं जो यीशू ने कही हैं और वे बातें जो बाइबल के अन्य लेखकों ने हमारे साथ साझा की हैं. जो सत्य हैं, तीन बातों के लिए प्रतिबद्ध हैं।

b. सत्य की तलाश के लिए प्रतिबद्ध

दिल में वो चाहत रखना। "ईश्वरीय मिथकों और पुरानी पत्नियों की कहानियों से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि खुद को ईश्वरीय बनने के लिए प्रशिक्षित करें।" (1 तीमुथियुस 4:7) बाद में पौलुस ने एक युवा प्रचारक, तीमुथियुस को चेतावनी दी, "क्योंकि वह समय आएगा, जब मनुष्य खरी शिक्षा को न सह सकेंगे। अपनी अभिलाषाओं के अनुसार वे अपने चारों ओर बहुत से शिक्षकों को इकट्ठा करेंगे। कि उनके खुजलाने वाले कान क्या सुनना चाहते हैं, वे अपने कानों को सच्चाई से फेर लेंगे. और मिथकों की ओर फिर जाएंगे।" (२ तीम्थिय्स ४:३,४)

मुद्दा यह है कि आप जो कुछ भी सुनते हैं, देखते हैं या अनुभव करते हैं, वह परमेश्वर की सच्चाई के विरुद्ध है। दुनिया, या मेरे आस-पास के लोग कह सकते हैं, "यह गर्म है, यह बात है, हर कोई इसे कर रहा है," सच यह घोषित कर सकता है कि यह ठीक नहीं है। मैं यहां आपको एक उत्कृष्ट उदाहरण देते हुए बहुत अधिक समय ले सकता हूं। मेरे दिमाग में क्या चल रहा है, मैं आपको बताता हं। ज्योतिष और मानसिक गर्म रेखाएं, उन चीजों को लाखों डॉलर बनाना पडता है, टेलीविजन पर बहुत अधिक नहीं होना चाहिए। मुझे यकीन है कि ज्यादातर लोग उन चीजों में शामिल होते हैं, उनमें से कुछ गंभीर होते हैं, उनमें से कुछ मस्ती के लिए होते हैं और उनमें से कुछ सिर्फ मजाक होते हैं। परमेश्वर का वचन कहता है कि यह हास्यास्पद नहीं है। मैं आपको एक दर्जन अलग-अलग मार्ग दिखा सकता हूं जो कहते हैं कि यह गलत है, यह बुरा है, इससे दूर रहें। मैं हर चीज को परमेश्वर के वचन से परखता हूं, यहां तक कि अपने अनुभव से भी।

हमारी पीढी जिन चीजों में विश्वास करती है उनमें से एक व्यक्तिगत अन्भव है। यह परम सत्य है। अगर मैं इसे जानता हूं, इसे महसूस करता हूं या महसूस करता हूं, तो यह वैसे ही होना चाहिए जैसा यह है। अब आप इसके बारे में सोचें। यदि तकनीक एक आभासी वास्तविकता का अनुभव इतना सजीव बना सकती है कि मैं यह नहीं बता सकता कि क्या यह झूठा है, तो क्या आपको नहीं लगता कि शैतान भी ऐसा ही कर सकता है? वास्तव में, क्या आपको नहीं लगता कि उसके पास वर्षों, और वर्षों, और वर्षों से वह शक्ति है? मैं

Commit to believe and embrace truth Commit All the above to live the c. truth d. _____ There is no absolute truth

Chapter 4

Why Should I Forgive?

Peter asked Jesus one day a long, long time ago "Lord, how many times shall I forgive my brother when he sins against me? Up to seven times?" (Matthew 18:21) What's really written between the lines or the thought behind the lines is: Lord, why do I need to forgive? I find it interesting that Peter asked, "how many times do I need to forgive my brother?" Sometimes it's easier to forgive a onetime offense, even if it's something that's as major as an assassination attempt, than it is to forgive those repeated irritations.

Each of us has one, two, maybe three sources of constant irritation in our lives. "Heavenly sandpaper," I call it, just rubs off our rough edges. Who's your heavenly sandpaper?

Peter asked, "'Lord, how many times shall I forgive my brother?" It didn't dawn on me until this week that there's a chance that Peter could be extremely literal here. He may have been talking about his physical brother. I read just a couple of weeks ago that ninety percent of all resentment occurs in our own families. Most of the resentment that we harbor in our lives is toward people who are closest to us.

You know the old adage: "To dwell above with those we love that will be a glory, but to dwell below with those we know, now that's a different story." Sometimes it is the people who are closest to us. Maybe it was Andrew, Peter's brother. It's not out of the scope of the imagination to consider that Andrew kept leaving the milk out, or squeezed the toothpaste from the middle of the tube, or something which was a constant irritant to Peter. But whether it was Andrew or a figurative brother, Peter was having a hard time with this whole forgiveness question.

Peter may have been expecting Jesus to say, "Peter, that's pretty magnanimous of you. I'm impressed." Jewish law only required that you forgive a brother three times. After you forgave him three times of the same

उस अनुभव का भी परीक्षण करता हूं जो मुझे विश्वास है कि मैंने परमेश्वर के वचन की सच्चाई के खिलाफ किया है, और यदि दो संघर्ष हैं, तो मैं किसे स्वीकार करूं? मैं परमेश्वर के वचन, अविध की सच्चाई को स्वीकार करता हूं। सिर्फ इसलिए कि आपने अनुभव किया है इसका मतलब यह नहीं है कि यह सही है, सच है या सही है।

हम में से अधिकांश ने बम्पर स्टिकर देखा है जो कहता है, "भगवान कहते हैं, मुझे विश्वास है, जो इसे सुलझाता है।" यह एक खराब बम्पर स्टिकर नहीं है, लेकिन मेरे पास आपके लिए एक बेहतर स्टिकर है: "भगवान ने कहा, यह इसे सुलझाता है, चाहे मैं इसे मानूं या नहीं।" मैं मानूं या न मानूं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; भगवान ने कहा, ऐसा ही है। सत्य सत्य है चाहे मैं इसे मानुं या न मानुं।

मेरे लिए इसे खोजने की बात है। लेकिन मैं इसे कहां ढूंढूं? किराने की दुकान चेकआउट लाइनों से नहीं।

- (1)मैं इसे मसीह में ढूंढता हूं। यीशु ने कहा, "मैं इस संसार में सत्य की गवाही देने आया हूं।" (यूहन्ना 18:37)
- (2) मैं इसे परमेश्वर के वचन में ढ़ंढता हूं। बाइबल कहती है. "तेरा वचन सत्य है।" नीतिवचन 30:5 कहता है, "वचन
- (3) मैं इसे उसके चर्च के माध्यम से ढूंढता हूं। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "तुम जान लोगे कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है, और सत्य का खंभा और नेव है, लोगों को कैसा व्यवहार करना चाहिए।" (1 तीम्थिय्स 3:15)

बी। सत्य पर विश्वास करने और उसे अपनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसे खोजना काफी नहीं है और इसे जानना ही काफी नहीं है, इसे गले लगाना होगा। शब्द, "विश्वास," एक और शब्द है जो सुसमाचार के विवरणों के माध्यम से मुझ पर प्रकट हुआ। यूहन्ना 3:18, कहता है, '''जो कोई उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहराया जा चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।" यहां तक कि शैतान का बौद्धिक आरोहण भी है। भगवान, एक विश्वास और एक आलिंगन नहीं।

सी। सच जीने के लिए प्रतिबद्ध

मैं इसे ढूंढता हूं, मैं इसे मानता हूं और इसे गले लगाता हूं, और मैं इसे जीता हूं। मैं इसका पालन करता हूं। मैं करता हूं। मैं सुसमाचार का पालन करने के द्वारा शुरू करता हूँ और इस शुभ समाचार में अपना विश्वास रखता हूँ कि यीश् सत्य व्यक्ति हैं, परमेश्वर जो संसार में आया है। यह गाइडबुक, हिज वर्ड [द बाइबल], हमारे साथ इसे करने का सरल तरीका साझा करती है। यह इस विश्वास के साथ शुरू होता है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है, एक ऐसा विश्वास जो हमें मौखिक रूप से स्वीकार करने की ओर ले जाता है, दुनिया को

offense, you could tell him to get lost. So, Peter could have thought the law says "I ought to forgive my brother three times, I'll double that and I'll add one for good measure." "Lord, do you think it would be all right to forgive a brother seven times?" Our Lord said, "No Peter, would you believe 70 times seven times" or there is no limit to the number of times you need to forgive.

If it's keeping score, it's not really forgiveness. Have you ever kept score with somebody? After Jesus tells Peter, "No, not seven times, but seventy times seven times." Jesus tells a parable, a story, to explain why we must learn to forgive.

The story begins this way. Jesus said, there is a man who is hopelessly in debt to a king. The Bible says in Matthew 18:23-24, that he owes the king ten thousand talents. Now talents were really more a measure of weight than it was of pure money, so it depends upon what the precious metal was. But the debt here is acknowledging all scholars to be millions and millions of dollars. Now that's a major debt! How do you get that far in debt? How can a servant borrow that much money? In those days, whenever you couldn't pay it back, the bankruptcy principle was simple. They simply took your wife and your children and sold them into slavery and put you into prison. That was bankruptcy.

"'The servant fell on his knees before him. 'Be patient with me,' he begged, 'and I will pay back everything.'" (Verse 26) You've got to see the humor in that; it's one of the most hilarious statements I've ever read. A servant owes \$16 million and he says, "give me a few more days". To do what, get a passport and buy a one-way ticket to another country?

I did a little calculation. If he paid back a thousand dollars a day at current interest rates, it would take him 40 years. Now the point of the story, folks, is to show us three reasons that you and I need to forgive other people.

We need to forgive each other because we've been forgiven by God. "The servant's master took pity on him, canceled the debt and let him go." (I've underlined that in my Bible.) Do you know anybody else who will forgive a \$16 million debt? Who will say, all right let's just write it off and let him go? What a king! Completely forgiven. But the point of the parable is: That's nothing compared to the forgiveness that God has given to us, absolutely nothing.

आपकी निष्ठा की घोषणा करता है। (रोमियों 10:9-10) यह कहता है कि एक बार जब आप अपने दिल की प्रतिबद्धता और उसके प्रति आपका स्नेह रखते हैं, तो सुसमाचार के प्रति आपकी पूरी आज्ञाकारिता बपितस्मा नामक एक अनुभव, पानी में एक शारीरिक विसर्जन के द्वारा परिणित होती है। क्रूस पर यीशु की प्रायश्चित मृत्यु से पहले, उसने नीकुदेमुस से कहा, "यदि कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 3:5) " हम सभी जिन्होंने मसीह यीशु में बपितस्मा लिया था, उनकी मृत्यु में बपितस्मा लिया गया था? इसलिथे हम उसके साथ मृत्यु के बपितस्मे के द्वारा गाड़े गए, कि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी एक नया जीवन जीएं।" (रोमियों 6:3-4)

दोस्तों, यह यीशु के प्रति आपकी प्रतिबद्धता के बारे में सच्चाई है। यह सच्चाई है कि आप एक ईसाई के रूप में अपना जीवन कैसे शुरू करते हैं, आप एक ईसाई कैसे बनते हैं। उस प्रतिबद्धता से, आप उससे प्रेम करते हुए और परमेश्वर के सत्य के प्रकाश में चलते हुए जीते हैं। लेकिन यह आप पर निर्भर है। याद रखें कि आपको किसी भी चीज़ पर विश्वास करने की आज़ादी मिली है, जिस पर आप विश्वास करना चाहते हैं। लेकिन आप जो कुछ भी मानते हैं, सत्य अभी भी सत्य है।

लेकिन एक बड़ी चेतावनी है, "वे नाश हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम करने से इन्कार कर दिया और इसलिए बचाया जाना।" (2 थिस्सलुनीकियों 2:10) दूसरे दिन किसी ने मुझसे पूछा: "क्या धूम्रपान मुझे नरक में भेज देगा?" मैंने कहा, "ठीक है, मुझे इसके बारे में पता नहीं है, लेकिन इससे ऐसी गंध आएगी जैसे आप वहां गए हों।" लेकिन आप जानते हैं कि आइए छोटे पापों को चुनना शुरू न करें। हम सब पाप करते हैं। क्या आप जानते हैं कि क्या किसी को नर्क में भेजने वाला है? 2 थिस्सलुनीकियों 2:10 हमें बताता है, यह स्वीकार करने से इनकार करना, प्यार करना और सच्चाई का पालन करना है। भगवान किसी को नर्क में नहीं भेजते; वह हर किसी को यह चुनने देता है कि वे क्या विश्वास करने जा रहे हैं और वे उन विश्वासों के बारे में क्या करने जा रहे हैं। अद्भुत अनुग्रह पाठ #1244

प्रशन:

| 16. | इससे कोई फर्व | h नहीं पड़ता कि कोई क्या मानता है जब |
|-----|---------------|--------------------------------------|
| | तक वह ईमान | दार है? |
| | सत्य | असत्य |
| | | <u> </u> |

17. वह जो कुछ भी विश्वास करना चाहता है उसे चुनने के लिए स्वतंत्र है?

सत्य ____ असत्य ____

18. क्या कोई मानता है कि उनकी कार्रवाई को प्रभावित नहीं करता है? Here's the parallel. I owe a debt to God, and you do, too. The Bible even calls it a sin debt. When I transgress against God, it builds up a debt to owe to him that I can never repay. The Bible says, in Romans 3:23, "All of us have sinned and fallen short of the glory of God." The Scripture makes it abundantly clear, I can't pay my debt, you can't pay yours, but God has chosen in His love through the gift of His Son Jesus as the perfect sacrifice to forgive us, to wipe the slate clean, to cancel the debt and say, "Let's just start over." That is the gospel, the Good News. It's all tied up in the death, burial, and resurrection of Jesus. The good news Jesus has for us when we obediently come to Him confessing, repenting and being baptized in His name asking Him to forgive and wipe our slate clean.

God expects me to do for others what he's done for me. In fact, that's really the message. How would you feel if you just had a \$16 million debt wiped clean? Would you feel relief, joy and freedom? Those words may be too shallow. How about excitement, ecstasy or undying gratitude? How do you think you would treat people if you had just been forgiven of a \$16 million debt that was hovering over your head? Don't you think you'd be easygoing? Don't you think you would say, "Yes, I'm in a great mood? That's all right, I'll forgive you."

Look at this servant's reaction beginning in verse 28. "But when that servant went out, he found one of his fellow servants who owed him a hundred denarii, equivalent to one hundred days wages. He grabbed him and began to choke him. 'Pay back what you owe me!' he demanded. 'His fellow servant fell to his knees and begged him, 'Be patient with me, and I will pay you back.' 'But he refused. Instead, he went off and had the man thrown into prison'" Now can you believe that? He owed \$16 million to his boss and he was forgiven. Now his fellow servant owes him a hundred denarii, extremely small compared to the amount he had been forgiven by his master. He refuses to show any mercy instead he throws him into prison.

You say, how in the world can he respond that way? That servant who owed the cancelled \$16 million debt didn't really feel forgiven. He still, for whatever reason, felt like a sword was still hanging over his head. So, he was foolishly trying to collect such a small amount to still pay off this perceived \$16 million debt.

The real tragedy is that a lot of Christians live that way today. They obey the gospel, they came to Christ and the sin debt is cancelled; but they still live their lives feeling, Lord, I'll make it up to you. I know I owe you a lot, so I'm going to pay that off. I'll work off my sin debt knowing that they never can. They are demanding,

| सत्य असत्य |
|---|
| 19. मेरी खुशी मेरी जिम्मेदारी पर आती है? |
| तथ्य उपन्यास |
| 20. आप जो चाहते हैं वह मिल जाएगा तो आपको खुशी |
| होगी। |
| तथ्य उपन्यास |
| 21. दुनिया आपको एक जीवित और खुशी देती है। |
| तथ्य उपन्यास |
| 22. सभी मान्यताएं समान रूप से मान्य हैं। |
| तथ्य उपन्यास |
| 23. आप यह सब बिना किसी त्याग के प्राप्त कर सकते हैं। |
| तथ्य उपन्यास |
| 24. दोषी महसूस करने का कोई कारण नहीं है। |
| तथ्य उपन्यास |
| 25. आपको किसी चीज का इंतजार नहीं करना चाहिए। |
| तथ्य उपन्यास |
| 26. मनुष्य मूल रूप से अच्छा और निःस्वार्थ है। |
| तथ्य उपन्यास |
| 27. आपकी सारी समस्याएं किसी और की गलती हैं। |
| तथ्य उपन्यास |
| 28. इसका उत्तर आपके भीतर है क्योंकि हम सब भगवान |
| हैं । |
| तथ्य उपन्यास |
| 29. परम सत्य का स्रोत है |
| aमनुष्य की बुद्धि |
| b विज्ञान |
| c भगवान |
| 30. परमेश्वर के सत्य पर जीवन का निर्माण करने के लिए |
| जरूरी है |
| a सत्य की तलाश करने के लिए प्रतिबद्ध |
| b सत्य पर विश्वास करने और उसे अपनाने |
| के लिए प्रतिबद्ध हैं सम्बन्ध की की के लिए स्परोदन सभी की |
| c सत्य को जीने के लिए उपरोक्त सभी को प्रतिबद्ध करें |
| d कोई पूर्ण सत्य नहीं है |
| |
| याय ४ |

अध

exacting, and unforgiving to other people around them in their frustrations. Sadly, I've seen all too much of that. That is why it is so important that every Christian understand grace. When you believe you are forgiven, you will be able to forgive others and not until.

Notice the first servant's harshness in the parable. He grabbed and began to choke that second servant demanding that he pay his debt. Under Roman law you could do that. If somebody owed you money, you could go choke him until he paid. But after this guy choked him a while and didn't squeeze anything out of him, he had him thrown into jail.

Whenever you find someone harsh, judgmental, hypercritical, negative, unforgiving, and ungracious, he is carrying with him unresolved guilt. A judgmental and negative person, who is always putting someone else down, never extending to anybody the offer of forgiveness, is carrying unresolved guilt. When we feel unforgiven, we tend to be unforgiving. Sometimes you see that in parents. You see a parent who is demanding, rigid and overbearing. They are reacting to the guilt that they feel as a parent. Sometimes you see it in bosses. Sometimes you see it in coworkers. Paul said in Ephesians 4:32, "'Be kind and compassionate to one another, forgiving each other, just as in Christ God forgave you." The key to forgiveness is to recognize how much God forgives me today.

Resentment makes me miserable.

It's a hell on earth. It tortures you. Look with me in the parable at verse 31, "'When the other servants saw what had happened," (this was after the first one had tossed the second one in jail) "'they were greatly distressed and went and told their master everything that had happened. Then the master called the servant in. 'You wicked servant,' he said, 'I canceled all that debt of yours because you pleaded with me. Shouldn't you have had mercy on your fellow servant just as I had on you?' In anger his master turned him over to the jailers to be tortured, until he should pay back all he owed." See, when the king found out how unforgiving his servant was, he went to him and said, if you're going to be that way, I'll be that way, too. He then handed him over to the jailer to be tortured.

Somebody asked if this parable is a symbol of hell. Yes, it is, but it's also symbolic of a hell on earth. Because when resentment gets inside you and resentment grows and infects you, it tortures you, and it locks you up in a prison. It destroys you far more than it does the person you hate and won't forgive. The question we need to ask ourselves from time to time is are bitter and unforgiven actions robbing us of happiness? What hurt is still hurting you? If you find one someday, let it go. It's only

मुझे क्यों क्षमा करना चाहिए?

पतरस ने एक दिन बहुत समय पहले यीशु से पूछा था, "हे प्रभु, मैं अपने भाई को कितनी बार क्षमा करूंगा, जब वह मेरे विरुद्ध पाप करेगा? सात बार तक?" (मत्ती 18:21) वास्तव में रेखाओं या रेखाओं के पीछे के विचार के बीच क्या लिखा है: हे प्रभु, मुझे क्षमा करने की आवश्यकता क्यों है? मुझे यह दिलचस्प लगता है कि पीटर ने पूछा, "'कितनी बार मुझे अपने भाई को माफ करने की आवश्यकता है?" कभी-कभी एक बार के अपराध को माफ करना आसान होता है, भले ही यह कुछ ऐसा हो जो हत्या के प्रयास के रूप में बड़ा हो, यह उन लोगों को माफ करने की तुलना में है बार-बार होने वाली जलन।

हम में से प्रत्येक के जीवन में लगातार जलन के एक, दो, शायद तीन स्रोत होते हैं. "स्वर्गीय सैंडपेपर," मैं इसे कहता हूं, बस हमारे खुरदुरे किनारों को रगड़ता है। आपका स्वर्गीय सैंडपेपर कौन है?

पतरस ने पूछा, ""प्रभु, मैं अपने भाई को कितनी बार क्षमा करूँ?"" इस सप्ताह तक मुझ पर यह विचार नहीं आया कि पतरस यहाँ अत्यधिक शाब्दिक हो सकता है। हो सकता है कि वह अपने भौतिक भाई के बारे में बात कर रहा हो। मैंने अभी कुछ हफ़्ते पहले पढ़ा था कि नब्बे प्रतिशत आक्रोश हमारे अपने परिवारों में होता है। हम अपने जीवन में सबसे ज्यादा नाराजगी उन लोगों के प्रति रखते हैं जो हमारे सबसे करीब हैं।

आप पुरानी कहावत जानते हैं: "उन लोगों के साथ रहने के लिए जिन्हें हम प्यार करते हैं, यह एक महिमा होगी, लेकिन उन लोगों के साथ नीचे रहने के लिए जिन्हें हम जानते हैं, अब यह एक अलग कहानी है।" कभी-कभी ऐसे लोग होते हैं जो हमारे सबसे करीब होते हैं। शायद यह पीटर का भाई एंड्रयू था। यह कल्पना के दायरे से बाहर नहीं है कि एंड्रयू ने दूध छोड़ दिया, या ट्यूब के बीच से टूथपेस्ट निचोड़ा, या ऐसा कुछ जो पीटर के लिए लगातार परेशान था। लेकिन चाहे वह एंड्रयू हो या एक लाक्षणिक भाई, पतरस को इस संपूर्ण क्षमा प्रश्न के साथ कठिन समय हो रहा था।

पतरस शायद यीशु से यह कहने की अपेक्षा कर रहा था, "पतरस, यह आप में बहुत उदार है। मैं प्रभावित हूँ।" यहूदी कानून में केवल यह आवश्यक था कि आप एक भाई को तीन बार क्षमा करें। आपके द्वारा उसे एक ही अपराध के लिए तीन बार क्षमा करने के बाद, आप उसे खो जाने के लिए कह सकते हैं। इसलिए, पीटर सोच सकता था कि कानून कहता है, "मुझे अपने भाई को तीन बार माफ करना चाहिए, मैं इसे दोगुना कर दूंगा और अच्छे उपाय के लिए मैं एक जोड़ दूंगा।" "भगवान, क्या आपको लगता है कि एक भाई को सात बार माफ करना ठीक होगा?" हमारे प्रभु ने कहा, "नहीं पतरस, क्या आप 70 बार सात बार विश्वास करेंगे" या आपको

tormenting you. The other person that you are hating and not forgiving may not even know - they may be totally unaware. All around us are millions of people imprisoned by guilt, enslaved by their own anger and anxiety and tormented by resentment, sometimes year after year after year. The forgiveness of Christ is the only key to unlock that jail. For your own sake, forgive. Learn to ask for forgiveness and learn to offer forgiveness. My motto is: Forgiveness, enjoy it and employ it, or you live a life of misery.

I will need future forgiveness.

"This is how my heavenly Father will treat each of you unless you forgive your brother from your heart." (Matthew 18:35)

John Wesley was once told by a man who knew him, "I could never forgive a certain person." Wesley responded, "I hope you never sin." The point of his admonition; if you're going to live the rest of your life in perfection, then perhaps you don't need to forgive anybody else. But if you're going to commit another sin, you'd better make sure forgiveness is ready and willing because forgiveness is a two-way street. Don't dare burn the bridge that you're going to have to walk over to get to heaven.

In what we call the Lord's Prayer in the Sermon on the Mount where our Lord teaches us how to pray; He said, "Forgive us our debts as we forgive our debtors" Do you understand what that prayer says? That is praying, "Father, you forgive me as much as I'm willing to forgive the other people around me." Now I ask you, do you really want to pray that prayer? See, the Bible says we can only receive what we're willing to offer to other people.

In that same Sermon on the Mount in the part we call the Beatitudes. Jesus said, "'Blessed are the merciful for they shall receive mercy." What we offer to somebody else we are able to receive, but what we're not willing to offer somebody else, we cannot receive. God says, be forgiving because I want to be able to forgive you. Look at verse 35 again, "unless you forgive from your heart," not lip service, not some little faint intellectual acknowledgment, but from the heart, right down in the core of your spirit. Put simply, the parable is teaching forgiveness is a way of life. It's the only way to live and the reason is we're all imperfect beings. You're going to hurt others, and other people are going to hurt you because we're just imperfect beings, so we have to live in a constant state of forgiveness. You've got to enjoy it and then employ it as a lifestyle.

Why do I need to forgive?

1. Because God has forgiven me.

कितनी बार क्षमा करने की आवश्यकता है इसकी कोई सीमा नहीं है।

यदि यह स्कोर बना रहा है, तो यह वास्तव में क्षमा नहीं है। क्या आपने कभी किसी के साथ स्कोर रखा है? यीशु के पतरस से कहने के बाद, "नहीं, सात बार नहीं, बल्कि सत्तर बार सात बार।" यीशु एक दृष्टान्त, एक कहानी बताते हैं, यह समझाने के लिए कि हमें क्षमा करना क्यों सीखना चाहिए।

कहानी इस तरह से शुरू होती है। यीशु ने कहा, एक मनुष्य है जिस पर राजा का भारी कर्ज़ है। मत्ती 18:23-24 में बाइबल कहती है, कि उस पर राजा का दस हजार किक्कार बकाया है। अब प्रतिभा वास्तव में शुद्ध धन की तुलना में अधिक वजन का माप थी, इसलिए यह इस बात पर निर्भर करता है कि कीमती धातु क्या थी। लेकिन यहां का कर्ज सभी विद्वानों को लाखों-करोड़ों डॉलर मान रहा है। अब यह एक बड़ा कर्ज है! आप इतने दूर कर्ज में कैसे जाते हैं? एक नौकर इतना पैसा कैसे उधार ले सकता है? उन दिनों, जब भी आप इसे वापस भुगतान नहीं कर सकते थे, दिवालिएपन का सिद्धांत सरल था। उन्होंने बस तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे बच्चों को ले लिया और उन्हें गुलामी में बेच दिया और तुम्हें जेल में डाल दिया। वह दिवालियापन था।

"'नौकर उसके सामने अपने घुटनों पर गिर गया। 'मेरे साथ धैर्य रखें,' उसने भीख माँगी, 'और मैं सब कुछ वापस कर दूंगा।"" (आयत 26) आपको उसमें हास्य देखने को मिला है; यह मेरे द्वारा पढ़े गए सबसे प्रफुल्लित करने वाले बयानों में से एक है। एक नौकर का 16 मिलियन डॉलर का बकाया है और वह कहता है, "मुझे कुछ और दिन दें"। क्या करने के लिए, पासपोर्ट प्राप्त करें और दूसरे देश के लिए एकतरफा टिकट खरीदें?

मैंने थोड़ा हिसाब लगाया। अगर वह मौजूदा ब्याज दरों पर एक दिन में एक हजार डॉलर का भुगतान करता है, तो उसे 40 साल लगेंगे। अब कहानी की बात, दोस्तों, हमें तीन कारण दिखाने हैं कि आपको और मुझे अन्य लोगों को क्षमा करने की आवश्यकता है।

हमें एक दूसरे को क्षमा करने की आवश्यकता है क्योंकि हमें परमेश्वर ने क्षमा किया है। "'नौकर के मालिक ने उस पर दया की, कर्ज को रद्द कर दिया और उसे जाने दिया।"' (मैंने इसे अपनी बाइबल में रेखांकित किया है।) क्या आप किसी और को जानते हैं जो \$ 16 मिलियन का कर्ज माफ करेगा? कौन कहेगा, ठीक है, चलो इसे लिख दें और उसे जाने दें? क्या राजा है! पूरी तरह से माफ कर दिया। लेकिन दृष्टांत की बात यह है: यह उस क्षमा की तुलना में कुछ भी नहीं है जो भगवान ने हमें दिया है, बिल्कुल कुछ भी नहीं।

यहाँ समानांतर है। मैं भगवान का कर्जदार हूं, और आप भी करते हैं। बाइबल इसे पाप का कर्ज भी कहती है। जब मैं भगवान के 2. To escape the torment of resentment that's going to shackle me if

I don't forgive.

3. Because I don't want to burn the bridge that I'm going to have to

walk across. I want to forgive so God will forgive me.

Who do you need to forgive?

- 1. Do you blame anyone else in the world for your unhappiness? Do you blame a spouse? If only my husband would get his act straight, then I'd do a lot better. I'd be able to come to church more if he'd come with me. Do you blame your parents? If my parents hadn't done this to me when I was little, if that hadn't been a part of that, then my life would be a lot better today. Do you blame a teacher? If my teacher would have just. Do you blame a boss? If I just had a different boss. If you blame anyone for your unhappiness, that's an indication of resentment. Blame is an indication of an unforgiven wrong, rather real or perceived, it doesn't make any difference, and it's you that's not forgiving. You need to let it go right now. Let it go or it will torture you and harm your future life.
- 2. Have I been keeping score? Is there a score sheet in my mind with

regard to this person so that whenever they're doing something, you're thinking, they owe me? Did your spouse make a major mistake sometime in the past? He or she is sorry, and life has gone on, but you're holding it over his or her head. You've become an unpleasable person because no matter what one does, it's part of a bottomless pit of repayment. No matter how good a person is, you're thinking in your mind, he owes me. I want to tell you something today as straight as I can tell you. As bad as whatever was done, you're the one killing the marriage. You're killing it by your unforgiveness. You've never forgiven, and the spouse may be getting to the point of asking, "What's the use? I can't seem to ever be forgiven."

Marriage is just one of the areas that can apply. You may have been neglected as a child. You may have been abused as a child. You may not have been loved as you should have as a child. I don't know any of us who were loved as we should have been as a child. Why? Because we are not able to love perfectly. We're imperfect beings.

खिलाफ अपराध करता हूं, तो यह उस पर कर्जदार हो जाता है जिसे मैं कभी नहीं चुका सकता। बाइबल कहती है, रोमियों 3:23 में, "हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" पितृशास्त्र इसे बहुतायत से स्पष्ट करता है, मैं अपना कर्ज नहीं चुका सकता, आप अपना भुगतान नहीं कर सकते, लेकिन परमेश्वर ने अपने प्रेम में अपने पुत्र यीशु के उपहार के माध्यम से हमें क्षमा करने के लिए, स्लेट को साफ करने के लिए सही बलिदान के रूप में चुना है, कर्ज को रद्द करने के लिए और कहें, "चलो अभी शुरू करते हैं।" यही सुसमाचार है, शुभ समाचार। यह सब यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में बंधा हुआ है। यीशु के पास हमारे लिए खुशखबरी है जब हम आज्ञाकारी रूप से उसके पास आते हैं, स्वीकार करते हैं, पश्चाताप करते हैं और उसके नाम से बपितस्मा लेते हैं और उसे क्षमा करने और अपनी स्लेट को साफ करने के लिए कहते हैं।

परमेश्वर मुझसे दूसरों के लिए वही करने की अपेक्षा करता है जो उसने मेरे लिए किया है। वास्तव में यही संदेश है। आपको कैसा लगेगा अगर आपके पास सिर्फ \$16 मिलियन का कर्ज साफ हो जाए? क्या आप राहत, आनंद और स्वतंत्रता महसूस करेंगे? वे शब्द बहुत उथले हो सकते हैं। उत्साह, परमानंद या अमर कृतज्ञता के बारे में क्या? आपको क्या लगता है कि आप लोगों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे यदि आपको अभी-अभी \$16 मिलियन का कर्ज माफ कर दिया गया था जो आपके सिर पर मंडरा रहा था? क्या आपको नहीं लगता कि आप सहज होंगे? क्या आपको नहीं लगता कि आप सहज होंगे? क्या आपको नहीं लगता कि आप करेंगे, "हां, मैं बहुत अच्छे मूड में हूं? कोई बात नहीं, मैं तम्हें माफ कर दुंगा।"

इस सेवक की प्रतिक्रिया को पद 28 में शुरू करके देखें। "लेकिन जब वह सेवक बाहर गया, तो उसे अपने एक साथी सेवक को मिला, जिस पर सौ दीनार का एक सौ दिन का बकाया था। उसने उसे पकड़ लिया और उसका गला घोंटने लगा।' जो तुम मुझ पर देय हो उसे वापस कर दो!' उसने मांग की, 'उसका साथी दास घुटनों के बल गिर पड़ा और उस से बिनती करने लगा, 'मेरे साथ धीरज धर, और मैं तुझे लौटा दूँगा।' 'लेकिन उसने मना कर दिया। इसके बजाय, वह चला गया और उस आदमी को जेल में डाल दिया'' अब क्या आप विश्वास कर सकते हैं? उसके मालिक का 16 मिलियन डॉलर बकाया था और उसे माफ कर दिया गया था। अब उसका संगी दास उस पर सौ दीनार का ऋणी है, जो उसके स्वामी द्वारा क्षमा की गई रकम की तुलना में बहुत कम है। वह कोई दया दिखाने से इनकार करता है बल्कि उसे जेल में डाल देता है।

आप कहते हैं, दुनिया में वह इस तरह से कैसे प्रतिक्रिया दे सकता है? वह नौकर जिस पर रद्द किए गए \$ 16 मिलियन का कर्ज बकाया था, उसे वास्तव में माफ नहीं किया गया था। वह अभी भी, किसी भी कारण से, ऐसा महसूस कर रहा था कि उसके सिर पर तलवार अभी भी लटकी हुई है। इसलिए, वह मूर्खतापूर्वक इतनी छोटी राशि इकट्ठा करने की कोशिश कर रहा था ताकि अभी भी इस कथित \$16 मिलियन ऋण का भुगतान किया जा सके।

| 3. Do you find yourself acting a certain way toward someone because he reminds you of someone you resent? | वास्तविक त्रार हैं। वे सुसमाच |
|--|---|
| I know that sounds strange, but there are all kinds of people who they will look at a person and say, "He reminds me of someone back in my childhood." So, he will treat them totally different simply because of a past problem they - he never lets go. If we search our souls, a lot of us have a lot more forgiving to do than we give ourselves credit for. We need to do it now! Amazing Grace Lesson #1239 | पाप का कर्ज अपना जीवन पता है कि मुइ भुगतान करने सकते, मैं अप अपने आस-प और क्षमा कर देखा है। इसिं को समझे। ज |
| Questions: | आप दूसरों क |
| 1. God is? | |
| a Love b Righteous (just) | दृष्टांत में पहले नौकर को पक |
| c Truth | नाकर का पव लगा। रोमन व |
| d Mercy | लगा। रामन व ने आप पर पैर |
| e Peace | |
| f All the above | गला घोंट सक |
| g a and c | तक गला घोंट |
| h a, c and e | उसे जेल में ड |
| i a, b and c | |
| | जब भी आप ि |
| How many times should you forgive? a One | नकारात्मक, ध |
| b Seven | अनसुलझे अप |
| c One hundred | नकारात्मक व |
| d Every time someone ask. | कभी किसी क |
| When one forgives does he keep score of offenses? | अपराधबोध व |
| Yes No | हम क्षमाशील |
| 4. Obedience to the Gospel cancels our debt to God? | कभी-क्भी अ |
| True False | पिता को देख |
| 5. When is man's sin and rebellion cancelled? | अपराध बोध प |
| a Our physical death | में महसूस कर |
| b Our death to sin | कुभी-कुभी अ |
| c Our confession that Jesus is Lord | पौलुस ने कहा |
| d When we trust God to forgive and obey | जैसे मसीह में |
| Him | भी क्षुमा करो। |
| e a, b and c | मुझे कितना क्ष |
| 6. The key to forgiveness is to recognize how much Cod | |

has forgiven us?

True _____ False _

have to walk across

____ All the above

____ a and d

Because God has forgiven me

____ I want God to forgive me

b. _____ To escape the torment of resentmentc. _____ I do not want to burn the bridge I will

7. Why do I need to forgive?

वास्तविक त्रासदी यह है कि आज बहुत सारे ईसाई उसी तरह जीते हैं। वे सुसमाचार का पालन करते हैं, वे मसीह के पास आए और पाप का कर्ज रद्द कर दिया गया; परन्तु वे अब भी यह सोचकर अपना जीवन जीते हैं, कि हे प्रभु, मैं तुझ पर खरा उतरूं गा। मुझे पता है कि मुझ पर आपका बहुत कर्ज है, इसलिए मैं इसका भुगतान करने जा रहा हूं। मैं यह जानते हुए कि वे कभी नहीं कर सकते, मैं अपने पाप ऋण को चुका दूँगा। वे अपनी कुंठाओं में अपने आस-पास के अन्य लोगों से मांग कर रहे हैं, मांग कर रहे हैं और क्षमा कर रहे हैं। दुख की बात है कि मैंने यह सब बहुत अधिक देखा है। इसलिए यह इतना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक ईसाई अनुग्रह को समझे। जब आप मानते हैं कि आपको क्षमा किया गया है, तो आप दसरों को क्षमा करने में सक्षम होंगे और तब तक नहीं।

दृष्टांत में पहले सेवक की कठोरता पर ध्यान दें। उसने उस दूसरे नौकर को पकड़ लिया और उसका कर्ज चुकाने की मांग करने लगा। रोमन कानून के तहत आप ऐसा कर सकते थे। अगर किसी ने आप पर पैसा बकाया है, तो आप उसे भुगतान करने तक उसका गला घोंट सकते हैं। लेकिन जब इस आदमी ने उसका कुछ देर तक गला घोंट दिया और उसमें से कुछ भी निचोड़ा नहीं, तो उसने उसे जेल में डाल दिया।

जब भी आप किसी को कठोर, निर्णयात्मक, अति-आलोचनात्मक, नकारात्मक, क्षमाशील और कृतघ्न पाते हैं, तो वह अपने साथ अनसुलझे अपराध-बोध को लेकर चलता है। एक निर्णयात्मक और नकारात्मक व्यक्ति, जो हमेशा किसी और को नीचा दिखाता है, कभी किसी को क्षमा की पेशकश नहीं करता है, वह अनसुलझे अपराधबोध को ढो रहा है। जब हम क्षमाशील महसूस करते हैं, तो हम क्षमाशील हो जाते हैं।

कभी-कभी आप इसे माता-पिता में देखते हैं। आप एक ऐसे माता-पिता को देखते हैं जो मांग कर रहा है, कठोर और दबंग है। वे उस अपराध बोध पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं जो वे एक माता-पिता के रूप में महसूस करते हैं। कभी-कभी आप इसे मालिकों में देखते हैं। कभी-कभी आप इसे सहकर्मियों में देखते हैं। इफिसियों 4:32 में पौलुस ने कहा, "एक दूसरे पर कृपालु और करूणामयी बनो, और जैसे मसीह में परमेश्वर ने तुम्हें क्षमा किया है, वैसे ही एक दूसरे को भी क्षमा करो।" क्षमा की कुंजी यह पहचानना है कि परमेश्वर आज मुझे कितना क्षमा करता है।

नाराजगी मुझे दुखी करती है।

यह पृथ्वी पर एक नरक है। यह आपको प्रताड़ित करता है। पद 31 के दृष्टान्त में मेरे साथ देखो, "जब दूसरे दासों ने देखा कि क्या हुआ था," (यह तब हुआ जब पहले वाले ने दूसरे को जेल में फेंक दिया था) "वे बहुत दुखी हुए और जाकर अपने स्वामी से कहा सब कुछ जो हुआ था। तब स्वामी ने दास को अंदर बुलाया। उसने कहा, 'हे दुष्ट दास,' उसने कहा, 'मैंने तुम्हारा वह सब कर्ज रद्द कर दिया, क्योंकि तुमने मुझ से याचना की थी। तुम पर था?' उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे जुल्म ढाने के लिये जेलरों के पास भेज दिया, जब तक कि वह अपना सब कुछ चुका न दे।"' देख, जब राजा को

Chapter 5

Is Homosexuality a Sin?

Twenty-five years ago, the word homosexuality was spoken only in a whisper, and rarely, even at that. Then about two decades ago, homosexuality made its way to the public's attention in a very major way. This time with a new name, "the Gay Community", and with a new movement, called "Gay Rights". Homosexuality literally came 'out of the closet' and was no longer something that was taboo in the media or in public conversation. Instead, it was being billed as something called "an alternative lifestyle."

It is interesting that for centuries now, Christian people have believed that homosexuality was an unquestioned and direct violation of God's will. But now that premise is being confronted by a far more liberal public opinion, which is right? Is homosexuality an alternative lifestyle, or is it sin? It is a blatant digression from God's law. Well, those of us who accept the Bible as God's inspired and inerrant Word, God's very breath to man, we have no other choice than to turn to this Word to find that answer. Before we look to the Bible and its specific verses in their context, I think it might be helpful to consider just a few facts about the background of this issue, worldwide.

For example, homosexuality is not really a contemporary issue at all. Anthropological investigations have indicated that homosexual behavior occurred, even among the most ancient of tribes. There is very little about it in recorded history. But it is interesting in western civilization, especially British history, you find some fascinating facts, most of them in the forms of prohibitions against homosexual behavior. For example, in the year 1290, British law commanded that a Sodomite be buried alive. In 1533, Henry VIII changed the mode of execution, but it was still a capital offense. Finally in British law, in 1861, it substituted life imprisonment for capital punishment, but it was still considered a very hideous type of offense. Would you believe that life imprisonment was still the penalty for a convicted homosexual in Britain until the year 1967? There have been similar laws in the United States, though with less severe type of penalties.

Times have changed. Not only are homosexual practices largely legal, but they are also becoming increasingly commonplace and accepted in our culture. The question arises, "just how commonplace?" Frankly, there is very little reliable data. The first major study this century about homosexual activity in United States didn't occur until 1950. It was conducted by Dr. E. G. Kinsey. He traveled all over the country, interviewing literally

पता चला कि उसका नौकर कितना क्षमाशील है, तो वह उसके पास गया और कहा, यदि तुम जा रहे हो ऐसा होने के लिए, मैं भी वैसा ही रहूंगा।

किसी ने पूछा कि क्या यह दृष्टांत नरक का प्रतीक है। हाँ, यह है, लेकिन यह पृथ्वी पर नर्क का भी प्रतीक है। क्योंकि जब क्रोध तुम्हारे भीतर प्रवेश करता है और आक्रोश बढता है और तुम्हें संक्रमित करता है, तो वह तुम्हें प्रताड़ित करता है, और तुम्हें कारागार में बंद कर देता है। यह आपको उस व्यक्ति से कहीं अधिक नष्ट कर देता है जिससे आप नफरत करते हैं और माफ नहीं करेंगे। हमें समय-समय पर खुद से यह सवाल पूछने की जरूरत है कि क्या कडवे और अक्षम्य कार्य हमें खुशी से वंचित कर रहे हैं? कौन सी चोट अभी भी आपको सता रही है? किसी दिन कोई मिले तो जाने दो। यह केवल आपको सता रहा है। जिस दूसरे व्यक्ति से आप घृणा कर रहे हैं और क्षमा नहीं कर रहे हैं, उसे शायद पता भी न हो - वे पूरी तरह से अनजान हो सकते हैं। हमारे चारों ओर लाखों लोग हैं जो अपराध बोध से कैद हैं. अपने ही क्रोध और चिंता के गुलाम हैं और आक्रोश से पीडित हैं, कभी-कभी साल-दर-साल। उस जेल को खोलने के लिए मसीह की क्षमा ही एकमात्र कुंजी है। अपनी खातिर, माफ कर दो। क्षमा मांगना सीखें और क्षमा करना सीखें। मेरा आदर्श वाक्य है: क्षमा करें, इसका आनंद लें और इसका उपयोग करें, या आप दख का जीवन जीते हैं।

मुझे भविष्य में क्षमा की आवश्यकता होगी.

"जब तक तुम अपने भाई को अपने मन से क्षमा न करो, तब तक मेरा स्वर्गीय पिता तुम में से प्रत्येक के साथ ऐसा व्यवहार करेगा।" (मत्ती 18:35)

जॉन वेस्ली को एक बार एक व्यक्ति ने कहा था जो उन्हें जानता था, "मैं एक निश्चित व्यक्ति को कभी माफ नहीं कर सकता।" वेस्ली ने उत्तर दिया, "मुझे आशा है कि आप कभी पाप नहीं करेंगे।" उसकी नसीहत की बात; यदि आप अपना शेष जीवन पूर्णता में जीने वाले हैं, तो शायद आपको किसी और को क्षमा करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन अगर आप एक और पाप करने जा रहे हैं, तो बेहतर होगा कि आप सुनिश्चित करें कि क्षमा तैयार है और तैयार है क्योंकि क्षमा एक दोतरफा रास्ता है। उस पुल को जलाने की हिम्मत न करें जिस पर आपको स्वर्ग जाने के लिए चलना होगा।

उस पहाड़ी उपदेश में जिसे हम प्रभु की प्रार्थना कहते हैं, जहां हमारा प्रभु हमें प्रार्थना करना सिखाता है; उन्होंने कहा, "जैसे हम अपने कर्जदारों को माफ करते हैं, वैसे ही हमें हमारे कर्ज माफ कर दो" क्या आप समझते हैं कि प्रार्थना क्या कहती है? वह प्रार्थना कर रहा है, "पिताजी, आप मुझे उतना ही क्षमा करें जितना मैं अपने आस-पास के अन्य लोगों को क्षमा करने के लिए तैयार हूँ।" अब मैं तुमसे पूछता हूँ, क्या तुम सच में उस प्रार्थना को करना चाहते हो? देखिए, बाइबल कहती है कि हम केवल वही प्राप्त कर सकते हैं जो हम अन्य लोगों को देने के लिए तैयार हैं।

उसी पहाड़ी उपदेश में जिस भाग को हम धन्य कहते हैं। यीशु ने

thousands of men--his study was on males only--and he concluded that about ten percent of the male population engaged in at least three years of homosexual experience between the ages of 16 and 65. In 1972, Dr. Paul Gebhardt was commissioned by the National Institute of Mental Health to conduct another study. His study showed even significantly higher results--up to one-fourth of male America were involved in such behavior.

There have been more conservative scholars who have rebuked and rebuffed those claims. Reliable data is still very difficult to come by. But most experts, both conservative and liberal (and anywhere in between), would agree that at least seven percent of the American male population and about five percent of the American female population are actively engaged in practicing homosexuality. While we don't know the numbers, the fact of the matter is the Gay Rights movement has picked up a world of steam. They now have their own magazines and their own communities. They run their own places of entertainment and nightspots, and they have one of the strongest legislative lobbies in the United States of America.

There is one other thing I want us to look at, though, before we turn to the Bible and see what scripture says about homosexuality. I think it is necessary for us to define the terms, though I am sure that all of us have a connotation in our minds of what homosexuality is.

A homosexual act is an act of sexual intercourse between two members of the same sex. It is an act. I want to differentiate that by definition from a homosexual orientation. Listen closely. A homosexual orientation is a tendency or a desire to prefer a homosexual relationship over a heterosexual one.

There is a difference between those two and you will see why we distinguish these in a moment. A homosexual act is an action; a homosexual orientation is the desire or the longing. Those two are as different as a heterosexual act is different from a heterosexual orientation. Now there are two technical terms that need to be defined. perverts and inverts.

There are those who would be labeled as perverts. Perverts, or perversion, are those individuals who were heterosexual in nature, but have changed to a homosexual orientation. You say, "why would anybody change their sexual longing, their sexual orientation?" Again, research is sketchy, and the reasons vary. It is interesting to note that there has been a stronger correlation between perversion and certain environments, for example, mono-sex institutions. Places where there is a single gender, for example,

कहा, "धन्य हैं वे, जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।" जो हम किसी और को देते हैं, वह हम प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन जो हम किसी और को देने को तैयार नहीं हैं, वह हम प्राप्त नहीं कर सकते। भगवान कहते हैं, क्षमाशील बनो क्योंकि मैं तुम्हें क्षमा करने में सक्षम होना चाहता हूं।

पद 35 को फिर से देखेंं. "जब तक कि आप अपने दिल से क्षमा नहीं करते," होंठ सेवा नहीं, कुछ मामूली बौद्धिक स्वीकृति नहीं, बल्कि दिल से, अपनी आत्मा के मूल में। सीधे शब्दों में कहें, दृष्टांत सिखा रहा है कि क्षमा जीवन का एक तरीका है। यही जीने का एकमात्र तरीका है और इसका कारण यह है कि हम सभी अपूर्ण प्राणी हैं। आप दूसरों को चोट पहुँचाने जा रहे हैं, और अन्य लोग आपको चोट पहुँचाने जा रहे हैं क्योंकि हम सिर्फ अपूर्ण प्राणी हैं, इसलिए हमें क्षमा की निरंतर स्थिति में रहना होगा। आपको इसका आनंद लेना है और फिर इसे जीवन शैली के रूप में नियोजित करना है।

- मुझे क्षमा करने की आवश्यकता क्यों है?
 2. क्योंकि भगवान ने मुझे माफ कर दिया है।
- 2. आक्रोश की पीडा से बचने के लिए जो मुझे झकझोरने वाली है अगर मैं माफ नहीं करता।
- 3. क्योंकि मैं उस पूल को जलाना नहीं चाहता जो मुझे करना है सामने चलना। मैं माफ करना चाहता हुं इसलिए भगवान मुझे माफ कर देंगे।

आपको किसे क्षमा करने की आवश्यकता है?

- 2. क्या आप अपने दुख के लिए दुनिया में किसी और को दोष देते हैं? क्या आप जीवनसाथी को दोष देते हैं? अगर मेरे पति ही सीधे अपनी हरकतें करते, तो मैं बहुत बेहतर कर पाती। यदि वह मेरे साथ आता तो मैं और अधिक चर्च आ पाता। क्या आप अपने माता-पिता को दोष देते हैं? अगर मैं छोटा था तो मेरे माता-पिता ने मेरे साथ ऐसा नहीं किया होता, अगर वह उसका हिस्सा नहीं होता, तो आज मेरा जीवन बहुत बेहतर होता। क्या आप एक शिक्षक को दोष देते हैं? अगर मेरे शिक्षक के पास बस होता। क्या आप बॉस को दोष देते हैं? अगर मेरे पास सिर्फ एक अलग बॉस होता। यदि आप अपनी नाखुशी के लिए किसी को दोष देते हैं, तो यह नाराजगी का संकेत है। दोष एक अक्षम्य गलत का संकेत है. बल्कि वास्तविक या माना जाता है. इससे कोई फर्क नहीं पडता है, और यह आप ही हैं जो क्षमा नहीं कर रहे हैं। आपको इसे अभी जाने देना चाहिए। इसे जाने दो नहीं तो यह आपको प्रताडित करेगा और आपके भावी जीवन को नुकसान पहुंचाएगा।
- 2. क्या मैं स्कोर बना रहा हूं? क्या मेरे दिमाग में एक स्कोर शीट है

prison or boarding school, even the Armed Forces, have generally sighted higher incidence of perversion than the population at large.

Then there is a second category of those individuals who would be homosexuals. These individuals are called inverts. Inverts are individuals who can never remember being attracted to members of the opposite sex. From their very beginning of their cognizant adult lives, they have felt attracted to the same sex. Research is sketchy as to what causes inversion. But a correlation exists. One of the factors has been the absence of father figures within the home. In fact, in ghetto situations in America where there is a higher incidence of the absence of a father, there is a corresponding incidence of inversion - about twice that of the national population.

We are going to come back to those terms later, but remember, the difference between a homosexual act, a homosexual orientation, perversion and inversion.

Now let's get to the Bible. What does the Bible say about homosexual behavior? The Word of God doesn't have a wealth of material on the subject, but when the Bible has something to say about homosexuality, it speaks strongly against such behavior. I suppose the first place you run across it in the Bible is Genesis 19. Lot, who was kin to Abraham, received two strangers in the town of Sodom and his house was literally bombarded by the lewd, base fellows of the town, men who were obviously homosexual, both in their orientation and in their action. So, they stormed Lot's home. Eventually by the way, Sodom and its sister city, Gomorrah, were destroyed. In Judges 19, you read about a similar situation, this time in the city of Gibeah.

D. S. Bailey in his book, Homosexuality and the Christian Tradition, has tried to argue that the transgressors (particularly in the episode involving Lot and the strangers in his home) were really violating rules of hospitality and that's why they were being reprimanded, not for their homosexual activity. Mr. Bailey's theory doesn't stand the test of scrutiny, because we are given an interpretation of what occurred in Sodom and Gomorrah. It is found in the little book of Jude, verse 7. "In a similar way, Sodom and Gomorrah and the surrounding towns gave themselves up to sexual immorality and perversion. They serve as an example of those who suffer the punishment of eternal fire." That makes it pretty clear, doesn't it? The letter that we call Jude is written to let us know--at least that part of it-that those individuals were condemned because of their homosexual behavior. Frankly, that corresponds to some Old Testament prohibitions, like Leviticus 18:22 and Leviticus 20:13 where male homosexuality is described

इस व्यक्ति के संबंध में ताकि जब भी वे कुछ कर रहे हों, तो आप सोच रहे हों कि वे मेरे ऋणी हैं? क्या आपके जीवनसाथी ने पहले कभी कोई बड़ी गलती की है? उसे खेद है, और जीवन चला गया है, लेकिन आप इसे उसके सिर पर पकड रहे हैं। आप एक अप्रिय व्यक्ति बन गए हैं क्योंकि कोई भी कुछ भी करता है, यह चुकौती के अथाह गड्ढे का हिस्सा है। इंसान कितना भी अच्छा क्यों न हो, आप अपने मन में सोच रहे हैं, वह मेरा कर्जदार है। मैं आज आपको उतनी ही सीधी बात बताना चाहता हूं जितना मैं आपको बता सकता हूं। जो कुछ भी किया गया था, वह आप ही हैं जो शादी को मार रहे हैं। आप इसे अपनी क्षमाशीलता से मार रहे हैं। आपने कभी माफ नहीं किया है, और हो सकता है कि पति या पत्नी पछने की बात कर रहे हों. "क्या फायदा है? मुझे कभी माफ नहीं किया जा सकता है।" विवाह केवल उन क्षेत्रों में से एक है जो लागू हो सकते हैं। हो सकता है कि बचपन में आपकी उपेक्षा की गई हो। हो सकता है कि आपके साथ एक बच्चे के रूप में दुर्व्यवहार किया गया हो। हो सकता है कि आपको बचपन में उतना प्यार नहीं किया गया जितना आपको होना चाहिए था। मैं हममें से किसी को भी नहीं जानता, जिसे बचपन में हमें वैसे ही प्यार किया जाता था जैसे हमें होना चाहिए था। क्यों? क्योंकि हम पूरी तरह से प्यार करने में सक्षम नहीं हैं। हम अपूर्ण प्राणी हैं।

3. क्या आप खुद को किसी के प्रति एक निश्चित तरीके से अभिनय करते हुए पाते हैं क्योंकि वह आपको किसी ऐसे व्यक्ति की याद दिलाता है जिससे आप नाराज हैं?

मुझे पता है कि यह अजीब लगता है, लेकिन हर तरह के लोग हैं जो एक व्यक्ति को देखेंगे और कहेंगे, "वह मुझे बचपन में किसी की याद दिलाता है।" तो, वह उनके साथ पूरी तरह से अलग व्यवहार करेगा, बस एक पिछली समस्या के कारण - वह कभी जाने नहीं देता। यदि हम अपनी आत्मा की खोज करते हैं, तो हममें से बहुतों के पास करने के लिए बहुत अधिक क्षमा करने योग्य है, जितना कि हम स्वयं को श्रेय देते हैं। हमें इसे अभी करने की ज़रूरत है! अद्भुत अनुग्रह पाठ #1239

प्रशन:

1. भगवान है?

| | एक। प्यार |
|----|--------------------------------|
| | बी। धर्मी (सिर्फ) |
| | सी। सत्य |
| | m दया |
| | n शांति |
| | o सब से ऊपर |
| | p ए और सी |
| | q ए, सी और ई |
| | r ए, बी और सी |
| 4. | आपको कितनी बार माफ करना चाहिए? |

as an abomination for which the death penalty is prescribed.

The strength of these statements is found both in their context and also with the severity of the penalty that is attached. Then when you go from the Old Testament into the New Testament, you find that Paul continues to deplore homosexual activity. "Even the women exchanged natural relations for unnatural ones. In the same way, the men also abandoned natural relations with women and were inflamed with lust for one another." (Romans 1:24-25) All of that is within the context of those individuals who have turned away from God--they are Godless--and God will not tolerate that type of behavior. Strong words, but really the same thing Paul also said in 1 Corinthians 6:9 when he listed those who were unrighteous, and he included homosexuals. In 1 Timothy 1:10, Sodomites were listed among the lawless and disobedient.

Now I want to point something out here that, if you haven't heard before, you will probably hear in the future. There has been a movement afoot, among liberal theologians, to stress that Paul in those three admonitions against homosexuality, was condemning perversion, not inversion. You remember the difference? That Paul was saying to those individuals who were "born with a natural attraction for the opposite sex", but who have changed, that for those individuals to do so is wrong. The implication there is, "if anyone is an invert who chooses to practice homosexual behavior, that person would not be prohibited."

That is not right. There are at least two reasons from scripture that this is true:

- 1) The primary reason is the word that Paul used to condemn homosexual behavior in Romans 1, in 1 Corinthians 6, and in 1 Timothy 1. He uses a Greek word that is really an umbrella term that refers to all homosexual behavior. By contrast, he could have used one of three different Greek terms that would have referred specifically to sexual perversion, but he chose not to do that. So, the implication is clear, whether inversion or perversion, homosexual activity is condemned.
- 2) Notice that the context in Romans 1 is that of creation. The prohibition against homosexuality isn't just aimed at individuals, whether inverts or perverts. It states that that's in violation of God's order of things. "Since what may be known about God is plain to them because God has made it plain to them. For since the creation of the world, God's invisible quality, his eternal power and his divine nature have been clearly seen,

| e |
|---|
| f सात |
| g एक सौ |
| h हर बार जब कोई पूछता है। |
| 3. जब कोई क्षमा करता है तो क्या वह अपराधों का हिसाब रखता |
| है? |
| हां नहीं |
| 4. सुसमाचार की आज्ञाकारिता परमेश्वर के प्रति हमारे ऋण को |
| रद्द कर देती है? |
| ् सही गलत |
| 5. मन्ष्य के पाप और विद्रोह को कब रद्द किया जाता है? |
| a हमारी शारीरिक मृत्यु |
| b पाप के लिए हमारी मृत्यु |
| c हमारा स्वीकारोक्ति के यीशु ही प्रभु है |
| d जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वह क्षमा |
| करे और उसकी आज्ञा का पालन करे |
| e ए, बी और सी |
| 6. क्षमा की कुंजी यह पहचानना है कि परमेश्वर ने हमें कितना |
| क्षमा किया है? |
| सही गलत |
| 7. म्झे क्षमा करने की आवश्यकता क्यों है? |
| g क्योंकि भगवान ने मुझे माफ कर दिया है |
| h आक्रोश की पीड़ा से बचने के लिए |
| i मैं उस पुल को नहीं जलाना चाहता जिसके पार |
| मुझे चलना होगा |
| j मैं चाहता हूं कि भगवान मुझे माफ कर दें |
| k सब से ऊपर |
| । ए और डी |
| |

अध्याय 5

क्या समलैंगिकता पाप है?

पच्चीस साल पहले, समलैंगिकता शब्द केवल कानाफूसी में बोला जाता था, और शायद ही कभी, उस पर भी। फिर करीब दो दशक पहले समलैंगिकता ने बहुत ही प्रमुख तरीके से जनता के ध्यान में अपनी जगह बनाई। इस बार एक नए नाम के साथ, "द गे कम्युनिटी", और एक नए आंदोलन के साथ, जिसे "गे राइट्स" कहा जाता है। समलैंगिकता सचमुच 'कोठरी से बाहर' आ गई थी और अब ऐसा कुछ नहीं था जो मीडिया या सार्वजनिक बातचीत में वर्जित था। इसके बजाय, इसे "एक वैकल्पिक जीवन शैली" नामक किसी चीज़ के रूप में बिल किया जा रहा था।

being understood from what has been made so that men are without excuse." (Romans 1:19-20)

You see, the context of Romans 1 is that God's made it clear what his design was. It is for a man to choose a woman, and for the two to be together within the context of marriage, in a life-long relationship. That is the natural way God made things, the way He has chosen to run this world. It is very clear from the language.

Conclusion:

A. In General

- 1) Homosexuality is likely more common in our culture than any of us would like to admit.
- 2) Homosexuality is an issue that is making its way to the forefront today.
- 3) The consistency and the fervor with which the Bible speaks against homosexual acts mean that a Christian cannot accept such a practice, as a God-ordained or a God-accepted lifestyle. That would be true regardless of an individual's sexual orientation or motivation.

B. To Christians

1) The Bible teaches that we abhor sin, but we love the sinner. When we call a man or a woman a homosexual, are we referring to what they are, or to what they do? Now think about that for a moment. When would you call a person a murderer? When they have committed murder, right? When would you call a person a thief? When he or she has stolen something. On a more positive note, when would you call a person a plumber? Only if they have demonstrated skill in that task. For many of us, who are Christians, the nature of the sin homosexuality is of such distaste for us, then perhaps we have had a harder time of segregating the sin from the sinner.

There are those in our world who may have a homosexual orientation, but who are fighting the sin. God can rescue them from that, just like he can rescue you and me from our tendencies to whatever our "Achille's heel" of sin is--and ours may be totally different. But I implore Christians, as we face the homosexuality issue, don't run from the problem, face it. Love the sinner while abhorring the sin. That's what Jesus did, that's what he would expect us to do regarding the sin of homosexuality as well as the sins of prostitution, chemical dependency, anger and all other sins.

Years ago, the Interpreter's Bible (a commentary) wrote this about Romans 1:27 "The subject is one, in which, in honesty must be faced, but one on which no man of fine feeling should linger."

I suppose that's described our outlook on homosexuality and homosexual behavior for decades. I'm afraid we live यह दिलचस्प है कि अब सदियों से, ईसाई लोगों का मानना है कि समलैंगिकता ईश्वर की इच्छा का निर्विवाद और प्रत्यक्ष उल्लंघन था। लेकिन अब उस आधार का सामना कहीं अधिक उदार जनमत से हो रहा है, जो सही है? क्या समलैंगिकता एक वैकल्पिक जीवन शैली है, या यह पाप है? यह भगवान के कानून से एक ज़बरदस्त विषयांतर है। खैर, हममें से जो बाइबल को परमेश्वर के प्रेरित और अचूक वचन के रूप में स्वीकार करते हैं, मनुष्य के लिए परमेश्वर की सांस, हमारे पास उस उत्तर को खोजने के लिए इस वचन की ओर मुड़ने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। इससे पहले कि हम बाइबल और उसके विशिष्ट छंदों को उनके संदर्भ में देखें, मुझे लगता है कि दुनिया भर में इस मुद्दे की पृष्ठभूमि के बारे में कुछ तथ्यों पर विचार करना मददगार हो सकता है।

उदाहरण के लिए, समलैंगिकता वास्तव में कोई समकालीन मुद्दा नहीं है। मानवशास्त्रीय जांच ने संकेत दिया है कि समलैंगिक व्यवहार सबसे प्राचीन जनजातियों में भी हुआ है। दर्ज इतिहास में इसके बारे में बहुत कम है। लेकिन यह पश्चिमी सभ्यता में दिलचस्प है, विशेष रूप से ब्रिटिश इतिहास में, आपको कुछ आकर्षक तथ्य मिलते हैं, उनमें से अधिकांश समलैंगिक व्यवहार के खिलाफ निषेध के रूप में हैं। उदाहरण के लिए, वर्ष 1290 में, ब्रिटिश कानून ने आदेश दिया कि एक सदोमाइट को जिंदा दफना दिया जाए। 1533 में, हेनरी VIII ने निष्पादन के तरीके को बदल दिया, लेकिन यह अभी भी एक पूंजी अपराध था। अंततः ब्रिटिश कानून में, 1861 में, इसने मृत्युदंड के लिए आजीवन कारावास की जगह ले ली, लेकिन इसे अभी भी एक बहुत ही घुणित प्रकार का अपराध माना जाता था। क्या आप विश्वास करेंगे कि 1967 तक ब्रिटेन में एक दोषी समलैंगिक के लिए आजीवन कारावास की सजा अभी भी थी? संयुक्त राज्य अमेरिका में समान कानून हैं, हालांकि कम गंभीर प्रकार के दंड के साथ।

समय बदल गया है। न केवल समलैंगिक प्रथाएं काफी हद तक कानूनी हैं, बल्कि वे हमारी संस्कृति में भी आम होती जा रही हैं और स्वीकार की जाती हैं। सवाल उठता है, "बस कितना सामान्य है?" सच कहूं, तो बहुत कम विश्वसनीय डेटा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में समलैंगिक गतिविधि के बारे में इस सदी का पहला बड़ा अध्ययन 1950 तक नहीं हुआ था। यह डॉ। ईजी किन्से द्वारा आयोजित किया गया था। उन्होंने पूरे देश की यात्रा की, वस्तुतः हजारों पुरुषों का साक्षात्कार लिया - उनका अध्ययन केवल पुरुषों पर था - और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि लगभग दस प्रतिशत पुरुष 16 से 65 वर्ष की आयु के बीच कम से कम तीन वर्षों के समलैंगिक अनुभव में लगे हुए हैं। 1972 में, डॉ. पॉल गेभार्ड को राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान द्वारा एक और अध्ययन करने के लिए नियुक्त किया गया था।

अधिक रूढ़िवादी विद्वान हुए हैं जिन्होंने उन दावों को फटकार लगाई और उन्हें खारिज कर दिया। विश्वसनीय डेटा अभी भी आना बहुत मुश्किल है। लेकिन अधिकांश विशेषज्ञ, दोनों रूढ़िवादी और उदारवादी (और बीच में कहीं भी), इस बात से सहमत होंगे कि अमेरिकी पुरुष आबादी का कम से कम सात प्रतिशत और

in a time where our minds must linger on it longer, because of the place it has taken in our society. Amazing Grace Lesson #1013 **Questions:** 1. Since creation homosexuality has been accepted or tolerated by society? True _____ False _____ 2. A homosexual act is sexual intercourse between two members of the same sex? True False 3. Homosexual orientation is a tendency or desire toward homosexual relation over a heterosexual one? True _____ False _____ 4. Men of Sodom and Gomorrah gave themselves over to sexual perversion? True ____ False ____ 5. All sexual activity outside marriage both homosexuality and fornication, is sin? True _____ False __ 6. The apostle Paul condemned homosexuality and is quoted as saying "Even the women exchanged natural relations for unnatural ones. In the same way, the men also abandoned natural relations with women and were inflamed with lust for one another."

Chapter 6

Freedom From Chemical Dependency

True _____ False _____

A preacher looked out on his 300-member congregation. Each parishioner is characterized by a smiling face, nice clothes, combed hair, polished teeth. The preacher had just preached a strong sermon on Christian lifestyle, including a recitation on the evils of drinking and a passionate admonition to his people to totally abstain from the occasional use even of alcohol or stronger drugs.

Concluding his lesson, he looks over the crowd assuming deep in his heart that maybe a few would imbibe upon occasion, but he feels sure that none of his members have a serious problem with drinking or with drugs. Little does he realize, halfway back on the left there sits Mike. Mike is a 24-year-old medical student who teaches the high school Bible class. He serves on the mission committee and everybody admires him for his zeal and his work and his dedication. But what

अमेरिकी महिला आबादी का लगभग पांच प्रतिशत सक्रिय रूप से समलैंगिकता का अभ्यास करने में लगे हुए हैं। जबिक हम संख्या नहीं जानते हैं, इस मामले का तथ्य यह है कि समलैंगिक अधिकार आंदोलन ने भाप की दुनिया उठा ली है। अब उनकी अपनी पत्रिकाएँ और अपने समुदाय हैं। वे मनोरंजन और नाइटस्पॉट के अपने स्थान चलाते हैं, और संयुक्त राज्य अमेरिका में उनके पास सबसे मजबूत विधायी लॉबी हैं।

एक और बात है जो मैं चाहता हूँ कि हम बाइबल की ओर मुड़ने से पहले देखें कि समलैंगिकता के बारे में शास्त्र क्या कहता है। मुझे लगता है कि हमारे लिए शर्तों को परिभाषित करना आवश्यक है, हालांकि मुझे यकीन है कि हम सभी के दिमाग में समलैंगिकता क्या है, इसका एक अर्थ है।

एक समलैंगिक अधिनियम एक ही लिंग के दो सदस्यों के बीच संभोग का एक कार्य है। यह एक अधिनियम है। मैं इसे समलैंगिक अभिविन्यास से परिभाषा के अनुसार अलग करना चाहता हूं। ध्यान से सुनिये। एक समलैंगिक अभिविन्यास एक विषमलैंगिक संबंध पर समलैंगिक संबंध को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति या इच्छा है।

उन दोनों में अंतर है और आप देखेंगे कि हम इन्हें एक पल में क्यों अलग करते हैं। एक समलैंगिक कृत्य एक क्रिया है; एक समलैंगिक अभिविन्यास इच्छा या लालसा है। वे दोनों उतने ही भिन्न हैं जितना कि एक विषमलैंगिक कार्य एक विषमलैंगिक अभिविन्यास से भिन्न है। अब दो तकनीकी शब्द हैं जिन्हें परिभाषित करने की आवश्यकता है, परवर्ट और इनवर्ट।

ऐसे लोग हैं जिन्हें विकृत के रूप में लेबल किया जाएगा। विकृत, या विकृति, वे व्यक्ति हैं जो प्रकृति में विषमलैंगिक थे, लेकिन एक समलैंगिक अभिविन्यास में बदल गए हैं। आप कहते हैं, "क्यों कोई अपनी यौन लालसा, अपनी यौन प्रवृत्ति को बदलेगा?" फिर से, अनुसंधान स्केच है, और कारण अलग-अलग हैं। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि विकृति और कुछ वातावरणों के बीच एक मजबूत संबंध रहा है, उदाहरण के लिए, मोनो-सेक्स संस्थान। ऐसे स्थान जहां एक ही लिंग है, उदाहरण के लिए, जेल या बोर्डिंग स्कूल, यहां तक कि सशस्त्र बलों ने आम तौर पर बड़े पैमाने पर आबादी की तुलना में विकृति की अधिक घटनाएं देखी हैं।

फिर उन व्यक्तियों की दूसरी श्रेणी है जो समलैंगिक होंगे। इन व्यक्तियों को इनवर्ट्स कहा जाता है। इनवर्ट्स ऐसे व्यक्ति होते हैं जो विपरीत लिंग के सदस्यों के प्रति आकर्षित होना कभी याद नहीं रख सकते। अपने संज्ञानात्मक वयस्क जीवन की शुरुआत से ही, उन्होंने एक ही लिंग के प्रति आकर्षित महसूस किया है। व्युक्कम का कारण क्या है, इसके बारे में अनुसंधान स्केच है। लेकिन एक सहसंबंध मौजूद है। इसका एक कारण घर में पिता की भांति का न होना भी रहा है। वास्तव में, अमेरिका में यहूदी बस्ती की स्थितियों में जहां पिता की अनुपस्थित की अधिक घटना होती है, वहां उलटा nobody knows is that Mike's father lives in another town and he's an alcoholic, and that Mike is compulsively driven to achieving greater and greater accomplishments in a vain attempt to gain his father's approval and to raise his own self esteem. Everybody in the church thinks that Mike has it together. They think he has a healthy, vital relationship with God. But what they don't see is a profound sense of worthlessness that's driving Mike to an ulcer.

Four rows behind Mike, there are Clarence and Sharon. Sharon attends faithfully while Clarence only comes about once a month. The preacher knows Clarence is an awfully successful businessman. He's heard he earns well into six figures, what he doesn't know is that Clarence is an alcoholic. And when he gets drunk, he gets mean, violent and beats Sharon.

Across the aisle there's Tim and Allison, and their little daughter Amanda. The preacher has heard they're having trouble, even separated for a while. Just this week, he got wind that Tim may be having a hard time at the job. He has no idea that it's all due to Tim's cocaine binges every two weeks.

Then on the third row, down front on the right, there's sweet little Emma. A widow now, Emma was a charter member of the local congregation when it began 47 years ago. Always faithful in attendance, Emma started missing some services lately, friends noticed her hands shook. And they feared that she was suffering in the early stages of Parkinson's disease. Little did they know that her shaking hands came from temporary withdrawal from prescription pain medication that she began taking two years ago, following a minor surgery, prescriptions that she had repeatedly refilled by lying to her doctor and deceiving her pharmacist.

On the back row, there's Marvin, whose 12-year-old son was killed by a drunk driver. Across the way, two teens who vandalized the area school after they had drunk beer and smoked pot. The list goes on and on and on. Now folks the names that I presented to you are purely hypothetical, but the scenarios that I just shared with you are real. They and hundreds of others are repeated in this and every church in America. Chemical dependency and drug abuse are plaguing our country and destroying millions of lives. Five out of 12 people have had their lives touched by chemical dependency.

Now let's stop a few moments and consider what we're talking about. What do we mean by chemical dependency? Chemical dependency is defined as the state that results from the process of increasingly turning to chemical use to meet life's needs. In other words, the chemical may be alcohol, the most prevalent, dangerous,

होने की एक समान घटना होती है - राष्ट्रीय आबादी का लगभग दोगुना।

हम बाद में उन शर्तों पर वापस आने वाले हैं, लेकिन याद रखें, समलैंगिक कृत्य, समलैंगिक अभिविन्यास, विकृति और उलटा के बीच का अंतर।

आइए अब बाइबल पर आते हैं। समलैंगिक व्यवहार के बारे में बाइबल क्या कहती है? परमेश्वर के वचन में इस विषय पर सामग्री का खजाना नहीं है, लेकिन जब बाइबल समलैंगिकता के बारे में कुछ कहती है, तो वह इस तरह के व्यवहार के खिलाफ दृढ़ता से बोलती है। मुझे लगता है कि बाइबिल में आप इसे पार करने वाला पहला स्थान उत्पत्ति 19 है। लूत, जो इब्राहीम का रिश्तेदार था, ने सदोम शहर में दो अजनबियों को प्राप्त किया और उसके घर पर सचमुच शहर के नीच, बेस साथियों द्वारा बमबारी की गई, जो पुरुष थे स्पष्ट रूप से समलैंगिक थे, उनके अभिविन्यास और उनके कार्य दोनों में। इसलिए, उन्होंने लूत के घर पर धावा बोल दिया। आखिरकार, सदोम और उसकी बहन शहर, अमोरा को नष्ट कर दिया गया। न्यायियों 19 में, आप इसी तरह की स्थिति के बारे में पढ़ते हैं, इस बार गिंबा शहर में।

डीएस बेली ने अपनी पुस्तक, होमोसेक्सुअलिटी एंड द क्रिश्चियन टेडिशन में. यह तर्क देने की कोशिश की है कि उल्लंघनकर्ता (विशेषकर लूत और उसके घर में अजनबियों से जुड़े प्रकरण में) वास्तव में आतिथ्य के नियमों का उल्लंघन कर रहे थे और इसलिए उन्हें फटकार लगाई जा रही थी, उनके लिए नहीं समलैंगिक गतिविधि। श्री बेली का सिद्धांत जांच की कसौटी पर खरा नहीं उतरता. क्योंकि हमें सदोम और अमोरा में जो हआ उसकी व्याख्या दी गई है। यह यहूदा की छोटी किताब, पद 7 में पाया जाता है। "इसी तरह, सदोम और अमोरा और आसपास के शहरों ने खुद को यौन अनैतिकता और विकति के लिए छोड़ दिया। वे उन लोगों के उदाहरण के रूप में काम करते हैं जो अनन्त आग की सजा भुगतते हैं। " इससे यह काफी स्पष्ट हो जाता है, ' यह? वह पत्र जिसे हम जूड कहते हैं, हमें यह बताने के लिए लिखा गया है - कम से कम उसका वह हिस्सा - कि उन व्यक्तियों की उनके समलैंगिक व्यवहार के कारण निंदा की गई थी। सच कहूँ तो, यह कुछ पुराने नियम के निषेधों से मेल खाता है. जैसे लैव्यव्यवस्था 18:22 और लैव्यव्यवस्था 20:13 जहाँ पुरुष समलैंगिकता को घृणा के रूप में वर्णित किया गया है जिसके लिए मृत्युदंड निर्धारित है।

इन बयानों की ताकत उनके संदर्भ में और साथ ही संलग्न दंड की गंभीरता के साथ भी पाई जाती है। फिर जब आप पुराने नियम से नए नियम में जाते हैं, तो आप पाते हैं कि पॉल समलैंगिक गतिविधियों की निंदा करता रहता है। "यहां तक कि महिलाओं ने भी अप्राकृतिक संबंधों के लिए प्राकृतिक संबंधों का आदान-प्रदान किया। उसी तरह, पुरुषों ने भी महिलाओं के साथ प्राकृतिक संबंधों को त्याग दिया और एक दूसरे के लिए वासना से भर गए।" (रोमियों 1:24-25) यह सब उन व्यक्तियों के संदर्भ में है जो परमेश्वर से दूर हो गए हैं—वे ईश्वरविहीन हैं—और परमेश्वर उस प्रकार के व्यवहार

costly, deadly drug in our culture. It may be nicotine, cocaine, crack, heroine, amphetamines, morphine, tranquilizers or any number of prescription drugs., If there is a reliance on some chemical substance to make it through life, the day, the week or to meet life's needs; whatever the substance may be, that's called chemical dependency. It may mean having a drink a day. It may mean having to have several drinks every two hours. It may mean an evening tranquilizer so you can get to sleep. It may mean a cocaine binge every other weekend. That's chemical dependency.

Chemical dependency often leads to a physical addiction. Now look at that definition, let's understand what we're talking about. Physical addiction occurs when the cells of the body change the way they function because of the use of certain substances. A physical addiction literally means you are physiologically altered and your body craves that chemical in order to function.

The tragedy of those two things is chemical dependency invariably fails to meet the life needs that the user is seeking to meet. Let's not lie about it. A fix of something to a drug user feels good initially. That's why they take it. There is a pleasure. But over just a short period of time, that chemical begins to isolate those people, isolate them from God, from others they love and from the things that really can meet their life's needs. After a period of chemical dependency physical addiction begins and physical addiction is a death process. Sometimes it's slow, often fast, but always fatal unless the cycle is broken and that seldom occurs.

How devastating is the dependency and abuse problem?

It is catastrophe.

Statistics from the Alcohol and Drug Council of Middle Tennessee show that in Nashville Tennessee drugs are involved in 50 percent of all spouse abuse, 50 percent of all traffic fatalities, 35 percent of all suicides, 62 percent of all assaults, 52 percent of all rapes, 49 percent of all murders, alcohol or chemical addiction involved, 38 percent of all child abuse, 68 percent of all manslaughters, and 69 percent of all drownings.

But the one that really blew me away was a 1994 Tennessean article that said in Metro Nashville, more than 80 percent of the locally sentenced felons are because of an offense related to drugs. Now let that sink in. If it weren't for drugs, you could take four out of every five convicted felons out of jail in our community. It is destroying lives, it's destroying families.

It's wiping us out.

को बर्दाश्त नहीं करेगा। कठोर शब्द, परन्तु वास्तव में वही बात पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 6:9 में भी कही, जब उसने अधर्मियों की सूची बनाई, और उसमें समलैंगिकों को भी शामिल किया। 1 तीमुथियुस 1:10 में, सदोमियों को अधर्मियों और आज्ञा न मानने वालों में सुचीबद्ध किया गया था।

अब मैं यहां एक बात बताना चाहता हूं कि, यदि आपने पहले नहीं सुना है, तो आप शायद भविष्य में सुनेंगे। उदार धर्मशास्त्रियों के बीच इस बात पर जोर देने के लिए एक आंदोलन चल रहा है कि पॉल समलैंगिकता के खिलाफ उन तीन चेतावनियों में विकृति की निंदा कर रहा था, उलटा नहीं। आपको अंतर याद है? कि पॉल उन व्यक्तियों से कह रहा था जो "विपरीत लिंग के लिए एक प्राकृतिक आकर्षण के साथ पैदा हुए थे", लेकिन जो बदल गए हैं, कि उन व्यक्तियों के लिए ऐसा करना गलत है। इसका निहितार्थ यह है, "यदि कोई उल्टा है जो समलैंगिक व्यवहार का अभ्यास करना चुनता है, तो उस व्यक्ति को प्रतिबंधित नहीं किया जाएगा।"

यह सही नहीं है। शास्त्र के कम से कम दो कारण हैं कि यह सच है:

- 1) प्राथमिक कारण वह शब्द है जिसका उपयोग पौलुस ने रोमियों 1 में, 1 कुरिन्थियों 6 में, और 1 तीमुथियुस 1 में समलैंगिक व्यवहार की निंदा करने के लिए किया था। इसके विपरीत, वह तीन अलग-अलग ग्रीक शब्दों में से एक का इस्तेमाल कर सकता था जो विशेष रूप से यौन विकृति के लिए संदर्भित होता, लेकिन उसने ऐसा नहीं करने का फैसला किया। तो, निहितार्थ स्पष्ट है, चाहे उलटा हो या विकृति, समलैंगिक गतिविधि की निंदा की जाती है।
- 2) ध्यान दें कि रोमियों 1 में संदर्भ सृष्टि का है। समलैंगिकता के खिलाफ निषेध केवल व्यक्तियों के उद्देश्य से नहीं है, चाहे वह उलटा हो या विकृत। इसमें कहा गया है कि यह ईश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है। "चूंकि भगवान के बारे में जो कुछ भी जाना जा सकता है वह उनके लिए स्पष्ट है क्योंकि भगवान ने उन्हें स्पष्ट कर दिया है। दुनिया के निर्माण के बाद से, भगवान की अदृश्य गुणवत्ता, उनकी शाश्वत शक्ति और उनकी दिव्य प्रकृति को स्पष्ट रूप से देखा गया है, जो कि है से समझा जा रहा है इसलिए बनाया गया है कि पुरुष बिना किसी बहाने के हैं।" (रोमियों 1:19-20)

आप देखिए, रोमियों 1 का संदर्भ यह है कि परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया कि उसकी योजना क्या थी। यह एक पुरुष के लिए एक महिला को चुनना है, और दोनों के लिए शादी के संदर्भ में, जीवन भर के रिश्ते में एक साथ रहना है। परमेश्वर ने चीजों को बनाने का यह स्वाभाविक तरीका है, जिस तरह से उसने इस दुनिया को चलाने के लिए चुना है। यह भाषा से बहुत स्पष्ट है।

निष्कर्षः

- C. सामान्य रूप में
- 1) समलैंगिकता हमारी संस्कृति में अधिक आम है, जितना हम में से कोई भी स्वीकार करना चाहेगा।

It's the tool that's Satan is using to just kill us. Nationwide in 1960, in our country there were fewer than 30,000 arrests for drug-related offenses. In 1990, there were over one million. Today, 1994, American prison cells are filled with drug dealers, addicts, alcohol abusers and the mentally ill, often mentally ill because of substance abuse.

Some people tend to say, "Well, let's just put more of them in prison." We've already got four million of them in prison right now. Today, America has the highest incarceration percentage of any industrialized country in the world. Five hundred and nineteen of every 100,000 U.S. citizens are in prison; 80 percent of that because of drugs. Compare America to Canada which has 116 for every 100,000 and in Japan only 36 for every 100,000. Drug-related cases are so epidemic that our nation's courtrooms are becoming impotent.

Medically in our country, drugs are costing us \$75 billion a year; and half-a-million newborns every year. This one breaks my heart. A half-a-million newborns every year are exposed to drugs during pregnancies. Crack babies that were a rarity just a decade ago may crowd and fill \$2,000-a-day pediatric wards today. It is a catastrophe.

Specific causes.

The cause did not start as an epidemic; it goes back to one on one. Why do people mess with drugs? What's the whole root? You already know them.

Peer pressure - This pressure particularly affects young people. Their curiosity wants to know what it's all about. Some people like to play with fire. I don't know why, but they do.

Pain - Every alcoholic is seeking to relieve pain. It's the number one reason for drinking. It may be emotional, physical or psychological. But pain is a reason.

Lack of self-worth and self-esteem - Young people who turn to drugs are typically the ones who are most insecure. Oh, some of them are big and bold and a lot of bravado, but you when cut through that, they're the ones who are insecure. Adults are the same way. The whole idea of the cocktail party is the idea that I can't relate in my natural state but give me a little chemical and I'll loosen up. I'll be acceptable, I've got self-worth.

Root cause.

Some of you are going to think this is simplistic, but this is the truth. The root cause of the epidemic goes all the way back to the Garden of Eden. When Adam and Eve chose to sin, they lost life. They lost real life meaning they not only lost an endless quantity of life on what

2) समलैंगिकता एक ऐसा मुद्दा है जो आज सबसे आगे बढ़ रहा है। 3) जिस संगति और उत्साह के साथ बाइबल समलैंगिक कृत्यों के खिलाफ बोलती है, उसका अर्थ है कि एक ईसाई इस तरह के अभ्यास को ईश्वर द्वारा नियुक्त या ईश्वर-स्वीकृत जीवन शैली के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता है। किसी व्यक्ति के यौन अभिविन्यास या प्रेरणा की परवाह किए बिना यह सच होगा।

D. ईसाइयों के लिए

1) बाइबल सिखाती है कि हम पाप से घृणा करते हैं, परन्त् हम पापी से प्रेम करते हैं। जब हम किसी प्रुष या महिला को समलैंगिक कहते हैं, तो क्या हम उसका उल्लेख कर रहे हैं कि वे क्या हैं, या वे क्या करते हैं? अब इसके बारे में एक पल के लिए सोचें। आप किसी व्यक्ति को हत्यारा कब कहेंगे? जब उन्होंने हत्या की है, है ना? आप किसी व्यक्ति को चोर कब कहेंगे? जब उसने कुछ च्राया हो। अधिक सकारात्मक नोट पर, आप किसी व्यक्ति को प्लंबर कब कहेंगे? केवल तभी जब उन्होंने उस कार्य में कौशल का प्रदर्शन किया हो। हम में से बह्त से, जो ईसाई हैं, पाप समलैंगिकता की प्रकृति हमारे लिए इतनी अरुचिकर है, तो शायद हमारे पास पापी से पाप को अलग करने का कठिन समय था। हमारी दुनिया में ऐसे लोग हैं जिनकी समलैंगिक प्रवृत्ति हो सकती है. लेकिन जो पाप से लंड रहे हैं। परमेश्वर उन्हें इससे बचा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे वह आपको और मुझे हमारी प्रवृत्तियों से बचा सकता है, चाहे हमारे पाप की "अकिलीज़ हील" कुछ भी हो - और हमारा पूरी तरह से अलग हो सकता है। लेकिन मैं ईसाइयों से विनती करता हूं, क्योंकि हम समलैंगिकता के मुद्दे का सामना करते हैं, समस्या से भागें नहीं, उसका सामना करें। पाप से घुणा करते हुए पापी से प्रेम करो। यही यीशू ने किया, यही वह हमसे समलैंगिकता के पाप के साथ-साथ वेश्यावृत्ति के पापों, रासायनिक निर्भरता, क्रोध और अन्य सभी पापों के संबंध में करने की अपेक्षा करेगा।

वर्षों पहले, इंटरप्रेटर की बाइबिल (एक टिप्पणी) ने रोमियों 1:27 के बारे में यह लिखा था "विषय एक है, जिसमें ईमानदारी से सामना किया जाना चाहिए, लेकिन एक जिस पर अच्छी भावना का कोई भी व्यक्ति नहीं रहना चाहिए।"

मुझे लगता है कि यह दशकों से समलैंगिकता और समलैंगिक व्यवहार पर हमारे दृष्टिकोण का वर्णन करता है। मुझे डर है कि हम ऐसे समय में रह रहे हैं जहां हमारे दिमाग को उस पर अधिक समय तक रहना चाहिए, क्योंकि यह हमारे समाज में जगह ले चुका है। अद्भुत अन्ग्रह पाठ #1013

प्रशन:

was then a perfect earth, they lost a quality of life. Prior to that point, they didn't know what pain was, they didn't know what frustration was, they didn't know what worry was. They didn't know what it was to be sad. They had absolute meaning in life. But when they sinned, they lost it, and they lost it for all of us. For centuries, men and women have been trying to get it back. We tried drugs, money, power, work, play, religion, and 1,001 other things.

Core message.

There is only one thing that will recapture the real life that was lost in the Garden of Eden, it's Jesus Christ.

Jesus often talked about being life? He said, "I am the bread of life," (John 6:48) "I am the way, I am the truth, I am the life," (John 14:6), "I have come, so that they might have life, and have it abundantly," (John 10:10) and "I am the resurrection and the life." (John 11:25) Eleven different times in the gospel accounts, Jesus said, "I am life." He's the life we lost. A genuine relationship with Jesus is the only thing that can replace what was lost in Eden. Using anything else to try to fill that void is sin.

Sin.

Do you know what the word, "sin," means? In the Hebrew it means "to miss the mark." It was used of an archer who missed the mark. By the way, I hear this question all the time. Is alcoholism a sin, or is it a disease? Is chemical dependency a sin, or is it a disease? It is always asked as if it has to be an either/or answer. The truth is, it's both. It's BOTH! It is sin, like materialism, or greed, or work-aholism, or a thousand other things, it totally misses the mark in the quest for real life. That's sin, but so are a lot of others. But it becomes a disease once chosen and frequented. Those chemical substances rack and ravage the body literally beyond the individual's control.

For about 10 percent of our population that are alcoholic, once they start to drink, the combination of their physical, their psychological make-up, and the power of the drug, makes it virtually impossible for them to stop by sheer will-power. Something will have to intervene. For us to look piously at a person who's an alcoholic and say "Quit drinking" would be like telling a drowning man "Start swimming." Both of them would if they could. They can't.

Enslavement

The psychological and the physical addictive powers of drugs are incredible. In 1 Corinthians 6:12, the Corinthians were saying "Everything is permissible for me, everything is permissible." They were misusing their freedom. Paul says "Everything is permissible for

| 1. | सील्ट क विमान क बाद स समलावकता का |
|------|---|
| | समाज द्वारा स्वीकार या सहन किया गया है? |
| सई | ो गलत |
| | |
| 2. | एक समलैंगिक क्रिया एक ही लिंग के दो सदस्यों |
| | के बीच संभोग है? |
| सर्ह | ो गलत |
| | |
| 3. | समलैंगिक अभिविन्यास एक विषमलैंगिक पर |
| | समलैंगिक संबंध की प्रवृत्ति या इच्छा है? |
| | सही गलत |
| 4. | सदोम और अमोरा के पुरुषों ने खुद को यौन |
| | विकृति के हवाले कर दिया? सही |
| | सही गलत |
| 5. | विवाह के बाहर सभी यौन क्रियाएँ, समलैंगिकता और |
| | व्यभिचार, दोनों ही पाप हैं? |
| सई | ो गलत |
| 6. | प्रेरित पौलुस ने समलैंगिकता की निंदा की और यह |
| | कहते हुए उद्धृत किया गया कि "यहां तक कि |
| | महिलाओं ने भी अप्राकृतिक संबंधों के लिए |
| | प्राकृतिक संबंधों का आदान-प्रदान किया। उसी तरह, |
| | पुरुषों ने भी महिलाओं के साथ प्राकृतिक संबंधों को |
| | त्याग दिया और एक दूसरे के लिए वासना से भर |
| | गए।" |
| सर्ह | ो गलत |
| | |
| | |

अध्याय ६

रासायनिक निर्भरता से मुक्ति

एक प्रचारक ने अपनी 300 सदस्यीय मंडली पर ध्यान दिया। प्रत्येक पैरिशियन की विशेषता एक मुस्कुराता हुआ चेहरा, अच्छे कपड़े, कंघी किए हुए बाल, पॉलिश किए हुए दांत होते हैं। उपदेशक ने अभी-अभी ईसाई जीवन शैली पर एक मजबूत उपदेश दिया था, जिसमें पीने की बुराइयों पर एक पाठ और अपने लोगों को शराब या मजबूत दवाओं के सामयिक उपयोग से पूरी तरह से दूर रहने के लिए एक भावूक नसीहत शामिल थी।

me, but I will not be mastered by anything." Read that last point again, "I will not be mastered by anything." The fact is those who fool with drugs, become fools. They will be mastered by those substances to where they will have to have a snort, a fix, a drink, a smoke, a pill or a shot, whatever.

Paul says we're slaves either to sin or we're slaves to God. "I put this in human terms because you are weak in your natural selves." Now we don't admit that, but every one of us is weak. We're weak as kittens. "Just as you used to offer the parts of your body in slavery to impurity and to ever-increasing wickedness, so now offer them in slavery to righteousness leading to holiness." (Romans 6:19) He says, don't offer yourselves that way. But I'll tell you something about the drug enslavement. Here's the key: Satan, if you'll remember in John 8:44, is called by Jesus a liar, and the father of all lies. Do you know what Satan tells the chemically dependent, and those of you out there who are chemically dependent? Do you know what he's telling you? He's telling you over and over again, you can stop anytime you want to. Do you know what the chemically dependent do? They'll stop for a little while, just to give themselves a false proof that they can do it. But they can't.

There are 18 million alcoholics in America today, just one drug, 18 million alcoholics. Only 15 percent are seeking help. Do you know why only three million seek help? It is because the other 15 million believe the lie. They believe the lie that they've mastered the drug, when the drug has mastered them.

The cure

Will power can't do it. Is it an absolutely endless cycle? No, there is a cure for the dependent person.

1. Realize the inadequacy and destructiveness of drug abuse.

First, he or she must realize the inadequacy and the destructiveness of drug abuse. The person must come to a point that if they continue on their present course, it would be more painful than recovering. In other words, the person has to realize that he or she is chemically dependent. The first step of the 12-step program developed by Alcoholics Anonymous is (and this is the foundation): When an individual will come and say in the presence of others, "I admit I am powerless over alcohol and that my life has become unmanageable." Until they are willing to admit that there's no help. When they admit that, the door becomes open.

2. Believe that Christ can fill the void in life.

अपने पाठ को समाप्त करते हुए, वह भीड़ को अपने दिल की गहराई में यह मानकर देखता है कि शायद कुछ लोग अवसर पर आत्मसात करेंगे, लेकिन उसे यकीन है कि उसके किसी भी सदस्य को शराब या ड्रग्स से कोई गंभीर समस्या नहीं है। उसे थोड़ा एहसास होता है, आधे रास्ते में बाईं ओर माइक बैठता है। माइक एक 24 वर्षीय मेडिकल छात्र है जो हाई स्कूल में बाइबल की कक्षा पढ़ाता है। वह मिशन कमेटी में काम करता है और हर कोई उसके जोश और काम और समर्पण के लिए उसकी प्रशंसा करता है। लेकिन जो कोई नहीं जानता वह यह है कि माइक के पिता दूसरे शहर में रहते हैं और वह एक शराबी है, और माइक अपने पिता की स्वीकृति प्राप्त करने और अपने स्वयं के आत्मसम्मान को बढ़ाने के व्यर्थ प्रयास में अधिक से अधिक उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए मजबूर है। चर्च में हर कोई सोचता है कि माइक के पास यह एक साथ है। वे सोचते हैं कि उसका परमेश्वर के साथ एक स्वस्थ, महत्वपूर्ण संबंध है।

माइक के पीछे चार पंक्तियाँ, क्लेरेंस और शेरोन हैं। शेरोन ईमानदारी से उपस्थित होता है जबिक क्लेरेंस महीने में केवल एक बार आता है। उपदेशक जानता है कि क्लेरेंस एक बहुत ही सफल व्यवसायी है। उसने सुना है कि वह छह अंकों में अच्छी कमाई करता है, जो वह नहीं जानता कि क्लेरेंस एक शराबी है। और जब वह नशे में हो जाता है, तो वह क्रूर हो जाता है, हिंसक हो जाता है और शेरोन की पिटाई करता है।

गिलयारे के उस पार टिम और एलीसन और उनकी छोटी बेटी अमांडा है। उपदेशक ने सुना है कि उन्हें परेशानी हो रही है, यहां तक कि कुछ समय के लिए अलग भी हो गए हैं। बस इसी हफ्ते, उसे हवा मिली कि टिम को काम में मुश्किल हो सकती है। उसे इस बात का अंदाजा नहीं है कि हर दो हफ्ते में टिम की कोकीन खाने के कारण यह सब हो रहा है।

फिर तीसरी पंक्ति में, नीचे दाईं ओर, प्यारी छोटी एम्मा है। अब एक विधवा, एम्मा स्थानीय कलीसिया की एक चार्टर सदस्य थी जब यह 47 साल पहले शुरू हुई थी। उपस्थिति में हमेशा वफादार, एम्मा ने हाल ही में कुछ सेवाओं को याद करना शुरू कर दिया, दोस्तों ने देखा कि उसके हाथ कांप रहे थे। और उन्हें डर था कि वह पार्किंसंस रोग के शुरुआती दौर में पीड़ित थी। उन्हें कम ही पता था कि उसके कांपते हाथ डॉक्टर के पर्चे की दर्द की दवा से अस्थायी रूप से वापस लेने से आए थे, जिसे उसने दो साल पहले लेना शुरू किया था, एक छोटी सी सर्जरी के बाद, नुस्खे जो उसने अपने डॉक्टर से झूठ बोलकर और अपने फार्मासिस्ट को धोखा देकर बार-बार रिफिल किए थे।

पिछली पंक्ति में, मार्विन है, जिसके 12 वर्षीय बेटे को नशे में चालक ने मार डाला था। रास्ते में, दो किशोर जिन्होंने बीयर और धूम्रपान के बर्तन पीने के बाद क्षेत्र के स्कूल में तोड़फोड़ की। सूची धीरे - धीरे करके बढ़ती ही जाती है। अब दोस्तों जो नाम मैंने आपके सामने रखे हैं वे पूरी तरह से काल्पनिक हैं, लेकिन जो परिदृश्य मैंने अभी आपके साथ साझा किए हैं वे वास्तविक हैं। वे He or she must believe that Christ can fill the void in life. You say, what void? The void we talked about earlier. The void created when sin entered the world, the void that drug and chemicals are trying to fill in the first place just to help you get through the day, to get over the pain or to give you the high. They don't do it, but Jesus does. He is the way, the truth, and the life.

This isn't a new thing, it goes back 2,000 years when Paul said in Ephesians 5:18, "Don't get drunk on wine." There's the alcohol drug. He said, that doesn't fill the void. "But instead, be filled with the Spirit." What's he talking about? He's talking about the Spirit of Christ, the Spirit of God and the Holy Spirit that God lets dwell in you when you come to Christ. By the way, the second step in Alcoholics Anonymous is to say, "I have come to believe in a power greater than myself that can restore me to sanity." They're right, only I'll go further. The source of that power is Jesus Christ. He and He alone will ultimately restore you to sanity.

3. Become part of a healing community.

The dependent person becomes part of a healing community. A "healing community," can be the AA, the NA or another support group. But I want you to hear this and hear this well. We are not just talking to dependent folks, we're talking to a lot of people who are part of a family, you become codependent. A chemically dependent person will not get well on their own. Did you hear that? A chemically dependent person will not get well on their own. They will not identify the problem on their own. They will not seek help on their own. They will not stay the course of recovery alone. That's why God was so wise when he said in Ecclesiastes 4:9-11, "two are better than one. Because if one is walking alone and falls down, there's nobody to pick him up. But if there are two and one falls down, he's got somebody to pick him up."

Recovery from chemical dependency is a lifelong process. That's why alcoholics who've been sober for 10 years can still be seen attending AA meetings, because the dependent person has to become part of a healing community. Now I want to say something to church folks. Folks, that ought to be the church. Do you hear me? It's a shame that a program like Alcoholics Anonymous didn't rise up in churches, but outside of them.

और सैकड़ों अन्य इस में और अमेरिका के हर चर्च में दोहराए जाते हैं। रासायनिक निर्भरता और मादक द्रव्यों का सेवन हमारे देश को त्रस्त कर रहा है और लाखों लोगों के जीवन को नष्ट कर रहा है। 12 में से पांच लोगों ने अपने जीवन को रासायनिक निर्भरता से छुआ है।

आइए अब कुछ क्षण रुकें और विचार करें कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं। रासायनिक निर्भरता से हमारा क्या तात्पर्य है? रासायनिक निर्भरता को उस स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है जो जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए रासायनिक उपयोग में तेजी से बदलने की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप होती है। दूसरे शब्दों में, रसायन हमारी संस्कृति में शराब, सबसे प्रचलित, खतरनाक, महंगी, घातक दवा हो सकती है। यह निकोटीन, कोकीन, दरार, नायिका, एम्फ़ैटेमिन, मॉर्फिन, टैंकिलाइज़र या किसी भी संख्या में नुस्खे वाली दवाएं हो सकती हैं। यदि जीवन, दिन, सप्ताह या जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी रासायनिक पदार्थ पर निर्भरता है: पदार्थ कुछ भी हो. उसे रासायनिक निर्भरता कहते हैं। इसका मतलब हो सकता है कि एक दिन में एक पेय पीना। इसका मतलब यह हो सकता है कि हर दो घंटे में कई पेय पीना चाहिए। इसका मतलब शाम का टैंक्विलाइज़र हो सकता है ताकि आप सो सकें। इसका मतलब हो सकता है कि हर दूसरे सप्ताहांत में कोकीन का सेवन किया जाए। वह रासायनिक निर्भरता है।

रासायनिक निर्भरता अक्सर एक शारीरिक लत की ओर ले जाती है। अब उस परिभाषा को देखें, आइए समझते हैं कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं। शारीरिक व्यसन तब होता है जब कुछ पदार्थों के उपयोग के कारण शरीर की कोशिकाएं अपने कार्य करने के तरीके को बदल देती हैं। एक शारीरिक व्यसन का शाब्दिक अर्थ है कि आप शारीरिक रूप से बदल गए हैं और आपका शरीर कार्य करने के लिए उस रसायन को तरसता है।

उन दो चीजों की त्रासदी यह है कि रासायनिक निर्भरता हमेशा जीवन की जरूरतों को पूरा करने में विफल रहती है जिसे उपयोगकर्ता पूरा करना चाहता है। आइए इसके बारे में झूठ न बोलें। किसी ड्रग उपयोगकर्ता के लिए कुछ ठीक करना शुरू में अच्छा लगता है। इसलिए वे इसे लेते हैं। एक आनंद होता है। लेकिन कुछ ही समय में, वह रसायन उन लोगों को अलग-थलग करना शुरू कर देता है, उन्हें भगवान से अलग कर देता है, दूसरों से वे प्यार करते हैं और उन चीजों से जो वास्तव में उनके जीवन की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। रासायनिक निर्भरता की अवधि के बाद शारीरिक व्यसन शुरू होता है और शारीरिक व्यसन एक मृत्यु प्रक्रिया है। कभी-कभी यह धीमा होता है, अक्सर तेज़ होता है, लेकिन हमेशा घातक होता है जब तक कि चक्र टूट न जाए और ऐसा शायद ही कभी होता हो।

निर्भरता और दुरुपयोग की समस्या कितनी विनाशकारी है?

यह प्रलय है।

In 1978 in a Gallup Poll, one out of four Americans admitted having a personal alcohol problem. But only eight percent said they would turn to the church or its trained personnel if they or a family member had a drinking problem; only eight percent. See, we've done an awfully good job pointing out that chasing a drug is wrong, we've not done a very good job of trying to extend a hand and saying, "Here's how you get it right. Here's how you get it fixed." We've got to do both.

Galatians 6:1 says, "Brother, if anyone is caught in a sin, ye who are spiritual restore him gently." And then the next verse says, "You carry one another's burdens." And the word there means a prolonged journey, not just saying, "You ought to quit that." Get the burden and put it on your back and carry with them over the long haul.

4. Be open and honest about manipulation, lying and rationalization.

The dependent person must become open and honest about his manipulation, his lying, his rationalization, because every drug dependent person goes through that. They lie to everybody.

"If we confess our sins, he is faithful and just to forgive them and cleanse us from all unrighteousness." (1 John 1:9) He's got to come clean. It frees his spirit.

5. Relearn healthy living skills.

The dependent person relearns healthy living skills.

6. The family's part.

- a) Maintain agape love for the addict, for the dependent. That means a love that seeks the best for them, never gives up, but it does what's best.
- b) Don't aid or abet the dependent behavior. Don't fuel the fire. You keep the agape love. Be like the father in the parable of the Prodigal Son. He didn't keep sending money. He knew the boy had to come to his senses; he had to come home.
- c) Confront carefully. You do have to confront at times. They will not get well alone. You've got to show them what's happening to their lives. Do you how many confrontations it takes on the average for a dependent person to seek recovery? Fifty-four, yes 54. If you're living with an alcoholic, if you're living with a drug addict and you have tried over and over again

मिडिल टेनेसी के अल्कोहल एंड ड्रग काउंसिल के आंकड़े बताते हैं कि नैशविले टेनेसी में ड्रग्स सभी पित-पत्नी के दुरुपयोग के 50 प्रतिशत, सभी ट्रैफ़िक मृत्यु के 50 प्रतिशत, सभी आत्महत्याओं के 35 प्रतिशत, सभी हमलों के 62 प्रतिशत, सभी बलात्कारों के 52 प्रतिशत में शामिल हैं।, सभी हत्याओं का 49 प्रतिशत, शराब या रासायिनक व्यसन शामिल है, सभी बाल शोषण का 38 प्रतिशत, सभी हत्याओं का 68 प्रतिशत, और सभी इबने का 69 प्रतिशत।

लेकिन जिसने वास्तव में मुझे उड़ा दिया वह 1994 का टेनेसीयन लेख था जिसमें मेट्रो नैशविले में कहा गया था, स्थानीय रूप से सजाए गए अपराधियों में से 80 प्रतिशत से अधिक ड्रग्स से संबंधित अपराध के कारण हैं। अब इसे अंदर जाने दें। अगर यह ड्रग्स के लिए नहीं होता, तो आप हमारे समुदाय में हर पांच दोषी अपराधियों में से चार को जेल से बाहर निकाल सकते थे। यह जीवन को नष्ट कर रहा है, यह परिवारों को नष्ट कर रहा है।

यह हमें मिटा रहा है।

यह वह उपकरण है जिसका उपयोग शैतान सिर्फ हमें मारने के लिए कर रहा है। देश भर में 1960 में, हमारे देश में नशीली दवाओं से संबंधित अपराधों के लिए 30,000 से भी कम गिरफ्तारियां हुईं। 1990 में, एक मिलियन से अधिक थे। आज, 1994, अमेरिकी जेल की कोठरी नशीली दवाओं के सौदागरों, व्यसनों, शराब के नशेड़ियों और मानसिक रूप से बीमार लोगों से भरी हुई है, जो अक्सर मादक द्रव्यों के सेवन के कारण मानसिक रूप से बीमार होते हैं।

कुछ लोग कहते हैं, "ठीक है, चलो उनमें से और को जेल में डाल दें।" हम उनमें से चार मिलियन को पहले ही जेल में डाल चुके हैं। आज, अमेरिका में दुनिया के किसी भी औद्योगिक देश का सबसे अधिक कैद प्रतिशत है। प्रत्येक 100,000 अमेरिकी नागरिकों में से पांच सौ उन्नीस जेल में हैं; उसमें से 80 प्रतिशत ड्रग्स के कारण। अमेरिका की तुलना कनाडा से करें जिसमें प्रति 100,000 के लिए 116 और जापान में प्रति 100,000 के लिए केवल 36 हैं। नशीली दवाओं से जुड़े मामले इतने महामारी के हैं कि हमारे देश की अदालतें नपुंसक होती जा रही हैं।

चिकित्सकीय रूप से हमारे देश में, दवाओं की कीमत हमें सालाना 75 अरब डॉलर है; और हर साल आधा मिलियन नवजात शिशु। यह मेरा दिल तोड़ देता है। गर्भावस्था के दौरान हर साल डेढ़ लाख नवजात शिशु दवाओं के संपर्क में आते हैं। क्रैक बच्चे जो सिर्फ एक दशक पहले दुर्लभ थे, आज भीड़ हो सकती है और 2,000 डॉलर प्रति दिन बाल चिकित्सा वार्ड भर सकते हैं। यह एक प्रलय है।

विशिष्ट कारण।

कारण एक महामारी के रूप में शुरू नहीं हुआ; यह एक के बाद एक वापस चला जाता है। लोग ड्रग्स के साथ खिलवाड़ क्यों करते हैं? पूरी जड़ क्या है? आप उन्हें पहले से ही जानते हैं। to help them find the help they need to get well, take some heart in that statistic.

If you're chasing anything to give you real meaning in life other than Jesus, you're missing the mark. It may be your job, it may be play, it may be your pocketbook; or whatever. If you are chemically dependent today, I hope you're at the point where you'll say in the presence of somebody right now, your family, or a small group, "My life has become unmanageable, and I am powerless to change it." Until you do, you'll continue to be enslaved.

Amazing Grace Lesson #1202

| Amazing Grace Lesson #1202 |
|---|
| Questions: |
| 1. Chemical dependency is the process of increasingly |
| turning to chemical use to meet life's needs. |
| True False |
| 2. Chemical dependency never leads to physical |
| dependency. |
| True False |
| 3. Why do people mess with drugs? |
| a Peer pressure |
| b Pain |
| c Lack of self-worth |
| d All the above |
| e None of the above |
| The root cause of chemical dependency is |
| a"One is created that way" |
| b Society |
| c Hunger |
| d Sin |
| 5. One can stop being dependent any time they wish True False |
| 6. To free and heal from chemical dependency one ha |
| to: |
| a Realize the inadequacy and |
| destructiveness of drug abuse. |
| b Believe that Christ can fill the void in |
| life. |
| c Become part of a healing community. |
| d Become open and honest about |
| manipulation, lying and rationalization. |
| e Relearn healthy living skills. |
| f All the above |
| g None of the above |
| 7. Family love will confront chemical dependency |
| but will not fund it |
| True False |
| 8. How many confrontations does it take before a |
| person dependent on chemicals will seek |
| recovery? |
| a 24 |

साथियों का दबाव - यह दबाव खासकर युवा लोगों को प्रभावित करता है। उनकी जिज्ञासा जानना चाहती है कि आखिर माजरा क्या है। कुछ लोग आग से खेलना पसंद करते हैं। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन वे करते हैं।

दर्द - हर शराबी दर्द को दूर करना चाहता है। यह पीने का नंबर एक कारण है। यह भावनात्मक, शारीरिक या मनोवैज्ञानिक हो सकता है। लेकिन दर्द एक कारण है।

आत्म-मूल्य और आत्म-सम्मान की कमी - जो युवा ड्रग्स की ओर रुख करते हैं, वे आमतौर पर सबसे अधिक असुरक्षित होते हैं। ओह, उनमें से कुछ बड़े और बोल्ड हैं और बहुत अधिक बहादुर हैं, लेकिन जब आप इसे काटते हैं, तो वे असुरक्षित होते हैं। वयस्क उसी तरह हैं। कॉकटेल पार्टी का पूरा विचार यह विचार है कि मैं अपनी प्राकृतिक अवस्था में संबंधित नहीं हो सकता, लेकिन मुझे थोड़ा सा रसायन दे दो और मैं ढीला हो जाऊंगा। मैं स्वीकार्य होऊंगा, मेरे पास आत्म-मूल्य है।

मूल कारण।

आप में से कुछ लोगों को यह बात साधारण लगेगी, लेकिन यह सच है। महामारी का मूल कारण ईडन गार्डन तक जाता है। जब आदम और हव्वा ने पाप करना चुना, तो उन्होंने जीवन खो दिया। उन्होंने वास्तविक जीवन खो दिया, जिसका अर्थ है कि उन्होंने न केवल उस समय एक परिपूर्ण पृथ्वी पर जीवन की एक अंतहीन मात्रा को खो दिया, उन्होंने जीवन की गुणवत्ता भी खो दी। उस बिंदु से पहले, वे नहीं जानते थे कि दर्द क्या होता है, वे नहीं जानते थे कि निराशा क्या होती है, वे नहीं जानते थे कि चिंता क्या है। उन्हों नहीं पता था कि दुखी होना क्या है। जीवन में उनका पूर्ण अर्थ था। लेकिन जब उन्होंने पाप किया, तो उन्होंने इसे खो दिया, और उन्होंने इसे हम सभी के लिए खो दिया। सदियों से, पुरुष और महिलाएं इसे वापस पाने की कोशिश कर रहे हैं। हमने ड्रग्स, पैसा, शक्ति, काम, खेल, धर्म और 1,001 अन्य चीजों की कोशिश की।

मूल संदेश।

केवल एक चीज है जो वास्तविक जीवन को पुनः प्राप्त करेगी जो अदन की वाटिका में खो गया था, वह है यीशू मसीह।

यीशु अक्सर जीवन होने की बात करते थे? उसने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं" (यूहन्ना 6:48) "मार्ग मैं हूं, सत्य मैं हूं, जीवन मैं हूं" (यूहन्ना 14:6), "मैं आया हूं, कि वे जीवन पाए, और बहुतायत से पाए" (यूहन्ना 10:10) और "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं।" (यूहन्ना 11:25) सुसमाचार के वृत्तांतों में ग्यारह अलग-अलग बार, यीशु ने कहा, "मैं जीवन हूं।" वह जीवन है जिसे हमने खो दिया है। यीशु के साथ एक सच्चा रिश्ता ही एकमात्र ऐसी चीज है जो अदन में खोई हुई चीजों को बदल सकती है। उस शून्य को भरने के लिए किसी और चीज का प्रयोग करना पाप है।

पाप।

क्या आप जानते हैं कि "पाप" शब्द का क्या अर्थ है? हिब्रू में इसका

b. ____54
c. ___84
d. ___104
e. ___1004

Chapter 7

Freedom from Procrastination

Introduction:

Procrastination... millions of lives are less than they can be or should be spiritually, physically, intellectually, emotionally, etc., because they perpetually procrastinate. How do we get freedom from procrastination?

Procrastination is a universal problem a most of us put off dealing with. Most of us know what to do but we just tend to put it off and after a while it becomes our lifestyle. Are you a procrastinator? Do you constantly put things off? Does this little poem describe you?

Procrastination is my sin, It only brings me sorrow. I know that I should give it up, In fact, I will, tomorrow.

This lesson discusses the causes, costs, and cure for procrastination.

Causes

1. Indecision.

Have you ever been in a restaurant, the waiter comes over and you make him go away because you can't make up your mind? Or, have you ever perused the menu, order and after the entrees arrives say, "I wish I had selected what you ordered." Indecision makes us procrastinate, makes us put off buying a car, choosing a college, or changing jobs.

2. Fear.

When I'm afraid I put things off. Has anyone ever postponed a visit to the dentist you know you need? Any one put off needed surgery? Have you put off sharing your faith with a co-worker? Why? It's because you're afraid. Fear makes us procrastinate.

3. Perfectionism.

Perfectionism tends to make us procrastinate. Solomon said, "Whoever watches the wind, will not plant; whoever looks at the clouds will not reap." (Ecclesiastes 11:4) In other words, if you wait till everything is just right, the clouds and barometric pressure, you'll never get it done. The Living Bible paraphrases that verse: "If you wait for perfect conditions, you'll never

अर्थ है "निशान चूकना।" यह एक तीरंदाज के लिए इस्तेमाल किया गया था जो निशान से चूक गया था। वैसे, मैं यह सवाल हर समय सुनता हूं। क्या शराब पीना पाप है, या यह एक बीमारी है? क्या रासायनिक निर्भरता पाप है, या यह एक बीमारी है? इसे हमेशा ऐसे पूछा जाता है जैसे कि इसे या तो/या उत्तर देना है। सच तो यह है, यह दोनों है। यह दोनों है! यह पाप है, जैसे भौतिकवाद, या लालच, या काम-अपवित्रता, या एक हजार अन्य चीजें, यह वास्तविक जीवन की तलाश में पूरी तरह से निशान से चूक जाती है। यह पाप है, लेकिन बहुत से अन्य भी हैं। लेकिन यह एक बार चुने जाने और बार-बार होने वाली बीमारी बन जाती है। वे रासायनिक पदार्थ व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर सचमुच शरीर को रैक और तबाह कर देते हैं।

हमारी लगभग 10 प्रतिशत आबादी के लिए, जो शराबी हैं, एक बार जब वे पीना शुरू कर देते हैं, तो उनके शारीरिक, उनके मनोवैज्ञानिक मेकअप और दवा की शक्ति का संयोजन उनके लिए सरासर इच्छा-शक्ति से रोकना लगभग असंभव बना देता है। कुछ हस्तक्षेप करना होगा। हमारे लिए एक शराबी व्यक्ति को पवित्रता से देखना और "शराब छोड़ो" कहना एक डूबते हुए व्यक्ति को "तैराकी शुरू करो" कहने जैसा होगा। वे दोनों अगर वे कर सकते थे। वे नहीं कर सकते।

दास बनाना

नशीली दवाओं की मनोवैज्ञानिक और शारीरिक व्यसनी शक्तियाँ अविश्वसनीय हैं। 1 कुरिन्थियों 6:12 में,कुरिन्थियों कह रहे थे "मेरे लिए सब कुछ जायज़ है, सब कुछ जायज़ है।" वे अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर रहे थे। पॉल कहते हैं "मेरे लिए सब कुछ जायज़ है, लेकिन मुझे किसी चीज़ में महारत हासिल नहीं होगी।" उस अंतिम बिंदु को फिर से पढ़ें, "मुझे किसी भी चीज़ में महारत हासिल नहीं होगी।" सच तो यह है कि जो नशा करके मूर्ख बनते हैं, वे मूर्ख बन जाते हैं। उन्हें उन पदार्थों में महारत हासिल होगी जहां उन्हें एक खर्राट, एक फिक्स, एक पेय, एक धूम्रपान, एक गोली या एक शॉट, जो कुछ भी करना होगा।

पौलुस कहता है कि हम या तो पाप के दास हैं या हम परमेश्वर के दास हैं। "मैंने इसे मानवीय शब्दों में रखा है क्योंकि आप अपने स्वाभाविक रूप से कमजोर हैं।" अब हम यह नहीं मानते, लेकिन हम में से हर एक कमजोर है। हम बिल्ली के बच्चे के रूप में कमजोर हैं। "जैसे तुम अपने शरीर के अंगों को अशुद्धता और बढ़ती हुई दुष्टता की दासता में अर्पित करते थे, वैसे ही अब उन्हें पवित्रता की ओर ले जाने वाले धर्म की दासता में अर्पित करो।" (रोमियों 6:19) वह कहता है, अपने आप को इस प्रकार न चढ़ाओ। लेकिन मैं आपको नशीली दवाओं की दासता के बारे में कुछ बताऊंगा। यहाँ कुंजी है: शैतान, यदि आप यहन्ना 8:44 में याद करेंगे, तो यीशु को झूठा और सभी झूठों का पिता कहा जाता है। क्या आप जानते हैं कि शैतान रासायनिक रूप से आश्वित लोगों से क्या कहता है, और आपमें से जो रासायनिक रूप से निर्भर हैं? क्या आप जानते हैं कि वह आपसे क्या कह रहा है? वो बार-बार तुमसे कह रहा है, आप जब चाहें रुक सकते हैं। क्या आप जानते हैं कि

get anything done." Amen. Perfectionism will cause procrastination.

4. Anger.

Procrastination may be a way of getting back at people that we don't like, or people we don't want to please.

Have any of you who are parents ever told your children "Turn off the TV, wash your hands and come to the table to eat?" Two minutes later you repeat, "Turn off the TV, wash your hands and come to the table to eat" Five minutes later, "..." Why is that? Is it because the show is so good, or kids are masters at procrastinating to let you know that they are wanting their independence?

Does anybody have a mate that you've been asking to do a certain thing for months, and they're not doing it? One reason may be that they are resisting your control. Procrastination is sometimes a form of passive resistance. It may be caused by anger.

5. Laziness.

The most frequent of all causes is pure and simple, laziness. Proverbs uses a word to refer to a lazy person; "slug" and refers to a slow crawling mollusk of which we are well familiar. "The sluggard (lazy) desires and gets nothing, but he who is diligent will prosper." (Proverbs 13:4)

Our generation has a low tolerance for sacrifice and pain. I can remember when my great-grandfather worked diligently out in the field right up into his early 80's. By contrast, our "couch potato" culture loves the word, "easy." If it's easy, I like it, if it's hard, I don't. Have you ever seen how often the word, "easy" is used in advertising? Easy to use, easy to apply, easy to get. Would these books become bestsellers; "Ten Difficult Steps to Change Your Life" or "Seven Gut-Wrenching Ways to Get Into Shape"? Who would buy them? We want it easy. Two common misconceptions about procrastination are (a) "It's easier to avoid this problem than to face it" and (b) "It will be easier to handle tomorrow." No, the longer it is delayed the more difficult. It's rarely easier tomorrow.

Cost

1. Procrastination creates obstacles.

"The way of the sluggard (the lazy procrastinator) is blocked with thorns." (Proverbs 15:19) Procrastination always makes the problem worse. What happens when you put off that leaky roof, and put it off, and put it off? You need a new roof! Has anyone ever had a major engine repair because you've put off checking or changing the oil in your car? Procrastination turns a problem into a crisis. It creates obstacles.

रासायनिक रूप से आश्रित क्या करते हैं? वे थोड़ी देर के लिए रुकेंगे, बस खुद को एक झूठा सबूत देने के लिए कि वे ऐसा कर सकते हैं। लेकिन वे नहीं कर सकते।

अमेरिका में आज 18 मिलियन शराबी हैं, सिर्फ एक दवा, 18 मिलियन शराबी। केवल 15 प्रतिशत ही मदद मांग रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि सिर्फ तीन मिलियन ही क्यों मदद मांगते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि अन्य 15 मिलियन झूठ को मानते हैं। वे झूठ पर विश्वास करते हैं कि उन्होंने दवा में महारत हासिल कर ली है, जब दवा ने उन्हें महारत हासिल कर ली है।

इलाज

इच्छा शक्ति यह नहीं कर सकती। क्या यह बिल्कुल अंतहीन चक्र है? नहीं, आश्रित व्यक्ति का कोई इलाज है।

2.<u>नशीली दवाओं के दुरुपयोग की अपर्याप्तता और</u> विनाशकारीता को समझेंड.

सबसे पहले, उसे नशीली दवाओं के दुरुपयोग की अपर्याप्तता और विनाशकारीता का एहसास होना चाहिए। व्यक्ति को इस बिंदु पर आना चाहिए कि यदि वे अपने वर्तमान पाठ्यक्रम को जारी रखते हैं, तो यह ठीक होने से अधिक दर्दनाक होगा। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति को यह महसूस करना होगा कि वह रासायनिक रूप से निर्भर है। शराबी बेनामी द्वारा विकसित 12-चरणीय कार्यक्रम का पहला चरण है (और यह नींव है): जब कोई व्यक्ति आएगा और दूसरों की उपस्थिति में कहेगा, "मैं मानता हूं कि मैं शराब पर शक्तिहीन हूं और मेरा जीवन असहनीय हो गया है।" जब तक वे यह मानने को तैयार न हों कि कोई मदद नहीं है। जब वे इसे स्वीकार करते हैं, तो दरवाजा खुला हो जाता है।

2. विश्वास करें कि मसीह जीवन में शून्य को भर सकता है। उसे विश्वास करना चाहिए कि मसीह जीवन में शून्य को भर सकता है। आप कहते हैं, क्या शून्य? जिस शून्य के बारे में हमने पहले बात की थी। जब पाप ने दुनिया में प्रवेश किया, तो शून्य पैदा हुआ, वह शून्य जो दवा और रसायन पहले स्थान पर भरने की कोशिश कर रहे हैं ताकि आप दिन भर में मदद कर सकें, दर्द को दूर कर सकें या आपको उच्च दे सकें। वे ऐसा नहीं करते, लेकिन यीशु करते हैं। वह मार्ग, सत्य और जीवन है।

यह कोई नई बात नहीं है, यह 2,000 साल पहले की बात है जब पौलुस ने इफिसियों 5:18 में कहा था, "शराब के नशे में मत पड़ो।" शराब की दवा है। उन्होंने कहा, यह शून्य को नहीं भरता है। "परन्तु इसके बदले आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ।" वह किस बारे में बात कर रहा है? वह मसीह की आत्मा, परमेश्वर की आत्मा और पवित्र आत्मा के बारे में बात कर रहा है जिसे परमेश्वर आप में वास करने देता है जब आप मसीह के पास आते हैं। वैसे, ऐल्कोहॉलिक्स

2. Procrastination wastes opportunities.

"A sluggard does not plow in season, so at harvest time, he finds nothing." (Proverbs 20:4) The procrastinator doesn't take advantage of the opportunity to plant, so he doesn't reap. When opportunity knocks, open the door.

John Greenleaf Whittier said, "The saddest words of tongue in men are, 'It might have been." "If only" are two of the most useless words in the English language. While we are postponing, life is passing. Procrastination wastes opportunity.

3. Procrastination hurts other people.

Laziness keeps us from being loving. Love requires commitment and effort. A lot of people don't want to exert that effort.

It's easier to be lazy, than it is to be loving. I can't tell you how many marriages break up simply because two people are lazy. They put off doing what they know they should to do. I've heard couples sitting in my office and say, "I know what I should do, but I just can't." No, it isn't you can't, it's you won't. You think you'll put it off, and it will get better.

People who procrastinate hurt their children. Lazy parents produce problem children. It creates problems with your children if you put off (a) teaching them about the facts of life, when you know they need it, (b) discipline to build character and responsibility and (c) postpone another family vacation where family bonding occurs and fond memories are developed. You're destroying your children. Procrastination really does hurt other people.

Cures

1. Quit making excuses.

"The sluggard says, 'There's a lion outside', or 'I'll be murdered in the street." (Proverbs 22:13) If you missed the point of that proverb, let me make it clear. How many lions do you suppose roam the Land of Israel, in the days of Solomon? Solomon is saying the procrastinator comes up with all kinds of excuses. Everybody else has excuses, but I have reasons. I ran across something this week that I thought was great. It was a list of excuses that people had submitted to insurance companies to collect for accidents. One of them said, "The guy was all over the road. I had to swerve a number of times before I hit him." How about this one? "I pulled away from the side of the road, glanced at my mother-in-law and drove over the embankment." Another fellow said, "In my attempt to kill a fly, I drove into a telephone pole." I like this one, "I've been driving my car for 40 years when I fell asleep and had an accident." Well, no wonder, that's a long time. How's this guy, talking about an excuse, trying to

एनोनिमस में दूसरा चरण यह कहना है, "मुझे अपने से बड़ी शक्ति पर विश्वास हो गया है जो मुझे पवित्रता में पुनर्स्थापित कर सकती है।" वे सही कह रहे हैं, केवल मैं आगे जाऊंगा। उस शक्ति का स्रोत यीशु मसीह है। वह और वह अकेले ही आपको अंतत: पवित्रता में पुनर्स्थापित करेंगे।

3. एक उपचार समुदाय का हिस्सा बनें।

आश्रित व्यक्ति एक उपचार समुदाय का हिस्सा बन जाता है। एक "उपचार समुदाय." एए. एनए या कोई अन्य सहायता समूह हो सकता है। लेकिन मैं चाहता हूं कि आप इसे सुनें और इसे अच्छी तरह से सुनें। हम केवल आश्रित लोगों से बात नहीं कर रहे हैं, हम बहुत से ऐसे लोगों से बात कर रहे हैं जो एक परिवार का हिस्सा हैं, आप सह-निर्भर बन जाते हैं। रासायनिक रूप से निर्भर व्यक्ति अपने आप ठीक नहीं होगा। आपको लगता है कि सुना? रासायनिक रूप से निर्भर व्यक्ति अपने आप ठीक नहीं होगा। वे स्वयं समस्या की पहचान नहीं करेंगे। वे स्वयं सहायता नहीं मांगेंगे। वे अकेले ठीक होने की प्रक्रिया में नहीं रहेंगे। इसलिए परमेश्वर इतना बुद्धिमान था जब उसने सभोपदेशक ४:९-११ में कहा, "एक से दो अच्छे हैं। क्योंकि अगर कोई अकेला चल रहा है और नीचे गिर गया है, तो उसे लेने वाला कोई नहीं है। लेकिन अगर दो हैं और एक गिर जाता है, तो उसे लेने के लिए उसे कोई मिल जाता है।" रासायनिक निर्भरता से उबरना एक आजीवन प्रक्रिया है। यही कारण है कि 10 साल से शांत रहने वाले शराबियों को अभी भी एए बैठकों में भाग लेते देखा जा सकता है. क्योंकि आश्रित व्यक्ति को एक उपचार समुदाय का हिस्सा बनना पड़ता है। अब मैं चर्च के लोगों से कुछ कहना चाहता हूं। दोस्तों, वह चर्च होना चाहिए। क्या आप मुझे सुन रहे हो? यह शर्मे की बात है कि शराबी बेनामी जैसा कार्यक्रम चर्चीं में नहीं. बल्कि उनके बाहर खड़ा हुआ।

1978 में गैलप पोल में, चार अमेरिकियों में से एक ने व्यक्तिगत शराब की समस्या होने की बात स्वीकार की। लेकिन केवल आठ प्रतिशत ने कहा कि अगर उन्हें या परिवार के किसी सदस्य को पीने की समस्या है तो वे चर्च या उसके प्रशिक्षित कर्मियों की ओर रुख करेंगे; केवल आठ प्रतिशत। देखिए, हमने यह बताते हुए बहुत अच्छा काम किया है कि नशीली दवाओं का पीछा करना गलत है, हमने हाथ बढ़ाने और यह कहने का बहुत अच्छा काम नहीं किया है, "यहां बताया गया है कि आप इसे कैसे ठीक करते हैं। यहां बताया गया है कि आप इसे कैसे प्राप्त करते हैं। हल किया गया।" हमें दोनों करना है।

गलातियों 6:1 कहता है, "हे भाई, यदि कोई पाप में फँस जाए, तो तुम जो आत्मिक हो उसे कोमलता से फेर दे।" और फिर अगला पद कहता है, "तुम एक दूसरे का भार उठाते हो।" और वहां शब्द का अर्थ है एक लंबी यात्रा, न केवल यह कहना, "आपको इसे छोड़ put responsibility somewhere else. "The telephone pole was approaching fast; I attempted to swerve off its path when it hit my front end." My favorite is this last one, "The pedestrian had no idea which way to go, so I ran over him."

What's your excuse? What is it that leads you to say, "One of these days..."? The Bible says, "The lazy man is full of excuses." Benjamin Franklin said "People who are good at making excuses are seldom good at anything else." The number one excuse people use for procrastinating "When things settle down, I'll

" (You fill in the blank.) I've got news for all of you. Things will never settle down. They will only settle down when the Lord comes again.

2. Stop stalling.

For the procrastinator "One of these days," is "none of these days." Stop stalling, do it today. Start now.

If you tend to procrastinate, these three words will change your life. "Do it now." Write that down. Take a magic marker, write on piece of cardboard; put it on your refrigerator, bathroom mirror, desk or on your car visor. Have it staring you in the face, "Do it now!" Every time you begin to think, "I'll get to that later," look those three words in the face and do it now!

NASA tells us that the greatest amount of energy expended is getting the rocket off the pad. Once it gets into orbit, it's a cinch. Stop stalling, get started and if it cannot be finished today, do part of it. Do 10 minutes today, 10 minutes tomorrow, and 10 minutes the next day. See how much you will accomplish in six short weeks. It will astound you.

3. Start scheduling.

"Finish your outdoor work and get your fields ready; after that, build your house." (Proverbs 24:27) In other words, set your priorities, what needs to be done first, and schedule a time to do them. You don't ever have time - you must make time!

Schedule the important and the unimportant. Schedule time for personal and family Bible study, time to be with your wife, additional time for family and schedule time to be alone (your quite time). If you don't commit time for things, they simply won't get done. However, just scheduling something is not sufficient; you must work your schedule and more than once per day. On rare occasions when waiting on someone or for something, it may be impossible to continue working on your top priority task. Then work on a less important task until the obstacle is removed or resolved on the top priority task.

"Make the most of every opportunity." (Ephesians 5:16)

देना चाहिए।" बोझ उठाओ और इसे अपनी पीठ पर रखो और लंबी दौड़ में अपने साथ ले जाओ।

5. हेरफेर, झूठ और युक्तिकरण के बारे में खुले और ईमानदार रहें।

आश्रित व्यक्ति को अपने हेरफेर, अपने झूठ, अपने युक्तिकरण के बारे में खुला और ईमानदार होना चाहिए, क्योंकि हर नशा करने वाला व्यक्ति इससे गुजरता है। वे सभी से झूठ बोलते हैं। "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह उन्हें क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (1 यूहन्ना 1:9) उसे शुद्ध आना है। यह मुक्त करता हैउसकी आत्मा।

- a) व्यसनी के लिए, आश्रित के लिए अगापे प्रेम बनाए रखें। इसका मतलब है कि एक प्यार जो उनके लिए सबसे अच्छा चाहता है, कभी हार नहीं मानता, लेकिन यह वही करता है जो सबसे अच्छा है।
- b) आश्रित व्यवहार की सहायता या प्रोत्साहन न दें। आग मत लगाओ। आप अगापे का प्यार बनाए रखें। उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त में पिता के समान बनो। उसने पैसे नहीं भेजे। वह जानता था कि लड़के को होश में आना है; उसे घर आना पड़ा।

सावधानी से सामना करें। आपको कई बार सामना करना पड़ता है। वे अकेले ठीक नहीं होंगे। आपको उन्हें दिखाना होगा कि उनके जीवन में क्या हो रहा है। क्या आप जानते हैं कि एक आश्रित व्यक्ति को स्वस्थ होने के लिए औसतन कितने संघर्ष करने

5. स्वस्थ जीवन जीने का कौशल सीखें। आश्रित व्यक्ति स्वस्थ जीवन जीने का कौशल सीखता है।

6. परिवार का हिस्सा।

c) पड़ते हैं? चौवन, हाँ 54. यदि आप एक शराबी के साथ रह रहे हैं, यदि आप एक नशे की लत के साथ रह रहे हैं और आपने उन्हें ठीक होने के लिए आवश्यक सहायता खोजने में मदद करने के लिए बार-बार कोशिश की है, तो उसमें थोड़ा दिल लें ऑकड़ा

यदि आप यीशु के अलावा जीवन में वास्तविक अर्थ देने के लिए किसी चीज का पीछा कर रहे हैं, तो आप निशान से चूक रहे हैं। यह आपका काम हो सकता है, यह खेल हो सकता है, यह आपकी पॉकेटबुक हो सकती है; या जो कुछ भी। यदि आप आज रासायनिक रूप से निर्भर हैं, तो मुझे आशा है कि आप उस बिंदु पर होंगे जहां आप इस समय किसी की उपस्थिति में कहेंगे, आपका परिवार, या एक छोटा समूह, "मेरा जीवन असहनीय हो There was a famous author who wrote his first book while he was riding on the subway in New York, and he made the most of every opportunity. Another man memorized a thousand Bible verses at stop lights. That's making the most of every opportunity! Wise men and women plan, schedule and execute.

4. Face your fears.

Remember, the main cause of procrastination is fear. When you're avoiding something, you're probably afraid of it. Identify it and face it. The greatest fear is the fear of failure. That's why we put more things off than anything else. We're afraid we'll fail. Folks, just face up to it, fear isn't a sign of weakness, it's a sign of humanity. Mark Twain said, "Courage isn't the absence of fear, it's moving on in spite of your fear." If you flee from your fears, they grow bigger. If you face them, they grow smaller.

There are two things to ask yourself when facing a fear: (a) "What's the worst thing that can happen?" Usually, it's not nearly as bad as you think and (b) Recite Philippians 4:13, "I can do all things through him who strengthens me." Recite that over about three times, it becomes easier to tackle whatever it is in front of you knowing God strengthens.

5. Focus on the reward for your efforts.

There are very few things in life are easy. Life is tough. You have to persevere to see the reward. Concentrate on the gain beyond the pain. Concentrate on how good you'll feel when you finish the task.

Here is a little illustration. When children come home from school, if they sit down and complete their homework first, they will enjoy the rest of the afternoon and they will enjoy their evening more because undone homework is not hanging over their head. It's the philosophy "you can pay now and play later, or you can play now and pay later."

The principle is, "Let us not become weary in doing good, for at a proper time we will reap a harvest if we do not give up." (Galatians 6:9) The wrong question is "what do I feel like doing". The right question is "what does God want me to do". It's only a very immature person who lives his life by his feelings. Everything above leads us to the following two questions.

What is it that needs changing in your life?

- Is it "one of these days I'm going to become a Christian"?
- Is it "one of these days I'm going to get involved in the ministry God has assigned to me?
- Is it "one of these days I'm going to read and study the Bible daily?

गया है, और मैं इसे बदलने के लिए शक्तिहीन हूं। ।" जब तक आप ऐसा नहीं करेंगे, आप गुलाम बने रहेंगे। अद्भृत अन्ग्रह पाठ #1220 प्रशन: 1. रासायनिक निर्भरता जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए तेजी से रासायनिक उपयोग की ओर मुड़ने की प्रक्रिया है। सत्य असत्य 2. रासायनिक निर्भरता कभी भी भौतिक निर्भरता की ओर नहीं ले जाती है। सही गलत 3. लोग ड्रग्स के साथ खिलवाड़ क्यों करते हैं? a. ____ साथियों का दबाव b. दर्द c. ____ आत्म-मूल्य की कमी d. ____ सब से ऊपर e. इनमे से कोई भी नहीं रासायनिक निर्भरता का मूल कारण है a. _____"एक इस तरह से बनाया गया है" b. ____ समाज c. ____ भूख d. ____ पापी 5. कोई जब चाहे तब निर्भर रहना बंद कर सकता है सही गलत 6. रासायनिक निर्भरता से मुक्त और चंगा करने के लिए किसी को यह करना होगा: a. ____ नशीली दवाओं के दुरुपयोग की अपर्याप्तता और विनाशकारीता का एहसास करें। b. ____ विश्वास करें कि मसीह जीवन में शून्य को भर सकते हैं। c. ____ एक उपचार समुदाय का हिस्सा बनें। d. ____ हेरफेर, झूठ और युक्तिकरण के बारे में खुले और ईमानदार बनें। e. ____ स्वस्थ जीवन जीने के कौशल सीखें। f. ____ सब से ऊपर g. ____ इनमे से कोई भी नहीं 7. पारिवारिक प्रेम रासायनिक निर्भरता का सामना करेगा लेकिन इसे निधि नहीं देगा सही गलत 8. रसायनों पर निर्भर व्यक्ति के ठीक होने के लिए कितने संघर्ष करने पडते हैं? एक।

• Is it "one of these days I'm going to quit drinking, be a better parent, spend some time with the wife and kids or whatever I've have been putting off that I know needs to be done?

What is it going to take to get you in gear?

God says, "I want to help." The biggest mistake in life is to postpone or delay the opportunity for Jesus Christ to change you and to save you.

"I don't know of anybody who doesn't eventually want to get their life right with God. They say, "One of these days, I'm going to make that commitment. One of these days, I'm going to get my life in order. One of these days, I'm going to obey God by repenting of my sins, confessing my belief that Jesus is God, to be buried for remission of my sins in water baptism and to arise a new Christian cleansed being forgiven of all my sins." Why not now? A good intention is only procrastination. You know the old saying, and it's true: "The road to hell is paved with good intentions." Why not today?

Amazing Grace Lesson #1200

Questions:

| 1. The | Causes of Procrastination. |
|----------|---------------------------------------|
| a. | Indecision |
| b. | Fear |
| | Perfectionism |
| | Anger |
| | Laziness |
| f. | |
| | a and c |
| _ | a, d and e |
| i. | b, c and d |
| 2. The (| Cost of Procrastination. |
| a. | It creates obstacles. (Prov. 15:19) |
| b. | It wastes opportunities. (Prov. 20:4) |
| c. | It hurts other people. |
| d. | All the above |
| e. | a and b |
| f. | a and c |
| g. | b and c |
| 3. The 0 | Cure. |
| a. | Quit making excuses. (Prov. 22:13) |
| b. | Stop stalling. |
| c. | |
| d. | Face your fears. (Phil. 4:13) |
| e. | Focus on the rewards of your efforts. |
| | (Gal. 6:9) |
| f. | All the above |
| g. | a, b and c |
| h | a c and d |

| बी। | 54 | | | |
|-----|------|--|--|--|
| सी। | 84 | | | |
| डी। | 104 | | | |
| इ। | 1004 | | | |

अध्याय ७

विलंब से मुक्ति

परिचय:

विलंब ... लाखों जीवन आध्यात्मिक, शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक, आदि से कम हैं या होना चाहिए, क्योंकि वे हमेशा के लिए विलंब करते हैं। हम शिथिलता से मुक्ति कैसे प्राप्त करते हैं?

विलंब एक सार्वभौमिक समस्या है जिससे हम में से अधिकांश लोग निपटते हैं। हम में से ज्यादातर लोग जानते हैं कि क्या करना है लेकिन हम इसे टाल देते हैं और कुछ समय बाद यह हमारी जीवनशैली बन जाती है। क्या आप विलंब करने वाले हैं? क्या आप लगातार चीजों को बंद करते हैं? क्या यह छोटी सी कविता आपका वर्णन करती है?

टालना मेरा पाप है, यह केवल मुझे दुःख देता है। मुझे पता है कि मुझे इसे छोड़ देना चाहिए, वास्तव में, मैं कल करूंगा।

यह पाठ विलंब के कारणों, लागतों और इलाज पर चर्चा करता है।

कारण

- 1. अनिर्णय।क्या आप कभी किसी रेस्तरां में गए हैं, वेटर आता है और आप उसे दूर कर देते हैं क्योंकि आप अपना मन नहीं बना सकते हैं? या, क्या आपने कभी मेनू, ऑर्डर को देखा है और एंट्रीज आने के बाद कहें, "काश मैंने वही चुना होता जो आपने ऑर्डर किया था।" अनिर्णय हमें विलंबित करता है, हमें कार खरीदना, कॉलेज चुनना, या नौकरी बदलना बंद कर देता है।
- 2. डर।जब मुझे डर लगता है तो मैं चीजें बंद कर देता हूं। क्या कभी किसी ने दंत चिकित्सक की यात्रा स्थगित कर दी है जिसे आप जानते हैं कि आपको इसकी आवश्यकता है? किसी ने आवश्यक सर्जरी को टाल दिया? क्या आपने अपने विश्वास को किसी सहकर्मी के साथ बांटना बंद कर दिया है? क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि आप डरते हैं। डर हमें टालमटोल करता है।
- 3.पूर्णतावाद। पूर्णतावाद हमें विलंबित करता है। सुलैमान ने कहा, "जो हवा को देखता है, वह बोएगा नहीं; जो बादलों को देखे वह कटनी न पाएगा।" (सभोपदेशक 11:4) दूसरे शब्दों में, यदि आप सब कुछ ठीक होने तक प्रतीक्षा करते हैं, बादल और बैरोमीटर का दबाव, तो आप इसे कभी पूरा नहीं कर

| | i. | b, c and e |
|----|------|---|
| | j. | b, c, d and e |
| 4. | A pr | ocrastinator's favorite expression is "one of |
| | the | se days I" |
| | whe | reas God's states "Today is the Day." |
| | | True False |
| 5. | | What is the most important thing generally |
| | | postponed by a procrastinator? |
| | a. | Expressing their feeling of love to a |
| | | family member |
| | b. | Telling someone of their sorrow asking |
| | | for forgiveness |
| | c. | Salvation, obedience to God for |
| | | forgiveness |

Chapter 8

On Pride and Humility

Many people desire the answer to the questions (1) how do I free myself from lust, addictions and hang-ups that mess up life and (2) how do I get the power to make the needed changes or how do I get God's power in my life?

The beginning point is to admit the problem, not just the physical manifestation of the problem, but the root problem. The root problem is "I'm in charge, and I don't need God." That was the problem Adam and Eve had. Paul wrestled with it in Romans 7, and it's our problem.

The key is found in James 4:6. Everything in the rest of the lesson is going to spring from that great text. James said, "God opposes the proud, but he gives grace to the humble." That's worth repeating. "God opposes the proud, but he gives grace to the humble." The Bible states the key to power in your life is humility and the key barrier to God's power is pride, because a person full of pride cannot see a need to change or to improve. Only when one is full of humility, will he be given the power to change.

The Bible talks about two kinds of pride. There really is a good kind of pride. If you don't believe that, read Galatians 6:4, or 2 Corinthians 7:4. The good kind of pride is synonymous with self-respect, satisfaction for a job well done and the enjoyment of seeing others succeed. Only two or three times in the Bible do you see pride referred to that way. Ninety-nine percent of the time, you'll find pride referred to in a very negative way, where it's linked with conceit, selfishness, arrogance or egotism. Somebody said, "Egotism is the only disease that when you've got it, it makes everybody else sick." By looking at a number of famous and important people, one can see how one can easily become victim.

पाएंगे। द लिविंग बाइबल उस पद की व्याख्या करती है: "यदि आप उत्तम परिस्थितियों की प्रतीक्षा करते हैं, तो आप कभी भी कुछ नहीं कर पाएंगे।" तथास्तु। पूर्णतावाद विलंब का कारण बनेगा।

4. क्रोध। विलंब उन लोगों पर वापस जाने का एक तरीका हो सकता है जिन्हें हम पसंद नहीं करते हैं, या जिन लोगों को हम खुश नहीं करना चाहते हैं।

क्या आप में से किसी ने अपने माता-पिता से कभी अपने बच्चों से कहा है "टीवी बंद करो, हाथ धोओ और खाने के लिए मेज पर आओ?" दो मिनट बाद आप दोहराते हैं, "टीवी बंद करो, अपने हाथ धो लो और खाने के लिए मेज पर आओ" पांच मिनट बाद, "..." ऐसा क्यों है? क्या यह इसलिए है क्योंिक शो इतना अच्छा है, या बच्चे आपको यह बताने में माहिर हैं कि वे अपनी स्वतंत्रता चाहते हैं?

क्या किसी का कोई साथी है जिसे आप महीनों से एक खास काम करने के लिए कह रहे हैं, और वे ऐसा नहीं कर रहे हैं? एक कारण यह हो सकता है कि वे आपके नियंत्रण का विरोध कर रहे हैं। विलंब कभी-कभी निष्क्रिय प्रतिरोध का एक रूप है। यह क्रोध के कारण हो सकता है।

५. आलस्य।

सभी कारणों में सबसे आम है शुद्ध और सरल, आलस्य। नीतिवचन एक आलसी व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए एक शब्द का उपयोग करता है; "स्लग" और एक धीमी गति से रेंगने वाले मोलस्क को संदर्भित करता है जिससे हम अच्छी तरह परिचित हैं। "आलसी (आलसी) चाहता है और उसे कुछ नहीं मिलता, लेकिन जो मेहनती है वह समृद्ध होगा।" (नीतिवचन 13:4)

हमारी पीढ़ी में त्याग और दर्द को सहन करने की क्षमता कम है।
मुझे याद है जब मेरे परदादा ने 80 के दशक की शुरुआत में खेत में
लगन से काम किया था। इसके विपरीत, हमारी "काउच पोटैटो"
संस्कृति "आसान" शब्द को पसंद करती है। अगर यह आसान है,
तो मुझे यह पसंद है, अगर यह कठिन है, तो मुझे नहीं। क्या आपने
कभी देखा है कि विज्ञापन में "आसान" शब्द का प्रयोग कितनी बार
किया जाता है? प्रयोग करने में आसान, लगाने में आसान, प्राप्त
करने में आसान। क्या ये किताबें बेस्टसेलर बन जाएंगी; "अपने
जीवन को बदलने के लिए दस कठिन कदम" या "आकार में आने
के सात तरीके"? उन्हें कौन खरीदेगा? हम इसे आसान चाहते हैं।
विलंब के बारे में दो आम गलतफहमियां हैं (ए) "इस समस्या का
सामना करने की तुलना में इससे बचना आसान है" और (बी) "कल
को संभालना आसान होगा।" नहीं, इसमें जितनी देर होगी, उतना
ही मुश्किल होगा। यह'

Remember Muhammad Ali, those of you in my generation or above, and how brash and proud Ali was in his prime? The story is told that Ali was on a plane one time and it was about to take off. The flight attendant came to Ali and said, "Sir, you'll have to buckle your seat belt." Ali in his typical brash, showman-type manner said, "Superman don't need no seat belt." To which the flight attendant responded, "Superman don't need no airplane either." He buckled the belt.

Pride's very easy to see in others, but it's difficult to see in ourselves, but it's there. It's not only the basic human problem, it is your basic problem, and it's my basic problem, too.

Pride that leads to other problems.

1. Pride prevents personal growth.

You think you've got it altogether and don't need to change, grow or improve. You have pride dwelling in your spirit. Somebody said, "When the head starts swelling, the mind stops growing." The one sure way to know that you need this lesson is if you don't think you do

Solomon said "Do you see a man wise in his own eyes? There is more hope for a fool than for him." (Proverbs 26:12) "He who heeds discipline shows the way to life, but whoever ignores correction leads others astray." (Proverbs 10:17) These two verses together are saying the proud man or woman only goes by self-evaluation. They think they know everything there is to know and there's no sense getting any counsel.

If you've got marriage problems and you won't talk to anybody about it, that's pride. That's all it is, pure and simple. If you've got financial difficulties and you won't seek counsel about that, that's just your pride. If you're failing at your work, school, or some relationship and you're just trying to cover it up, that's pride. All too often we'd rather look smart than be smart. The way to become smart is by being humble. Pride prevents one from growing.

2. Pride sabotages my relationships.

Pride is the root of all relational conflict and disharmony. When you act out of pride, you tend to be demanding, unsympathetic, even obnoxious and rude.

लागत

- 1. विलंब बाधाएं पैदा करता है।
 "आलसी (आलसी) का मार्ग कांटों से अवरुद्ध है।" (नीतिवचन
 15:19) विलंब करने से समस्या हमेशा और भी बदतर हो जाती है।
 क्या होता है जब आप उस टपकती छत को बंद कर देते हैं, और
 उसे बंद कर देते हैं, और उसे बंद कर देते हैं? आपको एक नई छत
 की जरूरत है! क्या किसी ने कभी किसी बड़े इंजन की मरम्मत की
 है क्योंकि आपने अपनी कार में तेल की जांच करना या बदलना बंद
 कर दिया है? विलंब समस्या को संकट में बदल देता है। यह बाधाएं
 पैदा करता है।
- 2. विलंब अवसरों को बर्बाद करता है। "आलसी मौसम में हल जोतता नहीं है, इसलिए फसल काटने के समय उसे कुछ नहीं मिलता।" (नीतिवचन 20:4) विलंब करनेवाला अवसर का लाभ नहीं उठाता, इसलिए वह काटता नहीं है। जब अवसर दस्तक देता है, तो दरवाजा खोलो।

जॉन ग्रीनलीफ व्हिटियर ने कहा, "पुरुषों में जीभ के सबसे दुखद शब्द हैं, 'यह हो सकता है।" "अगर केवल" अंग्रेजी भाषा के दो सबसे बेकार शब्द हैं। जब हम स्थगित कर रहे हैं, जीवन बीत रहा है। विलंब अवसर को बर्बाद करता है।

3. विलंब से अन्य लोगों को पीड़ा होती है। आलस्य हमें प्यार करने से रोकता है। प्यार के लिए प्रतिबद्धता और प्रयास की आवश्यकता होती है। बहुत से लोग उस प्रयास को लागू नहीं करना चाहते हैं।

प्यार करने की तुलना में आलसी होना आसान है। मैं आपको नहीं बता सकता कि कितनी शादियां सिर्फ इसलिए टूट जाती हैं क्योंकि दो लोग आलसी होते हैं। वे वह करना बंद कर देते हैं जो वे जानते हैं कि उन्हें करना चाहिए। मैंने अपने कार्यालय में जोड़ों को बैठे हुए सुना है और कहते हैं, "मुझे पता है कि मुझे क्या करना चाहिए, लेकिन मैं नहीं कर सकता।" नहीं, ऐसा नहीं है कि आप नहीं कर सकते, यह आप नहीं करेंगे। आपको लगता है कि आप इसे बंद कर देंगे, और यह बेहतर हो जाएगा।

विलंब करने वाले लोग अपने बच्चों को चोट पहुँचाते हैं। आलसी माता-पिता समस्याग्रस्त बच्चे पैदा करते हैं। यह आपके बच्चों के साथ समस्याएँ पैदा करता है यदि आप (ए) उन्हें जीवन के तथ्यों के बारे में सिखाते हैं, जब आप जानते हैं कि उन्हें इसकी आवश्यकता है, (बी) चरित्र और जिम्मेदारी बनाने के लिए अनुशासन और (सी) एक और पारिवारिक अवकाश स्थिगत करें जहां पारिवारिक बंधन होता है और प्रिय स्मृतियों का विकास होता है। आप अपने बच्चों को नष्ट कर रहे हैं। विलंब वास्तव में अन्य लोगों को चोट पहुँचाता है।

इलाज

1. बहाने बनाना छोड़ो।

"आलसी कहता है, 'बाहर एक सिंह है', या 'मैं गली में मारा जाऊँगा।"' (नीतिवचन 22:13) यदि आप उस कहावत की बात से Have you ever seen a proud person treat a waiter in a fancy restaurant? It's disgusting, they are demanding and never being satisfied. Pride makes us hold grudges and keep score. It makes us unable to admit we're wrong. "Pride only breeds quarrels." (Proverbs 13:10) I'm going to repeat that. "Pride only breeds quarrels."

The root of virtually every argument or quarrel in a marriage is pride. You don't want to admit that your husband or wife may be partially right. So many family conflicts could be resolved if we could just swallow our pride.

How many times do you think this scenario has been acted out? A young man gets rebellious and lets loose at his dad and the father loses his temper and says, "Get out of the house and don't come back." They are alienated for who knows how long because neither of them can force out these six most difficult words in the English language, "I was wrong. I am sorry." Pride destroys relationships, and pride also produces stress and anxiety.

They drift apart for who knows how long because neither of them can force themselves to utter these four most difficult words in the language: "I made a mistake. I'm sorry."

The focus of a pride-filled person is on self. It's on my status and my image. Politicians now have spin-doctors. They don't care about the truth; they just want the image to be right. Image is everything. But it really reveals an insecurity and a feeling of inferiority.

Have you ever watched on FOX, CNN or another channel one of the worldwide summits, or a UN meeting? You see these tinhorn dictators and the ambassadors from the tiniest countries come marching in with eight rows of braids and 40 medals and these brightly adorned uniforms, but the presidents and the ambassadors of other countries, come in just in a modest dark suit. Why? They don't need to impress anybody. They're secure.

Have you ever seen on FOX, CNN or another channel one of the world summits, or a UN meeting those dictators and ambassadors of the smaller countries parading in uniforms brightly adorned with eight rows of bars and forty medals? While others enter simply in a modest dark suit. Why? They don't need to impress anyone. They are confident.

Tony Campolo, one of my favorite authors, said, "Pride often destroys those that we love the most." The pride of parents can lead to the destruction of children. People

चूक गए हैं, तो मैं इसे स्पष्ट कर दूँ। सुलैमान के दिनों में तेरे विचार से इस्राएल के देश में कितने सिंह घूमते हैं? सुलैमान कह रहा है कि टालमटोल करने वाला हर तरह के बहाने लेकर आता है। बाकी सबके पास बहाने हैं, लेकिन मेरे पास कारण हैं। मैंने इस सप्ताह कुछ ऐसा देखा जो मुझे लगा कि यह बहुत अच्छा है। यह बहाने की एक सूची थी जिसे लोगों ने बीमा कंपनियों को दुर्घटनाओं के लिए जमा करने के लिए प्रस्तुत किया था। उनमें से एक ने कहा, "वह आदमी पूरी सडक पर था। मुझे उसे मारने से पहले मुझे कई बार घुमना पडा।" यह कैसे है? "मैंने सडक के किनारे से दूर खींच लिया, अपनी सास को देखा और तटबंध पर चला गया।" एक अन्य साथी ने कहा, "एक मक्खी को मारने की मेरी कोशिश में, मैं एक टेलीफोन पोल में चला गया।" मझे यह पसंद है. "मैं 40 साल से अपनी कार चला रहा हूं जब मैं सो गया और एक दुर्घटना हो गई।" खैर, कोई आश्चर्य नहीं, यह एक लंबा समय है। यह आदमी कैसा है, किस बारे में बात कर रहा है एक बहाना, कहीं और जिम्मेदारी डालने की कोशिश कर रहा है। "टेलीफोन का खंभा तेजी से आ रहा था: जब यह मेरे सामने के छोर से टकराया तो मैंने इसके रास्ते से हटने का प्रयास किया।" मेरा पसंदीदा यह आखिरी है. "पैदल यात्री को पता नहीं था कि किस रास्ते पर जाना है, इसलिए मैं उसके ऊपर से दौडा।"

तुम्हारा क्या बहाना है? ऐसा क्या है जो आपको यह कहने के लिए प्रेरित करता है, "इन दिनों में से एक..."? बाइबल कहती है, "आलसी बहाने से भरा होता है।" बेंजामिन फ्रेंकिलन ने कहा, "जो लोग बहाने बनाने में अच्छे होते हैं, वे शायद ही कभी किसी और चीज में अच्छे होते हैं।" नंबर एक बहाना लोग विलंब के लिए उपयोग करते हैं "जब चीजें ठीक हो जाती हैं, तो मैं ______ " (आप रिक्त स्थान भरें।) मेरे पास आप सभी के लिए समाचार है। चीजें कभी व्यवस्थित नहीं होंगी। वे तभी बसेंगे जब यहोवा फिर आएगा।

2. रुकना बंद करो।

विलंब करने वाले के लिए "इन दिनों में से एक", "इन दिनों में से कोई नहीं" है। रुकना बंद करो, आज ही करो। अभी शुरू करो।

यदि आप विलंब करते हैं, तो ये तीन शब्द आपके जीवन को बदल देंगे। "अभी करो।" इसे लिख लें। एक मैजिक मार्कर लें, कार्डबोर्ड के टुकड़े पर लिखें; इसे अपने रेफ्रिजरेटर, बाथरूम के शीशे, डेस्क या अपनी कार के छज्जा पर रखें। क्या यह आपके चेहरे पर घूर रहा है, "अभी करो!" हर बार जब आप सोचने लगते हैं, "मैं उस पर बाद में पहुंचूंगा," उन तीन शब्दों को सामने देखें और इसे अभी करें!

नासा हमें बताता है कि खर्च की गई ऊर्जा की सबसे बड़ी मात्रा रॉकेट को पैड से हटा रही है। एक बार जब यह कक्षा में पहुंच जाता है, तो यह एक चिंच होता है। रुकना बंद करो, शुरू हो जाओ और अगर इसे आज खत्म नहीं किया जा सकता है, तो इसका हिस्सा लें। आज 10 मिनट, कल 10 मिनट और अगले दिन 10 मिनट करें। देखें कि आप छह छोटे हफ्तों में कितना हासिल करेंगे। यह आपको चौंका देगा। who are out to prove they are better than others often use their children to this end. Campolo goes and explains what we already know. "How many parents have pridefully lived through their children's grades, through their children's sports career, through their children's beauty, and all under the guise upon doing it for their betterment. They're wrecking their psyches, while they're inflating their own personal egos." Campolo concludes by saying, "Happiness is often the casualty of pride."

Proverbs 29:25 says it's a dangerous thing to be concerned about what others think of you. Pride causes anxiety and stress because if I'm trying to live one image, but inside I'm something else, I become stressed, discouraged, and disillusioned. By contrast, the very first thing Jesus our Lord said on the Sermon on the Mount was "Happy are the humble."

Happiness through humility

If you're going to break free of the things that shackle you, there's no way you're going to do it until you begin to develop the mindset of humility. This is the real core of the lesson.

1. Recognize your weaknesses honestly.

"He who conceals his sins does not prosper, but whoever confesses and renounces them finds mercy." (Proverbs 28:13) If you don't admit your weaknesses, if you do not admit your perpetual areas of spiritual failure, neither you nor God will be able to work on them.

I love the story of the teenage boy who said to his sister, "Sis, I'm afraid I'm guilty of the sin of vanity." She looked at him and said, "You, vanity, how?" He said, "Well because every time I walk by the mirror, I catch myself stopping and looking and saying, 'Wow, what a hunk." She laughed and said, "No, that's not vanity, that's just ignorance."

Many of you will bow and pray tonight before we go to sleep, and say, "Lord, if I've committed sin today." Stop right there, just stop and think. Leave off the "if," because there's no question about it, you have committed sin today. Take the time to isolate the sin in your life, particularly the perpetual sin, the sin you're trying to stuff in the closet. Maybe it's your adulterous affair, maybe it's your lying tongue, maybe it's the hatred of a parent, maybe it's a broken relationship at work or maybe it's something you're just pretending doesn't exist. Get it out on the table and stretch it out before God. Until you admit your weakness, you'll not know genuine humility.

3. शेड्युलिंग प्रारंभ करें।

"अपना बाहरी काम खत्म करो और अपने खेतों को तैयार करो, उसके बाद अपना घर बनाओ।" (नीतिवचन 24:27) दूसरे शब्दों में, अपनी प्राथमिकताएँ निर्धारित करें कि पहले क्या करने की ज़रूरत है, और उन्हें करने के लिए एक समय निर्धारित करें। आपके पास कभी समय नहीं होता - आपको समय अवश्य बनाना चाहिए!

महत्वपूर्ण और महत्वहीन को शेड्यूल करें। व्यक्तिगत और पारिवारिक बाइबल अध्ययन के लिए समय, अपनी पत्नी के साथ रहने का समय, परिवार के लिए अतिरिक्त समय और अकेले रहने का समय निर्धारित करें (आपका काफी समय)। यदि आप चीजों के लिए समय नहीं देते हैं, तो वे आसानी से नहीं हो पाएंगे। हालाँकि, केवल कुछ शेड्यूल करना ही पर्याप्त नहीं है; आपको अपना शेड्यूल और प्रति दिन एक से अधिक बार काम करना चाहिए। दुर्लभ अवसरों पर जब किसी की या किसी चीज़ की प्रतीक्षा करते हुए, अपने सर्वोच्च प्राथमिकता वाले कार्य पर काम करना जारी रखना असंभव हो सकता है। फिर किसी कम महत्वपूर्ण कार्य पर तब तक कार्य करें जब तक कि सर्वोच्च प्राथमिकता वाले कार्य में बाधा दूर न हो जाए या उसका समाधान न हो जाए।

"हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं।" (इफिसियों 5:16) एक प्रसिद्ध लेखक था जिसने न्यू यॉर्क में मेट्रो में सवारी करते हुए अपनी पहली पुस्तक लिखी थी, और उसने हर अवसर का भरपूर लाभ उठाया। एक और आदमी ने स्टॉप लाइट पर एक हजार बाइबिल छंदों को याद किया। वह हर अवसर का अधिकतम लाभ उठा रहा है! बुद्धिमान पुरुष और महिलाएं योजना बनाते हैं, शेड्यूल करते हैं और निष्पादित करते हैं।

4. अपने डर का सामना करें।

याद रखें, शिथिलता का मुख्य कारण भय है। जब आप किसी चीज से परहेज कर रहे होते हैं, तो आप शायद उससे डरते हैं। इसे पहचानें और इसका सामना करें। सबसे बड़ा डर असफलता का डर है। इसलिए हम किसी और चीज से ज्यादा चीजों को बंद कर देते हैं। हमें डर है कि हम असफल हो जाएंगे। दोस्तों, बस इसका सामना करो, डर कमजोरी की निशानी नहीं है, यह इंसानियत की निशानी है। मार्क ट्वेन ने कहा, "साहस डर की अनुपस्थिति नहीं है, यह आपके डर के बावजूद आगे बढ़ रहा है।" यदि आप अपने डर से भागते हैं, तो वे बड़े हो जाते हैं। यदि आप उनका सामना करते हैं, तो वे छोटे हो जाते हैं।

डर का सामना करते समय खुद से दो बातें पूछनी चाहिए: (ए) "सबसे बुरी चीज क्या हो सकती है?" आम तौर पर, यह उतना बुरा नहीं है जितना आप सोचते हैं और (ख) फिलिप्पियों 4:13 का पाठ करें, "जो मुझे सामर्थ देता है उसके द्वारा मैं सब कुछ कर सकता हूं।" यह पाठ करें कि लगभग तीन बार, आपके सामने जो कुछ भी है उससे निपटना आसान हो जाता है, यह जानकर कि भगवान मजबूत करता है।

2. Evaluate your strength realistically.

Pride is based upon a false evaluation of self, but humility is based upon the truth. Jesus said, "You shall know the truth, and the truth shall set you free." Paul said, "Do not think of yourself more highly than you ought, but rather think of yourself with sober judgment." (Romans 12:3) In other words, be realistic about who you are. Some people think humility is an inferiority complex. Humility isn't saying, "Oh I'm wretched, horrible, worthless or nothing. I'm just an old worm." That's not true. You're not a worm, you're not nothing, you're something. Jesus didn't die for nothing. Every one of us, unique in creation, is made in the image of God. The fact is you have strengths. All of us do. God gave them to us but we're also weak in areas. Humility is being honest about your weaknesses and realistic about your strengths.

I love the story of the little girl who walked in Baskin Robbins. She could barely see up over the counter, and said, "Sir, I want one of those hand-packed pints, no lid, just a spoon." The fellow looked at her and said, "Well little girl, are you sure you can eat all that?" "Oh, yes sir," she said. "You see I'm much bigger on the inside than I am on the outside."

Pride is pretending you're much bigger on the outside than you are on the inside. "Each man should test his own actions, then he can take pride in himself without comparing himself to someone else." (Galatians 6:4) That is one of my life texts. There is also a good kind of pride. Paul said, you enjoy your own abilities, enjoy your own successes, a job well done, but don't compare. There are two reasons not to compare.

- a. You can always find someone who is not doing as good a job as you and you'll be proud.
- b. You can always find someone who is doing a better job than you and you'll get discouraged.

God says, I don't want you being either of those. I made you absolutely unique. You're like the snowflake, no two are the same. God just wants you to be you. If you're not going to be you, who's going to be you? Don't compare with other people - you'll either be proud or discouraged.

Galatians 6:4 is a difficult command to obey, particularly in a culture where everything is built upon competition. Let's just be honest, in America, we only want top dogs. We only want gold medal winners. We only want the salesman of the year. You watch during the fall when the camera goes down to the sidelines in the football game and they pan that sideline, all the players take that helmet off and turn. What do they say? Their team record may be four and seven, but they'll

5. अपने प्रयासों के लिए इनाम पर ध्यान दें। जीवन में बहुत कम चीजें आसान होती हैं। जिन्दगी कठिन है। इनाम देखने के लिए आपको दृढ़ रहना होगा। दर्द से परे लाभ पर ध्यान लगाओ। इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि जब आप कार्य पुरा कर लेंगे तो आपको कितना अच्छा लगेगा।

यहाँ एक छोटा सा दृष्टांत है। जब बच्चे स्कूल से घर आते हैं, अगर वे पहले बैठकर अपना होमवर्क पूरा करते हैं, तो वे दोपहर के बाकी समय का आनंद लेंगे और वे अपनी शाम का अधिक आनंद लेंगे क्योंिक पूर्ववत होमवर्क उनके सिर पर नहीं लटक रहा है। यह दर्शन है "आप अभी भुगतान कर सकते हैं और बाद में खेल सकते हैं, या आप अभी खेल सकते हैं और बाद में भुगतान कर सकते हैं।"

सिद्धांत यह है, "हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम हार न मानें तो उचित समय पर कटनी काटेंगे।" (गलतियों 6:9) गलत प्रश्न यह है कि "मैं क्या करने का मन करता हूँ"। सही सवाल यह है कि "भगवान मुझसे क्या चाहते हैं"। यह केवल एक बहुत ही अपरिपक्क व्यक्ति है जो अपना जीवन अपनी भावनाओं से जीता है। उपरोक्त सब कुछ हमें निम्नलिखित दो प्रश्नों की ओर ले जाता है।

ऐसा क्या है जिसे आपके जीवन में बदलने की आवश्यकता है?

- क्या यह "इन दिनों में से एक मैं ईसाई बनने जा रहा हूँ"?
- क्या यह "इन दिनों में से एक है कि मैं उस सेवकाई में शामिल होने जा रहा हूँ जिसे परमेश्वर ने मुझे सौंपा है?
- क्या यह "इन दिनों में से एक है कि मैं प्रतिदिन बाइबल पढ़ने और अध्ययन करने जा रहा हुँ?
- क्या यह "इन दिनों में से एक है कि मैं शराब पीना छोड़ दूंगा, एक बेहतर माता-पिता बनूंगा, पत्नी और बच्चों के साथ कुछ समय बिताऊंगा या जो कुछ भी मैं बंद कर रहा हूं वह मुझे पता है कि करने की जरूरत है?

आपको गियर में लाने के लिए क्या करना होगा?

भगवान कहते हैं, "मैं मदद करना चाहता हूँ।" जीवन में सबसे बड़ी गलती यीशु मसीह के लिए आपको बदलने और आपको बचाने के अवसर को स्थगित करना या देरी करना है।

"मैं किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में नहीं जानता जो अंततः परमेश्वर के साथ अपना जीवन ठीक नहीं करना चाहता। वे कहते हैं, "इन दिनों में से एक, मैं वह प्रतिबद्धता बनाने जा रहा हूं। इन दिनों में से एक, मैं अपना जीवन क्रम में लाने जा रहा हूं। इन दिनों में से एक, मैं अपना जीवन क्रम में लाने जा रहा हूं। इन दिनों में से एक, मैं अपने पापों का पश्चाताप करके परमेश्वर की आज्ञा मानने जा रहा हूँ, अपने विश्वास को स्वीकार करते हुए कि यीशु ईश्वर है, पानी के बपतिस्मा में मेरे पापों की क्षमा के लिए दफनाया जाएगा और मेरे सभी पापों से क्षमा किए गए एक नए ईसाई को शुद्ध किया जाएगा। " अभी क्यों नहीं? एक अच्छा इरादा केवल विलंब है। आप पुरानी कहावत जानते हैं, और यह सच है: "नरक का मार्ग अच्छे इरादों से

look at the camera and say, "We're number one, we're number one." How many times have you ever seen a football player turn to the camera and say, "We're number four, we're number four, and we're proud of it."? No! No! Being number one is not what it's all about, never has been God's standard. It's all about admitting your weakness honestly while recognizing and using your strength.

3. Enjoy your successes gratefully.

Paul said "What do you have that you did not receive? And if you did not receive it, why do you boast as though you did?" (1 Corinthians 4:7) Do you know what Paul was saying? Everything you and I have has been given to us by God. We say, I've built my business with my own two hands. It was my idea. Great, but where did you get that mind, your health or your hands? They all came from God. Where did you get the DNA that fashioned your chromosomes that made you like you are? You see the fact is, we all do have designer genes, if you'll pardon the pun. But we didn't design them, God did.

How many of you chose your parents, where you were to be born or when you were going to be born? Those are all gifts from God, and what you do with them is your gift back to God. Humility then enjoys success in life, but it does so gratefully, knowing the origin of that success. "Every good and perfect gift comes down from the Father." (James 1:17) We need to remember that and the lesson of the whale. When the whale gets to the top, and starts to blow off, is when he gets harpooned. One minute you can be a hero, and the next minute you can be a zero. Don't ever forget, there's just 12 inches difference between a halo and a noose. What we need to do is enjoy our successes gratefully.

4. <u>Serve other people unselfishly</u>.

In October 1989, Psychology Today did a great article about depression. It was focusing on the epidemic that major depression is becoming our culture. It particularly focused on the Baby Boom population, people between ages 30 and 45. Do you realize that people who are in the Baby Boom generation are three to ten times more likely to suffer major depression than their grandparents? That seems bizarre to me because our grandparents were the ones who went through the Depression, the ones who had to struggle to raise ten kids from the milk of one cow. I mean, isn't it amazing?

| प्रशन: | | | |
|--|------|--|--|
| 1. विलंब के कारण। | | | |
| a अनिर्णय | | | |
| b ड र | | | |
| c पूर्णतावाद | | | |
| d क्रोध | | | |
| e आलस्य | | | |
| f सब से ऊपर | | | |
| g ए और सी | | | |
| h ए, डी और ई | | | |
| i बी, सी और डी | | | |
| 2. विलंब की लागत। | | | |
| a यह बाधाएं पैदा करता है। (नीति. 15:19) | | | |
| b यह अवसरों को बर्बाद करता है। (नीति. 20:4) | | | |
| c यह अन्य लोगों को चोट पहुँचाता है। | | | |
| d सब से ऊपर | | | |
| e ए और बी | | | |
| f ए और सी | | | |
| g बी और सी | | | |
| 3. इलाज। | | | |
| a बहाना बनाना छोड़ दो। (नीति. 22:13) | | | |
| b अवरुद्ध करने का काम रोको। | | | |
| c शेड्यूलिंग प्रारंभ करें। (नीति. 24:27) | | | |
| d अपने डरों का सामना करें। (फिल. 4:13) | | | |
| e अपने प्रयासों के पुरस्कारों पर ध्यान दें। (गला. | | | |
| 6:9) | | | |
| f सब से ऊपर | | | |
| g ए, बी और सी | | | |
| h ए, सी और डी | | | |
| i बी, सी और ई j बी, सी, डी और ई | | | |
| - | | | |
| 4. एक विलंबकर्ता की पसंदीदा अभिव्यक्ति "इन दिनों में से एक | | | |
| मैं" है जबकि भगवान कहते हैं "आज का दिन है।" | | | |
| सत्य असत्य | | | |
| 5. सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है जो आमतौर पर एक विलंबक | त्री | | |
| द्वारा स्थगित कर दी जाती है? | | | |
| a परिवार के किसी सदस्य के प्रति अपने प्यार का | - | | |
| इजहार् करना | | | |
| b किसी को अपना दुख बताकर क्षमा मांगना | | | |
| c मुक्ति, क्षमा के लिए ईश्वर की आज्ञाकारिता | | | |

प्रशस्त होता है।" आज क्यों नहीं?अद्भुत अन्ग्रह पाठ #1200

It continued, "It can be traced to the historical and cultural occurrences which have exalted the individual." In other words, the article said, depression is a result of the "Me" generation---me, my image and my goals. It is plain old selfishness and pride. What they found out, is that a person who's all wrapped up in himself makes a pretty small package.

The article also stated "Just as belief in the nation was crumbling, and belief in God was also fading, the skyrocketing divorce rate was eroding belief in the family. When people no longer believe that their country is so powerful, that the family can be a source of enduring unity and support, or that a relationship with God is important, what else can they turn to for identity, satisfaction, and hope? People then only have one alternative; they turn to themselves and depression results."

In that same magazine, there was another article called, "Beyond Selfishness." Keep in mind this is Psychology Today. It's not trying to promote any particular Christian value. But it said that helping other people overcomes depression. In fact, the article said that when you help others, it actually creates endorphins in your brain. Some of you who are runners and athletes know what endorphins are. It's the hormone chemical that literally gives runners a high. The article stated that when you volunteer to help somebody else, physically you get that same kind of thing. "Volunteering to help makes people feel good physically and emotionally. Like runner's calm, it's good for your health."

What Psychology Today said in 1989 was simply restating what Paul said in Philippians 2, over 2,000 years ago. "Do nothing out of selfish ambition or vain conceit, but in humility consider others better than yourselves. Each of you should look not only to your own interests, but also to the interest of others. Your attitude should be the same as that of Christ Jesus." (Philippians 2:3) Paul is saying humility isn't thinking poorly of yourself, it's just thinking more about others. The focus is off my needs, my desires, my wants, and the focus is on what other people need. I like to put it this way: humility isn't thinking less of yourself; humility is thinking less about yourself. The model is Jesus.

When all the apostles were in that Upper Room, all too proud to wash each other's feet, Jesus walked in, took a अध्याय ८

गर्व और विनम्रता पर

बहुत से लोग प्रश्नों के उत्तर की इच्छा रखते हैं (1) मैं अपने आप को वासना, व्यसनों और हैंग-अप से कैसे मुक्त करूँ जो जीवन को अस्त-व्यस्त कर देते हैं और (2) मुझे आवश्यक परिवर्तन करने की शक्ति कैसे मिलती है या मुझे ईश्वर की शक्ति कैसे मिलती है मेरे जीवन में?

प्रारंभिक बिंदु समस्या को स्वीकार करना है, न केवल समस्या की भौतिक अभिव्यक्ति, बल्कि मूल समस्या। मूल समस्या यह है कि "मैं प्रभारी हूं, और मुझे भगवान की आवश्यकता नहीं है।" आदम और हव्वा की यही समस्या थी। रोमियों 7 में पौलुस ने इसके साथ मल्लयुद्ध किया और यह हमारी समस्या है।

कुंजी याकुब 4:6 में पाई जाती है। शेष पाठ में सब कुछ उस महान पाठ से निकलने वाला है। याकुब ने कहा, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।" यह दोहराने लायक है। "ईश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, लेकिन दीनों पर अनुग्रह करता है।" बाइबल बताती है कि आपके जीवन में शक्ति की कुंजी नम्रता है और परमेश्वर की शक्ति के लिए मुख्य बाधा अभिमान है, क्योंकि अभिमान से भरा व्यक्ति परिवर्तन या सधार की आवश्यकता नहीं देख सकता है। केवल जब कोई विनम्रता से भरा होगा, उसे बदलने की शक्ति दी जाएगी। बाइबल दो प्रकार के घमण्ड के बारे में बात करती है। वास्तव में एक अच्छा प्रकार का अभिमान है। यदि आप ऐसा नहीं मानते हैं. तो गलातियों ६:४, या २ क्रिन्थियों ७:४ पढिए। अच्छे प्रकार का अभिमान स्वाभिमान, अच्छे कार्य के लिए संतुष्टि और दूसरों को सफल होते देखने के आनंद का पर्याय है। बाइबल में केवल दो या तीन बार आप गर्व को इस तरह संदर्भित करते हुए देखते हैं। निन्यानबे प्रतिशत बार, आप गर्व को बहुत नकारात्मक तरीके से संदर्भित पाएंगे. जहां यह दंभ. स्वार्थ. अहंकार या अहंकार से जडा हुआ है। किसी ने कहा, "अहंकार ही एक ऐसी बीमारी है जो जब आपको हो जाती है, तो यह बाकी सभी को बीमार कर देती है।" कई प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण लोगों को देखकर कोई भी आसानी से शिकार बन सकता है।

मुहम्मद अली को याद करें, आप में से जो मेरी पीढ़ी या उससे ऊपर के हैं, और अली अपने प्रमुख में कितने ढीठ और गर्वित थे? कहानी में कहा गया है कि अली एक बार विमान में सवार था और वह उड़ान भरने वाला था। फ्लाइट अटेंडेंट अली के पास आई और बोली, "सर, आपको अपनी सीट बेल्ट बांधनी होगी।" अली ने अपने विशिष्ट ढीठ, शोमैन-प्रकार के तरीके में कहा, "सुपरमैन को सीट बेल्ट की आवश्यकता नहीं है।" जिस पर फ्लाइट अटेंडेंट ने जवाब

basin and towel, and began washing their feet. Oh, it embarrassed them so much. But proud and insecure people can't serve others, they're too wrapped up in themselves. Each of us needs to lighten up on the introspection, i.e., what about me? Let us just dive in and serve other people.

5. Humble yourself voluntarily.

"Humble yourself in the sight of the Lord, and he will lift you up." (James 4:10) I want you to notice that humility is a choice, it's a verb. Nowhere in the Bible are we told to ask God to humble us, it's something we're to choose. We choose to act, speak, and think in a humble way and the promise is, if we humble ourselves, then Christ will lift us up. That's called a paradox. God says the way up is down. The more I humble myself, the more I do admit my weaknesses and recognize my strengths, enjoy my successes in a grateful way, the more I serve others, the more God lifts me up. But the opposite is also true, just as the way up is down, the way down is up.

"Pride goes before destruction, and a haughty spirit before a fall." (Proverbs 16:18) How many personifications of that proverb have you seen? The moment I start getting filled with pride, the moment I think I've got all the answers, is the moment I begin walking right out to the end of the gangplank. If you're thinking that you don't need God, you will. You will, it's just a matter of time. That's true regardless of whether or not you believe it. It's going to happen. But the longer you wait to see it, the more you'll lose. In a nutshell the worst thing about pride is it cuts off all the wonderful things that God wants to give us. God opposes the proud, but he gives grace to the humble.

Amazing Grace Lesson #1197

| Questions: | |
|----------------------------|--------------------|
| God is | |
| a | _ Love |
| b | _ Righteous (just) |
| c | _ Truth |
| d | _ Mercy |
| e | _ Peace |
| f | _ All the above |
| g | a, b and c |
| h | a and c |
| i | a, c and e |
| | |

दिया, "सुपरमैन को किसी हवाई जहाज की भी जरूरत नहीं है।" उसने बेल्ट बांध ली।

गर्व दूसरों में देखना बहुत आसान है, लेकिन खुद में देखना मुश्किल है, लेकिन यह है। यह केवल बुनियादी मानवीय समस्या नहीं है, यह आपकी मूल समस्या है, और यह मेरी मूल समस्या भी है।

गर्व जो अन्य समस्याओं की ओर ले जाता है.

2. अभिमान व्यक्तिगत विकास को रोकता है। आपको लगता है कि आपने इसे पूरी तरह से प्राप्त कर लिया है और इसे बदलने, बढने या सुधारने की आवश्यकता नहीं है। आपकी आत्मा में गर्व का निवास है। किसी ने कहा, "जब सिर में सुजन होने लगे तो दिमाग का बढ़ना बंद हो जाता है।" यह जानने का एक निश्चित तरीका है कि आपको इस पाठ की आवश्यकता है यदि आपको नहीं लगता कि आप करते हैं।

सुलैमान ने कहा, क्या तू मनुष्य को अपनी दृष्टि में बुद्धिमान देखता है? मूर्ख की आशा उस से बढ़कर है। (नीतिवचन 26:12) "जो अनुशासन पर चलता है, वह जीवन का मार्ग दिखाता है, परन्तु जो सुधार पर ध्यान नहीं देता, वह दूसरों को भटका देता है।" (नीतिवचन 10:17) ये दोनों पद मिलकर कह रहे हैं कि अभिमानी पुरुष या स्त्री केवल आत्म-मूल्यांकन से ही आगे बढ़ते हैं। उन्हें लगता है कि वे सब कुछ जानते हैं जो जानना है और कोई सलाह लेने का कोई मतलब नहीं है।

अगर आपको शादी की समस्या है और आप इस बारे में किसी से बात नहीं करेंगे, तो यह गर्व की बात है। बस इतना ही है, शुद्ध और सरल। अगर आपको आर्थिक परेशानी है और आप इसके बारे में सलाह नहीं लेंगे, तो यह सिर्फ आपका गौरव है। यदि आप अपने काम, स्कूल, या किसी रिश्ते में असफल हो रहे हैं और आप इसे छिपाने की कोशिश कर रहे हैं, तो यह गर्व की बात है। अक्सर हम स्मार्ट दिखने के बजाय स्मार्ट दिखना पसंद करते हैं। स्मार्ट बनने का तरीका विनम्र होना है। अभिमान व्यक्ति को बढ़ने से रोकता है।

2. गर्व मेरे रिश्तों को तोड देता है। अभिमान सभी संबंधपरक संघर्ष और असामंजस्य की जड है। जब आप गर्व से कार्य करते हैं, तो आप मांगलिक, असहानुभूतिपूर्ण, यहां तक कि अप्रिय और असभ्य भी हो जाते हैं।

क्या आपने कभी किसी गर्वित व्यक्ति को किसी फैंसी रेस्तरां में वेटर के साथ व्यवहार करते देखा है? यह घृणित है, वे मांग कर रहे हैं और कभी संतुष्ट नहीं हो रहे हैं। अभिमान हमें द्वेष रखने और

| 2. | God is the perfect example of being pleased in doin |
|----|--|
| | a good job without any egotism or self-centerednes |
| | (pride) in what He had done. |
| | True False |
| 3. | Egotism, self-centeredness, is the only disease that |
| | makes everyone else sick. |
| | True False |
| 4. | Disharmony and relational conflicts their roots in |
| | pride? |
| | True False |
| 5. | Pride is destroyed by |
| | a Maturity, one just gets older |
| | b Education |
| | c Hard work |
| | d Humility |
| | |
| 6. | Pride is based upon a valid self-examination. |
| | True False |
| 7. | Pride is pretending to be bigger on the outside than |
| | you are on the inside. |
| | True False |
| 8. | Pride is the opposite of humility |
| | True False |
| 9. | One can make a choice to be prideful or humble |
| | True False |
| | |
| | |
| | |

Chapter 9

Taking Steps to Freedom

"They promise them freedom, while they themselves are slaves of depravity---for a man is a slave to whatever has mastered him." (2 Peter 2:19) Listen to that last sentence again. "For a man is a slave to whatever has mastered him."

Not long ago the New York Times carried an article about addictions, and the whole premise was that Americans seem hooked on this idea of addiction. Not too long ago, you only heard the idea of addiction mentioned with regard to drugs and alcohol. Now it says that there are addictions to all kinds of things, food, cigarettes, exercise, relationships, shopping, work, sex and video games. In fact, there's now a monthly publication called, Lifeline America, that focuses on nothing except our addictions. There are over 200 different kinds of addiction support groups meeting throughout the country.

Many if not most of us tend to be addicted to something. There is something that literally has a mastery of or a control over our lives. You may be into one of the new ones, or you may be victim to one of the oldies, like drinking. Over 18,000,000 Americans are problem

स्कोर बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें यह स्वीकार करने में असमर्थ बनाता है कि हम गलत हैं। "अभिमान ही झगड़े पैदा करता है।" (नीतिवचन 13:10) मैं इसे दोहराने जा रहा हूँ। "अभिमान ही झगड़े पैदा करता है।"

विवाह में लगभग हर तर्क या झगड़े की जड़ अभिमान ही होता है। आप यह स्वीकार नहीं करना चाहते कि आपके पित या पत्नी आंशिक रूप से सही हो सकते हैं। अगर हम अपने अभिमान को निगल लें तो इतने सारे पारिवारिक संघर्षों को सुलझाया जा सकता है।

आपको कितनी बार लगता है कि इस परिदृश्य पर काम किया गया है? एक युवक विद्रोही हो जाता है और अपने पिता पर छूट जाता है और पिता अपना आपा खो देता है और कहता है, "घर से बाहर निकलो और वापस मत आना।" वे अलग-थलग हैं क्योंकि कौन जानता है कि उनमें से कोई भी अंग्रेजी भाषा के इन छह सबसे कठिन शब्दों को मजबूर नहीं कर सकता है, "मैं गलत था। मुझे खेद है।" अभिमान रिश्तों को नष्ट कर देता है, और अभिमान भी तनाव और चिंता पैदा करता है।

वे अलग हो जाते हैं क्योंकि कौन जानता है कि उनमें से कोई भी खुद को भाषा में इन चार सबसे कठिन शब्दों को बोलने के लिए मजबूर नहीं कर सकता: "मैंने गलती की। मुझे खेद है।" अभिमानी व्यक्ति का ध्यान स्वयं पर होता है। यह मेरे स्टेटस और मेरी इमेज पर है। राजनेताओं के पास अब स्पिन-डॉक्टर हैं। उन्हें सच्चाई की परवाह नहीं है; वे चाहते हैं कि छवि सही हो। छवि ही सब कुछ है। लेकिन यह वास्तव में एक असुरक्षा और हीनता की भावना को प्रकट करता है।

क्या आपने कभी फॉक्स, सीएनएन या किसी अन्य चैनल पर विश्वव्यापी शिखर सम्मेलन, या संयुक्त राष्ट्र की बैठक देखी है? आप देखते हैं कि छोटे से छोटे देशों के तानाशाह और राजदूत चोटी की आठ पंक्तियों और 40 पदकों के साथ मार्च करते हुए आते हैं और ये चमकीले सजी हुई वर्दी हैं, लेकिन अन्य देशों के राष्ट्रपति और राजदूत सिर्फ एक मामूली गहरे रंग के सूट में आते हैं। क्यों? उन्हें किसी को प्रभावित करने की जरूरत नहीं है। वे सुरक्षित हैं। क्या आपने कभी फॉक्स, सीएनएन या किसी अन्य चैनल पर विश्व शिखर सम्मेलन, या संयुक्त राष्ट्र को छोटे देशों के उन तानाशाहों और राजदूतों से मिलते हुए देखा है जो वर्दी में आठ पंक्तियों और चालीस पदकों से सजी वर्दी में परेड करते हैं? जबिक अन्य साधारण गहरे रंग के सूट में प्रवेश करते हैं। क्यों? उन्हें किसी को प्रभावित करने की जरूरत नहीं है। वे आश्वस्त हैं।

मेरे पसंदीदा लेखकों में से एक, टोनी कैंपोलों ने कहा, "गर्व अक्सर उन्हें नष्ट कर देता है जिन्हें हम सबसे ज्यादा प्यार करते हैं।" माता-पिता का अभिमान संतान के विनाश का कारण बन सकता है। जो drinkers. It disrupts their lives and their families. Surely some of us are addicted to eating, I don't mean for livelihood, but for pleasure. Did you know that Americans are 2.3 billion pounds overweight? What is your addiction? What is your life-controlling vice? Whatever it is, I want to share with you seven steps to freedom.

1) Freedom starts today.

Freedom starts today, not tomorrow, not next week, not next month. Have you ever noticed how many more people go on a diet tomorrow instead of today? I love what Solomon says in Proverbs 27:1, "Do not boast about tomorrow, for you do not know what a day may bring." In other words, quit telling yourself, "one of these days." The truth is, it's going to be harder to change tomorrow than it is today, because delay always makes the problem worse. Begin today.

"Whoever watches the wind will not plant; whoever looks at the clouds will not reap." (Ecclesiastes 11:4) In other words, don't get distracted. Don't make excuses, the greater the delay, the bigger the problem. So, step one is, freedom has got to start today. Don't put off until tomorrow what can be started today.

2) Refuse to blame others.

Refuse to blame others. You'll never get out of your addiction until you refuse to blame others. But this old cover of "alibiing" is as old as Adam and Eve. Do you remember? Adam sinned and blamed his wife; Eve sinned and blamed the snake, serpent, But the point is we tend to want to blame somebody else. I'll never get better until I take personal responsibility. It's my life, I make choices.

One of my favorite chapters in the Bible states. "Let each one carry his own load." (Galatians 6:5) It's talking about personal responsibility. It's not saying we don't help one another. Because three verses earlier, it says "to bear one another's burdens, so fulfill the law of Christ." But I am responsible for me and you are responsible for you.

"Do not be deceived: God will not be mocked. Whatsoever a man sows that shall he also reap." (Galatians 6:7) Who are you blaming for your big problem in life? Are you blaming your parents, your husband, your wife, your teacher or your boss? Or are you blaming the devil? Are you blaming God? To break

लोग यह साबित करने के लिए बाहर रहते हैं कि वे दूसरों से बेहतर हैं, वे अक्सर अपने बच्चों का इस्तेमाल इस उद्देश्य के लिए करते हैं। कैम्पोलो जाता है और बताता है कि हम पहले से क्या जानते हैं। "कितने माता-पिता गर्व से अपने बच्चों के ग्रेड के माध्यम से, अपने बच्चों के खेल कैरियर के माध्यम से, अपने बच्चों की सुंदरता के माध्यम से, और सभी अपनी बेहतरी के लिए ऐसा करने की आड़ में रहते हैं। वे अपने मानस को बर्बाद कर रहे हैं, जबिक वे अपने स्वयं के व्यक्तिगत को बढ़ा रहे हैं अहंकार।" कैम्पोलो यह कहकर समाप्त करता है, "खुशी अक्सर अभिमान का हताहत होता है।"

नीतिवचन 29:25 कहता है कि दूसरे आपके बारे में क्या सोचते हैं, इसके बारे में चिंतित होना एक खतरनाक बात है। गर्व चिंता और तनाव का कारण बनता है क्योंकि अगर मैं एक छवि जीने की कोशिश कर रहा हूं, लेकिन अंदर मैं कुछ और हूं, तो मैं तनावग्रस्त, निराश और मोहभंग हो जाता हूं। इसके विपरीत, हमारे प्रभु यीशु ने पहाड़ी उपदेश पर जो पहली बात कही वह थी "धन्य हैं वे, जो नम्र हैं।"

विनम्रता के माध्यम से खुशी

यदि आप उन चीजों से मुक्त होने जा रहे हैं जो आपको जकड़े हुए हैं, तो आप इसे तब तक नहीं कर पाएंगे जब तक कि आप विनम्रता की मानसिकता विकसित करना शुरू नहीं कर देते। यह पाठ का वास्तविक मूल है।

1. अपनी कमजोरियों को ईमानदारी से पहचानें।
"जो अपने पापों को छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नहीं होता, परन्तु जो उन्हें मान लेता और त्याग देता है, उस पर दया की जाती है।" (नीतिवचन 28:13) यदि आप अपनी कमजोरियों को स्वीकार नहीं करते हैं, यदि आप आध्यात्मिक विफलता के अपने सतत क्षेत्रों को स्वीकार नहीं करते हैं, तो न तो आप और न ही परमेश्वर उन पर कार्य करने में सक्षम होंगे।

मुझे उस किशोर लड़के की कहानी बहुत पसंद है जिसने अपनी बहन से कहा, "बहन, मुझे डर है कि मैं घमंड के पाप का दोषी हूँ।" उसने उसकी ओर देखा और कहा, "तुम, घमंड, कैसे?" उसने कहा, "ठीक है क्योंकि हर बार जब मैं आईने से चलता हूं, तो मैं खुद को रुकता हुआ देखता हूं और कहता हूं, 'वाह, क्या बात है।" वह हँसी और बोली, "नहीं, यह घमंड नहीं है, यह सिर्फ अज्ञान है।"

आप में से बहुत से लोग आज रात को सोने से पहले झुकेंगे और प्रार्थना करेंगे, और कहेंगे, "भगवान, अगर मैंने आज पाप किया है।" वहीं रुक जाओ, बस रुको और सोचो। "अगर" को छोड़ दें, क्योंकि इसके बारे में कोई सवाल ही नहीं है, आपने आज पाप किया है। अपने जीवन में पाप को अलग करने के लिए समय निकालें, विशेष रूप से शाश्वत पाप, वह पाप जिसे आप कोठरी में भरने की कोशिश कर रहे हैं। हो सकता है कि यह आपका व्यभिचारी मामला हो, हो सकता है कि यह आपकी झूठ बोलने वाली जीभ हो, हो सकता है कि यह माता-पिता की नफरत हो, हो

free, you must take responsibility for your life then you will not seek a remedy to your problem. Stop excusing yourself and stop accusing other people. Refuse to blame others.

3) Examine your life.

Take a personal inventory of your life. Do a frank evaluation. Ask some tough questions: What is my addiction? Why do I have it? When did it start? How frequently do I fall victim to it? When are the situations in which I'm tempted most? Why am I afraid to do something about it? It's hard to ask those questions, but they must be asked if we are to correct our problem.

"Let us examine our ways and test them and return to the Lord." (Lamentations 3:40) To change we have to stop pretending. We can't cover up our faults. We must come face to face with them. The fact is, hiding our hurt only intensifies it and makes it worse. Denial prevents healing.

"For day and night your hand was heavy upon me; my strength was sapped as in the heat of summer. Then I acknowledged my sin to you and did not cover up my iniquity. I said, 'I will confess my transgressions to the Lord'---and you forgave the guilt of my sin." (Psalms 32:4, 5) David said, I wouldn't face my problem, and I was drying up.

David examined his own life, and when he did, he came clean before the Lord. It was like lancing a boil. All of a sudden, he felt this freeing relief. Examine your life. Let me tell you something, that's not a once in a lifetime thing. We need to be examining our lives regularly because vice, addiction and other sins will insidiously creep in and control you before you even know it.

4) Employ Christ's sovereignty.

Christ is waiting to help. Employ his sovereignty - you can't do it alone. You need a power greater than yourself. Why don't you go straight to the source and get the greatest power? "Therefore, do not let sin reign in your mortal body so that you obey its evil desires. Do not offer the parts of your body to sin, as instruments of wickedness, but rather offer yourselves to God, as those who have been brought from death to life." (Roman 6:12, 13)

For a man is a slave to whatever masters him. So, you are a slave. Romans 6:20 states, you're either a slave to

सकता है कि यह काम पर एक टूटा हुआ रिश्ता हो या हो सकता हैं कि यह कुछ ऐसा है जिसका आप सिर्फ दिखावा कर रहे हैं। इसे मेज पर से बाहर निकालो और परमेश्वर के सामने फैलाओ। जब तक आप अपनी कमजोरी को स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक आप वास्तविक विनम्रता को नहीं जान पाएंगे।

2. वास्तविक रूप से अपनी ताकत का मूल्यांकन करें। अभिमान स्वयं के झुठे मुल्यांकन पर आधारित है, लेकिन विनम्रता सत्य पर आधारित है। यींशु ने कहा, "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" पौलुस ने कहा, "अपने आप को अपने से अधिक ऊंचा मत समझो. बल्कि अपने बारे में गंभीर निर्णय के साथ सोचो।" (रोमियों 12:3) दूसरे शब्दों में, यथार्थवादी बनें कि आप कौन हैं। कुछ लोग सोचतें हैं कि विनम्रता एक हीन भावना है। नम्रता यह नहीं कह रही है, "ओह, मैं मनहूस, भयानक, बेकार या कुछ भी नहीं हूँ। मैं सिर्फ एक पुराना कीडा हूँ।" यह सच नहीं है। तुम कीड़ा नहीं हो, तुम कुछ नहीं हो, तुम कुछ हो। यीशु व्यर्थ नहीं मरा। हम में से प्रत्येक, सृष्टि में अद्वितीय, ईश्वर के स्वरूप में बना है। तथ्य यह है कि आपर्के पास ताकत है। हम सब करते हैं। भगवान ने उन्हें हमें दिया है लेकिन हम क्षेत्रों में भी कमजोर हैं। मुझे बास्किन रॉबिंस में चलने वाली छोटी लडकी की कहानी बहुत पसंद है। वह मुश्किल से काउंटर पर दिखाई दे रही थी, और कहा, "सर, मुझे उनमें से एक हाथ से भरी हुई पिन चाहिए, ढक्कन नहीं, बस एक चम्मच।" साथी ने उसकी ओर देखा और कहा. "अच्छा छोटी लड़की, क्या तुम्हें यकीन है कि तुम वह सब खा सकती हो?" "ओह, हाँ सर," उसने कहा। "आप देखते हैं कि मैं बाहर की तुलना में अंदर से बहत बड़ा हूँ।"

अभिमान यह दिखावा कर रहा है कि आप अंदर से बाहर से बहुत बड़े हैं। "प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्यों का परीक्षण स्वयं करना चाहिए, फिर वह किसी और से अपनी तुलना किए बिना खुद पर गर्व कर सकता है।" (गलितयों 6:4) यह मेरे जीवन के ग्रंथों में से एक है। एक अच्छा प्रकार का अभिमान भी होता है। पॉल ने कहा, आप अपनी क्षमताओं का आनंद लेते हैं, अपनी सफलताओं का आनंद लेते हैं, अच्छा काम करते हैं, लेकिन तुलना न करें। तुलना न करने के दो कारण हैं।

b. आप हमेशा किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ सकते हैं जो आपके जैसा अच्छा काम नहीं कर रहा है और आपको गर्व होगा।

बी। आपको हमेशा कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो आपसे बेहतर काम कर रहा हो और आप निराश हो जाएंगे।

भगवान कहते हैं, मैं नहीं चाहता कि तुम उनमें से कोई हो। मैंने तुम्हें बिल्कुल अनोखा बनाया है। आप बर्फ के टुकड़े की तरह हैं, कोई भी दो समान नहीं हैं। भगवान बस चाहता है कि तुम तुम हो। यदि आप आप नहीं होने जा रहे हैं, तो आप कौन होंगे? अन्य लोगों के साथ तुलना न करें - आप या तो गर्व करेंगे या निराश होंगे।

गलातियों 6:4 का पालन करना एक कठिन आदेश है, विशेष रूप से ऐसी संस्कृति में जहां सब कुछ प्रतिस्पर्धा पर आधारित है। चलो sin, or you're a slave to righteousness. The bottom line is we all really are a slave. But the good news is, you can choose your master. "Submit yourselves, then, to the Lord." (James 4:7) The solution to your addiction is to choose the right master. Every day you're controlled by something. You're controlled by a bottle or by a pill. Many are controlled by other people. You may be controlled by the thirst for power, you may be controlled by food. But you are going to have to serve something. Why not choose the right master? God says, "Let me be sovereign."

Often, we only want to give God the problem. We say to God, I've got a problem. I need you to take care it. But to tell you the truth, I really want to run the rest of my life. God says, if you want me to work on the problem, you've got to give me every area of your life, and give it all to me, not just part. When we do, it produces incredible power to change.

So, why don't more people do it? The truth is, they're afraid. They're afraid that by submitting their lives to Christ it will turn them into something they don't want to be. They're afraid it means no fun, no freedom, and becoming some distorted view of a fanatic for Christ. That's one of the biggest lies that has ever escaped from hell. Did you hear that? That's a lie straight from the flames of hell. Jesus said, "I've come so that you can have life and have it to the full." What God is saying is, "Don't you know I was your architect? Don't you know that I was your chief construction engineer? Don't you know that I know the way you work? Don't you know that I know you need fun? Don't you know that I know you need freedom? Therefore, in the short term and the long term, you submit your life to me, and I'll give you more joy than you can ever find anywhere else."

You think about the epitome of Christian people that you know and look at their lives and tell me they are not joy filled. If I get a picture of somebody in my life that is dour and sour and down on anything, he does not rank at my list of top ten Christian people, because he is not, he has missed it somewhere. Jesus said, "I've come so that you can have life, and have it to the full. Make God sovereign in my life.

5) Distance myself from temptation.

If you don't want to get stung by the bees, stay away from them. Avoid situations where you know your temptation is going to be looking you in the eye. The Bible says, "Resist the devil and he'll flee from you." This is not only biblical, it's just good old common sense.

That means if you've got a problem with drinking, don't stock a bar in your house. If I've got a problem with lust,

बस ईमानदार रहें, अमेरिका में, हम केवल शीर्ष कुत्ते चाहते हैं। हम केवल स्वर्ण पदक विजेता चाहते हैं। हम केवल साल का सेल्समैन चाहते हैं। आप गिरावट के दौरान देखते हैं जब फ़ुटबॉल खेल में कैमरा नीचे की ओर जाता है और वे उस किनारे को पैन करते हैं, सभी खिलाड़ी उस हेलमेट को उतार कर मुड़ जाते हैं। वे क्या कहते हैं? उनका टीम रिकॉर्ड चार और सात हो सकता है, लेकिन वे कैमरे को देखेंगे और कहेंगे, "हम नंबर एक हैं, हम नंबर एक हैं।" आपने कितनी बार किसी फ़ुटबॉल खिलाड़ी को कैमरे की ओर मुड़ते हुए देखा है और कहते हैं, "हम चौथे नंबर पर हैं, हम चौथे नंबर पर हैं, और हमें इस पर गर्व है।" नहीं! नहीं! नंबर एक होने के नाते यह सब कुछ नहीं है, कभी भी भगवान का मानक नहीं रहा है। यह'

4. कृतज्ञतापूर्वक अपनी सफलताओं का आनंद लें. पौलुस ने कहा, "तेरे पास क्या है जो तुझे नहीं मिला? और यदि नहीं लिया, तो ऐसा क्यों घमण्ड करते हैं मानो तू ने किया?" (1 कुरिन्थियों 4:7) क्या आप जानते हैं कि पौलुस क्या कह रहा था? आप और मैं सब कुछ हमें ईश्वर ने दिया है। हम कहते हैं, मैंने अपना व्यवसाय अपने दो हाथों से बनाया है। यह मेरा विचार था। बढ़िया, लेकिन आपको वह दिमाग, स्वास्थ्य या हाथ कहां से मिला? वे सभी भगवान से आए थे। आपको वह डीएनए कहां से मिला जिसने आपके गुणसूत्रों को बनाया जिसने आपको आपके जैसा बनाया? आप देखते हैं कि तथ्य यह है कि, हम सभी के पास डिजाइनर जीन होते हैं, यदि आप सजा को क्षमा करेंगे। लेकिन हमने उन्हें डिजाइन नहीं किया, भगवान ने किया।

आप में से कितने लोगों ने अपने माता-पिता को चुना, जहां आपका जन्म होना था या आप कब पैदा होने वाले थे? वे सभी परमेश्वर की ओर से उपहार हैं, और जो आप उनके साथ करते हैं वह परमेश्वर को वापस आपका उपहार है। तब विनम्रता जीवन में सफलता का आनंद लेती है, लेकिन वह उस सफलता के मूल को जानकर कृतज्ञतापूर्वक करती है। "हर एक अच्छा और उत्तम वरदान पिता की ओर से आता है।" (याकूब 1:17) हमें वह और व्हेल का सबक याद रखना चाहिए। जब व्हेल शीर्ष पर पहुंचती है, और उड़ने लगती है, तब वह हापून हो जाता है। एक मिनट में आप हीरो हो सकते हैं और अगले ही मिनट आप जीरो हो सकते हैं। कभी मत भूलना, प्रभामंडल और फंदे में सिर्फ 12 इंच का अंतर होता है। हमें अपनी सफलताओं का कृतज्ञतापूर्वक आनंद लेने की आवश्यकता है।

4. निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करो। अक्टूबर 1989 में, साइकोलॉजी टुडे ने अवसाद के बारे में एक महान लेख किया। यह महामारी पर ध्यान केंद्रित कर रहा था कि प्रमुख अवसाद हमारी संस्कृति बन रहा है। यह विशेष रूप से बेबी I don't need to go to places that sell pornography. If I've got a problem with overeating, I don't need to line the shelves with junk food. Stay away from the things that cause me problems.

Now can I confess something to you here? I've got weaknesses. I have things in my life that have controlled me and that I still wrestle with daily to keep from controlling me. One of them is food, but my real Achilles heel is ice cream.

Eleven years ago, my wife and I were building a house. While we were building a house, we moved into a little apartment complex on Murfreesboro Road. Across the street in the shopping center was a Baskin Robbins. About 8:00 every night, two hours after our evening meal there was this little churning in my stomach. I'd say, "I believe I'm going to go across the street." It started out slow, one dip. In a couple of weeks, it was two scoops. Within a month, I said, "give me pint and don't put on the lid, just stick a spoon in there." In eight months, I gained 30 pounds. But thank God, I broke that addiction. I'd like to tell you that I applied all these spiritual principles. I didn't, we moved. Baskin Robbins just went "out of sight and out of mind." The key to overcoming temptation is planning in advance not to be around it.

Can I give our teenagers a little word of advice? About a year ago, a year ago this month, a lot of our teens went through a great program called, "True Love Waits," where you made a commitment to stay sexually pure until marriage. I hope you're still on track with that commitment, but if you're going to fulfill that commitment, here's a great piece of advice. You don't wait till you're in the back seat of a car, or you're sitting alone on a couch at your date's house alone, to then ask yourself the question: Do I want to stay pure? If you wait to that point, it's going to be too late. You plan in advance; you decide to avoid the temptation in advance.

Teen, if you want to live your life the way God wants you to live it, you plan your dates. My youth ministers told me a long time ago, "You either go by your plans, or your glands." Let me tell you, you want to go by your plans. Don't you give the devil an opportunity to make you fall! One fellow quit smoking, and somebody asked him, "How did you quit smoking?" I love his answer, he said, "I wet my matches." That's good. Every time he tried to get it out and strike one, he couldn't get that match to strike. He planned in advance.

"Do not give the devil a foothold." (Ephesians 4:27) It's like climbing a mountain, you get a foothold that allows him to step up and get another foothold, then another and another. Don't let the devil be the king of your

बूम आबादी पर केंद्रित है, 30 से 45 वर्ष के बीच के लोग। क्या आप जानते हैं कि जो लोग बेबी बूम पीढ़ी में हैं, उनके दादा-दादी की तुलना में तीन से दस गुना अधिक बड़े अवसाद से पीड़ित होने की संभावना है? यह मुझे अजीब लगता है क्योंकि हमारे दादा-दादी वे थे जो डिप्रेशन से गुजरे थे, जिन्हें एक गाय के दूध से दस बच्चों को पालने के लिए संघर्ष करना पड़ा था। मेरा मतलब है, क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है?

यह जारी रहा, "यह उन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक घटनाओं से पता लगाया जा सकता है जिन्होंने व्यक्ति को ऊंचा किया है।" दूसरे शब्दों में, लेख में कहा गया है, अवसाद "मैं" पीढ़ी --- मैं, मेरी छवि और मेरे लक्ष्यों का परिणाम है। यह सादा पुराना स्वार्थ और अभिमान है। उन्होंने जो पाया, वह यह है कि एक व्यक्ति जो अपने आप में लिपटा हुआ है, एक बहुत छोटा पैकेज बनाता है।

लेख में यह भी कहा गया है "जिस तरह राष्ट्र में विश्वास टूट रहा था, और भगवान में विश्वास भी लुप्त हो रहा था, तलाक की आसमान छूती दर परिवार में विश्वास को मिटा रही थी। जब लोग अब यह नहीं मानते कि उनका देश इतना शक्तिशाली है, कि परिवार स्थायी एकता और समर्थन का स्रोत हो सकता है, या यह कि भगवान के साथ एक रिश्ता महत्वपूर्ण है, वे पहचान, संतुष्टि और आशा के लिए और क्या कर सकते हैं? लोगों के पास केवल एक ही विकल्प है; वे खुद की ओर मुडते हैं और अवसाद का परिणाम होता है। "

उसी पत्रिका में, "बियॉन्ड सेल्फिशनेस" नामक एक और लेख था। ध्यान रखें यह साइकोलॉजी टुडे है। यह किसी विशेष ईसाई मूल्य को बढ़ावा देने की कोशिश नहीं कर रहा है। लेकिन इसने कहा कि अन्य लोगों की मदद करने से अवसाद पर काबू पाया जा सकता है। वास्तव में, लेख में कहा गया है कि जब आप दूसरों की मदद करते हैं, तो यह वास्तव में आपके मस्तिष्क में एंडोर्फिन बनाता है। आप में से कुछ जो धावक और एथलीट हैं, जानते हैं कि एंडोर्फिन क्या हैं। यह हार्मोन रसायन है जो सचमुच धावकों को उच्च देता है। लेख में कहा गया है कि जब आप स्वेच्छा से किसी और की मदद करने के लिए जाते हैं, तो शारीरिक रूप से आपको उसी तरह की चीज़ मिलती है। "मदद करने के लिए स्वेच्छा से लोगों को शारीरिक और भावनात्मक रूप से अच्छा महसूस होता है। धावक के शांत की तरह, यह आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।"

1989 में साइकोलॉजी टुडे ने जो कहा था, वह केवल 2,000 साल पहले फिलिप्पियों 2 में पौलुस द्वारा कही गई बातों को दोहरा रहा था। "स्वार्थ या व्यर्थ अभिमान से कुछ मत करो, लेकिन दीनता से दूसरों को अपने से बेहतर समझो। तुम में से प्रत्येक को न केवल अपने हित के लिए, बल्कि दूसरों के हित के लिए भी देखना चाहिए। mountain. You start by not letting him get a foothold. That may mean you have to choose new friends, get a new job or move somewhere else. The Bible says, "Flee from temptation." You don't toy with it or flirt with it, you run from it. If we're honest, when we flee from temptation, most of us leave a forwarding address. Sometimes we say, "I'll be right down the road, come see me, down there." We want to play with it. Playing with the temptation will not work - you must distance yourself from it.

6) Opt for something better.

"As a man thinketh in his heart, so is he." (Proverbs 23:7) The battle for your life is fought in your mind. Whatever captures my attention, captures me.

My thoughts control my emotions, my emotions control my decisions, and my decisions control my actions, right? The beginning point of the end product, our actions, starts with our thinking. If you have an addiction, a sin that is mastering your life and you are pretending you could break, you can't break it because it's got you by the throat, I will assure you that you dwell on it every day mentally. In fact, you may be dwelling on it every single hour.

The real key to resisting temptation is not in resisting but refocusing. Do you understand? The real key to resisting temptation is not in the resisting, it's the refocusing. You can't just look at that temptation that's got you by the throat and say, "No, no, no, I don't want it, I don't want it, I don't want it," when every ounce of your flesh desires it. You do want it. That won't work. If you just try to resist, you'll lose. However, you must refocus your attention, you mentally change channels so that when temptation calls, you drop the phone. You don't try to argue by saying "I don't want that; I don't want that" because it is a lie. That's why it's a temptation. The only way you'll have victory over temptation is to refocus your attention on something else, whatever you concentrate on gets you.

That's why so many people fail on a diet. What do you think about while you're on a diet? Food! You say, "Fifteen more minutes and I can have another celery stick." You sit there and look at that clock." Resistance will not work, you must refocus.

I took my mother to the doctor the other day. She's had to go on insulin because of diabetes. But we were in the office talking with the doctor. I was hungry when I went in, but over on the side on the table, he had a big old gunky yellow model of a five-pound blob of fat. I saw it and kept staring and I lost that hunger real fast. Why did I lose my desire for something to eat? It was by refocusing.

आपका रवैया मसीह के समान होना चाहिए। यीशु।" (फिलिप्पियों 2:3) पौलुस कह रहा है कि नम्रता अपने बारे में बुरा नहीं सोच रही है, यह केवल दूसरों के बारे में अधिक सोच रही है। मेरी जरूरतों, मेरी इच्छाओं, मेरी चाहतों पर ध्यान केंद्रित है, और ध्यान इस बात पर है कि दूसरे लोगों को क्या चाहिए। मैं इसे इस तरह कहना चाहता हूं: विनम्रता अपने बारे में कम नहीं सोच रही है; विनम्रता अपने बारे में कम सोच रही है। आदर्श जीसस हैं। जब सभी प्रेरित उस ऊपरी कक्ष में थे, सभी एक-दूसरे के पैर धोने में गर्व महसूस कर रहे थे, यीशु अंदर चले गए, एक बेसिन और तौलिया लिया, और पैर धोने लगे। ओह, इसने उन्हें बहुत शर्मिंदा किया। लेकिन अभिमानी और असुरक्षित लोग दूसरों की सेवा नहीं कर सकते, वे भी अपने आप में लिपटे हुए हैं। हम में से प्रत्येक को आत्मिनरीक्षण पर प्रकाश डालने की जरूरत है, यानी मेरे बारे में क्या? आइए हम इसमें गोता लगाएँ और अन्य लोगों की सेवा करें।

6. स्वेच्छा से स्वयं को विनम्र करें.

"यहोवा की दृष्टि में अपने आप को दीन करो, और वह तुम्हें ऊपर उठाएगा।" (याकूब 4:10) मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि नम्रता एक विकल्प है, यह एक क्रिया है। बाइबल में कहीं भी हमें यह नहीं कहा गया है कि हम परमेश्वर से हमें नम्र करने के लिए कहें, यह कुछ ऐसा है जिसे हमें चुनना है। हम विनम्र तरीके से कार्य करना, बोलना और सोचना चुनते हैं और वादा है, अगर हम खुद को विनम्र करते हैं, तो मसीह हमें ऊपर उठाएंगे। इसे कहते हैं विरोधाभास। भगवान कहते हैं कि ऊपर का रास्ता नीचे है। जितना अधिक मैं स्वयं को नम्र करता हूँ, उतना ही मैं अपनी कमजोरियों को स्वीकार करता हूँ और अपनी शक्तियों को पहचानता हूँ, अपनी सफलताओं का कृतज्ञतापूर्वक आनंद लेता हूँ, जितना अधिक मैं दूसरों की सेवा करता हूँ, उतना ही अधिक परमेश्वर मुझे ऊपर उठाता है। लेकिन इसका उल्टा भी सच है, जैसे ऊपर का रास्ता नीचे होता है, वैसे ही नीचे का रास्ता ऊपर होता है।

"विनाश से पहिले घमण्ड और गिरने से पहिले घमण्ड होता है।"
(नीतिवचन 16:18) आपने उस नीतिवचन के कितने रूप देखें हैं?
जिस क्षण मैं गर्व से भरना शुरू करता हूं, जिस क्षण मुझे लगता है
कि मुझे सभी उत्तर मिल गए हैं, वह क्षण है जब मैं गैंगप्लैंक के अंत
तक चलना शुरू करता हूं। अगर आप सोच रहे हैं कि आपको
भगवान की जरूरत नहीं है, तो आप करेंगे। आप करेंगे, यह बस
समय की बात है। यह सच है, भले ही आप इस पर विश्वास करें या
न करें। यह होने वाला है। लेकिन आप इसे देखने के लिए जितनी
देर प्रतीक्षा करेंगे, आप उतना ही अधिक खोएंगे। संक्षेप में
अभिमान के बारे में सबसे बुरी बात यह है कि यह उन सभी
अद्भुत चीजों को काट देता है जो परमेश्वर हमें देना चाहता है।

Paul says in Philippians 4:8 "Finally, brothers, whatever is true, whatever is noble, whatever is right, whatever is pure, whatever is lovely, whatever is admirable---if anything is excellent or praiseworthy---think about such things." Do you realize that's called the principle of replacement? You replace the bad with the good, because nature will not allow a vacuum. When you say that your gas tank is empty, it's not empty, it's full of air. You fill it back up, it's full of gas and the air is gone. When you think "I'm going to get rid of this thought", it will come right back if it's not replaced by something better. That's the principle of replacement. It's the principle of a positive affection. Opt for something better.

Don't sit around all day saying, "No, I don't want to be drunk. No, I don't want to give in to sexual desire. No, I don't want to use all my money gambling. No, I don't want to keep smoking." Whatever the problem, that's the wrong way to fight it. The Bible says, you fill your mind with positive things. That's part of knowing the truth, and letting the truth set you free. Opt for something better.

7) Make solid relationships.

Every human being needs a support group. You may not want to call it that, but you sure need it, and so do I. Every person needs a circle of caring people to give him reinforcement and support. Solomon said in Ecclesiastes 4:9, "Two are better than one, because they have a good return for their work: If one falls down, his friend can help him up. But pity the man who falls and has no one to help him up!" That's truer spiritually than it is physically.

January 1st people make resolutions to become a new person. "I'm going to break all my bad habits," and then what? Two months later we are right back into the same old thing. There's a cycle.

We are not what we want to be, and so we humble ourselves. We say, "God, I need your help. I'm failing." The Bible says, "Humble yourselves in the sight of the Lord, and He'll lift you up." So, we humble ourselves, God gives us the power to do better. We start doing better and after a few weeks or a couple of months, we start getting proud about how good we're doing. Beware! "Pride goes before a fall." We go right back down. We get down in the depths and we begin to humble ourselves again, and the cycle goes over and over.

How do you break that cycle? You need friends. You need Christian friends who will pray for you, who will care for you, who will encourage you, who will help

| नरमवर पमाण्डमा परा पराप परसा ए, नरसु पाना नर जानुत्रह |
|--|
| करता है। अद्भुत अनुग्रह पाठ #1197 |
| प्रशन: |
| 1. ईश्वर है |
| a प्यार |
| b धर्मी (सिर्फ) |
| c सत्य |
| d दया |
| e शांति |
| f सब से ऊपर |
| g ए, बी और सी |
| एच। ए और सी |
| मैं। ए, सी और ई |
| |
| 2. ईश्वर ने जो कुछ किया है उसमें बिना किसी अहंकार या आत्म- |
| केंद्रितता (अभिमान) के एक अच्छा काम करने में प्रसन्न होने |
| का आदर्श उदाहरण है। |
| सत्य असत्य |
| 3. अहंकार, आत्मकेंद्रितता ही एक ऐसी बीमारी है जो बाकी सभी |
| को बीमार कर देती है। |
| सत्य असत्य |
| 4. असामंजस्य और संबंधपरक संघर्ष अपनी जड़ें गर्व में |
| करते हैं? |
| • |
| सत्य असत्य |
| 5. अभिमान नष्ट हो जाता है a परिपक्वता, एक बस बूढ़ा हो जाता है |
| a पारपक्षता, एक बस बूढ़ा हा जाता ह b शिक्षा |
| c कठोर परिश्रम |
| c फठार पारत्रम d विनम्रता |
| લાવનમ્રતા |
| 6. गौरव एक वैध आत्म-परीक्षा पर आधारित है। |
| सत्य असत्य |
| 7. गर्व बाहर से आपके अंदर से बड़ा होने का दिखावा कर रहा है। |
| सत्य असत्य |
| 8. अभिमान विनम्रता के विपरीत है |
| |
| सत्य असत्य |
| 9. अभिमानी या विनम्र होने का चुनाव कोई कर सकता है |
| सत्य असत्य |
| |
| अध्याय ९ |

मञ्जोध्य प्राणित्यों का विशेष कञ्चा है। मञ्ज टीनों पर अन्मार

make you accountable and keep you on track. Two are better than one, because they pick each other up.

I'll give you a parallel verse to this, so important. "Confess your sins to each other and pray for each other so that you may be healed." (James 5:16) Did you understand? Now tell me the truth, do you like that verse? "Confess your sins to each other and pray for each other so that you..." Do you like that verse? Oh, be honest, you don't like that verse much. I think it's the least obeyed verse in the Bible. We don't want to confess our sins to each other. Nobody does. I don't want to open up. Now it says, "so that we may be healed." We like that part. We want to be healed.

We want the power to break the addiction grip on my life. That comes only by confessing my sin, not only to God, but to each other. That doesn't necessarily mean in front of all the brethren and giving a generic statement. I think in the context that James wrote it, it meant more to a select few Christian brothers and sisters, who know me, who love me, who trust me, and whom I trust implicitly and who I know will talk to me every day and say, "how are you doing? I prayed for you today."

Now many of you are thinking right now, I have this addiction that is mastering me. I want to break it, but I don't want anybody to know about my problems. I don't give you any hope of ever coming to a lasting solution. I don't give you any hope at all. Because that's the attitude, I can do it on my own, I don't need God. I'll take it all by myself. That attitude will keep you in bondage.

It is essential that we learn to live transparently before God and before the people in our lives who love us the most. Just say, "I have strengths, and I have weaknesses. This is me." The Church, Christian people not the church building, is designed by God to be transparent so we can encourage one another and pray for one another. It is the number one reason God designed a church in the first place. That's why you need to be in some kind of small group. It may be a care group, a Bible study group, just a group of friends who live around you or Christian friends you've developed over years. But you need close, intimate friends where you can sit down sometime with tears in your eyes and say, "I'm burned out, I'm about as depressed as I can get." Or where you can look them in the eye and say to maybe others your age, "I'm having trouble parenting. I've got a child that I don't know what to do with, and I'm at the end of my rope." They will probably look at you and say, "I didn't know anybody else was the same way, but I'm that way, too."

स्वतंत्रता के लिए कदम उठाना

"वे उन्हें स्वतंत्रता का वादा करते हैं, जबिक वे स्वयं भ्रष्टता के दास हैं --- क्योंकि एक आदमी उस चीज का गुलाम है जिस पर उसे महारत हासिल है।" (2 पतरस 2:19) उस आखिरी वाक्य को फिर से सुनिए। "क्योंकि मनुष्य उसी का दास है जिस पर वह अधिकार रखता है।"

कुछ समय पहले न्यूयॉर्क टाइम्स ने व्यसनों के बारे में एक लेख प्रकाशित किया था, और इसका पूरा आधार यह था कि अमेरिकी व्यसन के इस विचार से जुड़े हुए हैं। अभी हाल ही में, आपने केवल मादक द्रव्यों और शराब के संबंध में उल्लिखित व्यसन के विचार को सुना होगा। अब यह कहता है कि हर तरह की चीजों की लत है, खाना, सिगरेट, व्यायाम, रिश्ते, खरीदारी, काम, सेक्स और वीडियो गेम। वास्तव में, अब लाइफलाइन अमेरिका नामक एक मासिक प्रकाशन है, जो हमारे व्यसनों को छोड़कर कुछ भी नहीं पर केंद्रित है। पूरे देश में 200 से अधिक विभिन्न प्रकार के व्यसन सहायता समूह बैठक कर रहे हैं।

बहुत से यदि नहीं तो हममें से अधिकांश किसी न किसी चीज़ के आदी हो जाते हैं। कुछ ऐसा है जो सचमुच हमारे जीवन पर अधिकार या नियंत्रण रखता है। आप नए लोगों में से एक में हो सकते हैं, या आप पुराने लोगों में से एक के शिकार हो सकते हैं, जैसे शराब पीना। 18,000,000 से अधिक अमेरिकी समस्या पीने वाले हैं। इससे उनका और उनके परिवार का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। निश्चित रूप से हममें से कुछ लोग खाने के आदी हैं, मेरा मतलब आजीविका के लिए नहीं, बल्कि आनंद के लिए है। क्या आप जानते हैं कि अमेरिकी 2.3 बिलयन पाउंड अधिक वजन वाले हैं? आपकी लत क्या है? आपका जीवन नियंत्रित करने वाला विकार क्या है? जो भी हो, मैं आपके साथ आजादी के सात कदम साझा करना चाहता हं।

i.आजादी आज से शुरू हो रही है।

आजादी आज से शुरू होती है, कल नहीं, अगले हफ्ते नहीं, अगले महीने नहीं। क्या आपने कभी गौर किया है कि कितने और लोग आज के बजाय कल डाइट पर जाते हैं? नीतिवचन 27:1 में सुलैमान जो कहता है, वह मुझे प्रिय है, "कल के विषय में घमण्ड न करना, क्योंकि तू नहीं जानता कि एक दिन क्या लेकर आएगा।" दूसरे शब्दों में, अपने आप को "इन दिनों में से एक" कहना छोड़ दें। सच तो यह है कि आज की तुलना में कल को बदलना कठिन होगा, क्योंकि देरी हमेशा समस्या को बदतर बना देती है। आज से शुरू करें।

"जो हवा को देखता है, वह पौधे नहीं लगाएगा, और जो बादलों को देखता है, वह काट नहीं पाएगा।" (सभोपदेशक 11:4) दूसरे शब्दों में, विचलित न हों। बहाने मत बनाओ, जितनी अधिक देरी होगी, समस्या उतनी ही बडी होगी। तो, पहला कदम है, आजादी की

You need somebody close enough in your life that you can look in the eye and say, "You know five years ago I went on a business trip, and I started nipping a little bit of booze, and I didn't think anything of it. But now, I drink every day and I hide it in the closet, and I don't want anybody to know that I'm addicted." Until you can get a group of people that you can confide in, you'll stay in your addiction.

To paraphrase James 5:16, revealing your feeling is the first step to healing. Others of you are thinking, well I'm going to quit. I'm just not going to tell anybody. That's a cop-out. That's making provisions for the flesh, Romans 14:13. You're guaranteeing failure by making an escape hatch so that you can bail out and nobody will know you ever failed. Everybody needs a support group.

Summary

Seven steps to freedom, straight from the Word, clear as a bell, no mistaking and no short cutting.

- 1) Freedom starts today.
- 2) Refuse to blame others.
- 3) Examine your life.
- 4) Employ Christ's sovereignty.
- 5) Distance yourself from temptation.
- 6) Opt for something better.
- 7) Make solid relationships.

"The God who comforts us in all our troubles, so that we can comfort those in any trouble with the comfort we ourselves received from God." (2 Corinthians 1:4) When God heals me of my addiction, my life-controlling sin, I receive comfort from him. This is the very same comfort I'll pass on to somebody else. The best people to help somebody overcome a particular addiction, whether it is booze, workaholism, or whatever, are people who've come out of the same thing. Because the comfort they've received from God, God uses them to pass it on. That's what we need to be and do. We want to be more that way.

Amazing Grace

Lesson #1198

Questions:

| 1. | God | İS | |
|------|-------|--------|--|
| | a. | | Love |
| | b. | | Righteous (just) |
| | c. | | Truth |
| | d. | | Mercy |
| | e. | | Peace |
| | f. | | All the above |
| | g. | | a and c |
| | h. | | a, c and e |
| 2. / | All m | ankind | is a slave to whatever has mastered him? |
| | | True _ | False |

शुरुआत आज से होनी है। जो आज शुरू किया जा सकता है उसे कल तक मत टालो।

2) दूसरों को दोष देने से इंकार करना।

दूसरों को दोष देने से इनकार करें। जब तक आप दूसरों को दोष देने से इंकार नहीं करेंगे तब तक आप अपनी लत से कभी बाहर नहीं निकल पाएंगे। लेकिन "अलगाव" का यह पुराना आवरण आदम और हव्वा जितना ही पुराना है। क्या तुम्हें याद है? आदम ने पाप किया और अपनी पत्नी को दोषी ठहराया; हव्वा ने पाप किया और साँप, साँप को दोषी ठहराया, लेकिन बात यह है कि हम किसी और को दोष देना चाहते हैं। जब तक मैं व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं लेता, मैं कभी बेहतर नहीं हो सकता। यह मेरी जिंदगी है, मैं चुनाव करता हं।

बाइबल में मेरे पसंदीदा अध्यायों में से एक कहता है। "हर एक अपना-अपना बोझ उठाए।" (गलितयों 6:5) यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बारे में बात कर रहा है। यह नहीं कह रहा है कि हम एक दूसरे की मदद नहीं करते हैं। क्योंकि तीन छंद पहले, यह कहते हैं, "एक दूसरे के बोझ उठाने के लिए, इसलिए मसीह की व्यवस्था को पूरा करें।" लेकिन मैं अपने लिए जिम्मेदार हूं और आप अपने लिए जिम्मेदार हैं।

"धोखा न खाओ: परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाएगा। मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।" (गलितयों 6:7) जीवन में अपनी बड़ी समस्या के लिए आप किसे दोषी ठहरा रहे हैं? क्या आप अपने माता-पिता, अपने पित, अपनी पत्नी, अपने शिक्षक या अपने बॉस को दोष दे रहे हैं? या आप शैतान को दोष दे रहे हैं? क्या आप भगवान को दोष दे रहे हैं? मुक्त होने के लिए, आपको अपने जीवन की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, फिर आप अपनी समस्या का समाधान नहीं खोज पाएंगे। अपने आप को बहाना बंद करो और दूसरे लोगों पर आरोप लगाना बंद करो। दूसरों को दोष देने से इनकार करें।

3) अपने जीवन की जाँच करें। अपने जीवन की एक व्यक्तिगत सूची लें। खुलकर मूल्यांकन करें। कुछ कठिन प्रश्न पूछें: मेरी लत क्या है? मेरे पास यह क्यों है? ये कब शुरू हुआ? मैं कितनी बार इसका शिकार होता हूं? ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ हैं जिनमें मैं सबसे अधिक परीक्षा लेता हूँ? मैं इसके बारे में कुछ करने से क्यों डरता हूँ? उन सवालों को पूछना मुश्किल है, लेकिन उनसे पूछा जाना चाहिए कि क्या हमें अपनी समस्या को ठीक करना है।

"आइए हम अपने मार्गों को जांचें और उनका परीक्षण करें और प्रभु की ओर फिरें।" (विलापगीत 3:40) बदलने के लिए हमें

| 3. When is it time to start controlling your life? | |
|--|----|
| a Tomorrow | |
| b As soon as time is available | |
| cToday | |
| 4. Who is to blame for your addiction or lack of self- | |
| control? | |
| a Parents | |
| b Society | |
| c Someone else | |
| d Self | |
| 5. How does one identify their addiction or lack of sel control? | f- |
| a See a doctor | |
| b Seek help from a friend | |
| c Self examination | |
| 6. People are afraid to submit to Christ because they think it means no more fun or freedom? True False | |
| 7. Flirting with a temptation is okay as long as one | |
| does not yield to the temptation? | |
| True False | |
| 8. The battle for your life is fought in your mind (heart)? True False | |
| | |
| | |

Chapter 10

God's Principles on Pain

This lesson is about myths involving pain. We are a very pain-conscious society. Everywhere you turn there are ads for pain relievers and painkillers. Technology has led us from aspirin to Tylenol to Ibuprofen to Naproxen to I don't even know what's out there. It seems like the whole world has a headache, doesn't it?

One of the facts of life is that we all face problems, and we all feel pain. As long as we are alive, we are going to have pain. You are going to have physical, emotional, and spiritual pain. The world gives us a whole collection of myths about what to do with that pain.

The world basically says pain is an awful thing. It's the worst thing you can experience. So just avoid problems if you possibly can; don't face them. Two major myths the world would have you believe are (a) ignore it, it will go away and (b) escape it, take a drink, a pill or something else. All myths have a grain of appeal in the short term, but they tend to bring major misery in the long run.

The eminent psychologist Scott Peck said, "Fearing pain, almost all of us to one degree or another, attempt

दिखावा करना बंद करना होगा। हम अपनी गलतियों को छुपा नहीं सकते। हमें उनके सामने आना चाहिए। सच तो यह है कि अपनी चोट को छुपाने से ही वह और तेज होती है और बिगड़ती है। इनकार उपचार को रोकता है।

"तेरे हाथ रात दिन मुझ पर भारी रहे, और मेरा बल ग्रीष्मकाल की नाईं सूख गया। तब मैं ने अपके पाप को तेरे साम्हने मान लिया, और अपके अधर्म को न ढांप लिया। मैं ने कहा, मैं अपके अपराधोंको यहोवा के साम्हने मानूंगा। '---और तुमने मेरे पाप के अपराध को क्षमा कर दिया।" (भजन 32:4, 5) दाऊद ने कहा, मैं अपनी समस्या का सामना नहीं करूंगा, और मैं सख रहा था।

दाऊद ने अपके प्राण की जांच की, और ऐसा करके वह यहोवा के साम्हने शुद्ध हो गया। यह उबलने जैसा था। एकाएक उसे इस मुक्त राहत का अनुभव हुआ। अपने जीवन की जांच करें। मैं आपको कुछ बता दूं, यह जीवन में एक बार की बात नहीं है। हमें नियमित रूप से अपने जीवन की जांच करने की आवश्यकता है क्योंकि विकार, व्यसन और अन्य पाप कपटी रूप से आपके अंदर आ जाएंगे और आपको इसे जानने से पहले ही नियंत्रित कर लेंगे।

4) मसीह की संप्रभुता को नियोजित करें। मसीह मदद की प्रतीक्षा कर रहा है। उसकी संप्रभुता को नियोजित करें - आप इसे अकेले नहीं कर सकते। आपको अपने से बडी शक्ति चाहिए। आप सीधे स्रोत पर क्यों नहीं जाते और सबसे बडी शक्ति प्राप्त करते हैं? "इसलिये पाप को तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करने दो, कि तुम उसकी बुरी अभिलाषाओं का पालन करो। अपने शरीर के अंगों को दृष्टता के हथियार के रूप में पाप के लिए न चढाओ, बल्कि अपने आप को भगवान को अर्पित करो, जैसे कि से लाए गए हैं। जीवन के लिए मौत।" (रोमियों 6:12, 13) क्योंकि मनुष्य जिस किसी चीज का स्वामी होता है उसका दास होता है। तो तुम गुलाम हो। रोमियों 6:20 कहता है, या तो आप पाप के दास हैं, या आप धार्मिकता के दास हैं। लब्बोलुआब यह है कि हम सब वास्तव में गुलाम हैं। लेकिन अच्छी खबर यह है कि आप अपने गुरु को चुन सकते हैं। "तब अपने आप को प्रभु के अधीन कर दो।" (याकूब 4:7) आपकी लत का समाधान सही स्वामी का चुनाव करना है। हर दिन आप किसी न किसी के द्वारा नियंत्रित होते हैं। आप एक बोतल या एक गोली द्वारा नियंत्रित होते हैं। कई अन्य लोगों द्वारा नियंत्रित होते हैं। आप शक्ति की प्यास से नियंत्रित हो सकते हैं, आप भोजन से नियंत्रित हो सकते हैं। लेकिन आपको कुछ सेवा करनी होगी। सही गुरु क्यों नहीं चुना? भगवान कहते हैं. "मुझे संप्रभु होने दो।"

अक्सर हम केवल ईश्वर को ही समस्या देना चाहते हैं। हम भगवान से कहते हैं, मुझे एक समस्या है। मुझे आपकी देखभाल करने की आवश्यकता है। लेकिन सच कहूं तो मैं सच में अपनी बाकी की to avoid problems. We procrastinate, hoping they will go away. We ignore and pretend they don't exist. We attempt to get out of them, rather than to suffer through them." He concluded with, "This tendency to avoid problems and the emotional pain inherent in them is the primary basis for human mental illness." Did you hear that? "The tendency to avoid problems and pain inherent in them is the primary basis for human mental illness." He's right, and the fact is God doesn't want you to ignore your pain. He doesn't really want you to run from your pain. God wants you to discover the cause of your pain and then go to the root for real relief.

Pain is like a warning light on the dashboard of your car. When that warning light comes on, it indicates that something is wrong. You can take a hammer and crash it if you want to ignore it, or you can just turn your head. But the fact of the matter is, if you're prudent, you'll go find out what's causing the problem (or pain) and cure it. The myth then is to run from pain, to ignore pain, to find an escape from it. The truth is that pain is a tool that God uses to bring good in my life. The problem is, we don't tend to understand it or recognize the good that pain can ultimately bring to our lives.

This lesson is not how to do away with your pain. Nothing short of death will do that. It is to help us to understand pain. Once we understand a purpose behind pain, it's a lot easier to deal with.

Those of you who are ex-athletes can remember the endless practices in whatever sport you were involved in. You would have the conditioning time, lining up and doing those wind sprints. You think your legs were going to buckle and your lungs were going to explode, but you knew there was a greater purpose than just the running. It was to accomplish something better.

God uses our pain to:

1. Motivate me.

He uses my pain to spur me into action. Some people are so afraid to go to the dentist that the only thing that will make them go is a pain that is greater than their fear. Pain can be a great motivator. I like what some wise fellow said, "We don't change when we see the light, we change when we feel the heat." That's when we're motivated to make a change. The alcoholic, drug addict and chemically dependent will seldom seek help before they hit bottom. To hit bottom, simply means, experiencing enough pain physically, emotionally, and spiritually, that their pain is worse than their desire for the drug. They say, "I can't see going on like this anymore." Nothing short of that will get them to change.

जिंदगी चलाना चाहता हूं। भगवान कहते हैं, अगर आप चाहते हैं कि मैं समस्या पर काम करूं, तो आपको मुझे अपने जीवन का हर क्षेत्र देना होगा, और यह सब मुझे देना होगा, न कि केवल एक हिस्सा। जब हम ऐसा करते हैं, तो यह बदलने की अविश्वसनीय शक्ति पैदा करता है।

तो, अधिक लोग ऐसा क्यों नहीं करते? सच तो यह है, वे डरते हैं। वे डरते हैं कि अपने जीवन को मसीह को समर्पित करने से यह उन्हें उस चीज़ में बदल देगा जो वे नहीं बनना चाहते हैं। वे डरते हैं कि इसका कोई मतलब नहीं है, कोई स्वतंत्रता नहीं है, और मसीह के लिए एक कट्टरपंथी के बारे में कुछ विकृत दृष्टिकोण बनना है। यह अब तक के सबसे बड़े झूठों में से एक है जो नर्क से बच निकला है। आपको लगता है कि सुना? यह सीधे नरक की लपटों से निकला झूठ है। यीशु ने कहा, "मैं इसलिए आया हूं कि तुम जीवन पाओ और इसे पूरा पाओ।" परमेश्वर क्या कह रहा है, "क्या आप नहीं जानते कि मैं आपका वास्तुकार था? क्या आप नहीं जानते कि मैं आपके काम करने के तरीके को जानता हूं? क्या आप नहीं जानते कि मैं अप जानते हैं कि आपको मौज-मस्ती की ज़रूरत है? क्या आप नहीं जानते कि गुझे पता है कि आपको आज़ादी की ज़रूरत है? इसलिए, छोटी अवधि और लंबी अवधि में.

आप ईसाई लोगों के प्रतीक के बारे में सोचते हैं जिन्हें आप जानते हैं और उनके जीवन को देखते हैं और मुझे बताते हैं कि वे आनंद से भरे नहीं हैं। अगर मुझे अपने जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति की तस्वीर मिलती है जो कड़वा और खट्टा है और किसी भी चीज पर नीच है, तो वह शीर्ष दस ईसाई लोगों की सूची में रैंक नहीं करता है, क्योंकि वह नहीं है, उसने इसे कहीं याद किया है। यीशु ने कहा, "मैं इसलिए आया हूं कि तुम जीवन पाओ, और इसे पूरी तरह से पाओ। मेरे जीवन में परमेश्वर को सर्वोच्च बनाओ।

5) प्रलोभन से खुद को दूर करें। अगर आप मधुमिक्खियों के द्वारा काटे जाने से बचना चाहते हैं, तो उनसे दूर रहें। उन स्थितियों से बचें जहां आप जानते हैं कि आपका प्रलोभन आपकी आंखों में देख रहा है। बाइबल कहती है, "शैतान का साम्हना करों और वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा।" यह केवल बाइबिल नहीं है, यह सिर्फ अच्छा पुराना सामान्य ज्ञान है।

इसका मतलब है कि अगर आपको शराब पीने की समस्या है, तो अपने घर में बार स्टॉक न करें। अगर मुझे वासना से परेशानी है, तो मुझे पोर्नोग्राफी बेचने वाली जगहों पर जाने की जरूरत नहीं है। अगर मुझे अधिक खाने की समस्या है, तो मुझे जंक फूड के साथ अलमारियों को पंक्तिबद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। उन चीजों से दूर रहें जिनसे मुझे परेशानी होती है।

अब क्या मैं यहाँ आपसे कुछ कबूल कर सकता हूँ? मेरे पास कमजोरियां हैं। मेरे जीवन में कुछ चीजें हैं जिन्होंने मुझे नियंत्रित किया है और मुझे नियंत्रित करने से बचने के लिए मैं अब भी In the Bible, the parable of the Prodigal Son is the classic example. He goes to father and says, "I want all that's due to me, and I want it right now." Then he takes it and goes to some far country where he just wastes it, he blows it. The Bible says he went out looking for a job. He got a job feeding pigs, it's a shame and disgrace for a Jewish boy to feed pigs, but he got so hungry he would have scooted the pigs over and got right down there and eaten with them. The hunger pain motivated him.

2. To mold me.

Pain will mold or shape me like clay into what I need to be. David said, "It was good for me to be afflicted so that I might learn your decrees." (Psalm 119:71) David says pain is a teaching tool. It makes us pliable. God uses pain not just to motivate me, just to get me off square one; he then uses it but to mold me, to teach me. It's like a bit in a horse's mouth. Are you equestrians or raised on a farm with a horse or a mule? You put that bit there and just the slightest pull causes the pain. It causes the horse to go one way or the other. That's the way God uses our pain. Somebody says that God whispers to us in our pleasure, but he SHOUTS to us in our pain. Has God ever shouted to you through your pain?

Aristotle rightly observed that there are some things that a human can only learn through pain. Mark Twain putting it in his homespun way said, "If a cat ever sits on a hot stove, he'll never sit on a hot stove again." Of course, he'll never sit on a cold one either. But the point is, by being burned, he learned like that cat. There are some things you can learn only by being burned. Has God ever gotten your attention through pain? I know some workaholics. God has gotten their attention through an ulcer, through angina. I know some workaholics for whom God has gotten their attention through emotional pain when their spouse came to them and said, "I'm not putting up with it anymore."

Some folks have been overextended financially, been up to their eyes in debt, leveraged everything they owned, had a severe case of "wantitis." Do you know what happened? They got burned. If they've got an ounce of common sense, they learned through that pain. You don't want pain to be the only or the main source of your total education. You're going to have an extremely miserable life if that's the case. But some of life's deepest insights are learned only at the expense of pain.

रोजाना कुश्ती करता हूं। उनमें से एक खाना है, लेकिन मेरी असली एच्लीस हील आइसक्रीम है।

ग्यारह साल पहले, मैं और मेरी पत्नी एक घर बना रहे थे। जब हम एक घर बना रहे थे, हम मुरफ्रीसबोरो रोड पर एक छोटे से अपार्टमेंट परिसर में चले गए। शॉपिंग सेंटर में सड़क के उस पार एक बास्किन रॉबिंस था। हर रात लगभग 8:00, हमारे शाम के भोजन के दो घंटे बाद मेरे पेट में यह थोड़ा सा मंथन होता था। मैं कहूंगा, "मुझे विश्वास है कि मैं सड़क पार करने जा रहा हूं।" यह धीमी गित से शुरू हुआ, एक डुबकी। कुछ हफ़्ते में, यह दो स्कूप था। एक महीने के भीतर, मैंने कहा, "मुझे पिंट दो और ढक्कन मत लगाओ, बस एक चम्मच उसमें डाल दो।" आठ महीनों में, मैंने 30 पाउंड प्राप्त किए। लेकिन भगवान का शुक्र है कि मैंने वह लत तोड़ दी। मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैंने इन सभी आध्यात्मिक सिद्धांतों को लागू किया। मैंने नहीं किया, हम चले गए। बास्किन रॉबिंस बस "दृष्टि से बाहर और दिमाग से बाहर" चला गया।

क्या मैं अपने किशोरों को कुछ सलाह दे सकता हूँ? लगभग एक साल पहले, इस महीने एक साल पहले, हमारे बहुत से किशोरों ने "ट्रू लव वेट्स" नामक एक महान कार्यक्रम के माध्यम से भाग लिया, जहां आपने शादी तक यौन रूप से शुद्ध रहने की प्रतिबद्धता की। मुझे आशा है कि आप अभी भी उस प्रतिबद्धता के साथ ट्रैक पर हैं, लेकिन अगर आप उस प्रतिबद्धता को पूरा करने जा रहे हैं, तो यहां एक अच्छी सलाह है। आप तब तक प्रतीक्षा नहीं करते जब तक कि आप कार की पिछली सीट पर न हों, या आप अकेले अपनी डेट के घर में सोफे पर अकेले बैठे हों, तब अपने आप से यह प्रश्न पूछें: क्या मैं शुद्ध रहना चाहता हूँ? यदि आप उस बिंदु तक प्रतीक्षा करते हैं, तो बहुत देर हो जाएगी। आप पहले से योजना बनाते हैं: आप पहले से प्रलोभन से बचने का फैसला करते हैं।

किशोर, यदि आप अपना जीवन उस तरह से जीना चाहते हैं जिस तरह से परमेश्वर चाहता है कि आप इसे जिएं, तो आप अपनी तिथियों की योजना बनाते हैं। मेरे युवा मंत्रियों ने बहुत समय पहले मुझसे कहा था, "या तो आप अपनी योजनाओं के अनुसार चलते हैं, या अपनी ग्रंथियों से।" मैं आपको बता दूं, आप अपनी योजनाओं से जाना चाहते हैं। क्या आप शैतान को खुद को गिराने का मौका नहीं देते! एक साथी ने धूम्रपान छोड़ दिया, और किसी ने उससे पूछा, "तुमने धूम्रपान कैसे छोड़ा?" मुझे उनका जवाब पसंद है, उन्होंने कहा, "मैंने अपने मैचों को गीला कर दिया।" अच्छी बात है। हर बार जब उन्होंने इसे आउट करने और एक स्ट्राइक करने की कोशिश की, तो वह उस मैच को स्ट्राइक नहीं करवा सके। उन्होंने पहले से योजना बनाई।

"शैतान को पैर जमाने मत दो।" (इफिसियों 4:27) यह एक पहाड़ पर चढ़ने जैसा है, आपको एक तलहटी मिलती है जो उसे आगे बढ़ने और एक और पैर जमाने की अनुमित देती है, फिर दूसरी और दूसरी। शैतान को अपने पहाड़ का राजा मत बनने दो। आप उसे पैर जमाने न देने से शुरू करते हैं। इसका मतलब यह हो सकता है कि आपको नए दोस्त चुनने होंगे, नई नौकरी लेनी होगी Those lessons are there because God loves you. He will motivate, and mold you.

3. To measure me.

It helps us see what we are really like on the inside. For instance, when I experience pain, the way I react to it measures my faith. My commitment can be measured by how I react to pain. My maturity is measured by how I react to pain. My patience is measured by how I react to pain. Your problems and the pain that they bring with them are among the best ways to see what's inside of you. The reason pain is among the best barometers of what's inside of you is because it's impossible to maintain an image when you're in pain.

Now let's be honest, we all project images, don't we? Sure, you do. We project physical images. We comb our hair and we brush our teeth. Ladies, you put on your make-up. We project a social image. We smile and we have pleasant social conversation. But give yourself three days at home with the flu and see how much any of those things matter to you. You just drag into the bathroom and look into the mirror, you've got that bad case of bed-head look, like a wreck and you don't care. The pain has stripped away the image.

Now that's not just true physically. That's true with emotional pain. All the time, people will get up, dress up and go to work. They've got their image shields up, but underneath, there is a personal problem, there is a relationship problem, there is a sin that's beginning to dominate their life. It's no longer got just a foothold; it's developing a stronghold over their heart. As that pain intensifies, sooner or later in front of somebody, those images will come down. Sooner or later, that person will fall and just break down. The image is gone and as unpleasant as that sounds, God says that's not really bad because you ought to be more concerned about your character than your image. Pain tests character.

You may say, "I'm a person of integrity." But when the pain gets intense, you'll find out if you stand for the truth or if you buckle under. You may declare, "I'm committed to Christ." But, when pain is there, you'll run to what you're most committed. The real question is: What does pain say about your life? When you're in a squeeze, what comes out of you? Are you a fairweathered believer or a consistent believer?

As long as things were okay, the Children of Israel were okay, but when pain came, they yielded. This is the reason they wandered in the wilderness for 40 years instead of getting to the Promised Land. God says, "Remember how the Lord your God led you all the way into the desert these 40 years, to humble you and to test you in order to know what was in your heart, whether or

या कहीं और जाना होगा। बाइबल कहती है, "प्रलोभन से भागो।" आप इसके साथ खिलवाड़ नहीं करते हैं या इसके साथ फ्लर्ट नहीं करते हैं, आप इससे भागते हैं। यदि हम ईमानदार हैं, जब हम प्रलोभन से भागते हैं, तो हम में से अधिकांश एक अग्रेषण पता छोड़ देते हैं। कभी-कभी हम कहते हैं, "मैं सड़क के ठीक नीचे आ जाऊँगा, मुझे देखने आओ, वहाँ नीचे।" हम इसके साथ खेलना चाहते हैं। प्रलोभन के साथ खेलने से काम नहीं चलेगा - आपको इससे दूरी बना लेनी चाहिए।

6) कुछ बेहतर चुनें।

"जैसा मनुष्य अपने मन में सोचता है, वैसा ही वह भी है।" (नीतिवचन 23:7) आपके जीवन की लड़ाई आपके दिमाग में लड़ी जाती है। जो कुछ भी मेरा ध्यान खींचता है, वह मुझे पकड़ लेता है।

मेरे विचार मेरी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं, मेरी भावनाएं मेरे निर्णयों को नियंत्रित करती हैं, और मेरे निर्णय मेरे कार्यों को नियंत्रित करते हैं, है ना? अंतिम उत्पाद का प्रारंभिक बिंदु, हमारे कार्य, हमारी सोच से शुरू होते हैं। यदि आपको कोई लत है, एक पाप जो आपके जीवन में महारत हासिल कर रहा है और आप नाटक कर रहे हैं कि आप टूट सकते हैं, तो आप इसे नहीं तोड़ सकते क्योंकि यह आपको गले से लगा लिया है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप हर दिन मानसिक रूप से उस पर ध्यान दें। वास्तव में, आप हर एक घंटे में इस पर निवास कर सकते हैं।

प्रलोभन का विरोध करने की असली कुंजी विरोध करने में नहीं बल्कि फिर से ध्यान केंद्रित करने में है। क्या आप समझे? प्रलोभन का विरोध करने की असली कुंजी विरोध करने में नहीं है, यह फिर से ध्यान केंद्रित करना है। आप केवल उस प्रलोभन को नहीं देख सकते जो आपको गले से लगा लिया है और कह सकते हैं, "नहीं, नहीं, नहीं, मुझे यह नहीं चाहिए, मुझे यह नहीं चाहिए, मुझे यह नहीं चाहिए," जब हर औंस अपने मांस की यह इच्छा करता है। आप इसे चाहते हैं। यह काम नहीं करेगा। अगर आप सिर्फ विरोध करने की कोशिश करते हैं, तो आप हार जाएंगे। हालाँकि, आपको अपना ध्यान फिर से केंद्रित करना चाहिए, आप मानसिक रूप से चैनल बदलते हैं ताकि जब प्रलोभन आए, तो आप फोन छोड़ दें। आप यह कहकर बहस करने की कोशिश नहीं करते कि "मुझे वह नहीं चाहिए; मुझे वह नहीं चाहिए" क्योंकि यह झूठ है। इसलिए यह एक प्रलोभन है। प्रलोभन पर विजय पाने का एकमात्र तरीका यह है कि आप अपना ध्यान किसी और चीज़ पर केंद्रित करें.

यही कारण है कि बहुत से लोग आहार पर असफल हो जाते हैं। जब आप डाइट पर होते हैं तो आप क्या सोचते हैं? भोजन! आप कहते हैं, "पंद्रह मिनट और और मेरे पास एक और अजवाइन की छड़ी हो सकती है।" तुम वहाँ बैठो और उस घड़ी को देखो।" प्रतिरोध काम नहीं करेगा, आपको फिर से ध्यान केंद्रित करना होगा।

मैं दूसरे दिन अपनी माँ को डॉक्टर के पास ले गया। मधुमेह के कारण उसे इंसुलिन पर जाना पड़ा। लेकिन हम ऑफिस में डॉक्टर not you would keep his commands." (Deuteronomy 8:2) After they had gone through a parted Red Sea and seen the Egyptians defeated, they yielded to the pain of thirst and began griping and complaining. This pain of thirst measured their hearts. God knew they were not ready to obey His commands. They were not ready to have a commitment that will extend through pain. In my pain, God measures me.

4. To monitor me.

God will use my pain to keep me on track, just to put parameters around me and just make sure that I don't get too far afield. For example, a fever is the way your body is telling you that you may have an infection somewhere. The pain you feel with a sore throat tells you that there is a deeper problem. But if you never have either or those symptoms, those problems could have gotten much worse, maybe even life threatening. God uses pain to monitor us and to allow us to monitor ourselves.

A practical application of this is painful emotions. These painful emotions are telling you that something is out of kilter. When I feel depressed over a prolonged period of time, feel resentful and I can't get over it, feel increasingly hostile, totally fearful, or get apathetic and say, "Nothing matters," my painful emotions are telling me something is wrong. They are our barometers. They are letting us know. We should get a thing checked out. Pain is a monitoring device for our protection. Two thousand years ago Shepherds who had a sheep or a lamb that was a little too aggressive or tended to get a little wayward would break its legs. They still do that today. After they break its legs, they put a splint on it. That little old sheep can hardly move. It just pegs around a little bit. I know that sounds cruel, but they're doing it for their protection.

Sometimes God puts a splint on your life to keep you from wandering too far from the flock. You may resent it, resist it and you may curse it, but it's because God loves you.

Do you recall the story of Joseph? It's a story of pain. He was betrayed by his brothers and sold by them into slavery. He goes to a place where he doesn't know the people, he doesn't know the language or the customs. He is a slave in a man's house, but he walks uprightly and faithfully. While he is there he is falsely accused by his master's wife, thrown into prison and forgotten. Years later he comes out and by God's amazing providence, rises the second in charge of all Egypt. But even then, there's a pain. There's a pain of about 20 years knowing that he was abandoned by his family.

से बात कर रहे थे। जब मैं अंदर गया तो मुझे भूख लगी थी, लेकिन मेज पर बगल में, उसके पास पांच पौंड वसा का एक बड़ा पुराना गंकी पीला मॉडल था। मैंने इसे देखा और घूरता रहा और मैंने उस भूख को बहुत तेजी से खो दिया। मैंने कुछ खाने की इच्छा क्यों खो दी? यह फिर से ध्यान केंद्रित करके था।

फिलिप्पियों 4:8 में पौलुस कहता है, "अखिरकार, हे भाइयो, जो कुछ सत्य है, जो कुछ महान है, जो कुछ सही है, जो कुछ शुद्ध है, जो कुछ प्यारा है, जो कुछ प्रशंसनीय है --- यदि कुछ उत्कृष्ट या प्रशंसनीय है --- ऐसे के बारे में सोचो चीज़ें।" क्या आप जानते हैं कि इसे प्रतिस्थापन का सिद्धांत कहा जाता है? आप बुरे को अच्छे से बदल देते हैं, क्योंकि प्रकृति शून्य की अनुमित नहीं देगी। जब आप कहते हैं कि आपका गैस टैंक खाली है, तो यह खाली नहीं है, यह हवा से भरा है। आप इसे वापस भरें, यह गैस से भरा है और हवा चली गई है। जब आप सोचते हैं कि "मैं इस विचार से छुटकारा पाने जा रहा हूं", तो यह तुरंत वापस आ जाएगा यदि इसे किसी बेहतर चीज़ से नहीं बदला गया है। यही प्रतिस्थापन का सिद्धांत है। यह एक सकारात्मक स्नेह का सिद्धांत है। कुछ बेहतर चुनें।

यह कहते हुए पूरे दिन न बैठें, "नहीं, मैं नशे में नहीं रहना चाहता। नहीं, मैं यौन इच्छा के आगे झुकना नहीं चाहता। नहीं, मैं अपने सारे पैसे के जुए का उपयोग नहीं करना चाहता। नहीं, मैं धूम्रपान नहीं करना चाहता। नहीं, मैं धूम्रपान नहीं करना चाहता।" समस्या जो भी हो, उससे लड़ने का यह गलत तरीका है। बाइबल कहती है, तुम अपने मन को सकारात्मक बातों से भर देते हो। यह सत्य को जानने और सत्य को आपको मुक्त करने देने का एक हिस्सा है। कुछ बेहतर चुनें।

7) ठोस संबंध बनाएं।

हर इंसान को एक सपोर्ट ग्रुप की जरूरत होती है। आप इसे यह नहीं कहना चाहेंगे, लेकिन आपको निश्चित रूप से इसकी आवश्यकता है, और मुझे भी ऐसा ही है। प्रत्येक व्यक्ति को उसे मजबूती और समर्थन देने के लिए देखभाल करने वाले लोगों की एक मंडली की आवश्यकता होती है। सभोपदेशक 4:9 में सुलैमान ने कहा, "एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उन्हें अपने काम का अच्छा फल मिलता है: यदि कोई गिर जाए, तो उसका मित्र उसकी सहायता कर सकता है। परन्तु उस पर दया करो जो गिरे, और उस की सहायता करने वाला कोई न हो। यूपी!" यह शारीरिक रूप से आध्यात्मिक रूप से सच है।

1 जनवरी लोग एक नया व्यक्ति बनने का संकल्प लेते हैं। "मैं अपनी सारी बुरी आदतों को तोड़ने जा रहा हूँ," और फिर क्या? दो महीने बाद हम ठीक उसी पुरानी चीज़ में वापस आ गए हैं। एक चक्र है।

हम वह नहीं हैं जो हम बनना चाहते हैं, और इसलिए हम खुद को विनम्र करते हैं। हम कहते हैं, "भगवान, मुझे आपकी मदद चाहिए। मैं असफल हो रहा हूं।" बाइबल कहती है, "प्रभु की दृष्टि में अपने आप को दीन करो, और वह तुम्हें ऊपर उठाएगा।" इसलिए, हम खुद को विनम्र करते हैं, भगवान हमें बेहतर करने की शक्ति देते Finally, his brothers come down looking for food and Joseph reveals himself to them and all the family comes down, but at the very end of the book of Genesis, after Jacob, Joseph's father, dies, all of his brothers feared that Joseph was going to get even. He's going to get his revenge. Instead, Joseph said, "You intended it for my harm, but God intended it for good." You intended it for harm, but that's all right, God intended it for good. God was monitoring Joseph's life all along. He was watching him. God used the pain in Joseph's life to motivate him, to mold him, and to measure him for greatness.

There are people in your life who mean to harm you. We all have those people. They may have harmed you as a child, they may be harming you right now, physically, emotionally, some other way and it hurts. But the great news I have for you is that God says to you, I've got a plan, I've got a purpose that's bigger than that. They may mean it for your harm, but don't worry, I'm your God and I'm going to work it out for your good.

At the end of Joseph's life, we find out he had two sons. One of them was named Manasseh and the other one was named Ephraim. I don't know about you, but I like the meaning of names. Manasseh means "he made me forget" and Ephraim means, "fruitful" or "successful." Joseph named his two boys that because Joseph realized that in all the pain he had endured, God worked and monitored his life for preparing him for greatness. He said, "God has made me forget that pain and now he has made me successful. He has made me fruitful." Folks, God will use that same pain that you feel to monitor you to greatness. But you must allow Him to do so.

5. To mature me.

It is possible to grow spiritually and emotionally during bright, healthy, cheerful, sunny days of spring and summer, when everything is going great, and life is fantastic. You can grow during good times but will grow far more and far deeper in the dark days of the soul. You will grow far deeper in the valleys than on the mountains. That's just the way humans are made.

Through the years, people have told me countless times as they have gone through the valley, "I've learned more this past year being out of work, than I've ever known prior to that time." Somebody said, "I've learned more through this financial crisis than I ever could have matured any other way." Speaking of the death of a loved one somebody said, "I didn't know how to trust in God until I went through this, and now I know how to trust in God." These are true statements because grace does grow best in winter. That's when God matures you.

Jesus's brother said, "Consider it pure joy, my brothers,

हैं। हम बेहतर करना शुरू करते हैं और कुछ हफ्तों या कुछ महीनों के बाद, हमें इस बात पर गर्व होने लगता है कि हम कितना अच्छा कर रहे हैं। खबरदार! "गिरने से पहले गर्व होता है।" हम ठीक नीचे जाते हैं। हम गहराई में उतरते हैं और हम फिर से खुद को विनम्र करने लगते हैं, और यह सिलसिला बार-बार चलता है। आप उस चक्र को कैसे तोड़ते हैं? आपको दोस्तों की जरूरत है। आपको ईसाई मित्रों की आवश्यकता है जो आपके लिए प्रार्थना करेंगे, जो आपकी देखभाल करेंगे, जो आपको प्रोत्साहित करेंगे, जो आपको जवाबदेह बनाने में मदद करेंगे और आपको ट्रैक पर रखेंगे। दो एक से बेहतर हैं, क्योंकि वे एक दूसरे को उठाते हैं।

मैं आपको इसके समानांतर एक श्लोक देता हूँ, जो बहुत महत्वपूर्ण है। "एक दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करो और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो तािक तुम चंगे हो जाओ।" (याकूब 5:16) क्या आप समझ गए? अब सच बताओ, क्या तुम्हें वह श्लोक अच्छा लगा? "एक दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करें और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें तािक आप..." क्या आपको वह कविता पसंद हैं? ओह, ईमानदार रहों, तुम्हें वह कविता ज्यादा पसंद नहीं है। मुझे लगता है कि यह बाइबिल में सबसे कम आज्ञाकारी कविता है। हम एक दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार नहीं करना चाहते हैं। कोई नहीं करता। मैं खोलना नहीं चाहता। अब यह कहता है, "तािक हम चंगे हो जाएं।" हमें वह हिस्सा पसंद है। हम चंगा होना चाहते हैं।

हम चाहते हैं कि शक्ति मेरे जीवन पर व्यसन की पकड़ को तोड़ दे। यह केवल मेरे पाप को स्वीकार करने से ही आता है, न केवल परमेश्वर के सामने, बल्कि एक दूसरे के सामने। इसका मतलब सभी भाइयों के सामने और एक सामान्य बयान देना जरूरी नहीं है। मुझे लगता है कि जिस संदर्भ में जेम्स ने इसे लिखा था, उसका मतलब कुछ चुनिंदा ईसाई भाइयों और बहनों के लिए था, जो मुझे जानते हैं, जो मुझसे प्यार करते हैं, जो मुझ पर भरोसा करते हैं, और जिन पर मैं पूरी तरह से भरोसा करता हूं और जिन्हें मैं जानता हूं, वे मुझसे हर दिन बात करेंगे और कहो, "तुम कैसे हो? मैंने आज तम्हारे लिए प्रार्थना की।"

अब आप में से बहुत से लोग सोच रहे होंगे कि मुझे यह लत है जो मुझ पर हावी हो रही है। मैं इसे तोड़ना चाहता हूं, लेकिन मैं नहीं चाहता कि कोई मेरी समस्याओं के बारे में जाने। मैं आपको कभी भी स्थायी समाधान के लिए आने की कोई उम्मीद नहीं देता। मैं तुम्हें बिल्कुल भी आशा नहीं देता। क्योंकि यही रवैया है, मैं इसे अपने दम पर कर सकता हूं, मुझे भगवान की जरूरत नहीं है। मैं यह सब अपने आप लूंगा। वह रवैया आपको बंधन में रखेगा।

यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर के सामने और अपने जीवन में उन लोगों के सामने पारदर्शी रूप से जीना सीखें जो हमसे सबसे अधिक प्रेम करते हैं। बस कहो, "मेरे पास ताकत है, और मेरे पास कमजोरियां हैं। यह मैं हूं।" चर्च, ईसाई लोग चर्च की इमारत नहीं, भगवान द्वारा पारदर्शी होने के लिए डिज़ाइन किया गया है ताकि हम एक दूसरे को प्रोत्साहित कर सकें और एक दूसरे के लिए whenever you face trials of many kinds, because you know that the testing of your faith develops perseverance. Perseverance must finish its work so that you may be mature and complete, not lacking in anything." (James 1:2, 3) He said all the perseverance and all the problems work together so you can be mature and complete. Pain is the high cost of growth! We've heard it since we were kids, it's trite but it's true, there is no gain without pain. Contrary to what the world wants to tell you there are no five easy steps to a wonderful life.

The truth of the matter is that we live in a time when we want the product without paying the price.

The product we want is maturity, emotional stability, a sense of fulfillment and satisfaction, happiness and wisdom. That's the product we all want, but we don't want to pay the price. The price is pain in one form or another. There are no shortcuts.

The very thing that is discouraging you the most, God is using to develop you. The apostle Paul said, "I've got a thorn in my flesh, and three times I sought the Lord and said, 'Lord, take that thorn away from me." (2 Corinthians 12:7 -10) We don't know what that thorn was and I'm glad we don't, because we can relate to it. But I know one thing about a thorn. It hurts. I've never had a thorn in me that didn't hurt. It brought pain. As badly as he wanted the pain of my thorn taken away Paul concluded, after God refused to remove the thorn, "through it I learned how desperately I needed the presence of Jesus Christ in my life."

You really don't know that Jesus Christ is all you need until Jesus Christ is all you've got and then you'll know. Amazing Grace lesson #1247

Questions:

| 1. You can ignore most problems and the | | e most problems and they will go | | |
|---|----|----------------------------------|-----------------------------------|--|
| | | away? | | |
| | | True | False | |
| | 2. | Pain is used by | God to bring good into one's | |
| | | life? | | |
| | | True | False | |
| | 3. | Pain motivates | s some into action | |
| | | True | False | |
| | 4. | Pain is an educ | cation tool as it causes one to | |
| | | change? | | |
| | | True | False | |
| | 5. | Pain measures | the internal man? | |
| | | True | False | |
| | 6. | Painful emotic | ons are telling you that somethin | |
| | | is out of contro | ol? | |
| | | True | False | |

प्रार्थना कर सकें। यह पहला कारण है कि परमेश्वर ने चर्च को सबसे पहले डिजाइन किया। इसलिए आपको किसी प्रकार के छोटे समूह में रहने की आवश्यकता है। यह एक देखभाल समूह हो सकता है, एक बाइबल अध्ययन समूह हो सकता है, आपके आस-पास रहने वाले मित्रों का एक समूह या ईसाई मित्र हो सकते हैं जिन्हें आपने वर्षों से विकसित किया है। लेकिन आपको करीबी, घनिष्ठ मित्रों की आवश्यकता है जहां आप कभी-कभी अपनी आंखों में आंसू लेकर बैठ सकते हैं और कह सकते हैं, "मैं जल गया हूं, मैं उतना ही उदास हूं जितना मुझे मिल सकता है।" या जहां आप उन्हें आंखों में देख सकते हैं और अपनी उम्र के अन्य लोगों से कह सकते हैं, "मुझे पालन-पोषण करने में परेशानी हो रही है। मेरे पास एक बच्चा है जो मुझे नहीं पता कि क्या करना है, और मैं अंत में हूं मेरी रस्सी।" वे शायद आपकी ओर देखेंगे और कहेंगे, "मुझे नहीं पता था कि कोई और भी ऐसा ही था. लेकिन मैं भी वैसा ही हं।"

आपको अपने जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो आपकी आंखों में देख सके और कह सके, "आप जानते हैं कि पांच साल पहले मैं एक व्यापार यात्रा पर गया था, और मैंने थोड़ी सी शराब पीनी शुरू कर दी थी, और मैंने इसके बारे में कुछ नहीं सोचा था। लेकिन अब, मैं हर दिन पीता हूं और इसे कोठरी में छिपा देता हूं, और मैं नहीं चाहता कि किसी को पता चले कि मैं आदी हूं।" जब तक आपको ऐसे लोगों का समूह नहीं मिल जाता, जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं, तब तक आप अपनी लत में बने रहेंगे।

याकूब 5:16 की व्याख्या करने के लिए, अपनी भावना को प्रकट करना चंगाई की ओर पहला कदम है। आप में से दूसरे लोग सोच रहे हैं, ठीक है, मैं पद छोड़ने जा रहा हूँ। मैं बस किसी को नहीं बताने जा रहा हूं। यह एक कॉप-आउट है। वह मांस के लिए प्रावधान कर रहा है, रोमियों 14:13। आप बच निकलने के लिए हैच बनाकर विफलता की गारंटी दे रहे हैं ताकि आप जमानत कर सकें और किसी को पता न चले कि आप कभी असफल हुए हैं। सभी को एक सहायता समूह की आवश्यकता है।

सारांश

स्वतंत्रता के लिए सात कदम, सीधे शब्द से, एक घंटी के रूप में स्पष्ट, कोई गलती नहीं और कोई शॉर्ट किटेंग नहीं।
1) आज़ादी आज से शुरू हो रही है। 2) दूसरों को दोष देने से इंकार करना। 3) अपने जीवन की जाँच करें। 4) मसीह की संप्रभुता को नियोजित करें। 5) प्रलोभन से खुद को दूर रखें। 6) कुछ बेहतर चुनें। 7) ठोस संबंध बनाएं।

"ईश्वर जो हमें हमारे सब कष्टों में शान्ति देता है, कि जिस शान्ति से हम स्वयं ईश्वर से प्राप्त हुए हैं, उससे हम किसी भी संकट में उन्हें दिलासा दे सकें।" (2 कुरिन्थियों 1:4) जब परमेश्वर मुझे मेरे व्यसन से, मेरे जीवन को नियंत्रित करने वाले पाप से, चंगा करता है, तो मुझे उससे सांत्वना मिलती है। यह वही आराम है जो मैं किसी और को दूंगा। किसी विशेष व्यसन को दूर करने में किसी की मदद करने के लिए सबसे अच्छे लोग, चाहे वह शराब, वर्कहोलिज्म, या जो कुछ भी हो, वही लोग हैं जो एक ही चीज़ से बाहर आए हैं।

Chapter 11

Self-Control Set Me Free

Sometime back I received a piece of direct mail. It was colorful and on the outside of the envelope it said: "If you have ever felt fat, clumsy, or depressed, this letter is for you." Wow! I couldn't resist. I opened it up and "For only \$29.95 plus \$3 for shipping and handling," they would send you this kit that would take care of all your problems. Change your life for only \$29.95!

When I see that stuff, I wonder who buys those things. I know the answer. People like you and me, people who want to get things that are out of control in their lives and wanted them under control. Did you know that over 2,000 new self-help books flood the market each year? We just gobble those things up. Why? Because they are things and habits in our lives that are out of control, things like temper.

Do you have a problem with your temper? You may be like the wife who said: my husband is very temperamental. He's 90 percent temper and 10 percent mental. Anybody have a problem with spending? Anybody got spending out of control? If you do, you need this bumper sticker, "Anybody who says money can't buy happiness, just doesn't know where to shop." Anybody have a problem with mood swings, eating or procrastination, drinking, sexual desires or some other addiction?

How can we really break free from these life deforming habits and hurts and hang-ups?

The Problem

Why is it that we have these things and can't seem to get out of the cycle? Well Paul tells us in Romans 7:15-8, "I do not understand what I do. For what I want to do I do not do, but what I hate I do. I know that nothing good lives in me, that is, in my sinful nature. For I have the desire to do what is good, but I cannot carry it out." Can you relate to what Paul is saying? Paul said, all the things that I want to do, I don't seem to do, and all the things that I really want to refrain from doing, I just go ahead and do them.

Have you ever broken a bad habit only to have it return maybe within a matter of days? Let me give you an example. How many of you made New Year's resolutions? How many have kept all the resolutions you made? Probably none of us, because resolutions will not

है?

क्योंकि उन्हें परमेश्वर से जो आराम मिला है, परमेश्वर उन्हें उसे आगे बढ़ाने के लिए उपयोग करता है। हमें यही होना चाहिए और करना चाहिए। हम उस तरह और अधिक बनना चाहते हैं।अद्भुत अनुग्रह पाठ #1198

| प्रशन: | | | | |
|--|--|--|--|--|
| 1. भगवान है | | | | |
| a प्यार | | | | |
| b धर्मी (सिर्फ) | | | | |
| c सत्य | | | | |
| d दया | | | | |
| e शांति | | | | |
| f सब से ऊपर | | | | |
| g ए और सी | | | | |
| h ए, सी और ई | | | | |
| 2. सारी मानवजाति जिस पर अधिकार करती है, उसकी दासी है? | | | | |
| सत्य असत्य | | | | |
| 3. अपने जीवन को नियंत्रित करना श्रू करने का समय कब है? | | | | |
| a कल का दिन | | | | |
| b जैसे ही समय मिलता है | | | | |
| c आज | | | | |
| 4. आपकी लत या आत्म-नियंत्रण की कमी के लिए कौन दोषी है? | | | | |
| क माता-पिता | | | | |
| ख समाज | | | | |
| सी कोई और | | | | |
| च स्व | | | | |
| 5. कोई अपनी लत या आत्म-नियंत्रण की कमी की पहचान कैसे | | | | |
| करता है? | | | | |
| a एक डॉक्टर को देखें | | | | |
| b किसी मित्र से सहायता लें | | | | |
| ग आत्म परीक्षण | | | | |
| लोग मसीह के अधीन होने से डरते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इसका कोई और अधिक मज़ा या स्वतंत्रता नहीं है? | | | | |
| सही गलत 8. जब तक कोई प्रलोभन के आगे नहीं झुकता तब तक प्रलोभन के साथ छेड़खानी करना ठीक है? | | | | |
| सही गलत | | | | |
| 9. आपके जीवन की लड़ाई आपके दिमाग (दिल) में लड़ी जाती | | | | |

suffice. Good intentions are seldom good enough. It takes more to change.

How many times have you promised, "I'll never smoke another cigarette again"? How many times have you promised yourself, or your family, or God, "I'm not going to lose my temper anymore," or, "I'm never going to drink again," or, "I really am going to begin my diet tomorrow," or, "I'm going to be a better father, I'll never strike you again," only to drift right back into the behavior from which you came.

The Results

- 1. Frustration. The apostle Paul tells us three things. He said, "The first result is, it's frustrating." It's greatly frustrating. "I do not understand what I do." Why do I keep making the same mistakes? Why do I do what I don't want to do? Why do I do things that I know are bad for me?
 - 2. Confusion. Paul said, I had the desire to do what's right, but not the power. If you've ever been on a diet, you how that goes. You start out the morning with great resolution and intention, don't you? Then as the day begins to go on, do you watch that resolution begin to drift away? So, by the time you get home, you're so hungry you could eat a almost anything and everything. By that time, my idea of a balanced diet is a Big Mac in both hands. That's the way we are. I want to change, but I don't know how. I have the motivation, but I don't have the determination. I've got the desire, but I don't have the power.

The reason self-help books don't work is that they don't empower us to do it. They'll tell a negative person to stop being negative. I've known hundreds, perhaps thousands of negative people in my life. I've never known one to change by my saying to them, "Just stop being negative." Have you? The self-help books tell the procrastinators "Try to get there 10 minutes early." They know that that's why they bought the self-help book. They can't get there; they just keep putting things off.

3. Defeat and discouragement. "What a wretched man I am! Who will rescue me from this body of death?" (Romans 7:24) Paul said, I'm losing the battle. I'm defeated. I just can't change. How many promises have I made to God and to myself that I've broken, often within a matter of

सही गलत

अध्याय 10

दर्द पर भगवान के सिद्धांत

यह पाठ दर्द से जुड़े मिथकों के बारे में है। हम बहुत दर्द के प्रति जागरूक समाज हैं। आप जहां भी जाते हैं वहां दर्द निवारक और दर्द निवारक दवाओं के विज्ञापन होते हैं। प्रौद्योगिकी ने हमें एस्पिरिन से टाइलेनॉल तक इबुप्रोफेन से नेप्रोक्सन तक ले जाया है, मुझे यह भी नहीं पता कि वहां क्या है। ऐसा लगता है कि पूरी दुनिया के सिर में दर्द है, है ना?

जीवन के तथ्यों में से एक यह है कि हम सभी समस्याओं का सामना करते हैं, और हम सभी को दर्द होता है। जब तक हम जीवित हैं, हमें दर्द होता रहेगा। आपको शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पीड़ा होने वाली है। दुनिया हमें उस दर्द का क्या करें, इसके बारे में मिथकों का एक पूरा संग्रह देती है।

दुनिया मूल रूप से कहती है कि दर्द एक भयानक चीज है। यह सबसे बुरी चीज है जिसे आप अनुभव कर सकते हैं। इसलिए यदि हो सके तो समस्याओं से बचें; उनका सामना मत करो। दुनिया के दो प्रमुख मिथक हैं जिन पर आप विश्वास करेंगे: (ए) इसे अनदेखा करें, यह दूर हो जाएगा और (बी) इससे बचें, एक पेय, एक गोली या कुछ और लें। सभी मिथकों में अल्पाविध में अपील का एक दाना होता है, लेकिन वे लंबे समय में बड़े दुख लाते हैं।

प्रख्यात मनोवैज्ञानिक स्कॉट पेक ने कहा, "दर्द के डर से, हम में से लगभग सभी एक डिग्री या किसी अन्य के लिए, समस्याओं से बचने का प्रयास करते हैं। हम विलंब करते हैं, उम्मीद करते हैं कि वे चले जाएंगे। हम अनदेखा करते हैं और दिखावा करते हैं कि वे मौजूद नहीं हैं। हम बाहर निकलने का प्रयास करते हैं उनमें से, उनके माध्यम से पीड़ित होने के बजाय।" उन्होंने निष्कर्ष निकाला, "समस्याओं से बचने की यह प्रवृत्ति और उनमें निहित भावनात्मक दर्द मानव मानसिक बीमारी का प्राथमिक आधार है।" आपको लगता है कि सुना? "समस्याओं और उनमें निहित दर्द से बचने की प्रवृत्ति मानव मानसिक बीमारी का प्राथमिक आधार है।" वह सही है, और सच्चाई यह है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि आप अपने दर्द को नज़रअंदाज़ करें। वह वास्तव में नहीं चाहता कि आप अपने दर्द से भागें। ईश्वर चाहता है कि आप अपने दर्द के कारण की खोज करें और फिर वास्तविक राहत के लिए जड़ तक जाएं।

दर्द आपकी कार के डैशबोर्ड पर एक चेतावनी रोशनी की तरह है। जब वह चेतावनी प्रकाश आता है, तो यह इंगित करता है कि कुछ गड़बड़ है। यदि आप इसे अनदेखा करना चाहते हैं तो आप एक हथौड़ा ले सकते हैं और इसे दुर्घटनाग्रस्त कर सकते हैं, या आप अपना सिर घुमा सकते हैं। लेकिन तथ्य यह है कि, यदि आप विवेकपूर्ण हैं, तो आप यह पता लगाएंगे कि समस्या (या दर्द) का कारण क्या है और इसका इलाज करेंगे। तब मिथक है दर्द से a few hours? So, you just want to throw up your hands and say, "I'm tired of trying." If you have felt that way or if you feel that way today, do I have some great news for you. You can change, and the power is there. You don't have to stay in this cycle of failure/defeat, failure/defeat, failure/defeat, failure/defeat, over and over. The Bible makes clear the principles of how you can gain control over that which is out of control.

The promise

Jesus said in John 8:32, "You shall know the truth, and the truth shall make you free." The secret to personal change is not willpower. That's not enough. The secret to personal change isn't a pill. The secret to personal change isn't hypnosis, it's not a fat farm or some gimmick. Jesus said, the way to break free from the habits, hurts, and addictions in your life, is by knowing the truth.

But how can that be? How does knowing the truth set me free from my bad habits? To unlock the secret of Jesus' statement, you've got to remember a basic axiom. Your thoughts control your emotions, and your emotions control your decisions, and your decisions control your actions. Do you see that? That's the way it always flows. Have you ever said, "He makes me so mad"? He can't make you mad. She can't make you mad. They don't have that power. What you are really saying is "every time I look at him, I think negative thoughts". Those negative thoughts may result from remembering something that happened in the past. Consequently, I get a negative emotion which leads to negative decisions. These negative decisions may even lead you to a very negative action.

It all starts with the thought process. Solomon in Proverbs 23:7 stated, "For as he thinketh in his heart, so is he." If I'm acting depressed, it's because I'm feeling depressed. I'm feeling depressed because I am thinking depressed thoughts. Most of us try to work on the action not the cause. We try to work on the external things. God says, you've got to start with your thinking.

That's why Jesus says, if you know the truth, if you'll focus on the truth, it will set you free. Bad beliefs lead to bad behavior. Every behavior you have is based on a belief. It's based on a value in your life that you have either consciously or unconsciously. This is important: Behind every self-defeating behavior is a lie that I'm believing. If you are involved in a wrong behavior, the

भागना, दर्द को नज़रअंदाज करना, उससे छुटकारा पाना। सच्चाई यह है कि दर्द एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग भगवान मेरे जीवन में अच्छाई लाने के लिए करते हैं। समस्या यह है कि हम इसे समझने या उस अच्छे को पहचानने की प्रवृत्ति नहीं रखते हैं जो दर्द अंततः हमारे जीवन में ला सकता है।

यह सबक यह नहीं है कि अपने दर्द को कैसे दूर किया जाए। मौत से कम कुछ भी नहीं करेगा। यह दर्द को समझने में हमारी मदद करना है। एक बार जब हम दर्द के पीछे के उद्देश्य को समझ लेते हैं, तो इससे निपटना बहुत आसान हो जाता है।

आप में से जो पूर्व-एथलीट हैं, वे किसी भी खेल में अंतहीन अभ्यासों को याद कर सकते हैं जिसमें आप शामिल थे। आपके पास कंडीशनिंग समय होगा, लाइनिंग करना और उन विंड स्प्रिंट्स को करना। आपको लगता है कि आपके पैर अकड़ने वाले थे और आपके फेफड़े फटने वाले थे, लेकिन आप जानते थे कि सिर्फ दौड़ने से बड़ा उद्देश्य था। यह कुछ बेहतर हासिल करना था।

भगवान हमारे दर्द का उपयोग करता है:

2. मुझे प्रेरित करें.

वह मेरे दर्द का इस्तेमाल मुझे काम करने के लिए प्रेरित करने के लिए करता है। कुछ लोग दंत चिकित्सक के पास जाने से इतना डरते हैं कि केवल एक चीज जो उन्हें जाने देगी, वह दर्द है जो उनके डर से बड़ा है। दर्द एक महान प्रेरक हो सकता है। मुझे वह पसंद है जो किसी बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, "जब हम प्रकाश को देखते हैं तो हम नहीं बदलते हैं, जब हम गर्मी महसूस करते हैं तो हम बदल जाते हैं।" तभी हम बदलाव करने के लिए प्रेरित होते हैं। शराबी, ड्रग एडिक्ट और रासायनिक रूप से आश्रित शायद ही कभी नीचे गिरने से पहले मदद मांगेंगे। नीचे हिट करने का सीधा सा मतलब है, शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से पर्याप्त दर्द का अनुभव करना, कि उनका दर्द दवा की उनकी इच्छा से भी बदतर है। वे कहते हैं, "मैं अब इस तरह से आगे बढ़ते हुए नहीं देख सकता।" इससे कम कुछ भी उन्हें बदलने के लिए नहीं मिलेगा।

बाइबिल में, उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त उत्कृष्ट उदाहरण है। वह पिता के पास जाता है और कहता है, "मुझे वह सब चाहिए जो मेरे कारण है, और मुझे अभी चाहिए।" फिर वह उसे ले जाता है और किसी दूर देश में चला जाता है जहां वह इसे बर्बाद कर देता है, वह उसे उड़ा देता है। बाइबल कहती है कि वह नौकरी की तलाश में निकला था। उसे सूअरों को खिलाने का काम मिला, यह एक यहूदी लड़के के लिए सूअरों को चराने के लिए शर्म और शर्म की बात है, लेकिन उसे इतनी भूख लगी कि वह सूअरों को पीछे कर देता और root cause is you are believing something that is not true. The devil is fooling me and deceiving me.

The prescription

1. Admit my problem.

Admit the root of my problem. That's the starting point for breaking free. Most of us have this vague feeling that something is wrong with me. We don't know what it is, and we can't put our finger on it, but something just doesn't seem to be right.

God put his finger on it. He says your basic problem is your basic attitude of life, regardless of your hang-up. This attitude has a name, it's a word that we don't hear much anymore, it's not hip, it's not cool, and one certainly won't hear it in the media. The word is disgusting and repulsive. It is SIN.

You and I have all kinds of wrong perceptions about sin. Sin is not, first and foremost, doing drugs, getting drunk, robbing a bank or running off with somebody's wife. Those things are really the second wave of sin. They are the result of the underlying sin. The root problem is an attitude that says, "I'm in charge, and I don't need God." That is the core of what Paul called in Romans 7, the sinful nature. It's man's oldest problem. It's been around since Adam and Eve. I'm going to ignore God, and I'm going to do my way, my own thing.

Every one of us is grappling daily with that basic response attitude of sin. We wrestle every day in that tug-of-war. Who's in charge, me or God?

John said "If we say we have no sin, we are deceiving ourselves and the truth is not in us." (1 John 1:8) Put that together with what Jesus said, "You shall know the truth, and the truth will make you free." So, by denying your sin, you have no truth in you.

We act like we've got it all together. Who do you think you're trying to fool? If you're acting like nothing ever gets out of control in your life, are you trying to fool God? Are you trying to fool other people? You're only fooling yourself. Nobody has it all together. Every one of us every day has that tug-of-war. When you pretend you have everything together and that you're in charge, you're only hurting yourself.

2. Stop deceiving myself.

I have to stop deceiving myself. That's worth repeating. In order to stop defeating myself, I have to stop deceiving myself. The root problem is, I think I'm in charge and I don't need God. We are not made to live that way.

वहीं उतर जाता और उनके साथ खा जाता। भूख के दर्द ने उसे प्रेरित किया।

2. मुझे ढालना।

दर्व मुझे मिट्टी की तरह ढाल देगा या आकार देगा जो मुझे होना चाहिए। दाऊद ने कहा, "दुर्भाग्य से मेरा ही भला हुआ, कि मैं तेरी विधियों को सीख सकूँ।" (भजन 119:71) डेविड कहते हैं कि दर्द एक शिक्षण उपकरण है। यह हमें लचीला बनाता है। भगवान दर्द का उपयोग न केवल मुझे प्रेरित करने के लिए करते हैं, बल्कि मुझे एक वर्ग से बाहर निकालने के लिए करते हैं; फिर वह इसका उपयोग करता है लेकिन मुझे ढालने के लिए, मुझे सिखाने के लिए। यह घोड़े के मुंह में थोड़ा सा है। क्या आप अश्वारोही हैं या घोड़े या खच्चर के साथ खेत में पले-बढ़े हैं? आप उस बिट को वहां रख देते हैं और जरा सा खिंचाव दर्द का कारण बनता है। यह घोड़े को किसी न किसी तरह से जाने का कारण बनता है। इस तरह परमेश्वर हमारे दर्द का उपयोग करता है। कोई कहता है कि भगवान हमारी खुशी में फुसफुसाते हैं, लेकिन वह हमारे दर्द में हमें चिल्लाते हैं। क्या परमेश्वर ने कभी तुम्हारी पीड़ा के कारण तुम्हारी जयजयकार की है?

अरस्तू ने ठीक ही देखा था कि कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो मनुष्य केवल दर्द से ही सीख सकता है। मार्क ट्वेन ने इसे अपने घरेलू तरीके से रखते हुए कहा, "अगर एक बिल्ली कभी गर्म चूल्हे पर बैठती है, तो वह फिर कभी गर्म चूल्हे पर नहीं बैठेगी।" बेशक, वह कभी भी ठंडे पर नहीं बैठेगा। लेकिन बात यह है कि जलकर उसने उस बिल्ली की तरह सीखा। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें आप जलाकर ही सीख सकते हैं।

क्या परमेश्वर ने कभी आपका ध्यान दर्द के माध्यम से प्राप्त किया है? मैं कुछ वर्कहॉलिक्स जानता हूं। भगवान ने उनका ध्यान एक अल्सर के माध्यम से, एनजाइना के माध्यम से प्राप्त किया है। मैं कुछ वर्कहॉलिक्स को जानता हूं जिनके लिए भगवान ने भावनात्मक दर्द के माध्यम से उनका ध्यान आकर्षित किया है, जब उनका जीवनसाथी उनके पास आया और कहा, "मैं अब इसे बर्दाश्त नहीं कर रहा हूं।"

कुछ लोगों को आर्थिक रूप से बहुत अधिक बढ़ा दिया गया है, उनकी आंखों पर कर्ज है, उनके पास जो कुछ भी है उसका लाभ उठाया गया है, "वांटाइटिस" का एक गंभीर मामला था। तुम्हें पता है क्या हुआ? वे जल गए। यदि उनके पास सामान्य ज्ञान का एक औंस है, तो उन्होंने उस दर्द से सीखा। आप नहीं चाहते कि दर्द आपकी संपूर्ण शिक्षा का एकमात्र या मुख्य स्रोत हो। यदि ऐसा है तो आपका जीवन अत्यंत दयनीय होगा। लेकिन जीवन की कुछ गहरी अंतर्दृष्टि दर्द की कीमत पर ही सीखी जाती है। वे पाठ इसलिए हैं क्योंकि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। वह आपको प्रेरित करेगा, और आपको ढालेगा। When an alcoholic goes to Alcohol Anonymous the very first thing required of him is to admit, "I am powerless to control my situation and my life has become unmanageable." Too often we have to hit rock bottom before we admit anything, not when we feel a little heat, but when the fire is out of control. Then we begin to say "maybe I could use a little help."

Most people wait too late to seek help. They wait too late to admit the problem. I have men come into my office and say, "my wife dropped a bombshell on me. She said, she's fed up with my neglect, my abuse, my vile tongue, my temper and she's walking out. What can I do? I need help." Down deep I'm sitting there thinking there's often very little that I can do, very little, because he has waited too long.

- Admit your problem. You have a hang-up in life, come clean with it in the mirror, and before the Almighty God.
- b. Believe that Christ can change me. Remember Romans 7:24, "Who can deliver me from this body of death? ... Thanks be to God through Jesus Christ our Lord." Paul said the answer to my problem is a person. Through Jesus Christ, God will provide the power that you are lacking. If you don't believe that, you won't get rid of your hang-ups. Because "through Christ Jesus the law of the Spirit of life has set me free from the law of sin and death." (Romans 8:2) There's a way-out folks. The law of the Spirit of Christ will set me free.

If I were to go outside and, on the grass, somewhere find a dead bird, pick that little bird up, that dead bird, throw it in the air and say, "Fly," what's going to happen? It's going to fall back down. I pick it up and throw it back up and say, "Fly!" It's going to fall back down. What is the only thing that's going to make that bird fly? The only thing that is going to make him fly is a new life, become a new creation. He doesn't need to turn over a new leaf, he needs a new life. He needs power under those wings. A new life is the only thing that's going to make him fly.

Why don't you try Jesus? I've seen him change hundreds and hundreds of lives. "If anyone is in Christ, he is a new creation; behold the old is gone, and the new has come." That's the truth for anyone who will let Christ do His transforming work. (2 Corinthians 5:17)

A few years ago, a letter was printed in Time magazine in response to its cover story, "Who is Jesus Christ?" Of course, the article had all these opinions from many scholars. Mike Mandel wrote "As far as I'm concerned,

3. मुझे मापने के लिए।

यह हमें यह देखने में मदद करता है कि हम वास्तव में अंदर से क्या हैं। उदाहरण के लिए, जब मैं दर्द का अनुभव करता हूं, तो मैं जिस तरह से प्रतिक्रिया करता हूं, वह मेरे विश्वास को मापता है। मेरी प्रतिबद्धता को इस बात से मापा जा सकता है कि मैं दर्द पर कैसे प्रतिक्रिया करता हूं। मेरी परिपक्षता इस बात से मापी जाती है कि मैं दर्द पर कैसे प्रतिक्रिया करता हूं। मेरा धैर्य इस बात से मापा जाता है कि मैं दर्द पर कैसे प्रतिक्रिया करता हूं। आपकी समस्याएं और दर्द जो वे अपने साथ लाते हैं, यह देखने के सर्वोत्तम तरीकों में से हैं कि आपके अंदर क्या है। दर्द आपके अंदर क्या है, इसका सबसे अच्छा बैरोमीटर है, क्योंकि जब आप दर्द में होते हैं तो एक छवि को बनाए रखना असंभव होता है।

अब आइए ईमानदार रहें, हम सभी छिवयों को प्रोजेक्ट करते हैं, है ना? ज़रूर तुम करना। हम भौतिक छिवयों को प्रोजेक्ट करते हैं। हम अपने बालों में कंघी करते हैं और हम अपने दाँत ब्रश करते हैं। देवियों, आप अपना मेकअप करती हैं। हम एक सामाजिक छिव पेश करते हैं। हम मुस्कुराते हैं और हमारे बीच सुखद सामाजिक बातचीत होती है। लेकिन फ्लू के साथ अपने आप को घर पर तीन दिन दें और देखें कि इनमें से कोई भी चीज आपके लिए कितनी मायने रखती है। आप बस बाथरूम में खींचें और आईने में देखें, आपको बेड-हेड लुक का वह बुरा मामला मिला है, जैसे कि एक मलबे और आपको परवाह नहीं है। दर्द ने छिव छीन ली है।

अब यह सिर्फ शारीरिक रूप से सच नहीं है। भावनात्मक दर्द के साथ यह सच है। हर समय लोग उठेंगे, कपड़े पहनेंगे और काम पर जाएंगे। उन्होंने अपनी छिव ढाल ली है, लेकिन नीचे, एक व्यक्तिगत समस्या है, एक रिश्ते की समस्या है, एक पाप है जो उनके जीवन पर हावी होने लगा है। यह अब सिर्फ एक पैर जमाने वाला नहीं है; यह उनके दिल पर एक गढ़ विकसित कर रहा है। जैसे-जैसे वह दर्द तेज होता जाएगा, देर-सबेर किसी के सामने वे चित्र नीचे आ जाएंगे। देर-सबेर वह व्यक्ति गिर जाएगा और टूट ही जाएगा। छिव चली गई है और जितना अप्रिय लगता है, भगवान कहते हैं कि यह वास्तव में बुरा नहीं है क्योंकि आपको अपनी छिव की तुलना में अपने चरित्र के बारे में अधिक चिंतित होना चाहिए। दर्द चरित्र परीक्षण करता है।

आप कह सकते हैं, "मैं सत्यनिष्ठ व्यक्ति हूँ।" लेकिन जब दर्द तेज हो जाता है, तो आपको पता चल जाएगा कि आप सच के लिए खड़े हैं या आप झुके हुए हैं। आप घोषणा कर सकते हैं, "मैं मसीह के लिए प्रतिबद्ध हूँ।" लेकिन, जब दर्द होता है, तो आप उस काम के लिए दौड़ेंगे जो आप सबसे अधिक प्रतिबद्ध हैं। असली सवाल यह है कि दर्द आपके जीवन के बारे में क्या कहता है? जब आप एक निचोड़ में होते हैं, तो आप से क्या निकलता है? क्या आप एक निष्पक्ष आस्तिक या लगातार आस्तिक हैं?

जब तक सब कुछ ठीक रहा, इस्राएल की सन्तान ठीक थी, परन्तु जब पीड़ा हुई, तो वे झुक गए। यही कारण है कि वे वादा किए गए the liberal theologians can keep their historical Jesus and their cut and paste Bible. I'm a former alcoholic and adulterer set free by the pow-er of the living Christ Jesus. Who cares about higher criticism when the resurrected Son of God can transform you here and now?" Amen, Mike, Amen!

Paul says, in 2 Timothy 1:7 "For God did not give us a spirit of timidity, but a spirit of power, of love and of self-discipline (self-control)" Some of you who were baptized into Christ a long time ago are holding back. You're not committing all that you are to him, you're holding back, you're also holding on. You're holding on to your addictions, to your hang-ups, and to your perpetual sins.

You have bought the world's lie that if you've really committed all that you are to Jesus Christ, you'd become some kind of weird fanatic. You'd sell everything today. You would just be absolutely weird. Folks, that's a lie. You would be in self-control because Christ is controlling you. You'd be powerful. You'd be loving. You'd be the person you've always dreamed of being. "Where the Spirit of the Lord is, there is freedom." (2 Corinthians 3:17) That's the foundation for our study.

Amazing Grace lesson #1196

Questions:

| 1. | The reasons for lack of self-control are? | | |
|----|--|--|--|
| | a Frustration | | |
| | b Confusion | | |
| | c Defeat and discouragement | | |
| | d Improper training Inherited | | |
| | e a, b and c | | |
| | f a, b and d | | |
| | g a, b and e | | |
| | h a, c and e | | |
| 2. | The secret to personal change is willpower | | |
| | True False | | |
| 3. | Your thoughts control your emotions | | |
| | True False | | |
| 4. | Your emotions control your decisions | | |
| | True False | | |
| 5. | Your decisions control your action | | |
| | True False | | |
| 6. | As a man thinks in his heart, mind, so is he | | |
| | True False | | |
| 7. | One can overcome lack of self-control by | | |
| | a Stop deceiving self | | |
| | b Admit there is a problem | | |
| | c Commit life to Christ | | |
| | d a and c | | |
| | e b and c | | |

देश में जाने के बजाय 40 साल तक जंगल में भटकते रहे। परमेश्वर कहता है, "सुन ले कि तेरा परमेश्वर यहोवा इन 40 वर्षों में तुझे किस रीति से जंगल में ले गया, कि तुझे नम्र करे, और तेरी परीक्षा करे, कि तेरे मन में क्या है, कि तू उसकी आज्ञाओं को माने या न माने।" (व्यवस्थाविवरण 8:2) जब वे अलग हो चुके लाल समुद्र से गुज़रे और मिस्नियों को पराजित होते देखा, तो वे प्यास की पीड़ा के आगे झुक गए, और शिकायत करने लगे। प्यास के इस दर्द ने उनके दिलों को माप लिया। परमेश्वर जानता था कि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए तैयार नहीं थे। वे एक प्रतिबद्धता के लिए तैयार नहीं थे जो दर्द के माध्यम से विस्तारित होगी। मेरे दर्द में, भगवान मुझे मापते हैं।

4. मेरी निगरानी करना।

भगवान मेरे दर्द का उपयोग मुझे ट्रैक पर रखने के लिए करेंगे, बस मेरे चारों ओर पैरामीटर लगाने के लिए और यह सुनिश्चित करने के लिए कि मैं बहुत दूर न जाऊं। उदाहरण के लिए, बुखार वह तरीका है जिससे आपका शरीर आपको बता रहा है कि आपको कहीं संक्रमण हो सकता है। गले में खराश के साथ आपको जो दर्द महसूस होता है, वह बताता है कि कोई गहरी समस्या है। लेकिन अगर आपको इनमें से कोई भी लक्षण नहीं हैं, तो ये समस्याएं और भी बदतर हो सकती हैं, यहां तक कि जीवन के लिए खतरा भी हो सकता है। परमेश्वर दर्द का उपयोग हमारी निगरानी करने और हमें स्वयं पर नजर रखने की अनुमति देने के लिए करता है।

इसका एक व्यावहारिक अनुप्रयोग दर्दनाक भावनाएं हैं। ये दर्दनाक भावनाएं आपको बता रही हैं कि कुछ गड़बड़ है। जब मैं लंबे समय तक उदास महसूस करता हूं, नाराजगी महसूस करता हूं और मैं इसे खत्म नहीं कर सकता, तेजी से शत्रुतापूर्ण, पूरी तरह से भयभीत महसूस करता हूं, या उदासीन हो जाता हूं और कहता हूं, "कुछ भी मायने नहीं रखता," मेरी दर्दनाक भावनाएं मुझे बता रही हैं कि कुछ गलत है। वे हमारे बैरोमीटर हैं। वे हमें बता रहे हैं। हमें किसी चीज की जांच करानी चाहिए। दर्द हमारी सुरक्षा के लिए एक निगरानी उपकरण है।

दो हज़ार साल पहले वे चरवाहे जिनके पास भेड़ या मेमना था जो थोड़ा बहुत आक्रामक था या थोड़ा आगे बढ़ने की प्रवृत्ति रखता था, उसके पैर टूट जाते थे। वे आज भी ऐसा करते हैं। उसके पैर तोड़ने के बाद, उन्होंने उस पर एक पट्टी डाल दी। वह छोटी बूढ़ी भेड़ मुश्किल से चल पाती है। यह बस थोड़ा सा घूमता है। मुझे पता है कि यह क्रूर लगता है, लेकिन वे अपनी सुरक्षा के लिए ऐसा कर रहे हैं।

कभी-कभी भगवान आपको झुंड से बहुत दूर भटकने से बचाने के लिए आपके जीवन पर एक पट्टी लगाते हैं। आप इसका विरोध कर सकते हैं, इसका विरोध कर सकते हैं और आप इसे शाप दे सकते हैं, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान आपसे प्यार करते हैं।

क्या आपको यूसुफ की कहानी याद है? दर्द की कहानी है। उसे उसके भाइयों ने धोखा दिया और उनके द्वारा गुलामी में बेच दिया। वह ऐसी जगह जाता है जहां वह लोगों को नहीं जानता, वह भाषा

| | f | a, b and c |
|----|----------|-----------------|
| 8. | God gave | us a spirit of |
| | a | Timidity |
| | b | Power |
| | с | Love |
| | d | Self-discipline |
| | e | a, b and c |
| | f | a, c and d |
| | g | a, b. c and d |
| | h | b, c and d |

Chapter 12

How to Handle Pressure

Let's take a poll. How many of you have at least one worry? We do worry, don't we? We live in an era where we are filled and bombarded by stress, anxiety, worry, and pressure. In fact, we are literally worrying ourselves sick. The American Psychiatric Association has labeled ours "The Age of Anxiety," and their diagnosis is borne out simply by the facts. The American Academy of Physicians say that at least two-thirds of all the patients they see come to them with stress-related illnesses. Then, the three best selling prescription drugs are: 1) Tagamet, an ulcer medication: 2) Enderol, a medicine for hypertension and 3) valium, a tranquilizer.

In 1988, Newsweek magazine ran an article that projected that American businesses lose over \$150 billion a year through stress and anxiety related illnesses. Now the amazing thing is we really don't have all that much to worry about. Consider 40 percent of the things we worry about never happen, 30 percent concern old decisions that can no longer be changed and 12 percent center on criticism which is often untrue and usually made by people who feel inferior. Incidentally, most of life's critics are people who have a deep inferiority complex. A few percent of all the things we worry about relate to our health, which if we worry about will only make it worse. That leaves only eight percent of all the things that could even begin to be labeled "legitimate," needing mental attention. But, the truth of the matter is, you and I don't often hearken to those statistics. Instead, we tend to be engulfed by worry over and over again.

I want to share with you some things that Jesus had to say about a prescription for an antidote to worry and to stress. During the last week of Jesus' life, He is undergoing great anxiety. He knew He was going to die. He makes that declaration to His disciples in John 13. He tells them He's going to die and one of them was going to betray Him. In chapter 14, He states the good news that He is going away to prepare a place for them.

या रीति-रिवाज नहीं जानता। वह तो मनुष्य के घर में दास तो है, परन्तु सीधा और सच्चाई से चलता है। जब वह वहां होता है तो उस पर उसके मालिक की पत्नी द्वारा झूठा आरोप लगाया जाता है, उसे जेल में डाल दिया जाता है और भुला दिया जाता है। वर्षों बाद वह बाहर आता है और परमेश्वर के अद्भुत विधान से, सारे मिस्र के प्रभारी के रूप में दूसरे स्थान पर खड़ा होता है। लेकिन फिर भी दर्द होता है। लगभग 20 साल का दर्द यह जानकर है कि उसे उसके परिवार ने छोड़ दिया था।

अंत में, उसके भाई भोजन की तलाश में नीचे आते हैं और यूसुफ अपने आप को उन पर प्रकट करता है और सारा परिवार नीचे आता है, लेकिन उत्पत्ति की पुस्तक के अंत में, यूसुफ के पिता याकूब की मृत्यु के बाद, उसके सभी भाइयों को डर था कि यूसुफ जा रहा था बराबर होने के लिए। वह अपना बदला लेने जा रहा है। इसके बजाय, यूसुफ ने कहा, "आपने इसे मेरे नुकसान के लिए चाहा, लेकिन भगवान ने इसे अच्छे के लिए चाहा।" आपने इसे नुकसान पहुंचाने का इरादा किया था, लेकिन यह ठीक है, भगवान ने इसे अच्छे के लिए बनाया है। परमेश्वर पूरे समय यूसुफ के जीवन की निगरानी कर रहा था। वह उसे देख रहा था। परमेश्वर ने यूसुफ के जीवन में दर्द का इस्तेमाल उसे प्रेरित करने, उसे ढालने और महानता के लिए मापने के लिए किया।

आपके जीवन में ऐसे लोग हैं जो आपको नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। हम सभी के पास वे लोग हैं। हो सकता है कि उन्होंने आपको एक बच्चे के रूप में नुकसान पहुंचाया हो, हो सकता है कि वे अभी आपको शारीरिक, भावनात्मक रूप से, किसी और तरह से नुकसान पहुंचा रहे हों और इससे दर्द होता है। लेकिन मेरे पास आपके लिए अच्छी खबर यह है कि भगवान आपसे कहते हैं, मेरे पास एक योजना है, मेरे पास एक उद्देश्य है जो उससे बड़ा है। वे इसे आपके नुकसान के लिए कह सकते हैं, लेकिन चिंता न करें, मैं आपका भगवान हूं और मैं इसे आपके अच्छे के लिए काम करने जा रहा हूं।

यूसुफ के जीवन के अंत में, हमें पता चलता है कि उसके दो बेटे थे। उनमें से एक का नाम मनश्शे और दूसरे का एप्रैम था। मैं तुम्हारे बारे में नहीं जानता, लेकिन मुझे नामों के अर्थ पसंद हैं। मनश्शे का अर्थ है "उसने मुझे भुला दिया" और एप्रैम का अर्थ है, "फलदायी" या "सफल"। यूसुफ ने अपने दो लड़कों का नाम रखा क्योंकि यूसुफ ने महसूस किया कि उसने जितने भी दर्द सहे थे, परमेश्वर ने काम किया और महानता के लिए तैयार करने के लिए उसके जीवन की निगरानी की। उसने कहा, "भगवान ने मुझे उस दर्द को भुला दिया है और अब उसने मुझे सफल बनाया है। उसने मुझे फलदायी बनाया है।" दोस्तों, भगवान उसी दर्द का उपयोग करेंगे जो आपको महानता की निगरानी करने के लिए लगता है। लेकिन आपको उसे ऐसा करने देना चाहिए।

5. मुझे परिपक्व करने के लिए। वसंत और गर्मियों के उज्ज्वल, स्वस्थ, हंसमुख, धूप के दिनों में आध्यात्मिक और भावनात्मक रूप से विकसित होना संभव है, जब In John 15 & 16, He tells the disciples the bad news. He says, the world is going to hate you just like it has hated me, you're going to scatter and I won't be able to find a single one of you. Then Jesus said, "I have told you these things, so that in me you may have peace." (John 16:33) Underline John 16:33 in your Bible, then highlight "in me" with a yellow highlighter. When Christ dwells in you and you dwell in Christ, you can have peace.

Later in the same verse he said, "In this world you will have trouble." That's right. Put your hope in the world. Get involved in all worldly things, you'll have trouble. You'll have anxiety, strife and stress. But then he said, "take heart! I have overcome the world."

The umbrella statement is, if we are in Jesus, we can have peace. Our Lord gives us a prescription for overcoming worry that is tremendous. "After Jesus said this, he looked toward heaven and prayed: 'Father, the time has come. Glorify your Son, that your Son may glorify you. For you granted him authority over all people that he might give eternal life to all those you have given him. Now this is eternal life: that they may know you, the only true God, and Jesus Christ, whom you have sent. I have brought you glory on earth by completing the work you gave me to do." (John 17:1-4)

Why would Jesus be under stress? Why would he need to say these things about peace? He had every reason in the world.

1. He was misunderstood.

One of the reasons you and I tend to come under stress and pressure is when we are misunderstood. They misunderstood Jesus' motive. They misunderstood his mission. They misunderstood his message.

2. He was not accepted.

Don't you feel stress when someone around you doesn't accept you? Particularly your peers. It was the peers of Jesus who didn't accept him. The religious people, the ones who were looking for a Messiah, but they turned him away.

3. He was tempted.

That's why he felt stress. Hebrews 4:15 said he was tempted in all points like as we. I'm going to go a little farther than that. I think Jesus knew temptations that you and I can't even imagine. He was tempted to take a shortcut around the cross and you and I can't identify with that. We don't have the option of saving the world.

4. He had many enemies.

Now you and I know something about that. Any one of us have some people who don't care a great deal for us, but if the truth be known, I don't know that I have

सब कुछ बढ़िया चल रहा हो, और जीवन शानदार हो। आप अच्छे समय के दौरान विकसित हो सकते हैं लेकिन आत्मा के अंधेरे दिनों में कहीं अधिक और गहरे होते जाएंगे। तुम पहाड़ों की तुलना में घाटियों में कहीं अधिक गहरे हो जाओगे। बस इसी से इंसान बनते हैं।

वर्षों से, लोगों ने मुझे अनिगनत बार बताया है कि वे घाटी से गुज़रे हैं, "मैंने इस पिछले साल काम से बाहर होने के बारे में जितना सीखा है, उससे कहीं अधिक मैंने उस समय से पहले सीखा है।" किसी ने कहा, "मैंने इस वित्तीय संकट से जितना सीखा है उससे कहीं अधिक मैं किसी अन्य तरीके से परिपक्त हो सकता हूं।" किसी प्रियंजन की मृत्यु के बारे में बोलते हुए, किसी ने कहा, "जब तक मैं इससे नहीं गुजरा, तब तक मुझे नहीं पता था कि भगवान पर कैसे भरोसा किया जाए, और अब मैं जानता हूं कि भगवान पर कैसे भरोसा किया जाए।" ये सत्य कथन हैं क्योंकि कृपा सर्दियों में सबसे अच्छी होती है। तभी ईश्वर आपको परिपक्त बनाता है।

यीशु के भाई ने कहा, "हे मेरे भाइयो, जब कभी तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं का सामना करो, तो इसे शुद्ध आनन्द समझो, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज बढ़ता है। दृढ़ता को अपना काम पूरा करना चाहिए ताकि तुम परिपक्त और पूर्ण हो जाओ, जिसमें कमी न हो कुछ भी।" (याकूब 1:2, 3) उन्होंने कहा कि सभी दृढ़ता और सभी समस्याएं एक साथ काम करती हैं ताकि आप परिपक्त और पूर्ण हो सकें। दर्द विकास की उच्च लागत है! हमने इसे तब से सुना है जब हम बच्चे थे, यह छोटा है लेकिन यह सच है, दर्द के बिना कोई फायदा नहीं होता है। दुनिया आपको जो बताना चाहती है, उसके विपरीत एक शानदार जीवन के लिए कोई पांच आसान कदम नहीं हैं।

इस मामले की सच्चाई यह है कि हम ऐसे समय में रहते हैं जब हम कीमत चुकाए बिना उत्पाद चाहते हैं।

हम जो उत्पाद चाहते हैं वह है परिपक्वता, भावनात्मक स्थिरता, तृप्ति और संतुष्टि की भावना, खुशी और ज्ञान। यही वह उत्पाद है जो हम सभी चाहते हैं, लेकिन हम कीमत नहीं चुकाना चाहते हैं। कीमत किसी न किसी रूप में दर्द है। यहां कोई छोटा रास्ता नहीं है।

वही चीज जो आपको सबसे ज्यादा हतोत्साहित कर रही है, भगवान आपको विकसित करने के लिए उपयोग कर रहे हैं। प्रेरित पौलुस ने कहा, "मेरे शरीर में एक कॉंटा है, और मैं ने तीन बार प्रभु को ढूंढ़ कर कहा, 'हे प्रभु, उस कांटे को मुझ से दूर ले जा।" (2 कुरिन्थियों 12:7-10) हम नहीं करते' मुझे नहीं पता कि वह कांटा क्या था और मुझे खुशी है कि हम नहीं जानते, क्योंकि हम इससे संबंधित हो सकते हैं। लेकिन मैं एक कांटे के बारे में एक बात जानता हूं। यह दुखदायक है। मेरे अंदर कभी कोई कांटा नहीं था जो चोट न पहुंचाए। यह दर्द लाया। जिस तरह से वह चाहता था कि मेरे कॉंटे का दर्द दूर हो जाए, पॉल ने निष्कर्ष निकाला, जब परमेश्वर ने कॉंटा हटाने से इनकार कर दिया, "इसके माध्यम से मैंने सीखा कि मुझे

anybody that really wants to crucify me, to take my life or wrench it away from me.

5. His disciples were slow learners.

That would have killed me. I'm just not as patient as our Lord. He spent over three years with them day and night trying to let it all sink it in and they still couldn't figure it out. He loved them enough to die for them. I think I would have wanted to kill them. They were slow learners. He faced the stress and pressure of tremendous responsibility. Victory over sin, victory over the grave, the opportunity of salvation, the opportunity of heaven for every single human being, all that was on his shoulders. That's pressure and his time running out.

6. He was going to hand over the advancement of the kingdom into the hands of infallible men.

How did Jesus deal with it and how does he tell you and me to deal with it?

1. Jesus knew who to go to.

Feeling all this pressure he says, Father, I've got to talk to you. You and I need to know and practice what Jesus knew and practiced.

2. He knew why he came to earth.

He had a purpose and when he says, Father, the time the hour has come, he's saying his mission is just about complete.

3. Jesus gave up his rights.

It relieved a tremendous amount of pressure. "'Father, the time has come. Glorify your Son, that your Son may glorify you." Why would Jesus pray that the Father glorify Him? Jesus was God come in the flesh. He was part of the Trinity. He was part of the Godhead. But, you see He had to pray that God glorify Him because Jesus in coming to this earth and taking on the human form of a servant had given up his rights. Folks, I want to tell you something that too many of us don't know. It's amazing the pressure that comes from each one of us trying to protect every inch of the turf of our rights. We don't want to yield on this, we don't want to relinquish on this, and we are going to guard every right to fight for the chance. Jesus gave up his rights and it relieved a tremendous amount of pressure.

4. He had something to give.

He was granted the authority over all people that he might give eternal life. He had something to give all right; it was the greatest gift of all time. It is eternal life to everybody who would come to him, put their trust in Him and obey His gospel.

5. He did a good job.

अपने जीवन में यीशु मसीह की उपस्थिति की कितनी सख्त आवश्यकता है।"

आप वास्तव में नहीं जानते हैं कि यीशु मसीह ही आपकी जरूरत है जब तक कि यीशु मसीह ही आपके पास नहीं है और तब आप जान जाएंगे।अदभुत अनुग्रह पाठ #1247

प्रशनः

| K | ч: | | |
|---|-----|-------------------|-------------------------------------|
| | 7. | आप ज्यादातर स | ामस्याओं को नजरअंदाज कर सकते हैं |
| | | और वे दूर हो जा | रंगी? |
| | | सत्य | असत्य |
| | 8. | किसी के जीवन व | में अच्छाई लाने के लिए भगवान द्वारा |
| | | दर्द का उपयोग वि | केया जाता है? |
| | | सत्य | असत्य |
| | 9. | दर्द कुछ को काम | करने के लिए प्रेरित करता है |
| | | सत्य | असत्य |
| | 10. | दर्द एक शिक्षा उप | नकरण है क्योंकि यह व्यक्ति को बदलने |
| | | का कारण बनता | है? |
| | | सत्य | असत्य |
| | 11. | दर्द आंतरिक आव | दमी को मापता है? |
| | | सत्य | असत्य |
| | 12. | दर्दनाक भावनाएँ | आपको बता रही हैं कि कुछ नियंत्रण से |
| | | बाहर है? | |
| | | सत्य | असत्य |

अध्याय 11

आत्म-नियंत्रण मुझे मुक्त करें

कुछ समय पहले मुझे एक सीधा मेल मिला था। यह रंगीन था और लिफाफे के बाहर यह लिखा था: "यदि आपने कभी मोटा, अनाड़ी या उदास महसूस किया है, तो यह पत्र आपके लिए है।" बहुत खूब! मैं विरोध नहीं कर सका। मैंने इसे खोला और "शिपिंग और हैंडलिंग के लिए केवल \$ 29.95 प्लस \$ 3 के लिए," वे आपको यह किट भेजेंगे जो आपकी सभी समस्याओं का ख्याल रखेगी। केवल \$29.95 में अपना जीवन बदलें!

जब मैं वह सामान देखता हूं, तो सोचता हूं कि उन चीजों को कौन खरीदता है। मुझे उत्तर पता है। आप और मेरे जैसे लोग, जो लोग अपने जीवन में नियंत्रण से बाहर होने वाली चीजों को प्राप्त करना चाहते हैं और उन्हें नियंत्रण में रखना चाहते हैं। क्या आप जानते हैं कि हर साल 2,000 से अधिक नई स्वयं सहायता पुस्तकें बाजार में आती हैं? हम बस उन चीजों को टटोलते हैं। क्यों? क्योंकि वे हमारे

"I have brought you glory on earth by completing the work you gave me to do."

How do you and I get relief from stress and pressure that we face every day? We do the same thing Jesus did.

1. Turn everything over to God.

Like Jesus, we too must turn everything over to God. "Cast all your anxiety on him because he cares for you." (1 Peter 5:7) Two observations a) God is concerned about me. God cares for me; He cares for you and He cares for all of us; b) He cares about everything in my life. He said "cast all your anxieties."

2. <u>Understand your purpose in life.</u>

We've been created with different abilities all for the purpose of glorifying God and serving others. When you have a purpose in life, it can help you handle pressure. Now one of the things that I do following Jesus' lead is when I feel the pressures coming in on me and I feel them like you do, when I feel stressed, I revert back to my basic purpose in life.

3. Give up your rights.

This is probably the one most of us need work on and the one that gives us the greatest difficulty because we live in a culture that is so filled with assertiveness training. It's contrary to the way the world thinks. There are five destructive emotions that damage and hamper our life - resentment, bitterness, anger, hatred, and fear. They'll eat you up and they'll spit you out and I will guarantee you that a major source of each of those five is often when people are not willing to give up their rights.

I want you to think with me for a moment. It is rare for you to have an argument over an issue if you understand and practice this principle. Now let me be clear, I'm not talking about being a wimp or a perpetual dish rag. There are a few things in life that are worth drawing a line in the sand for, but not 98 percent of the time that we do. I found that the really strong people in this world are the ones who are willing to yield their rights. It's the weak who fight for their turf. The greatest example I know is Jesus. Philippians 2:5, "Your attitude should be the same as that of Christ Jesus: Who, being in very nature God, did not consider equality with God something to be grasped, but made himself nothing, taking the very nature of a servant."

I have observed in my lifetime that fighting for rights can make you do some awfully foolish things. When Abraham Lincoln lived a rich man loaned a poor man जीवन में चीजें और आदतें हैं जो नियंत्रण से बाहर हैं, गुस्सा जैसी चीजें।

क्या आपको अपने स्वभाव से कोई समस्या है? आप उस पत्नी की तरह हो सकते हैं जिसने कहा: मेरे पित बहुत मनमौजी हैं। वह 90 प्रतिशत मिजाज के हैं और 10 प्रतिशत मानसिक। किसी को खर्च करने में दिक्कत है? किसी के पास नियंत्रण से बाहर खर्च हो रहा है? यदि आप करते हैं, तो आपको इस बम्पर स्टिकर की आवश्यकता होगी, "कोई भी व्यक्ति जो कहता है कि पैसा खुशी नहीं खरीद सकता, बस यह नहीं जानता कि कहां से खरीदारी करें।" किसी को भी मिजाज, खाने या ढिलाई, शराब पीने, यौन इच्छाओं या किसी अन्य लत से कोई समस्या है?

हम वास्तव में इन जीवन विकृत करने वाली आदतों और दर्द और हैंग-अप से कैसे मुक्त हो सकते हैं?

समस्या

ऐसा क्यों है कि हमारे पास ये चीजें हैं और हम चक्र से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं? रोमियों 7:15-8 में पौलुस हमें बताता है, "मैं नहीं समझता कि मैं क्या करता हूं। क्योंकि जो मैं करना चाहता हूं वह नहीं करता, परन्तु जो घृणा करता हूं करता हूं। मैं जानता हूं, कि मुझ में कुछ भी अच्छा नहीं रहता, अर्थात्, मेरे पापी स्वभाव में। क्योंकि मुझे अच्छा करने की इच्छा है, लेकिन मैं इसे पूरा नहीं कर सकता। " क्या आप पौलुस जो कह रहे हैं उससे संबंधित हो सकते हैं? पॉल ने कहा, वे सभी चीजें जो मैं करना चाहता हूं, मुझे नहीं लगता, और वे सभी चीजें जो मैं वास्तव में करना चाहता हूंरोकनाकरने से, मैं बस आगे बढ़ता हूं और उन्हें करता हूं।

क्या आपने कभी किसी बुरी आदत को तोड़ा है कि वह कुछ ही दिनों में वापस आ जाए? मैं आपको एक उदाहरण देता हूं। आप में से कितने लोगों ने नए साल के संकल्प किए? आपके द्वारा किए गए सभी संकल्पों को कितने लोगों ने रखा है? शायद हममें से कोई नहीं, क्योंकि संकल्प पर्याप्त नहीं होंगे। अच्छे इरादे शायद ही कभी काफी अच्छे होते हैं। बदलने में ज्यादा लगता है।

आपने कितनी बार वादा किया है, "मैं फिर कभी सिगरेट नहीं पीऊंगा"? आपने कितनी बार खुद से, या अपने परिवार, या भगवान से वादा किया है, "मैं अब अपना आपा नहीं खोने जा रहा हूँ," या, "मैं फिर कभी नहीं पीने जा रहा हूँ," या, "मैं वास्तव में शुरू करने जा रहा हूँ मेरा आहार कल," या, "मैं एक बेहतर पिता बनने जा रहा हूं, मैं तुम्हें फिर कभी नहीं मारूंगा," केवल उस व्यवहार में वापस जाने के लिए जिससे आप आए थे।

परिणाम

4. निराशा। प्रेरित पौलुस हमें तीन बातें बताता है। उन्होंने कहा, "पहला परिणाम यह है कि यह निराशाजनक है।" बहुत निराशा होती है। "मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं।" मैं वही गलतियाँ क्यों करता रहता हूँ? मैं वह

\$2.50 and after a while the poor man was unable to repay, the rich man was so upset he went to Lincoln and asked for representation. Lincoln didn't want to take the case, but he came back and said, well I'll tell you what. You give me \$10 up front and I'll take it. The man gave him \$10 then Lincoln went to the poor man and gave him \$5. He said, "you take \$2.50 of this and pay him back and you can keep that \$2.50" and Lincoln pocketed \$5.00. You see that man spent \$10 to get \$2.50 back. You may say, people don't do those kinds of stupid things. You wouldn't believe what I've seen husbands and wives accuse each other of doing as they fight for their rights instead of yielding.

4. Be a generous person.

That's what Jesus did. You give things away it relieves pressure. Be generous with your prayer, your money, and your talents.

5. Glorify God with excellence.

Do the best you can do in a day, then go to bed and put your head on the pillow. It's amazing how good you feel. Some of the stress that we feel in the world is when we know we have not done what we could have done, it haunts us. Just do your best and then feel the relief as the stress lessens. Amazing Grace Lesson #1108

| _ | estic | | |
|------|---|---|--|
| 1. V | 1. Which statements regarding worry are true? a 40% of concerns do not ever occur | | |
| | | 30 % are old decisions that cannot be | |
| | υ. | | |
| | | changed | |
| | | 12 % are based on untrue criticism | |
| | | All the above | |
| | e. | None of the above | |
| 2. | Pea | ce is found in? | |
| | a. | Loving family | |
| | b. | Financial security | |
| | c. | In Jesus | |
| | | | |
| 3. | In | this world you will have trouble? | |
| | | rue False | |
| 4. | | us was under stressful situations because | |
| | a. | He was misunderstood | |
| | | He was not accepted | |
| | | He was tempted | |
| | | He had many enemies | |
| | | His disciples were slow learners | |
| | | All the above | |
| | | 1111 4110 4100 110 | |
| 4. | Jest | us overcame stress because | |
| | a. | He knew who to go to | |
| | | He knew why He came to earth | |

क्यों करूं जो मैं नहीं करना चाहता? मैं वह काम क्यों करता हूँ जो मुझे पता है कि मेरे लिए बुरा है?

भ्रम। पौलुस ने कहा, मुझ में जो ठीक है करने की इच्छा तो थी, पर सामर्थ नहीं। यदि आप कभी भी आहार पर रहे हैं. तो आप कैसे जाते हैं। आप सबह की शुरुआत बडे संकल्प और इरादे से करते हैं, है न? फिर जैसे-जैसे दिन ढलने लगता है, क्या आप देखते हैं कि संकल्प भटकने लगता है? इसलिए, जब तक आप घर पहुंचते हैं, तब तक आप इतने भूखे होते हैं कि आप लगभग कुछ भी और सब कुछ खा सकते हैं। उस समय तक, संतुलित आहार का मेरा विचार दोनों हाथों में एक बडा मैक है। हम वैसे ही हैं। मैं बदलना चाहता हूं, लेकिन मुझे नहीं पता कि कैसे। मेरे पास प्रेरणा है, लेकिन मेरे पास दृढ संकल्प नहीं है। मेरे पास इच्छा है, लेकिन मेरे पास शक्ति नहीं है।

स्व-सहायता पुस्तकें काम न करने का कारण यह है कि वे हमें ऐसा करने के लिए सशक्त नहीं बनाती हैं। वे एक नकारात्मक व्यक्ति को नकारात्मक होने से रोकने के लिए कहेंगे। मैं अपने जीवन में सैकडों, शायद हजारों नकारात्मक लोगों को जानता हं। मैंने कभी नहीं जाना कि मेरे कहने से कोई बदल जाए. "बस नकारात्मक होना बंद करो।" आपके पास? स्व-सहायता पुस्तकें विलंब करने वालों को बताती हैं "वहां 10 मिनट पहले पहुंचने का प्रयास करें।" वे जानते हैं कि इसलिए उन्होंने स्वयं सहायता पुस्तक खरीदी। वे वहाँ नहीं पहुँच सकते; वे बस चीजों को टालते रहते हैं।

6. हार और निराशा। "मैं कैसा मनहूस मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु के शरीर से कौन छुड़ाएगा?" (रोमियों 7:24) पौलुस ने कहा, मैं युद्ध हार रहा हूँ। मैं हार गया हूँ। मैं बस नहीं बदल सकता। मैंने भगवान से और खुद से कितने वादे किए हैं जिन्हें मैंने तोड़ा है, अक्सर कुछ घंटों के भीतर? तो. आप बस अपने हाथ ऊपर करना चाहते हैं और कहना चाहते हैं. "मैं कोशिश करते-करते थक गया हं।" अगर आपने ऐसा महसूस किया है या आज आप ऐसा महसूस करते हैं, तो क्या मेरे पास आपके लिए कोई बड़ी खुशखबरी है। आप बदल सकते हैं, और शक्ति है। आपको असफलता/पराजय, असफलता/पराजय, असफलता/पराजय के इस चक्र में बार-बार रहने की आवश्यकता नहीं है। बाइबल इस बात को स्पष्ट करती है कि आप उस पर नियंत्रण कैसे प्राप्त कर सकते हैं जो नियंत्रण से बाहर है।

| | c | _ He gave up His rights |
|----|-----------|--|
| | d | He had a purpose and something to give |
| | e | _ He did a good job |
| | f | _ All the above |
| | g | _ b and d |
| | h. | |
| 5. | We can or | vercome stress and pressure by |
| | a | Turning our life over to God |
| | b | _ Understanding the purpose of life |
| | c | _ Giving up our rights |
| | d | Being a generous person |
| | e | _ Glorifying God |
| | f | _ All the above |
| | g | _a, c and e |
| | h | _ a, b and e |
| | i | _ b, d and e |
| | | |

Chapter 12

Freedom From Debt

One of the most common, frequent and dominant shackles of our day is debt. Debt literally fetters millions and millions of Americans. In fact, there are precious few people that I know, particularly in my generation and under, who aren't up to their chins in debt. Others are up to the top of their heads in debt, almost bankrupt.

Why is debt so consuming? I've done a great deal of research and have reached one key reason. We spend more money than we make. Okay? Is that profound? Our yearnings exceed our earnings. A 1995 survey indicated that the average American puts \$1,300 on credit for every \$1,000 that they make. That's the problem. Somebody put it this way: "When your outgo exceeds your income, then your upkeep will be your downfall."

The result of borrowing is a record number of personal and business bankruptcies. Millions of families are so strapped for money that every month is a difficult ordeal because of burgeoning debt.

Causes of debt

1. Covetousness.

The root of 95+ percent of this debt dilemma is an old-fashioned thing the Bible calls coveting. There is an epidemic in our culture of "wantitis." For most of us, our debt is not caused by our need but our greed. We want to buy things that we don't need with money we don't have to impress people we don't even like. Isn't that right?

The reason for this is we are being bombarded by all this "wantitis" message. By the time a student graduates

वाढा

यीशु ने यूहन्ना 8:32 में कहा, "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" व्यक्तिगत परिवर्तन का रहस्य इच्छाशक्ति नहीं है। वह पर्याप्त नहीं है। व्यक्तिगत परिवर्तन का रहस्य गोली नहीं है। व्यक्तिगत परिवर्तन का रहस्य गोली नहीं है। व्यक्तिगत परिवर्तन का रहस्य सम्मोहन नहीं है, यह एक मोटा खेत या कोई नौटंकी नहीं है। जीसस ने कहा, अपने जीवन में आदतों, दुखों और व्यसनों से मुक्त होने का तरीका सत्य को जानना है।

लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? सच्चाई जानने से मुझे मेरी बुरी आदतों से कैसे छुटकारा मिलता है? यीशु के कथन के रहस्य को खोलने के लिए, आपको एक बुनियादी स्वयंसिद्ध को याद रखना होगा। आपके विचार आपकी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं, और आपकी भावनाएं आपके निर्णयों को नियंत्रित करती हैं, और आपके निर्णय आपके कार्यों को नियंत्रित करती हैं। क्या तुम वो दिखता है? हमेशा इसी तरह बहता रहता है। क्या तुमने कभी कहा है, "वह मुझे इतना पागल बना देता है"? वह आपको पागल नहीं कर सकता। वह तुम्हें पागल नहीं कर सकती। उनके पास वह शक्ति नहीं है। आप वास्तव में क्या कह रहे हैं "हर बार जब मैं उसे देखता हूं, तो मुझे नकारात्मक विचार आते हैं"। वे नकारात्मक विचार अतीत में हुई किसी बात को याद करने के परिणामस्वरूप हो सकते हैं। नतीजतन, मुझे एक नकारात्मक भावना मिलती है जो नकारात्मक निर्णय लेती है। ये नकारात्मक निर्णय आपको बहुत ही नकारात्मक कार्य की ओर ले जा सकते हैं।

यह सब विचार प्रक्रिया से शुरू होता है। नीतिवचन 23:7 में सुलैमान ने कहा, "क्योंकि जैसा वह अपने मन में सोचता है, वैसा ही वह भी है।" अगर मैं उदास अभिनय कर रहा हूं, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं उदास महसूस कर रहा हूं। मैं उदास महसूस कर रहा हूँ क्योंकि मैं उदास विचार सोच रहा हूँ। हममें से अधिकांश लोग कारण पर नहीं बल्कि कार्य पर काम करने का प्रयास करते हैं। हम बाहरी चीजों पर काम करने की कोशिश करते हैं। भगवान कहते हैं, आपको अपनी सोच से शुरुआत करनी होगी।

इसलिए जीसस कहते हैं, यदि आप सत्य को जानते हैं, यदि आप सत्य पर ध्यान देंगे, तो यह आपको मुक्त कर देगा। बुरे विश्वास बुरे व्यवहार की ओर ले जाते हैं। आपका हर व्यवहार एक विश्वास पर आधारित है। यह आपके जीवन में एक मूल्य पर आधारित है जो आपने या तो होशपूर्वक या अनजाने में प्राप्त किया है। यह महत्वपूर्ण है: हर आत्म-पराजय व्यवहार के पीछे एक झूठ है जिस पर मैं विश्वास कर रहा हूं। यदि आप किसी गलत व्यवहार में शामिल हैं, तो इसका मूल कारण यह है कि आप किसी ऐसी बात पर विश्वास कर रहे हैं जो सच नहीं है। शैतान मुझे बेवकूफ बना रहा है और मुझे धोखा दे रहा है।

नुस्खा

मेरी समस्या स्वीकार करें।

from high school, he or she has seen on an average 350,000 commercials. All those commercials are saying one of three things; (a) "Having more things will make me happy," (remember in America we are guaranteed life, liberty, and the purchase of happiness); (b) "Having more things will make me important." (It's the devil's old ploy about what I have makes me what I am. Such as "Having a MasterCard won't really make you a better person, well then again, maybe it will") and (c) "Having more things will make you secure." God says these are all lies.

- a) Lie number one having more things will make me happy "Whoever loves money never has money enough; whoever loves wealth is never satisfied with his income...As goods increase, so do those who consume them. And what benefit are they to the owner except to feast his eyes on them?" (Ecclesiastes 5:10-1)
- b) Lie number two having more things will make me important - "'Watch out! Be on your guard against all kinds of greed; for a man's life does not consist in the abundance of his possessions." (Luke 12:15)
- c) Lie number three having things, more things, will make me secure. "Whoever trusts in his riches will fall, but the righteous will thrive like a green leaf." (Proverbs 11:28) That's what God's Word has to say. Most of us still buy the lies, and as we buy the lies, we want to buy things with money that we don't have, and we go into this thing called, "debt."

2. Pretend we are somebody we are not

It's a shallow and harmful view of borrowing. Debt beckons us like the sweet, siren song luring a mariner to the destructive, rocky shores. The lyrics suggest that borrowing is the way to achieve the beautiful, wrinkle-free life. Just like little children who dress up in daddy's and mama's clothes and pretend to be bigger than they are. Debt allows us to pretend to be somebody we're not.

Here's what Solomon said about debt in Proverbs 12:9, "Better to be a nobody and yet have a servant than to pretend to be a somebody and have no food." Here's what he said in Proverbs 13:7, "One man pretends to be rich, yet has nothing; another man pretends to be poor, yet has great wealth." Isn't that true?

Have you ever noticed in the paper some guy with the yacht, a fleet of Rolls Royces, jewels and an Aspen home then all of a sudden, he goes bellyup. Why? Because what he owed on all that stuff was more than it was worth. On the other hand, it seems like every few months, I find out about somebody who has the modest of lifestyles, who's worth a fortune. See, the former is a

मेरी समस्या की जड़ को स्वीकार करें। मुक्त तोड़ने के लिए यह शुरुआती बिंदु है। हममें से अधिकांश लोगों को यह अस्पष्ट अनुभूति होती है कि मेरे साथ कुछ गलत है। हम नहीं जानते कि यह क्या है, और हम उस पर अपनी उंगली नहीं रख सकते, लेकिन कुछ सही नहीं लगता।

भगवान ने उस पर अपनी उंगली रख दी। वह कहता है कि आपकी मूल समस्या जीवन का आपका मूल दृष्टिकोण है, चाहे आपका हैंग-अप कुछ भी हो। इस रवैये का एक नाम है, यह एक ऐसा शब्द है जिसे हम अब ज्यादा नहीं सुनते हैं, यह कूल्हे नहीं है, यह अच्छा नहीं है, और निश्चित रूप से इसे मीडिया में नहीं सुना जाएगा। शब्द घृणित और प्रतिकारक है। यह सिन है।

पाप के बारे में आपकी और मेरी सभी प्रकार की गलत धारणाएं हैं। पाप सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, ड्रग्स करना, नशे में होना, बैंक लूटना या किसी की पत्नी के साथ भाग जाना नहीं है। वे चीजें वास्तव में पाप की दूसरी लहर हैं। वे अंतर्निहित पाप का परिणाम हैं। मूल समस्या एक दृष्टिकोण है जो कहता है, "मैं प्रभारी हूं, और मुझे भगवान की आवश्यकता नहीं है।" रोमियों 7 में जिसे पौलुस ने पापी स्वभाव कहा है, उसका मूल यही है। यह मनुष्य की सबसे पुरानी समस्या है। यह आदम और हव्वा के आसपास से है। मैं भगवान की उपेक्षा करने जा रहा हूं, और मैं अपना रास्ता, अपना काम करने जा रहा हूं।

हम में से प्रत्येक प्रतिदिन पाप की उस मूल प्रतिक्रिया मनोवृत्ति से जूझ रहा है। हम उस रस्साकशी में हर दिन कुश्ती करते हैं। प्रभारी कौन है. मैं या भगवान?

यूहन्ना ने कहा, "यदि हम कहें कि हम में कोई पाप नहीं, तो हम अपने आप को धोखा देते हैं, और सच्चाई हम में नहीं है।" (1 यूहन्ना 1:8) इसे यीशु की कही हुई बातों के साथ मिलाइए, "तू सत्य को जान लेगा, और सत्य तुझे स्वतंत्र करेगा।" इसलिए, अपने पाप को नकारने से, आप में कोई सच्चाई नहीं है।

हम ऐसे कार्य करते हैं जैसे हमें यह सब मिल गया हो। आपको क्या लगता है कि आप किसे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हैं? यदि आप ऐसा अभिनय कर रहे हैं जैसे आपके जीवन में कभी कुछ भी नियंत्रण से बाहर न हो, तो क्या आप परमेश्वर को मूर्ख बनाने की कोशिश कर रहे हैं? क्या आप दूसरे लोगों को बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे हैं? तुम सिर्फ अपने आप को बेवकूफ बना रहे हो। यह सब एक साथ किसी के पास नहीं है। हम में से प्रत्येक के पास हर दिन वह रस्साकशी होती है। जब आप दिखावा करते हैं कि आपके पास सब कुछ एक साथ है और आप प्रभारी हैं, तो आप केवल खुद को चोट पहुँचा रहे हैं।

7. खुद को धोखा देना बंद करो।

मुझे खुद को धोखा देना बंद करना होगा। यह दोहराने लायक है। खुद को हराने से रोकने के लिए मुझे खुद को धोखा देना बंद करना होगा। मूल समस्या यह है, मुझे लगता है कि मैं प्रभारी हूं और मुझे pretender, and the latter is the real thing. The problem with pretending is, sooner or later, you have to stop likewise with debt. Sooner or later, you have to pay it with interest.

Now believe it or not, there was a time in this country where credit was very difficult to obtain. I know that's hard to believe. There was a time in this country when you could keep spending to a minimum because when you run out of money, you stop spending. That did not stop coveting; it just put a damper on your spending. Ironically, about the same time that our federal government began living on money that it didn't have is about that same time debt and credit became available to practically everybody. We all became like the "Eveready Bunny." We just keep on spending, and spending, and spending. We have a very shallow and harmful view of debt.

Cures for becoming debt free

If you could take care of the causes, you should find the cure. Then how do we attack the causes? The tenth commandment says, "You shall not covet" and is followed by a long series of things that you are not to covet. Paul included coveting when he summed up the Law stating in Romans 13:9 "'Do not covet,' and whatever other commandments there may be, are summed up in this one rule: 'Love your neighbor as yourself.'" But in our materialistic, consumer-oriented culture, frankly, that's easier said than done but it can be done. There are three things to consider in dealing with your covetousness:

1. Resist comparison with other people
Comparing always leads to coveting. That's why in the tenth commandment, it says, "Don't covet your neighbor's house, or your neighbor's ox, or your neighbor's manservant." When you start comparing with your neighbor, you're going to end up coveting.

"Each one should test his own actions. Then he can take pride in himself, without comparing himself to somebody else." (Galatians 6:4) Can you look at what someone else has and not covet that? What I'm really asking is, have you learned the secret of being able to admire without having to acquire? I don't have to acquire everything that I enjoy. If you're a person who has to actually own everything you enjoy, you're going to be perpetually miserable. Learn to admire without having to acquire. Remember, if the grass is greener on the other side of the fence, the odds are that the water bill is higher, too.

भगवान की जरूरत नहीं है। हम इस तरह जीने के लिए नहीं बने हैं।

जब कोई शराबी ऐल्कोहॉल एनोनिमस के पास जाता है तो उसके लिए सबसे पहली आवश्यकता यह स्वीकार करना है, "मैं अपनी स्थिति को नियंत्रित करने के लिए शक्तिहीन हूं और मेरा जीवन असहनीय हो गया है।" बहुत बार हमें कुछ भी स्वीकार करने से पहले रॉक बॉटम को हिट करना पड़ता है, तब नहीं जब हमें थोड़ी गर्मी महसूस होती है, लेकिन जब आग नियंत्रण से बाहर हो जाती है। फिर हम कहना शुरू करते हैं "शायद मैं थोड़ी मदद कर सकता हूँ।"

ज्यादातर लोग मदद लेने के लिए बहुत देर से इंतजार करते हैं। वे समस्या को स्वीकार करने के लिए बहुत देर से प्रतीक्षा करते हैं। मेरे कार्यालय में पुरुष आए और कहते हैं, "मेरी पत्नी ने मुझ पर एक बम गिराया। उसने कहा, वह मेरी उपेक्षा, मेरी गाली, मेरी नीच जीभ, मेरे गुस्से से तंग आ चुकी है और वह बाहर जा रही है। मैं क्या कर सकता हूं? मुझे चाहिए मदद करना।" नीचे गहराई में मैं यह सोचकर बैठा हूं कि अक्सर बहुत कम है जो मैं कर सकता हूं, बहुत कम, क्योंकि उसने बहुत लंबा इंतजार किया है।

- अपनी समस्या स्वीकार करें। आपके पास जीवन में एक लटका हुआ है, इसे आईने में और सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने साफ करें।
- d. विश्वास करों कि मसीह मुझे बदल सकता है। रोमियों 7:24 को याद रखें, "मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ा सकता है? ... हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो।" पॉल ने कहा कि मेरी समस्या का जवाब एक व्यक्ति है। यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर वह शक्ति प्रदान करेगा जिसकी आप में कमी है। यदि आप ऐसा नहीं मानते हैं, तो आप अपने हैंग-अप से छुटकारा नहीं पाएंगे। क्योंकि "जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु के द्वारा मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र किया है।" (रोमियों 8:2) लोगों के पास एक रास्ता है। मसीह के आत्मा की व्यवस्था मुझे स्वतंत्र करेगी।

अगर मैं बाहर जाऊं और घास पर कहीं कोई मरा हुआ पक्षी ढूंढूं, उस नन्ही चिड़िया को उठा लूं, उस मरी हुई चिड़िया को हवा में फेंक दूं और कहूं, "उड़ो," क्या होने वाला है? यह वापस नीचे गिरने वाला है। मैं इसे उठाता हूं और इसे वापस ऊपर फेंकता हूं और कहता हूं, "उड़ो!" यह वापस नीचे गिरने वाला है। वह कौन सी चीज है जो उस पक्षी को उड़ने के लिए प्रेरित करेगी? केवल एक चीज जो उसे उड़ाने वाली है, वह है एक नया जीवन, एक नई सृष्टि बनना। उसे एक नया पत्ता पलटने की जरूरत नहीं है, उसे एक नए जीवन की जरूरत है। उसे उन पंखों के नीचे शक्ति चाहिए। एक नया जीवन ही एकमात्र ऐसी चीज है जो उसे उड़ने के लिए प्रेरित करती है।

2. Rejoice over what God has given you

Focus your attention on what God's given to you. "Every good and perfect gift comes from above from the Father of light." (James 1:17) Or, I like Solomon said in Ecclesiastes 5:19, "...When God gives any man wealth and possessions, and enables him to enjoy them, ...this is a gift from God." God says, enjoy my gifts as I give them to you. That's what we need to do.

Have you ever been a victim of that? "When and then" thinking says, "When I get ______, then I'll be happy. You can fill in the blank, whatever it is for you. The idea is when something changes, I'll be happy. No, you won't. Oh, you'll be happy for a little while. Can you remember what you received last Christmas? "When and then" thinking, what is it that you're waiting on to make you happy? What is it, a new house, new job, new car, a new position, marriage? "When and then" thinking never makes you happy. I become as happy as I choose to be and when I focus on what God has given me.

3. Remember what's really important

'So, we fix our eyes not on what is seen, but on what is unseen. For what is seen is temporary, but what is unseen is eternal." (2 Corinthians 4:18) As you decide what your priorities in life are going to be, and where you're going to focus your attention, you should always be asking yourself, can I see it? If you can see it, then you're focusing on the temporary, the wrong thing.

It's a little sobering to look around and realize that a hundred years from now what you see will not be here. The carpet, the chairs, the walls, the building, our clothes, the people won't be here. Paul was absolutely right, "If you can see it, it's temporary." Everything you can see will eventually erode, it will rot, rust, wear out, and go away as opposed to things you can't see i.e., your relationship with God and others, love, honesty, values and your soul. See what we need to do is quit coveting and remember what's really important. That's how you deal with covetousness.

You must put the axe to the taproot of covetousness before you can apply the next cure. You apply key biblical principles to money management. Remember it will not work unless you deal with the heart problem by conquering your coveting problem. But there are four आप यीशु की कोशिश क्यों नहीं करते? मैंने उसे सैकड़ों और सैकड़ों जिंदिगयों को बदलते देखा है। "यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; देखो, पुराना चला गया, और नया आ गया।" यह किसी के लिए भी सत्य है जो मसीह को अपना परिवर्तनकारी कार्य करने देगा। (2 कुरिन्थियों 5:17)

कुछ साल पहले, टाइम पत्रिका में इसकी कवर स्टोरी के जवाब में एक पत्र छपा था, "यीशु मसीह कौन है?" बेशक, लेख में ये सभी राय कई विद्वानों के थे। माइक मंडेल ने लिखा "जहां तक मेरा संबंध है, उदार धर्मशास्त्री अपने ऐतिहासिक यीशु और उनके कट और पेस्ट बाइबिल को रख सकते हैं। मैं एक पूर्व शराबी और व्यभिचारी हूं जिसे जीवित मसीह यीशु की शक्ति द्वारा मुक्त किया गया है। कौन परवाह करता है उच्च आलोचना के बारे में जब परमेश्वर का पुनरुत्थित पुत्र आपको यहाँ और अभी बदल सकता है?" आमीन, माइक, आमीन!

2 तीमुथियुस 1:7 में पौलुस कहता है, "क्योंकि परमेश्वर ने हमें कायरता की आत्मा नहीं, पर सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है।" समय पहले वापस पकड़ रहे हैं। आप वह सब कुछ नहीं कर रहे हैं जो आप उसके लिए कर रहे हैं, आप वापस पकड़ रहे हैं, आप भी पकड़ रहे हैं। आप अपने व्यसनों, अपने हैंग-अप और अपने शाश्वत पापों को पकड़े हुए हैं।

आपने दुनिया का झूठ खरीदा है कि अगर आपने वास्तव में वह सब कुछ किया है जो आप यीशु मसीह के लिए करते हैं, तो आप किसी तरह के अजीब कट्टरपंथी बन जाएंगे। आप आज सब कुछ बेच देंगे। आप बिल्कुल अजीब होंगे। दोस्तों, यह झूठ है। आप आत्म-संयम में होंगे क्योंकि मसीह आपको नियंत्रित कर रहा है। आप शक्तिशाली होंगे। आप प्यार कर रहे होंगे। आप वह व्यक्ति होंगे जिसका आपने हमेशा सपना देखा है। "जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है।" (2 कुरिन्थियों 3:17) यही हमारे अध्ययन का आधार है।अद्भुत अनुग्रह पाठ #1196

प्रशन:

| 1. | आत्म-नियंत्रण की कमी के कारण हैं? |
|----|---|
| | a निराशा |
| | b भ्रम |
| | c हार और निराशा |
| | d अनुचित प्रशिक्षण विरासत में मिला |
| | e ए, बी और सी |
| | f ए, बी और डी |
| | g ए, बी और ई |
| | h ए, सी और ई |
| 2. | व्यक्तिगत परिवर्तन का रहस्य इच्छाशक्ति है |
| | सही गलत |

3. आपके विचार आपकी भावनाओं को नियंत्रित करते हैं

great pillars that the Bible teaches about using your money.

a. Earn your money slowly, but surely.

Get rich quick schemes almost never work. They're a dime a dozen, and they're more accurately called, "go broke quick" schemes. Proverbs 13:11 says, "he who gathers money little by little makes it grow." In Proverbs 6:6, Solomon uses a metaphor that we can all identify with. "Go to the ant, you sluggard; consider its ways and be wise! It has no commander, no overseer or ruler, yet it stores its provisions in summer and gathers its food at harvest." He said, be like the ants, work and supply and store little by little.

Now sure, there are some vocations that pay higher salaries than others, but no matter what your choice of work, put in a good week's work, a reasonable number of hours with maximum effort, and earn your money.

b. Save money regularly.

The word, "save," is practically a forgotten term in modern American economics. But the "little by little" principle doesn't just mean earning, it also applies to saving. Listen to what Solomon said in Proverbs 21:20, "In the house of the wise are stores of choice food and oil, but a foolish man devours all that he has."

Teach your children and grandchildren this and teach them well. The day that a person starts earning an income is the same day that person should begin to save and do it every time he receives income. If they start earning an income at age 14, throwing papers in driveways, start saving right then. If they're 24, or 44, it's not an option, it's a priority. If an individual saved between seven-and-a-half and ten percent of his income regularly, he or she will be prepared for emergencies, contingencies, temporary unemployment, and retirement. I'm not talking about putting your trust or your security in your money, remember if you can see it, it's going anyway. Money is nothing more or less than a tool that's placed in our hands as God's stewards.

Contentment comes through saving including some type savings account and by any number of good investments. But contentment comes through saving. Stress and panic come when we spend to the limit and beyond. We panic over every unexpected financial challenge and there are people all over America living in

| | सत्य असत्य |
|----|---|
| 4. | आपकी भावनाएं आपके निर्णयों को नियंत्रित करती हैं |
| | सत्य असत्य |
| 5. | आपके निर्णय आपके कार्यों को नियंत्रित करते हैं |
| | सत्य असत्य |
| 6. | मनुष्य जैसा अपने दिल, दिमाग में सोचता है, वैसा ही वह है |
| | सत्य असत्य |
| 7. | आत्म-नियंत्रण की कमी को दूर किया जा सकता है |
| | a स्वयं को धोखा देना बंद करें |
| | b स्वीकार करें कि कोई समस्या है |
| | c मसीह को जीवन समर्पित करें |
| | d ए और सी |
| | e बी और सी |
| | f ए, बी और सी |
| 8. | भगवान ने हमें की आत्मा दी है |
| | एक। समयबद्धता |
| | बी। शक्ति |
| | सी। प्यार |
| | डी। आत्म-अनुशासन |
| | इ। ए, बी और सी |
| | एफ। ए, सी और डी |
| | जी। ए, बी। सी और डी |
| | एच। बी, सी और डी |
| 1 | |

अध्याय 12

दबाव कैसे संभालें

आइए एक सर्वेक्षण करें। आप में से कितने लोगों को कम से कम एक चिंता है? हम चिंता करते हैं, है ना? हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहां हम तनाव, चिंता, चिंता और दबाव से भरे हुए हैं और बमबारी कर रहे हैं। वास्तव में, हम सचमुच खुद को बीमार होने की चिंता कर रहे हैं। अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन ने हमारे "चिंता की उम्र" का लेबल लगाया है और उनका निदान केवल तथ्यों से पैदा होता है। अमेरिकन एकेडमी ऑफ फिजिशियन का कहना है कि जितने मरीज वे देखते हैं उनमें से कम से कम दो-तिहाई उनके पास तनाव संबंधी बीमारियों के साथ आते हैं। फिर, तीन सबसे अधिक बिकने वाली नुस्खे वाली दवाएं हैं: 1) टैगामेट, एक अल्सर की दवा: 2) एंडेरोल, उच्च रक्तचाप की दवा और 3) वैलियम, एक ट्रैंकिलाइज़र।

1988 में, न्यूज़वीक पत्रिका ने एक लेख चलाया, जिसमें अनुमान लगाया गया था कि अमेरिकी व्यवसायों को तनाव और चिंता संबंधी that situation.

c. Share generously.

Jesus said, "'Do not store up for yourselves treasures on earth, where moth and rust destroy, and where thieves break in and steal. But store up for yourselves treasures in heaven, where moth and rust do not destroy, and where thieves do not break in and steal. For where your treasure is, there your heart will be also." (Matthew 6:19-21)

Now those words from Jesus tell us a couple of absolutely critical things: (a) where we put our money is where our affections are. You cannot separate the two) and (b) when we give money to the Lord's work, we're storing up for ourselves treasures in heaven. Now I'll confess to you, I don't fully understand that. I know what heaven is metaphorically, it is a spiritual place. But I know that God promises me that anything I forfeit on this earth for the good of His cause will somehow reap a reward in heaven.

God required the Children of Israel to give 10%. He requires Christians to give as they have been prospered which could be more but, in some situations, and circumstances it could be less. God expects us to give because we want to give, but it is not limited to money. We must also give ourselves. By giving ourselves wholeheartedly to Him, we will focus our attention on things above and be less inclined to desire material things, power, position or prestige.

How is giving money going to keep me out of debt?

The more you give to him, the more God will bless you. Jesus said "Give, and it will be given to you. A good measure, pressed down, shaken together and running over in your lap." (Luke 6:38) Now that doesn't mean that God is some slot machine that when we put money into him, he's going to give it back all that time. It means he's going to bless us in every way, but you test it. Have you ever seen anybody out give God? Have you ever seen anybody give more to God than he somehow returns to them?

"It is more blessed to give than to receive." Do you know what the Hebrew word there, the Aramaic word for "blessed" literally means? Happier. You are happier when you give than when you receive. And a lot of us know that firsthand. Now the happier you are, the less inclined you'll be to spend money to buy things to make you happier. In other words, the happier you are as you

बीमारियों के कारण प्रति वर्ष \$150 बिलियन से अधिक का नुकसान होता है। अब आश्चर्यजनक बात यह है कि हमारे पास वास्तव में चिंता करने के लिए इतना सब कुछ नहीं है। उन 40 प्रतिशत बातों पर विचार करें जिनके बारे में हम चिंता करते हैं कभी नहीं होते हैं, 30 प्रतिशत पुराने निर्णयों की चिंता करते हैं जिन्हें अब बदला नहीं जा सकता है और 12 प्रतिशत आलोचना पर केंद्रित है जो अक्सर असत्य होता है और आमतौर पर उन लोगों द्वारा किया जाता है जो हीन महसूस करते हैं। संयोग से, जीवन के अधिकांश आलोचक ऐसे लोग हैं जिनके पास एक गहरी हीन भावना है। जिन चीजों के बारे में हम चिंता करते हैं उनमें से कुछ प्रतिशत हमारे स्वास्थ्य से संबंधित हैं, जिनके बारे में हम चिंता करते हैं तो यह और भी खराब हो जाएगा। यह उन सभी चीजों में से केवल आठ प्रतिशत छोड़ देता है जिन्हें "वैध" लेबल किया जा सकता है, मानसिक ध्यान देने की आवश्यकता है। लेकिन, इस मामले की सच्चाई यह है कि आप और मैं नहीं' t अक्सर उन आँकडों को सुनते हैं। इसके बजाय, हम बार-बार चिंता से घिरे रहते हैं।

मैं आपके साथ कुछ बातें साझा करना चाहता हूं जो यीशु को चिंता और तनाव के लिए एक नुस्खे के बारे में कहना था। यीशु के जीवन के अंतिम सप्ताह के दौरान, वह बड़ी चिंता के दौर से गुजर रहा है। वह जानता था कि वह मरने वाला है। वह यहन्ना 13 में अपने शिष्यों को यह घोषणा करता है। वह उन्हें बताता है कि वह मरने वाला है और उनमें से एक उसे धोखा देने वाला था। अध्याय 14 में, वह खुशखबरी बताता है कि वह उनके लिए जगह तैयार करने के लिए जा रहा है। यहन्ना 15 और 16 में, वह चेलों को बुरी खबर बताता है। वह कहता है, दुनिया तुमसे नफरत करने जा रही है जैसे उसने मुझसे नफरत की है, तुम बिखरने वाले हो और मैं तुम में से एक को भी नहीं ढूंढ पाऊंगा। तब यीशु ने कहा, "मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम को मुझ में शान्ति मिले।" (यूहन्ना 16:33) अपनी बाइबल में यूहन्ना 16:33 को रेखांकित करें, फिर पीले रंग के हाइलाइटर से "मुझ में" को हाइलाइट करें।

बाद में उसी श्लोक में उन्होंने कहा, "इस संसार में तुम्हें परेशानी होगी।" सही बात है। दुनिया में अपनी आशा रखो। सभी सांसारिक चीजों में शामिल हों, आपको परेशानी होगी। आपको चिंता, कलह और तनाव रहेगा। लेकिन फिर उन्होंने कहा, "दिल थाम लो! मैंने दुनिया को जीत लिया है।"

छत्र का कथन है, यदि हम यीशु में हैं, तो हमें शांति मिल सकती है। हमारे भगवान हमें चिंता पर काबू पाने के लिए एक नुस्खा देते हैं जो कि जबरदस्त है। "यह कहकर यीशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करके प्रार्थना की, 'हे पिता, समय आ गया है। अपने पुत्र की मिहमा कर, कि तेरा पुत्र तेरी मिहमा करे। क्योंकि तू ने उसे सब लोगों पर अधिकार दिया, कि वह उन सभों को अनन्त जीवन दे, उसे दिया है। अब अनन्त जीवन यह है, कि वे तुम्हें, एकमात्र सच्चे परमेश्वर, और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें। जो काम तू ने मुझे करने को दिया है, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी मिहमा की है।"" (यूहन्ना 17:1-4)

give that money away, the less inclined you are to go covet things you don't really need. So, earn money little by little, save regularly, share generously.

Budget consonantly and responsibly. It's clear from Scripture that we've already examined, God expects planning and stewardship concerning his assets placed in our hands. Another is "What man would build a tower without first counting the cost." (Luke 14) He is saying you need to have a plan, a budget addressing the desire to be debt-free.

That ought to be every Christian's desire. The Bible does not place an absolute moratorium on debt, but it says in Proverbs 22:7, "the borrower is the servant of the lender." Somebody put it this way, there are two kinds of men in this world, there are men who earn interest, and there are men who pay interest. I will guarantee you the latter are servants to the former. It may take a while, but every one of us ought to have the goal to be debt-free as soon as we can.

The question: how much is enough? Your plan should ask three basic questions:

- 1. What are my family needs?
- 2. How much do I want to give to God?
- 3. How much can I save?

Debt doesn't have to bind us. But unmanaged debt in many ways is synonymous with sin, that's how it's gotten to be.

Amazing Grace lesson #1203

Questions:

| It is wrong to pretend to be rich when you are not; |
|--|
| t, not wrong to pretend to be poor when you are not. |
| True False |
| The common cause, root, of debt is |
| a Sickness |
| b Education |
| c Unemployment |
| d Covetousness |
| Lies of covetousness are |
| a Having more things will make me happy. |
| (Eccl. 5:10-11) |
| b Having more things will make me important |
| (Luke 12:15) |
| c Having more things will make me secure |
| (Prov. 11:28) |
| d All the above |
| The cure for the debt dilemma |
| a Take matters in you on hand, self-control. |
| b Resist comparison of self with others. |
| (Gal. 6:4) |
| |

यीशु तनाव में क्यों होगा? उसे शांति के बारे में ये बातें कहने की आवश्यकता क्यों होगी? उसके पास दुनिया में हर कारण था।

- 1. उसे गलत समझा गया था।
- आप और मैं तनाव और दबाव में आने का एक कारण यह है कि जब हमें गलत समझा जाता है। उन्होंने यीशु के मकसद को गलत समझा। उन्होंने उसके मिशन को गलत समझा। उन्होंने उसके संदेश को गलत समझा।
- 2. उसे स्वीकार नहीं किया गया। जब आपके आस-पास कोई आपको स्वीकार नहीं करता है तो क्या आपको तनाव महसूस नहीं होता है? विशेष रूप से आपके साथियों। यह यीशु के साथियों ने उसे स्वीकार नहीं किया था।
- धार्मिक लोग, जो मसीहा की तलाश में थे, लेकिन उन्होंने उसे दूर कर दिया।
- 3. उसे परीक्षा दी गई। इसलिए उसे तनाव महसूस हुआ। इब्रानियों 4:15 ने कहा कि वह भी हमारी नाईं सब बातों में परखा गया। मैं इससे थोड़ा आगे जा रहा हूँ। मुझे लगता है कि यीशु उन प्रलोभनों को जानता था जिनकी आप और मैं कल्पना भी नहीं कर सकते। वह क्रस के चारों ओर
- एक शॉर्टकट लेने के लिए ललचा गया था और आप और मैं उसके साथ पहचान नहीं कर सकते। हमारे पास दुनिया को बचाने का विकल्प नहीं है।
- 4. उसके अनेक शत्रु थे।
- अब आप और मैं इसके बारे में कुछ जानते हैं। हम में से किसी के पास कुछ ऐसे लोग हैं जो हमारे लिए बहुत अधिक परवाह नहीं करते हैं, लेकिन अगर सच्चाई जानी जाती है, तो मुझे नहीं पता कि मेरे पास कोई है जो वास्तव में मुझे क्रूस पर चढ़ाना चाहता है, मेरी जान लेना चाहता है या इसे दूर करना चाहता है। मुझे।
- 5. उनके शिष्य धीमे सीखने वाले थे। इसने मुझे मार डाला होगा। मैं हमारे भगवान की तरह धैर्यवान नहीं हूं। उसने दिन-रात उनके साथ तीन साल बिताए और यह सब उसमें डूबने देने की कोशिश की और वे अभी भी इसका पता नहीं लगा सके। वह उन्हें उनके लिए मरने के लिए पर्याप्त प्यार करता था। मुझे लगता है कि मैं उन्हें मारना चाहता था। वे धीमे सीखने वाले थे। उन्होंने जबरदस्त जिम्मेदारी के तनाव और दबाव का सामना किया। पाप पर विजय, कब्र पर विजय, मोक्ष का अवसर, प्रत्येक मनुष्य के लिए स्वर्ग का अवसर, वह सब जो उसके कंधों पर था। वह दबाव है और उसका समय समाप्त हो रहा है।
- 6. वह राज्य की उन्नति को अचूक पुरुषों के हाथों में सौंपने जा रहा था।

यीशु ने इससे कैसे निपटा और वह आपको और मुझे इससे निपटने के लिए कैसे कहता है?

| | c. | Focus on what God has provided and |
|-------|----|---|
| | | rejoice. (James 1:17; Eccl. 5:19) |
| | d. | Remember what's really important. (2 |
| | | Cor. 4:18) |
| | e. | All the above |
| | f. | a, c and d |
| | g. | b, c and d |
| | h. | a, b and d |
| 5. | 1 | Which of the following are biblical principles? |
| | a. | Earn money slowly. (Prov. 13:11; 6:6-9) |
| | b. | Save regularly. (Prov. 21:21) |
| | c. | Give generously. (Matt. 6:19-21; Luke |
| 6:38) | | 6:38) |
| | d. | Budget responsibility. (Luke 14:25-33) |
| | e. | Desire to be debt free. (Prov. 22:7) |
| | f. | All the above |
| | g. | None of the above |
| | h. | b, c and d |
| | | |
| | | |

- 1. यीशु जानता था कि किसके पास जाना है। यह सब दबाव महसूस करते हुए वे कहते हैं, 'पिताजी, मुझे आपसे बात करनी है। आपको और मुझे यह जानने और अभ्यास करने की आवश्यकता है कि यीशु क्या जानता था और अभ्यास करता था।
- 2. वह जानता था कि वह धरती पर क्यों आया है। उसका एक उद्देश्य था और जब वह कहता है, पिता, समय आ गया है, तो वह कह रहा है कि उसका मिशन पूरा होने को है।
- 3. यीशु ने अपने अधिकार छोड़ दिए। इसने भारी मात्रा में दबाव से राहत दी। "हे पिता, समय आ गया है। अपने पुत्र की मिहमा कर, कि तेरा पुत्र तेरी मिहमा करे।" यीशु क्यों प्रार्थना करेगा कि पिता उसकी मिहमा करे? यीशु देह में आने वाला परमेश्वर था। वह ट्रिनिटी का हिस्सा था। वह देवत्व का अंश था। लेकिन, आप देखते हैं कि उन्हें प्रार्थना करनी पड़ी कि भगवान उनकी मिहमा करें क्योंकि यीशु ने इस धरती पर आकर और एक सेवक के रूप में मानव रूप धारण करके अपने अधिकारों को छोड़ दिया था। दोस्तों, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ जो हम में से बहुत से लोग नहीं जानते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि हम में से प्रत्येक अपने अधिकारों के क्षेत्र के हर इंच की रक्षा करने की कोशिश कर रहा है। हम इस पर झुकना नहीं चाहते हैं, हम इसे छोड़ना नहीं चाहते हैं, और हम मौके के लिए लड़ने के हर अधिकार की रक्षा करने जा रहे हैं। यीशु ने अपने अधिकारों को त्याग दिया और इसने भारी मात्रा में दबाव से छुटकारा पाया।
- 4. उसके पास देने के लिए कुछ था। उसे सभी लोगों पर अधिकार दिया गया ताकि वह अनन्त जीवन दे सके। उसके पास सब कुछ देने के लिए कुछ था; यह अब तक का सबसे बड़ा उपहार था। यह हर उस व्यक्ति के लिए अनन्त जीवन है जो उसके पास आएगा, उस पर भरोसा करेगा और उसके सुसमाचार का पालन करेगा।
- 5. उसने अच्छा काम किया। "जिस काम को करने को तू ने मुझे दिया था, उसे पूरा करके मैं ने तुझे पृथ्वी पर महिमा दी है।"

हम और आप हर दिन जिस तनाव और दबाव का सामना करते हैं, उससे कैसे छुटकारा पाते हैं? हम वही करते हैं जो यीशु ने किया था।

2. सब कुछ भगवान को सौंप दो।
यीशु की तरह, हमें भी सब कुछ परमेश्वर को सौंप देना चाहिए।
"अपनी सारी चिंता उस पर डाल दो क्योंकि उसे तुम्हारी परवाह
है।" (1 पतरस 5:7) दो अवलोकन a) परमेश्वर मेरे बारे में चिंतित
है। भगवान मेरी परवाह करता है; वह आपकी परवाह करता है
और वह हम सभी की परवाह करता है; बी) वह मेरे जीवन में हर
चीज की परवाह करता है। उन्होंने कहा, "अपनी सारी चिंताओं को
दूर कर दो।"

2. जीवन में अपने उद्देश्य को समझें। हम सभी अलग-अलग क्षमताओं के साथ परमेश्वर की महिमा करने और दूसरों की सेवा करने के उद्देश्य से बनाए गए हैं। जब आपके पास जीवन का कोई उद्देश्य होता है, तो यह आपको दबाव को संभालने में मदद कर सकता है। अब एक काम जो मैं यीशु के नेतृत्व का अनुसरण करता हूँ, वह यह है कि जब मैं अपने ऊपर आने वाले दबावों को महसूस करता हूँ और मैं उन्हें आपकी तरह महसूस करता हूँ, जब मैं तनावग्रस्त महसूस करता हूँ, तो मैं जीवन में अपने मूल उद्देश्य पर वापस लौट आता हूँ।

3. अपने अधिकार छोड़ दो।

यह शायद हम में से अधिकांश को काम करने की ज़रूरत है और जो हमें सबसे बड़ी किठनाई देता है क्योंकि हम एक ऐसी संस्कृति में रहते हैं जो इतनी दृढ़ता प्रशिक्षण से भरी हुई है। यह दुनिया के सोचने के तरीके के विपरीत है। पांच विनाशकारी भावनाएं हैं जो हमारे जीवन को नुकसान पहुंचाती हैं और बाधित करती हैं - आक्रोश, कड़वाहट, क्रोध, घृणा और भय। वे तुम्हें खा जाएंगे और वे तुम्हें थूक देंगे और मैं आपको गारंटी दूंगा कि उन पांचों में से प्रत्येक का एक प्रमुख स्रोत अक्सर तब होता है जब लोग अपने अधिकारों को छोड़ने को तैयार नहीं होते हैं।

मैं चाहता हूं कि आप एक पल के लिए मेरे साथ सोचें। यदि आप इस सिद्धांत को समझते हैं और इसका अभ्यास करते हैं तो आपके लिए किसी मुद्दे पर बहस करना दुर्लभ है। अब मैं स्पष्ट कर दूं, मैं एक विंप या एक सदा के डिश रैग होने की बात नहीं कर रहा हूं। जीवन में कुछ चीजें हैं जो रेत में एक रेखा खींचने के लायक हैं, लेकिन 98 प्रतिशत समय नहीं है जो हम करते हैं। मैंने पाया कि इस दुनिया में वास्तव में मजबूत लोग वही हैं जो अपना अधिकार देने को तैयार हैं। यह कमजोर हैं जो अपनी टर्फ के लिए लड़ते हैं। सबसे बड़ा उदाहरण जो मैं जानता हूं वह है यीशु। फिलिप्पियों 2:5, "तुम्हारा स्वभाव वैसा ही होना चाहिए जैसा मसीह यीशु का है: जिसने परमेश्वर के स्वभाव में होने के कारण, परमेश्वर के साथ समानता को समझने के लिए कुछ नहीं समझा, लेकिन दास की प्रकृति को लेकर अपने आप को कुछ भी नहीं बनाया। "

मैंने अपने जीवनकाल में देखा है कि अधिकारों के लिए लड़ने से आप कुछ भयानक मूर्खतापूर्ण कार्य कर सकते हैं। जब अब्राहम लिंकन रहते थे तो एक अमीर आदमी ने एक गरीब आदमी को 2.50 डॉलर का कर्ज दिया और कुछ समय बाद गरीब आदमी चुकाने में असमर्थ था, अमीर आदमी इतना परेशान था कि वह लिंकन के पास गया और प्रतिनिधित्व मांगा। लिंकन केस नहीं लेना चाहते थे, लेकिन उन्होंने वापस आकर कहा, अच्छा, मैं आपको बताऊंगा कि क्या। आप मुझे 10 डॉलर आगे दें और मैं इसे ले लूंगा। उस आदमी ने उसे 10 डॉलर दिए फिर लिंकन उस गरीब आदमी के पास गया और उसे 5 डॉलर दिए। उन्होंने कहा, "आप इसमें से \$2.50 लेते हैं और उसे वापस भुगतान करते हैं और आप वह \$2.50 रख सकते हैं" और लिंकन ने \$5.00 की जेब ढीली की।

| आप देखते हैं कि उस आदमी ने \$2.50 वापस पाने के लिए \$10 खर्च किए। आप कह सकते हैं, लोग इस तरह की बेवकूफी भरी बातें नहीं करते हैं। आप विश्वास नहीं करेंगे कि मैं क्या' |
|---|
| 4. उदार व्यक्ति बनें। यही यीशु ने किया। आप चीजों को दूर कर देते हैं यह दबाव से राहत देता है। अपनी प्रार्थना, अपने धन और अपनी प्रतिभा के साथ उदार बनो। |
| 5. उत्कृष्टता के साथ परमेश्वर की महिमा करें। एक दिन में जितना हो सके उतना अच्छा करो, फिर बिस्तर पर जाओ और अपना सिर तिकए पर रख दो। यह आश्चर्यजनक है कि आप कितना अच्छा महसूस करते हैं। कुछ तनाव जो हम दुनिया में महसूस करते हैं, वह यह है कि जब हम जानते हैं कि हमने वह नहीं किया जो हम कर सकते थे, तो यह हमें सताता है। बस अपना सर्वश्रेष्ठ करें और तनाव कम होने पर राहत महसूस करें. अद्भुत अनुग्रह पाठ #1108 |
| प्रशन: |
| 1.चिंता के संबंध में कौन से कथन सत्य हैं? a 40% चिंताएं कभी नहीं होती हैं b 30% पुराने फैसले हैं जिन्हें बदला नहीं जा सकता c 12% झूठी आलोचना पर आधारित हैं d इनमे से ऊपर e इनमे से कोई भी नहीं 2. शांति पाई जाती है ? i प्यारा परिवार ii वित्तीय सुरक्षा iii विश्वीय में |
| इस दुनिया में आपको समस्याएं तो झेलनी ही होंगी? सत्य असत्य 4. यीशु तनावपूर्ण परिस्थितियों में थे क्योंकि a उसे गलत समझा गया b उसे स्वीकार नहीं किया गया c उसे लुभाया गया था डी। उसके कई दुश्मन थे इ। उनके शिष्य धीमे सीखने वाले थे f सब से ऊपर |
| 9. यीशु ने तनाव पर विजय प्राप्त की क्योंकि a वह जानता था कि किसके पास जाना है b वह जानता था कि वह धरती पर क्यों आया है c उसने अपना अधिकार छोड़ दिया d उसके पास एक उद्देश्य और देने के लिए कुछ था |
| |

| | e उन्होंने अच्छा काम किया |
|-----|--|
| | f सब से ऊपर |
| | g बी और डी |
| 10. | हम द्वारा तनाव और द्बाव को दूर कर सकते हैं |
| a. | हमारे जीवन को ईश्वर की ओर मोड़ना |
| | b जीवन के उद्देश्य को समझना |
| | c हमारे अधिकारों का त्याग |
| | d एक उदार व्यक्ति होने के नाते |
| | e भगवान की महिमा करना |
| | f सब से ऊपर |
| | g ए, सी और ई |
| | h. ए. बी और ई |
| | i बी, डी और ई |
| | |

अध्याय 12

कर्ज से मुक्ति

हमारे दिन की सबसे आम, लगातार और प्रमुख बंधनों में से एक कर्ज है। कर्ज सचमुच लाखों और लाखों अमेरिकियों को बांधता है। वास्तव में, ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्हें मैं जानता हूं, विशेष रूप से मेरी पीढ़ी और उससे कम उम्र में, जो कर्ज में डूबे नहीं हैं। अन्य कर्ज में अपने सिर के शीर्ष तक हैं, लगभग दिवालिया।

कर्ज इतना उपभोग क्यों कर रहा है? मैंने काफी शोध किया है और एक प्रमुख कारण पर पहुंचा हूं। हम जितना कमाते हैं उससे ज्यादा पैसा खर्च करते हैं। ठीक? क्या यह गहरा है? हमारी तड़प हमारी कमाई से ज्यादा है। 1995 के एक सर्वेक्षण ने संकेत दिया कि औसत अमेरिकी अपने द्वारा किए गए प्रत्येक \$1,000 के लिए \$1,300 क्रेडिट पर डालता है। यही समस्या है। कोई इसे इस तरह से रखता है: "जब आपका खर्च आपकी आय से अधिक हो जाता है, तो आपका रखरखाव आपका पतन होगा।"

उधार लेने का परिणाम व्यक्तिगत और व्यावसायिक दिवालिया होने की एक रिकॉर्ड संख्या है। लाखों परिवार पैसे के लिए इतने तंग हैं कि हर महीने बढ़ते कर्ज के कारण एक कठिन परीक्षा होती है।

कर्ज के कारण

1. लोभ। इस कर्ज की दुविधा की 95+ प्रतिशत की जड़ एक पुराने जमाने की चीज है जिसे बाइबल लोभ कहती है। "वांटाइटिस" की हमारी संस्कृति में एक महामारी है। हम में से अधिकांश के लिए, हमारा कर्ज हमारी जरूरत के कारण नहीं बल्कि हमारे लालच के कारण होता है। हम उन चीजों को खरीदना चाहते हैं जिनकी हमें जरूरत नहीं है पैसे के साथ हमें उन लोगों को प्रभावित करने की ज़रूरत नहीं है जिन्हें हम पसंद भी नहीं करते हैं। क्या यह सही नहीं है?

इसका कारण यह है कि हम इस "वांटाइटिस" संदेश द्वारा बमबारी कर रहे हैं। जब तक कोई छात्र हाई स्कूल से स्नातक करता है, तब तक वह औसतन 350,000 विज्ञापनों को देख चुका होता है। वे सभी विज्ञापन तीन चीजों में से एक कह रहे हैं; (ए) "अधिक चीजें होने से मुझे खुशी होगी," (याद रखें अमेरिका में हमें जीवन, स्वतंत्रता और खुशी की खरीद की गारंटी है); (बी) "और चीजें होने से मुझे महत्वपूर्ण बना दिया जाएगा।" (मेरे पास जो कुछ है उसके बारे में यह शैतान की पुरानी चाल है जो मुझे वह बनाती है जो मैं हूं। जैसे "मास्टरकार्ड होने से आप वास्तव में एक बेहतर इंसान नहीं बनेंगे, ठीक है, फिर से, शायद यह होगा") और (सी) "अधिक चीजें होने से आपको सुरक्षित बनाओ।" भगवान कहते हैं ये सब झूठ हैं।

क) नंबर एक झूठ - अधिक चीजें होने से मुझे खुशी होगी - "जो पैसे से प्यार करता है उसके पास कभी भी पर्याप्त पैसा नहीं होता है, जो धन से प्यार करता है वह अपनी आय से कभी संतुष्ट नहीं होता ... जैसे-जैसे माल बढ़ता है, वैसे ही उनका उपभोग करें। और क्या लाभ हैं वे उन पर अपनी आंखें दावत देने के अलावा मालिक के लिए हैं?" (सभोपदेशक 5:10-1)

बी) नंबर दो झूठ - और चीजें होने से मुझे महत्वपूर्ण बना दिया जाएगा - "'सावधान रहें! हर तरह के लालच के खिलाफ अपने आप को सावधान रहें; क्योंकि किसी व्यक्ति के जीवन में उसकी संपत्ति की बहुतायत नहीं होती है।" (लूका 12:15)

ग) नंबर तीन झूठ - चीजें, अधिक चीजें, मुझे सुरक्षित कर देगी। "जो अपने धन पर भरोसा रखता है, वह गिर जाएगा, परन्तु धर्मी हरे पत्ते की नाईं फूलेगा।" (नीतिवचन 11:28) परमेश्वर का वचन यही कहता है। हम में से अधिकांश अभी भी झूठ खरीदते हैं, और जैसे ही हम झूठ खरीदते हैं, हम उन चीजों को खरीदना चाहते हैं जो हमारे पास नहीं हैं, और हम इस चीज़ में जाते हैं, जिसे "कर्ज" कहा जाता है।

2. दिखाओ कि हम वह हैं जो हम नहीं हैं यह उधार लेने का एक उथला और हानिकारक दृष्टिकोण है। ऋण हमें विनाशकारी, चट्टानी तटों पर एक नाविक को लुभाने वाले मधुर, जलपरी गीत की तरह आकर्षित करता है। गीत सुझाव देते हैं कि उधार लेना सुंदर, शिकन मुक्त जीवन प्राप्त करने का तरीका है। ठीक वैसे ही जैसे छोटे बच्चे जो डैडी और मामा के कपड़े पहनते हैं और अपने से बड़े होने का दिखावा करते हैं। ऋण हमें किसी ऐसे व्यक्ति होने का दिखावा करने की अनुमित देता है जो हम नहीं हैं।

यहाँ नीतिवचन 12:9 में सुलैमान ने ऋण के बारे में क्या कहा, "किसी के होने का दिखावा करने और भोजन न करने से अच्छा है कि कोई न हो और फिर भी एक सेवक हो।" यहाँ उसने नीतिवचन 13:7 में कहा है, "एक मनुष्य धनी होने का ढोंग करता है, तौभी उसके पास कुछ नहीं होता; दूसरा मनुष्य कंगाल होने का ढोंग करता है, तौभी उसके पास बहुत धन होता है।" क्या यह सच नहीं है?

क्या आपने कभी अखबार में देखा है कि कोई व्यक्ति यॉट के साथ, रोल्स रॉयस का एक बेड़ा, गहने और एक एस्पेन घर है, फिर अचानक, वह बेलीअप हो जाता है। क्यों? क्योंकि उस सब सामान पर उसका जो बकाया था, वह उसके मूल्य से अधिक था। दूसरी ओर, ऐसा लगता है कि हर कुछ महीनों में, मुझे किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में पता चलता है जिसकी जीवन शैली मामूली है, जो एक भाग्य के लायक है। देखिए, पहला दिखावा है, और बाद वाला असली चीज़ है। दिखावा करने में समस्या यह है कि देर-सबेर आपको कर्ज के साथ भी रुकना होगा। देर-सबेर आपको इसे ब्याज सहित चुकाना होगा।

अब विश्वास करें या न करें, इस देश में एक समय ऐसा भी था जहां क्रेडिट प्राप्त करना बहुत मुश्किल था। मुझे पता है कि विश्वास करना मुश्किल है। इस देश में एक समय था जब आप कम से कम खर्च कर सकते थे क्योंकि जब आपके पास पैसे खत्म हो जाते हैं तो आप खर्च करना बंद कर देते हैं। उसने लालच करना बंद नहीं किया; यह सिर्फ आपके खर्च पर एक नुकसान डालता है। विडंबना यह है कि लगभग उसी समय जब हमारी संघीय सरकार ने पैसे पर जीवनयापन करना शुरू किया, जो उसके पास नहीं था, लगभग उसी समय ऋण और ऋण व्यावहारिक रूप से सभी के लिए उपलब्ध हो गए थे। हम सब "एवरेडी बनी" की तरह बन गए। हम बस ख़र्च करते रहते हैं, ख़र्च करते रहते हैं और ख़र्च करते रहते हैं। हमारे पास कर्ज के बारे में बहुत उथला और हानिकारक दृष्टिकोण है।

कर्ज मुक्त होने के उपाय

यदि आप कारणों का ध्यान रख सकते हैं, तो आपको इलाज ढूंढना चाहिए। फिर हम कारणों पर हमला कैसे करते हैं? दसवीं आज्ञा कहती है, "तू लालच न करना" और इसके बाद उन चीजों की एक लंबी श्रृंखला होती है जिनका आपको लालच नहीं करना है। पौलुस ने लोभ को भी शामिल किया जब उसने रोमियों 13:9 में वर्णित व्यवस्था को सारांशित किया "'लोभ मत करो,' और जो भी अन्य आज्ञाएं हो सकती हैं, वे इस एक नियम में सारांशित हैं: 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।" परन्तु हमारे में भौतिकवादी, उपभोक्ता-उन्मुख संस्कृति, स्पष्ट रूप से, यह कहा से आसान है लेकिन यह किया जा सकता है। अपने लोभ से निपटने के लिए तीन बातों पर ध्यान देना चाहिए:

2. अन्य लोगों के साथ तुलना का विरोध करें तुलना करना हमेशा लोभ की ओर ले जाता है। इसलिए दसवीं आज्ञा में, यह कहता है, "अपने पड़ोसी के घर, या अपने पड़ोसी के बैल, या अपने पड़ोसी के दास का लालच मत करो।" जब आप अपने पड़ोसी से तुलना करना शुरू करते हैं, तो आप लोभ को समाप्त करने वाले होते हैं। "हर एक को अपने कार्यों का परीक्षण करना चाहिए। तब वह खुद की तुलना किसी और से किए बिना खुद पर गर्व कर सकता है।" (गलितयों 6:4) क्या आप देख सकते हैं कि किसी और के पास क्या है और उसका लालच नहीं? जो मैं वास्तव में पूछ रहा हूं, क्या आपने हासिल किए बिना प्रशंसा करने में सक्षम होने का रहस्य सीखा है? मुझे वह सब कुछ हासिल करने की ज़रूरत नहीं है जो मुझे पसंद है। यदि आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जिसके पास वास्तव में वह सब कुछ है जिसका आप आनंद लेते हैं, तो आप हमेशा के लिए दुखी रहने वाले हैं। हासिल किए बिना प्रशंसा करना सीखें। याद रखें, अगर बाड़ के दूसरी तरफ घास हरी है, तो संभावना है कि पानी का बिल भी अधिक होगा।

2. परमेश्वर ने जो दिया है उस पर आनन्दित रहो अपना ध्यान उस पर केंद्रित करें जो भगवान ने आपको दिया है। "हर एक अच्छा और उत्तम वरदान ऊपर से ज्योति के पिता की ओर से आता है।" (याकूब 1:17) या, जैसा कि सभोपदेशक 5:19 में सुलैमान ने कहा, मुझे पसंद है, "... जब परमेश्वर किसी मनुष्य को धन और संपत्ति देता है, और उसका उपभोग करने के योग्य बनाता है, ... यह परमेश्वर की ओर से एक उपहार है।" भगवान कहते हैं, मेरे उपहारों का आनंद लें जैसे मैं उन्हें आपको देता हूं। हमें यही करना है।

क्या आप कभी इसके शिकार हुए हैं? "कब और फिर" सोच कहती है, "जब मुझे ______ मिलेगा, तो मुझे खुशी होगी। आप रिक्त स्थान भर सकते हैं, जो कुछ भी आपके लिए है। विचार यह है कि जब कुछ बदलता है, तो मुझे खुशी होगी। नहीं, आप नहीं करेंगे। ओह, तुम थोड़ी देर के लिए खुश हो जाओगे। क्या आपको याद है कि आपको पिछले क्रिसमस पर क्या मिला था? "कब और फिर" यह सोचकर कि वह क्या है जिसका आप इंतज़ार कर रहे हैं ताकि आपको खुश किया जा सके? यह क्या है, नया घर, नई नौकरी, नई कार, नया पद, विवाह? "कब और फिर" सोच आपको कभी खुश नहीं करती। मैं उतना ही खुश हो जाता हूं जितना मैं बनना चाहता हूं और जब मैं उस पर ध्यान केंद्रित करता हूं जो भगवान ने मुझे दिया है।

3. याद रखें कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है 'इसलिए, हम अपनी आँखें उस पर नहीं लगाते हैं जो देखा जाता है, बल्कि उस पर है जो अनदेखी है। क्योंकि जो देखा जाता है वह क्षणिक है, परन्तु जो अनदेखा है वह अनन्त है।" (2 कुरिन्थियों 4:18) जब आप तय करते हैं कि जीवन में आपकी प्राथमिकताएँ क्या होंगी, और आप अपना ध्यान कहाँ केंद्रित करने जा रहे हैं, तो आपको हमेशा खुद से पूछना चाहिए, क्या मैं इसे देख सकता हूँ? यदि आप इसे देख सकते हैं, तो आप अस्थायी, गलत चीज़ पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

चारों ओर देखने और महसूस करने के लिए यह थोड़ा सा उत्साहजनक है कि अब से सौ साल बाद आप जो देखते हैं वह यहां नहीं होगा। कालीन, कुर्सियाँ, दीवारें, भवन, हमारे कपड़े, लोग यहाँ नहीं होंगे। पॉल बिल्कुल सही था, "यदि आप इसे देख सकते हैं, तो यह अस्थायी है।" आप जो कुछ भी देख सकते हैं वह अंततः नष्ट हो जाएगा, यह सड़ जाएगा, जंग खाएगा, खराब हो जाएगा, और उन चीजों के विपरीत चला जाएगा जिन्हें आप नहीं देख सकते हैं, यानी भगवान और दूसरों के साथ आपका रिश्ता, प्यार, ईमानदारी, मूल्य और आपकी आत्मा। देखें कि हमें क्या करना है, लालच छोड़ दें और याद रखें कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है। इस तरह आप लोभ के साथ व्यवहार करते हैं।

अगला इलाज लागू करने से पहले आपको कुल्हाड़ी को लोभ की जड़ में डाल देना चाहिए। आप धन प्रबंधन के लिए बाइबिल के प्रमुख सिद्धांतों को लागू करते हैं। याद रखें यह तब तक काम नहीं करेगा जब तक आप अपनी लोभ की समस्या पर विजय प्राप्त करके हृदय की समस्या से नहीं निपटते। लेकिन चार बड़े स्तंभ हैं जिन्हें बाइबल आपके पैसे का उपयोग करने के बारे में सिखाती है।

एक। अपना पैसा धीरे-धीरे कमाएं, लेकिन निश्चित रूप से। जल्दी अमीर बनो योजनाएं लगभग कभी काम नहीं करती हैं। वे एक पैसा एक दर्जन हैं, और उन्हें अधिक सटीक रूप से कहा जाता है, "जल्दी तोड़ो" योजनाएं। नीतिवचन 13:11 कहता है, "जो थोड़ा-थोड़ा करके धन बटोरता है, वह उसे बढ़ाता है।" नीतिवचन 6:6 में, सुलैमान एक ऐसे रूपक का उपयोग करता है जिससे हम सब पहचान सकते हैं। "आलसी, चींटी के पास जाओ; उसके मार्गों पर विचार करो और बुद्धिमान बनो! उसका कोई सेनापित, कोई अध्यक्ष या शासक नहीं है, तौभी वह ग्रीष्मकाल में अपना भोजन रखता है, और कटनी के समय अपना भोजन बटोरता है।" उन्होंने कहा, चींटियों की तरह बनो, काम करो और आपूर्ति करो और धीरे-धीरे स्टोर करो।

अब निश्चित रूप से, कुछ ऐसे व्यवसाय हैं जो दूसरों की तुलना में अधिक वेतन देते हैं, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी पसंद का काम क्या है, एक अच्छे सप्ताह के काम में, अधिकतम प्रयास के साथ उचित संख्या में घंटे लगाएं, और अपना पैसा कमाएं।

बी। नियमित रूप से पैसे बचाएं।

शब्द, "बचाओ," आधुनिक अमेरिकी अर्थशास्त्र में व्यावहारिक रूप से एक भूला हुआ शब्द है। लेकिन "थोड़ा-थोड़ा करके" सिद्धांत का मतलब सिर्फ कमाई नहीं है, यह बचत पर भी लागू होता है। सुनिए नीतिवचन 21:20 में सुलैमान ने क्या कहा, "बुद्धिमान के घर में उत्तम अन्न और तेल के भण्डार होते हैं, परन्तु मूढ़ मनुष्य अपना सब कुछ खा जाता है।"

अपने बच्चों और पोते-पोतियों को यह सिखाओ और उन्हें अच्छी तरह सिखाओ। जिस दिन से कोई व्यक्ति आय अर्जित करना शुरू करता है, उसी दिन व्यक्ति को बचत करना शुरू कर देना चाहिए और हर बार आय प्राप्त करने पर इसे करना चाहिए। अगर वे 14 साल की उम्र में आय अर्जित करना शुरू करते हैं, तो ड्राइववे में कागजात फेंकते हैं, तुरंत बचत करना शुरू करते हैं। यदि वे 24 या 44 वर्ष के हैं, तो यह कोई विकल्प नहीं है, यह प्राथमिकता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी आय का साढ़े सात से दस प्रतिशत नियमित रूप से बचाता है, तो वह आपात स्थिति, आकस्मिकता, अस्थायी बेरोजगारी और सेवानिवृत्ति के लिए तैयार रहेगा। मैं आपके भरोसे या आपकी सुरक्षा को आपके पैसे पर रखने की बात नहीं कर रहा हूं, याद रखें कि अगर आप इसे देख सकते हैं, तो यह वैसे भी चल रहा है। पैसा एक उपकरण से कम या ज्यादा कुछ नहीं है जो हमारे हाथों में भगवान के भण्डारी के रूप में रखा गया है।

संतोष कुछ प्रकार के बचत खाते और किसी भी अच्छे निवेश सिहत बचत के माध्यम से आता है। लेकिन संतोष बचत से आता है। तनाव और घबराहट तब आती है जब हम हद से ज्यादा खर्च करते हैं। हम हर अप्रत्याशित वित्तीय चुनौती से घबराते हैं और पूरे अमेरिका में ऐसे लोग हैं जो उस स्थिति में रह रहे हैं।

सी। उदारता से साझा करें।

यीशु ने कहा, "'पृथ्वी पर अपने लिये धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई नष्ट करते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां कीड़ा और काई नष्ट नहीं होते, और जहां चोर सेंध लगाकर चोरी नहीं करते। क्योंकि जहां तेरा खजाना है, वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।"' (मत्ती 6:19-21) अब यीशु के ये शब्द हमें कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण बातें बताते हैं: (क) जहां हम अपना पैसा लगाते हैं, वहीं हमारा स्नेह है। . आप दोनों को अलग नहीं कर सकते) और (ख) जब हम प्रभु के कार्य के लिए धन देते हैं, तो हम स्वर्ग में अपने लिए खजाना जमा कर रहे होते हैं। अब मैं आपको कबूल करूंगा, मैं इसे पूरी तरह से नहीं समझता। मैं जानता हूँ कि स्वर्ग क्या है लाक्षणिक रूप से, यह एक आध्यात्मिक स्थान है। लेकिन मुझे पता है कि भगवान ने मुझसे वादा किया है कि मैं इस धरती पर उसके कारण की भलाई के लिए जो कुछ भी खो देता हूं वह किसी तरह स्वर्ग में इनाम पाएगा।

परमेश्वर ने इस्राएल के बच्चों को 10% देने की अपेक्षा की। वह ईसाइयों को देने की मांग करता है क्योंकि वे समृद्ध हुए हैं जो अधिक हो सकता है, लेकिन कुछ स्थितियों में, और परिस्थितियों में यह कम हो सकता है। भगवान हमसे देने की उम्मीद करते हैं क्योंकि हम देना चाहते हैं, लेकिन यह पैसे तक सीमित नहीं है। हमें खुद को भी देना चाहिए। पूरे दिल से उसे समर्पित करके, हम अपना ध्यान ऊपर की चीजों पर केंद्रित करेंगे और भौतिक चीजों, शक्ति, पद या प्रतिष्ठा की इच्छा के प्रति कम इच्छुक होंगे।

मुझे कर्ज से बाहर रखने के लिए पैसा कैसे देना है?

जितना अधिक आप उसे देंगे, उतना ही अधिक परमेश्वर आपको आशीष देगा। यीशु ने कहा, "दे दो, तो तुम्हें दिया जाएगा। एक अच्छा नाप, दबाया हुआ, हिलाया और तेरी गोद में दौड़ता हुआ।" (लूका 6:38) अब इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर कुछ स्लॉट मशीन है कि जब हम उसमें पैसा डालते हैं, तो वह उसे उस समय वापस देने वाला है। इसका मतलब है कि वह हमें हर तरह से आशीर्वाद देने वाला है, लेकिन आप इसे परखें। क्या आपने कभी किसी को भगवान को देते हुए देखा है? क्या आपने कभी किसी को परमेश्वर को उससे अधिक देते हुए देखा है जितना वह किसी तरह उन्हें लौटाता है?

"लेने से देना अधिक धन्य है।" क्या आप जानते हैं कि हिब्रू शब्द "धन्य" के लिए अरामी शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है? खुश. जब आप देते हैं तो आप अधिक खुश होते हैं जब आप प्राप्त करते हैं। और हम में से बहुत से लोग इसे पहले से जानते हैं। अब आप जितने खुश होंगे, आपको खुश करने के लिए चीजों को खरीदने के लिए पैसे खर्च करने की इच्छा उतनी ही कम होगी। दूसरे शब्दों में, जब आप उस पैसे को दे देते हैं तो आप जितने खुश होते हैं, उतनी ही कम इच्छा होती है कि आप उन चीजों को जाने दें जिनकी आपको वास्तव में आवश्यकता नहीं है। इसलिए, थोड़ा-थोड़ा करके पैसा कमाएं, नियमित रूप से बचत करें, उदारता से साझा करें।

बजट सुसंगत और जिम्मेदारी से।पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट है कि हमने पहले ही जांच कर ली है, परमेश्वर हमारे हाथों में रखी गई अपनी संपत्ति के संबंध में योजना और भण्डारीपन की अपेक्षा करता है। एक और है "क्या आदमी पहले लागत की गणना किए बिना एक टॉवर का निर्माण करेगा।" (लूका 14) वह कह रहा है कि आपके पास एक योजना होनी चाहिए, एक बजट जो ऋण-मुक्त होने की इच्छा को संबोधित करता है।

यह हर ईसाई की इच्छा होनी चाहिए। बाइबल ऋण पर पूर्ण रूप से रोक नहीं लगाती है, परन्तु नीतिवचन 22:7 में यह कहती है, "उधार लेने वाला ऋणदाता का दास होता है।" किसी ने इसे इस तरह से रखा है, इस दुनिया में दो तरह के पुरुष हैं, एक आदमी है जो ब्याज कमाते हैं, और एक आदमी है जो ब्याज देता है। मैं आपको गारंटी

| दूंगा कि बाद वाले पहले वाले के सेवक हैं। इसमें थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन हम में से प्रत्येक को जल्द से जल्द कर्ज मुक्त होने का लक्ष्य रखना चाहिए। प्रश्न: कितना पर्याप्त है? आपकी योजना में तीन बुनियादी प्रश्न पूछने चाहिए: 1. मेरे परिवार को क्या चाहिए? 2. मैं भगवान को कितना देना चाहता हूं? 3. मेरे द्वारा कितना बचा पाना संभव है? कर्ज हमें बांधना नहीं है। लेकिन अप्रबंधित ऋण कई मायनों में पाप का पर्याय है, ऐसा ही होता है। अद्भुत अनुग्रह पाठ #1203 प्रश्ननः 1. जब आप नहीं हैं तो अमीर होने का दिखावा करना गलत है; लेकिन, जब आप नहीं हैं तो गरीब होने का दिखावा करना गलत नहीं है। सत्य असत्य 2. ऋण का सामान्य कारण, मूल है a बीमारी b शिक्षा c बेरोजगारी d लोभ |
|---|
| पूछने चाहिए: 1. मेरे परिवार को क्या चाहिए? 2. मैं भगवान को कितना देना चाहता हूं? 3. मेरे द्वारा कितना बचा पाना संभव है? कर्ज हमें बांधना नहीं है। लेकिन अप्रबंधित ऋण कई मायनों में पाप का पर्याय है, ऐसा ही होता है। अद्भुत अनुग्रह पाठ #1203 प्रशन: 1. जब आप नहीं हैं तो अमीर होने का दिखावा करना गलत है; लेकिन, जब आप नहीं हैं तो गरीब होने का दिखावा करना गलत नहीं है। सत्य असत्य 2. ऋण का सामान्य कारण, मूल है a बीमारी b बीसारी c बेरोजगारी |
| कर्ज हमें बांधना नहीं है। लेकिन अप्रबंधित ऋण कई मायनों में पाप का पर्याय है, ऐसा ही होता है। अद्भुत अनुग्रह पाठ #1203 प्रशन: 1. जब आप नहीं हैं तो अमीर होने का दिखावा करना गलत है; लेकिन, जब आप नहीं हैं तो गरीब होने का दिखावा करना गलत नहीं है। सत्य असत्य 2. ऋण का सामान्य कारण, मूल है a बीमारी b बिश्वा c बेरोजगारी |
| जब आप नहीं हैं तो अमीर होने का दिखावा करना गलत है; लेकिन, जब आप नहीं हैं तो गरीब होने का दिखावा करना गलत नहीं है। सत्य असत्य वीमारी — शिक्षा — बेरोजगारी |
| 2. ऋण का सामान्य कारण, मूल है a बीमारी b शिक्षा c बेरोजगारी |
| |
| 3. लोभ के झूठ हैं a अधिक चीजें होने से मुझे खुशी होगी। (सभो. 5:10-11) b अधिक चीजें होने से मैं महत्वपूर्ण हो जाऊंगा। (लूका 12:15) c अधिक चीजें होने से मैं सुरक्षित हो जाऊंगा (नीति. 11:28) d सब से ऊपर 4. कर्ज की दुविधा का इलाज a मामलों को अपने हाथ में लें, आत्म-नियंत्रण। b दूसरों के साथ स्वयं की तुलना का विरोध करें। |
| (गला. 6:4) c परमेश्वर ने जो प्रदान किया है उस पर ध्यान केंद्रित करें और आनन्दित हों। (याकूब 1:17; सभो. 5:19) d याद रखें कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है। (2 कुरि. 4:18) e सब से ऊपर |
| f ए, सी और डी g बी, सी और डी h ए, बी और डी |

| 5. निम्नलिखित में से कौन-से बाइबल के सिद्धांत हैं? |
|--|
| a धीरे-धीरे पैसा कमाएं। (नीति. 13:11; 6:6-9) |
| b नियमित रूप से बचत करें। (नीति. 21:21) c उदारता से दें। (मत्ती 6:19-21; लूका 6:38) |
| c उदारता स द। (मत्ता 6:19-21; लूका 6:38) d बजट जिम्मेदारी। (लूका 14:25-33) |
| e कर्ज मुक्त होने की इच्छा। (नीति. 22:7) |
| f सब से ऊपर |
| g इनमे से कोई भी नहीं |
| h बी, सी और डी |
| |
| |

International Bible Knowledge Institute - अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान

Electives Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Mortal Man From Life to Death - नश्वर मनुष्य जीवन से मृत्यु तक

Planned Redemption - नियोजित मोचन

Creation before Genesis - उत्पत्ति से पहले का निर्माण

What Shall We Do? हम क्या करें?

End of Time on Earth - पृथ्वी पर समय का अंत

Marriage and Divorce - विवाह और तलाक

Silence of the Scriptures - शास्त्रों की चुप्पी

Daniel - डैनियल

First Principles of Christ - मसीह के पहले सिद्धांत

Holy Spirit - पवित्र आत्मा

Types and Metaphors - पवित्र आत्मा

Additional Studies - वैकल्पिक अध्ययन

Today's Church Practices - वैकल्पिक अध्ययन

Compiling and Translating the Bible - बाइबल का संकलन और अनुवाद

Shadows, Types and Prophecies - छाया, प्रकार और भविष्यवाणियां

Teachings & Practices after AD 100 - 100 ईस्वी के बाद की शिक्षाएं और व्यवहार

God's Sabbath - भगवान का सब्त

Promises Now and For Evermore - वादे अभी और हमेशा के लिए

God's Rebuilding Process - भगवान की पुनर्निर्माण प्रक्रिया

Living The Maximum Life - अधिकतम जीवन जीना

Real Men are Godly Men - सच्चे पुरुष ईश्वरीय पुरुष हैं

Living For One Another - एक दूसरे के लिए जीना

Greatest Questions Ever Asked - अब तक के सबसे बड़े सवाल

Wonderful Words Of Life - जीवन के अद्भुत शब्द

Lessons From The Cross - क्रॉस से सबक

Jehovah's Witnesses church - यहोवा के साक्षी चर्च

Interesting but not required for BKS award - दिलचस्प है लेकिन बीकेएस पुरस्कार के लिए आवश्यक नहीं

Outlined Bible - उल्लिखित बाइबिल Summarized - सारांशित बाइबिल

LESSONS AND SERVICES PROVIDED BY *INTERNATIONAL BIBLE KNOWLEDGE INSTITUTE* ARE FREE OF CHARGE. YOU WILL NEVER BE ASK FOR TUITION OR ANY OTHER FEE. **IBKI** IS NOT AN ACCREDITED INSTITUTION.

अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ और सेवाएं नि:शुल्क हैं। आपसे कभी भी ट्यूशन या कोई अन्य शुल्क नहीं मांगा जाएगा। आईबीकेआई एक मान्यता प्राप्त संस्थान नहीं है।

International Bible Knowledge Institute Randolph Dunn, President Roberto Santiago, Dean



अंतर्राष्ट्रीय बाइबल ज्ञान संस्थान S.M.Vinay Kumar, IBKI India Director

संस्थान का लक्ष्य परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को बाइबल पाठ उपलब्ध कराना है। पाठों को प्रिंट करने के लिए डाउनलोड किया जा सकता है, ऑनलाइन अध्ययन किया जा सकता है या व्यक्तियों या चर्चों द्वारा ईमेल मंत्रालय में उपयोग किया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल ज्ञान संस्थान (IBKI) से डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए एक छात्र ने चार आवश्यक पाठ्यक्रम और 7 वैकल्पिक पाठ पूरे किए होंगे। उन्नत अध्ययन "बीकेएस" (बाइबिल नॉलेज स्कॉलर) पुरस्कार प्राप्त करने के लिए, एक डिप्लोमा अर्जित करने के अलावा एक छात्र ने सभी वैकल्पिक पाठ और 7 अतिरिक्त अध्ययन पूरे कर लिए होंगे।

आईबीकेआई गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकों और पाठों को उनकी संपूर्णता में बिना किसी परिवर्तन या शुल्क के पुन: पेश करने की अनुमति देता है।

Course One - The Message | कोर्स एक - संदेश

How Did Everything Get Here? सब कुछ यहाँ कैसे आया?

The Man Who Was God वह आदमी जो भगवान था

Christ - God's Mystery क्राइस्ट - भगवान का रहस्य

Myths About God भगवान के बारे में मिथक

Course Two - Obedience To His Message | पाठ्यक्रम दो - उनके संदेश की आज्ञाकारिता

Time Before Christ मसीह से पहले का समय

Time Christ on the Earth पृथ्वी पर समय मसीह

Time After Christ मसीह के बाद का समय

Time to Decide तय करने का समय

From Death Through The Cross To Life मृत्यू से क्रूस के द्वारा जीवन की

Course Three -A New Spiritual Life In Christ | कोर्स तीन -मसीह में एक नया आध्यात्मिक जीवन

Baptism into Christ मसीह में बपतिस्मा

Life to Death - The Mortal Life

A Kingdom Not Made With Hands हाथों से नहीं बना साम्राज्य

Servants In The Kingdom राज्य में सेवक

Message From The Epistles पत्रियों से संदेश

Worship God In Spirit and Truth आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करें

Course Four - Maturing In Christ | कोर्स चार - मसीह में परिपक्व होना

Jesus of Nazareth नासरत का यीश्

Life Of Christ मसीह का जीवन

United in Christ में संयुक्त

Spiritual Milk आध्यात्मिक दुध

Body, Soul, Spirit - Where Do They Go When You Die? शरीर, आत्मा, आत्मा - जब आप मरते हैं तो वे कहाँ जाते हैं?

Living Liberated लिविंग लिबरेटेड

Revelation Of Jesus Christ यीशु मसीह का रहस्योद्घाटê

कृपया इस कार्यक्रम और पाठों के बारे में सभी प्रश्नों को इस पते पर अपने नामित शिक्षक को निर्देशित करें।

Distributed by

Hyderabad & Naidupet Church of Christ,

1-2-168, CBN Colony, Helping Hands Trust,

Naidupet-524 126, A.P,India